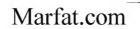
المنظم المناسخة بكاح پر قرآن مرسنت كى روخنى مين منتنزاورلاجواب كتاب Coffee Tolk Barry Solvelly &



ئىكاح پرقرآق صدىئىڭ كىرۋىنى يىڭ مئىنداورلاجوا بىكتاب





تصنیف لطیف *هنرتعلام مُخِرْفاروق خال ضوی*

تربتيب نوواضافه مخرع **بدا لاحد قا**وري

Phone 0333-4383766 042-7213575

THE THE SER (TEIZUR)

جمله حقوق بحق ناشر محفوظ هين

- شادی کے احکام (تربید زعگی) نام كتاب ----- علامه محمة فاروق خان رضوي پڻ کڻ ----- محمد يم الله خان قادري ترتيب واضافه ----- محم عبدالا حدقادري ----- عزيز كميوز تك سنثرلا مور 4996495 كميوزنك بإراذل **1430,2009** ---مفحات 392 -----زرنكراني ----- چوبدري مخطيل قادري ----- چېدرې محمتازا حمقادري تح يک ----- چېردى عبدالجيد قادرى ناشر ------ =/

> منحت بحثقینه کنج کخش روو لا برو قادری رضوی مُشفِانه گنج کخش روو دلا بو Hello: 042-7213575, 0333-4383766

THE PROPERTY OF THE CASE OF

حسنرتيب

| 23 | محفيااورشريب لكاحي | 11 | كاح حنور الله كاست ب |
|----|---|------|-----------------------------------|
| 23 | شادى كركيدورند حنذبذب موكا | | شادی انبیاء ﷺ کی سنت ہے |
| 24 | لعثق فخض | 14 | لكاح آ دهادين ب |
| 2 | كن لوكول سے تكاح جا ترفيس | | كاح كفوائد 14 |
| 26 | دوده کے دھتوں کی حرمت | 15 | لكاح سرزق في المافد واب |
| 27 | عارسے زیادہ ازواج حرام بیں | 16 | شادی قیامت کے دن فخر کا باعث ہوگی |
| 28 | شرابی سے بٹی کا ٹکاح نہ کرو | 16 | شادی کے طالب کی اللہ مدورتا ہے |
| 29 | فاس فاجرے بٹی کا ٹکاح شکرو | 17 | شادی دین کی مقلمت ہے |
| 29 | كافرمثرك عاكاح وام | 17 | ابن مهاس طالفيَّ كاغلامون كوخطاب |
| 3 | بدند بدول سے لکاح جا ترقبیں 2 | 18 | شادى شده كي نوافل كى نسيلت |
| | بدندہوں کے عقا کد 36 | 18 | امت کے بہترین افرادشادی شدہ ایں |
| | مارااعلان 43 | 19 | شادی سے پاک دامنی میں اضافہ |
| 43 | دعوىٰ ش سے موتو دليل لاؤ | 19 | شادی تح اکبرے براہے |
| 44 | بدند بب سے كو كى تعلق ندر كھو | ڪ 21 | تکاح (شادی)نه کرنے کی ممانعہ |
| 45 | بدقد تعدل كوعلى والفئوات زعره جلاديا | 22 | شادى ندكرنے والا بيوتوف ہے |
| 46 | منافقوںاور کا فروں پرکتی کا تھم | 22 | جنگى در شت كى لحرح |
| 4 | لكاح كس سيكياجا يــــــــــــــــــــــــــــــــــ | 22 | متكين فخص |
| | | | |

خادى كاكام THE SEAL SEAL الحجى برادري ش رشته كرو 49 کارے پہلے دیکناست 77 بهترعورت كاامتخاب كرو لڑکی کی رضا مندی 79 50 خاندانی مورت سے لکاح کرو یٹی کے لکار کیلئے مال سے معورہ کرو 52 ጸበ رشته دارول میں شادی کرو حورت كالكاح اس كى مرضى كي مطابق حاروج اكاح كياجات 81 ويتدار بإاخلاق مورت سے لكارح كرو 55 82 بداخلاق عورت كانتصان الركى كاخاموهى عاجازت 56 84 مرف خوبصورتي كملئة لكاح نذكرو 57 87 N 3 محت كرنے والى سے شادى كرو مبرمنجل وبرموجل ويرمطلق 87 آخرت کی مدد کارمورت سے شادی کرو فن مريحوش ورت طال موتى ب 60 88 فكاح كملئة استخارو 61 مرمعاف كرنے كيلے مجود كرنا مائز محست کس چزیں ہے 64 89 فوست كي تشريح حفرت موى عَدِائِدًا كاحل مهردين كيلع 65 عورت کا منته بهت زیاده نقصان ده ہے ל לנונטל 89 استخاره كرنے كاطريقتہ 69 اطال مال عص ميراداكرو 91 مكلى يا كاح كاپيغام 71 جالت كي اعمام 92 كى كے بيغام ير بيغام ندو 71 كل مرشدية كاومال 92 مكلى كياب؟ 72 TO 12 93 لكارت يمليائى ديكف كاعم 74 ازواج مطيرات كاحل مير 94 محابه كرام بن ألث كاعمل 74 رسوم شادى 96 ایک محابه کا لکاح کی درخواست کرنا الانتاكاناكاترام 76 97

| | | | الله الكاكام الله |
|---------------------------------|--|---------------------------------|---|
| 122 | وولها كوكيا تخنيد ياجائي؟ | 98 | ومول بجاناحرام ہے |
| 125(, | جيزسنت مصطفى يالعنت خدا (مقاله | 99 | شادی پروف بجانا جائز ہے |
| | ر محتى كابيان 143 | | |
| 143 | ر محمتی رات کے وقت کی جائے | 101 | بخرى مى بدياك |
| | ر محتی کس ماہ میں کی جائے | | تصویریناناحرام ہے |
| 144 | رمحتی کےوقت کی دعا | 102 | دحت سے محروم کھر |
| | حغرت فاطمة الزبرافي كالمحتىك | 1 | ويْدِيوْلم اور بريارتا ويليس 03 |
| 145 | ونت حضور الغيلا كاعمل | | دولها اور دلېن کوسجا تا 108 |
| 14 | وب زُفاف کے آ داب 47 | 108 | مورتوں كامبندى لكانا جائز ہے |
| 147 | میاں بوی کاسب سے پہلامل | 109 | دولها كومبندى لكانا جائز فهيس |
| 148 | محبت پیدا کرنے کاعمل | | دولها كوسېرا پېينا تا 111 |
| | | | |
| 15 | وبِ زُفَاف کی خاص دُعا 50 | 111 | سرا گاب کے محواول کا ہو |
| - | فب زُفاف کی خاص دُعا 50 ایک پدی علاقهی کاازاله | | |
| 152 | | 114 | دولہااوردلہن کوسجاتے وقت کی دعا |
| 152 | ایک بڑی طارقہی کا ازالہ عب لگاف کی ہا تمس متانا منع ہے | 114 | دولہااوردلہن کوسجاتے وقت کی دعا |
| 152 154 | ایک بڑی طارقہی کا ازالہ عب لگاف کی ہا تمس متانا منع ہے | 114 | دولہااوردلہن کو سجاتے وقت کی وعا ا نکاح کامیان 115 |
| 152 154 154 | ایک بوی طلاقبی کا از اله عب دُفاف کی ہا تمل بتانا منع ہے ہوم تیا مت شریرتر ہوفض | 114 116 117 | دولہااوردلہن کو ہجاتے وقت کی دعا: <u>کاح کا بیان 115</u> کاح کس دن کیا جائے؟ |
| 152 154 154 | ایک بدی طلاقبی کاازالہ فپ ڈفاف کی ہاتمی بتاء منع ہے ہوم قیامت شریرترین فض ایک مثالی شادی 156 ایک معادت مندرلہن 60 | 114 116 117 117 | دولہا اوردلہن کو بچا <u>تے وقت کی وعا ا</u> کاح کا بیان <u>115</u> کاح کس دن کیا جائے؟ لکاح مساجد ش کیا جائے |
| 152 154 154 154 | ایک بدی طلاقبی کاازالہ فپ ڈفاف کی ہاتمی بتاء منع ہے ہوم قیامت شریرترین فض ایک مثالی شادی 156 ایک معادت مندرلہن 60 | 114 116 117 117 | دولہا اوردلہن کو ہجائے وقت کی وعاد میں اور اور اور اور کا کا اور کا کا اور کا |
| 152 154 154 154 162 | ایک بدی طاقهی کاازالہ فپ ڈفاف کی ہاتمی بتا استع ہے ہوم قیامت شریرترین فخص ایک مثالی شادی 156 ایک مثالی شادی 60 ایک معادت مندرلہن 60 ایک متوکل دلہن | 114 116 117 117 110 | دولها اوردلهن كوتها سے وقت كى وعا ا ثكار كا بيان 115 ثكار كى دن كيا جائے؟ ثكار ساجد ش كيا جائے شرائلا ثكار بعد ثكار شير بى تقتيم كرنا 19 دولها اوردلهن كومياركيا و |

| ~ N | | KEN CHE YES |
|-----|--|---|
| | | |
| 193 | 167 ووران تماح شرم كاهد يكفي كاوبال | وليمدكب كياجائي |
| 195 | 169 بتان چمناءا كي فلوجي كاازاله | ئەلەلىمە مىلىرىي |
| | 171 دورانم باشرت كى اوركا خيال آناحرام | ئے اولیمہ مجیل کری پر کھانا محمد میں سیات |
| 196 | 171 ہے | نیچ بیژ کرکھا ناسٹ ہے |
| | 172 محبت بحل مره كيلئ نديو | • |
| 199 | | |
| 201 | ہفتی تن مرجد قربت کرے | |
| | 174 مباثرت كاوقات 203 | |
| 203 | 175 رسول الله الله كاعمل | معبت با پرده کرے |
| 204 | 176 مباثرت كيك بهتروت | محبت آمير كفتكو كرنا اورول بهلانا |
| 205 | | |
| 2 | اورمضان من مباشرت 06 | |
| | 171 انهمائل | |
| | حيض (مامواري) كاميان 09 | |
| _ | 18: چنن کا سب | 4 1 4 4 |
| | 18 مین بی مباثرت وام ب 12 | |
| _ | 18 مورت كوطهارت كرمسائل يكمنافرض | |
| | # 18 | ف کی مالت یس مباشرت کرنامع ہے 6 |
| 214 | 10 و ين محرى مناييز سے ال تحلق محض 18 و ين محرى مناييز سے ال تحلق محض | خوشبوكا استعال كرنا 88 |
| 214 | | |
| | 19 مالت فيض ش زوجيت ادا كرنے كا | |
| 215 | ا كفاره | |
| 21 | 11 حین میں مباثرت کے نقصانات 6 | 2 برومجت کرنا ^{منع} ہے 92 |
| | | |

| 36 | | الاسكاما المالان المال |
|-----|--|--|
| 246 | فادعدكي اطاحت بروالدكي مغفرت | حالت جيش بين مورت تمام كام كريحتي |
| ل | 217 کوم قیامت نماز کے بعد خادیم کے متعلق سوا | 4 |
| 246 | 218 | حالت حیض میں ہوں و کنارجا تزہے |
| 247 | 218 مورت كي دعاكي توليت كب؟ | مالت يض بن اكتفي كمانا جائز ب |
| 247 | 219 شوہرکی نافشری تغرب | جین کے بعد محبت کب جائزے |
| 247 | 220 جنم شسب سے زیادہ عورتی | حیض سے پاک ہونے کا لمریقہ |
| 248 | تظررهت سے محروم مورت | لواطت كاوبال 222 |
| 248 | 222 شرک کے بعد پواگناہ | لواطنت حرام وكغرب |
| 248 | 223 خدااور فرهتو ل كالعنت | لمعون فخض ارحمت سيمحروم |
| 249 | خادىمكا فكوه كرنے والى | التحاضه كابيان 226 |
| 249 | 227 مردك كراو ثية والي يوى | هل كب فرض موتاب؟ |
| 250 | 231 خوبركافن ادائيل موسك | نا پاک کیلیے کون کی با تھی حرام ہیں |
| 251 | 234 جنتی مورت | نجاستوں کے پاک کرنے کا طریقتہ |
| 252 | تيرا خاوند جنت بمحى اورجنم بمحى | هسل كابيان 236 |
| 252 | 240 مورت كاجهاد | ناخن بالش مونے پر حسل ندہوگا |
| 252 | يوى كرتا بعدارينانے كاعمل | میاں بدی کے حقوق 241 |
| | بوي كے حقوق 253 | شوہر کے حقوق 243 |
| | 244 موروں کے متعلق رسول اللہ علی کی | ايك دومر الم كرحوق كى رعايت |
| 254 | 244 مردول كوهبحت | بهترين مورت كى يجيإن |
| 254 | 245 مورون برفك ذكرو | رمول الله خافي كاعورتون سے فطاب |
| 255 | 245 ئىدى سەسلوك كو | رسولالله منافيلم كي بيني وهيحت |
| | | |

| | | الانكاكام |
|-----|--------------------------------------|--|
| 275 | 256 وكمانے كيك ماؤسكماركرنے كاوبال | عورت کے خاد ندیر یا نچ حوق |
| 276 | 257 غیرمرد کے ماتھ تیمراشیطان | عوى كى بدمزاتى پرمبروقل |
| 277 | 258 عادا عام المحام | جنتی حورول کی بددعا |
| 278 | 259 مردورت كويت يدباندر | عورت اٹی زبان درازی سے بچ |
| 279 | 261 اما کے نظریزنے پر پھیرلو | زوی کو سمجمانے کا طریقہ |
| 279 | آ محمول كازناء بدالاي كاسزا | يوى كانان نفقه 262 |
| 280 | 262 آگوشیطانکا تیرہے | کمانے پینے اور پہننے میں برابری |
| 281 | 263 بدلای ہے بچے کامل | عنى كرچىش فرافى كابر |
| 282 | 264 زيادت قرمورون كيلية ما زنين | فرهتوں کی وعا |
| | 285 نا كى جاء كاريال 285 | نغته کی مقدار (سائل) |
| 286 | 266 گرانی ایمان سے مروم | مردك ذمه اخراجات كون؟ |
| 287 | مومن وعافين كرسكا | بوی کے غلام 267 |
| 287 | 268 ويادآ فرت يراد | بوی کامطیع جبنی ہے |
| 288 | 268 ז לשאון ט | مورتول كالبعدارين جاي |
| 289 | 268 رانى پاھنت برى ہے | والدين كااحرام كرو |
| 290 | 27 زانی کوستگیار کیاجائے | بی ایف فلموں کے نقعیانات 0 |
| 291 | 271 زما كركوابان كي شرى حيثيت | بدلگای اوربے پردگی کاویال |
| 2 | پیشه در حورتین (طوائفیں) 293 | عورت كالبيخ خاد تدكيلتے بناؤ سنگاركرنا |
| 295 | 273 زانی اور شرانی ایمان عروم | اجرعظیم ہے |
| 296 | بدكاركونيك بنائ كيليمل | مورت جب بابرتكلتي بإلوشيطان جمائكا |
| 29 | 274 كواطت يا اغلام بازى كے نقصانات 7 | 4 |

| | | وع | الله الله الله الله |
|-----|-------------------------------|-----|--|
| 321 | لنؤجات | 298 | افماره شيطان، حكايت |
| 322 | رحما في علاج | 299 | لوطی فض کی شرق سزا |
| 323 | مرحت انزال | 301 | بورب والماع حيب فيل يحقة |
| 324 | لتخدجات ورحماني علاج | 301 | فيحلاول برلعنت |
| 325 | چھامتیالیں | 30 | جانورےمباشرت کے نقصان 3(|
| 329 | | _ | مورت كامورت سے ملاب 305 |
| 329 | كيكوريا لرفرجات | 305 | لملاپ کا تقصان |
| 330 | حيض كى زيادتى بسخه مبات | 306 | آ ئىكازنا |
| 331 | حيض كابند موجانا أسخه جات | | اسيخ باتحول الي بربادي 308 |
| 332 | پیشاب پس ملن | 308 | ممر محرسينما |
| 333 | عزل يا خبار ے كا استعال | | انمول نزاندکواہے ہاتھوں سے بریاد ندکرو |
| 335 | مزل كيارك شرقهم | 309 | |
| 337 | جوآ ناجآ كرد چا | 310 | ايك فحقق ربورث |
| 340 | اللمام كالمحتيل ،اولا دك قاتل | 311 | |
| 341 | رزق كاذمه دارالله | | |
| 34 | سونوگرافی یا ایکس رے 3 | | طانت بخش غذا كي 313 |
| 344 | حياه وبريا وقايتل اولا و | 315 | |
| 344 | شب معراج مشابده نوى الفا | 316 | كائے كا كوشت |
| 345 | سب سے پڑا گناہ اولا دکول کرنا | 318 | طاقت كم كرنے والى غذاكيں |
| 345 | يوم قيامت جبنم رسيد | 3 | مردانه ياريال ادران كاعلاج 19 |
| | اولادكايمان 347 | 320 | نامردی |
| | | | |

| | | D# | الان الحام |
|-----|-----------------------------------|-----|---------------------------------------|
| _ | يح كى پيدائش پرجائزونا جائزرسير | | حمل کی تکلیف کا اجر |
| 368 | متيتكامان | 348 | اولا وجنت کی خوشبوہ |
| 370 | اعتسكامان | | اولا د نه ہونے کی وجو ہات |
| 371 | كان ناك چميدنا | 349 | عاليس جنتي مردول کي قوت |
| 372 | حاظتى كيككوانا | 350 | يچەند بونے كے اسباب |
| | 374 - 18718 - 12 | 350 | بانچه کون مورت یا مرد؟ |
| 374 | أرعنامول كاثرات | 351 | اولا دموك يانيش؟ |
| 375 | ا الحرنام کی رکتیں · | | اولا دہو <u>نے کیلے</u> عمل |
| 376 | للركح يستديده نام | 353 | ان شاءالله لا كائل يداموكا |
| 377 | يامت كون نام بي كار عبادك | 355 | حمل کی حقاعت کے عملیات |
| 378 | ر سولالله عظم المام بدل دية تح | 356 | حمل کے دوران اجھے کام |
| | يح كى پرورش كايان 380 | | حمل کے دوران مباشرت |
| 381 | 24 2 4 (6 | | بحد کی بیدائش کے بعد کیا مباشرت جائز |
| 382 | - 73 K. W. | | الم |
| 382 | | | آسانی سے ولا وت جملیات |
| | بح ل كاتعليم وتربيت 384 | | كان ميس اذان اورحمني |
| 387 | مر تعلم بن کرارشد | | لڑکی کیلئے نارامتی کیوں؟ |
| 38 | Cerebe | | جنت من رفات رسول الله |
| | ماخذومرافح 389 | 363 | بیٹیو <i>ل کور</i> تی ^ج دو |
| | | | نفاس كاميان 364 |
| | 유유유 | 364 | ایک اہم ضروری متله |
| | | | |



بييت إلفالتغزالت

نحمدة ونصلي على رسوله الكريم

الله تعالی ارشاد فرما تا ہے۔

فَانْكِحُواْ مَا طَابَ لَكُدْ مِنَ النِّسَآمِ (سورة ناء)

ترجمه تو نكاح يس لا وَ جِرِهِ بِينِ خِشْ آئيس _ (كزالايمان)

نکاح حضور منتظ ملیم کی سنت ہے

نورمجسم فخر دوعالمُ رسول اکرم ُ فخری آ دمُ ما لک دو جہاں ٔ صبیب کبریاءُ خاتم منابعہ میں منابعہ میں فنرمیں مجتابہ مصافلہ سریا ہو جہاں مصرف

الانبياء تا جدار مديد نبي رحمت شافع محشر احمر مجتبل محم مصطفل مضيحة آن ارشاد فرمايا: الدّيكارُ مِن سُنتين

الله ما من سنتي

حضرت الوجريره وفالنحذ بروايت بكحضور مطيعاً فيا في ارشاد فرمايا:

من احب فطرتي فليستن بسنتي وان من سنتي النكاح

(بیمی کتاب الکاح ج ۷)

ترجمه جوفخف میری فطرت سے مجت کرتا ہے اس کو چاہیے کہ میری سنت کو اپنائے

اورنکاح میری سنت ہے۔

THE IT THE SEE (IS IL USE) TO

حفرت ام حبيب والعجاب روايت بكدرسول الله مطي والناف في مايا:

من كأن على دينى و دين داود و سليمان و ابراهيم فليتزوج ان وجد الى النكاح سبيلا والا فليجاهد في سبيل الله ان يستشهد يروجه الله من الحورالعين.

من الحود العين - (الافصاح في احادث الزكاح 'ابن حجر) ترجمه جوفحض مير ب دين پر اور حضرت داؤد وحضرت سليمان وحضرت ابراميم

ر میں ہے دین پر ہے وہ شادی کرے اگر نکاح کی کوئی سبیل حاصل ہو ورنہ جہاد

کرے اللہ کے رائے میں اگروہ شہید ہوگیا تو اللہ تعالیٰ اس کی شادی حورمین سے کرےگا۔

شادی انبیاء علط کی سنت ہے

حصرت الوابوب وفات سروايث م كرسول الله من و ارشا وفرمايا:

اربع من سنن المرسلين الحياء والعطر والنكاح والسوالت

(احدُرْ مَذِي طِراني 'الترغيب كتاب النّاح)

ترجمہ جار کام انبیاء کرام عبلسلام کی سنت ہیں۔(۱) حیاء کرنا (۲) خوشبولگانا۔ (۳) نکاح کرنا (۴)اورمسواک کرنا۔

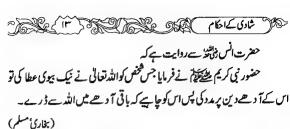
نکاح آ دھادین ہے

المارك بيارك مدنى آقادمولى الطيئة في أفرار ثادفر مايا:

اذا تزوج العبد فقد الستكمل نصف الدين فليتق الله في النصف

الباقى

ترجمہ بندے نے جب نکاح کرلیا تو آوھا دین ممل ہوجاتا ہے۔ اب باتی آ دھے کیلیے اللہ تعالیٰ سے ڈرے۔ (مکلوۃ ج۴ مدیث ۲۹۲۲)



اورام مطرانی نے اس صدیث کوان الفاظ کے ساتھ نقل کیا ہے۔ من تزوج فقد استکمل نصف الایمان فلیتق الله فی النصف الثانی ترجمہ جم شخص نے شاوی کی اس نے نصف ایمان کمل کرلیا۔ پس اسے چاہیے کہ دوسرے نصف میں اللہ سے ڈرے۔





نكاح كے فوائد

حفرت عبدالله بن مسعود فرانتی سے روایت ہے کہ سرکار مدینہ مضیر کی نے ارشادفر مایا:

يا معشر الشاب من استطاع الباءة فليزوج فانه اغض للبصرو احصن للفرج ومن لم يستطع فعليه بالصوم ً فانه له وجاء

ترجمہ اے جوانوں! جوتم میں ہے عورتوں کے حقوق ادا کرنے کی طاقت رکھتا ہے تو دہ ضرور نکاح کریں کیونکہ بیڈگاہ کو جھکا تا ہے ادر شرم گاہ کی حفاظت کرتا ہے اور جواس کی طاقت ندر کھے دہ روز ہ رکھے کیونکہ بیش ہوت کو کم کرتا ہے۔

(بخاري چ۳ مديث ۵۹ تر ندي چ۱۸۲۰۱)

هسئله اعتدال کی حالت میں لینی نه شهوت کا بهت زیاده غلبه بونه عنین (نامرونه) ہواور مبرونان نفقه پرقدرت بھی ہوتو نکاح کرنا سنت موکدہ ہے کہ نکاح نہ کرنے پراڑا رہنا گناہ ہے۔

هسئله شهوت کا غلبرزیادہ ہےاور معاذ الله اندیشہ ہے کہ زنا ہوجائے گا اور بیوی کا مہر اور نان نفقہ دینے کی قدرت رکھتا ہے تو نکاح کرنا واجب ہے۔ یو ہیں جبکہ اجنبی عورت کی طرف نگاہ کو اٹھنے سے روک نہیں سکتا یا معاذ اللہ! ہاتھ سے کام لینا پڑے گا تو

LEICON DE

نکاح کرناواجب ہے۔

مسئله بیلین ہو کہ نکاح نہ کرنے سے زناواقع ہوجائے گا تو ایس حالت میں نکاح کرنا فرض ہے۔

مسئله اگریداندیشه به کدنکاح کرے گا تو نان نفقدندد سے گایا جو ضروری باتس ان کو پوراند کر سکے گایا جو ضروری باتس ان کو پوراند کر سکے گاتو نکاح کرنا کروہ ہے۔

مسئله یقین ہے کہ نان نفتہ نہیں دے سکے گا تو ایس حالت میں نکاح کرنا حرام ہے۔ (گربہر حال نکاح کیا تو ہوجائے گا)

(بہارشر بعت ج اح کے قانون شریعت ج۲)

نكاح كرنے سے رزق ميں اضافه

الله تعالی قرآن مجید میں ارشاد فرما تاہے۔

وَأَنْكِحُوا الْاَيَاعُ مِنْكُمْ وَالصَّلِحِيْنَ مِنْ عِبَادِكُمْ وَإِمَانِكُمْ إِنْ يَكُونُواْ وَاللهُ وَاللهُ وَاللهُ وَاللهُ عَلِيْهِ - (مورة نور اس)

ترجمہ اور نکاح کردواپوں میں ان کا جوبے نکاح ہوں اور اپنے لاکق بندوں اور کے لاکق بندوں اور کنے اللہ بندوں اور کنے لاکھ بندوں اور اللہ کنیروں کا اگروہ فقیر ہوں تو اللہ تعالی انہیں غنی کردے گا اپنے فضل کے سبب اور اللہ تعالیٰ وسعت والاعلم والا ہے۔

(کزالایمان)

ابن مردوبیہ وعرفتیلیے نے حضرت عا کشرصدیقتہ دفاتھیا سے روایت نقل کی ہے کہ رمول اللہ <u>مطفع کی</u>خ نے فرمایا نیک مردوں اور نیک عورتوں کا نکاح کرواور جوان کے بعد ہوگا چھا ہوگا۔

امام ابن ابی حاتم بھرنشیجی نے حضرت ابو بکر صدیق بنی ٹنٹنو سے روایت نقل کی ہے کہ اللہ تعالیٰ نے تمہیں نکاح کا جو تھم دیا ہے اس کی اطاعت کرواللہ تعالیٰ نے تمہارے ساتھ جوغنا کا دعدہ کیا ہے اللہ تعالیٰ اسے پورا کردےگا۔

TERECITY TO THE SERVICE OF THE CUITY OF

امام عبدالرزاق نے المصنف میں اور عبد بن حمید نے حضرت قادہ بمضیع ہے روایت نقل کی ہے کہ ہمارے سامنے پیذ کر کیا گیا کہ حضرت عمر فاروق ڈائٹنز نے فرمایا میں نے کوئی اییا آ دمی نہیں دیکھا جس نے شادی کی صورت میں غنا نہ دیکھی ہواللہ تعالیٰ نے اس میں وعدہ فرمایا۔

ا مام دیلمی حصرت ابن عباس زنانند اور و «حضور نبی کریم مضطفیّ بسے روایت نقل کی ہے نکاح کے ذریعہ رزق تلاش کرو۔

امام این خطیب مخطیعی تاریخ میں حضرت جابر والنیز روایت کرتے ہیں کہ ایک محف حضور نی کریم مطیقاتیم کی بارگاہ میں فاقہ (شکدی) کی شکایت لے کر حاضر ہوا توحفورنى كريم مطفي كان فاست شادى كرف كاحكم ديا_

حضرت این عباس فنانشخ سے روایت ٔ ہے جوآ دمی استطاعت نہیں رکھتاوہ شاد ی كر لے اللہ اسے في كرد سے گا۔ · (تغيير درمنثورمترجم ج٥صورة نورا٣ص ١٢٨)

شادی قیامت کے دن فخر کا باعث ہوگی

حضرت معيد بن الى بلال بنائع بصدوايت ب كدرسول الله من كالم في مايا:

تناكحو تكثرو فان ابأهي بكم الامم يوم القيامة

(الافصاح في احاديث الزكاح ابن حجر)

ترجمه باہمی نکاح کرکے کثرت حاصل کرو۔ میں قیامت کے دن امتوں پرتمہاری وجه سے فخر کروں گا۔

شادی کے طالب کی اللہ مدد کرتاہے

حضرت ابو ہر میرہ فالٹنز سے روایت ہے کہ ٹی کریم مطیقاتی نے فرمایا کہ حق على الله عون من نكح التماس العفاف عما حرم الله

JERCIE JERCHELOSE JER

(فيض القديرالمناوي برقم ١٨٣٥)

ترجمہ اللہ تعالی اس محض کی مدد کرتا ہے جواللہ کی حرام کردہ چیزوں سے پاکدامنی کی طلب کرتے ہوئے نکاح کرے۔

ای طرح ایک اور حدیث میں ہے۔

حضرت الوامامداور حضرت جابر فالنفؤ سے روایت ہے کہ تین قتم کے لوگ ایسے ہیں کہ اللہ تعالیٰ ان کی مدد کرتا جو ایسے ہیں کہ اللہ تعالیٰ ان کی مدد کرتا جو باک وائے کا بھی ذکر کیا جو باک وائی صاصل کرنے کیلئے شادی کرنا چا ہتا ہو۔

(الافصاح في احاديث النكاح 'ابن جمر)

شاوی دین کی عصمت ہے

حصرت جابر رفائد سے روایت ب كدرسول الله مطبع وقاتم في مايا:

ایما شاب تزوج فی حدانه سنه عج الشیطانه یاویله عصر منی دینه' (مندابریطی برتم ۲۰۸۳)

ترجمہ کہ جس نو جوان نے اپنی نوعمری میں شادی کی تو شیطان اس پر چیخ و پکار کرتا ہےاور کہتا ہے ہائے ہلا کت ٔ اس هخف نے مجھ سے اپنے دین کو محفوظ کر لیا۔

حضرت ابن عباس رخالنيهٔ كاغلاموں كوخطاب

حضرت این عباس بڑٹائٹو کی حکایت ہے گدآ پ نے اپنے غلاموں کو جمع کیا اور فرمایاتم لوگ اپنی عورتوں کے معاملہ میں آ زاد مردوں کے برابر پہنچ ہیے ہو۔ پس جو مختص تم میں شادی کرنا چاہتا ہے تو میں اس کی شادی کر دیتا ہوں۔ کو کی مختص زنانہیں کرتا گراللہ تعالیٰ اس سے اسلام کا فورچھین لیتا ہے پھراگروہ لوٹانا چاہیے تو لوٹا دیتا ہے اگر روکنا چاہے تو روک دیتا ہے۔
(کزالعمال این باجہ کتا ہے افغین

TERE IN THE SERVICE YOU

اور به بات نی کریم مضافیا کی حدیث کی تغییر ہے کہ جس میں آب مضافیا نے ارشاد فرمایا کہ کوئی زانی زنانہیں کرتا کہ وہ زنا کے وقت مومن رہے اور کوئی چور چوری نہیں کرتا کہ وہ چوری کے وقت مسلمان رہے اور کوئی (مخض) شراب نہیں پتا كهوه شراب يينة وقت مومن رہے۔

شادی شده کے نوافل کی فضیلت

حضرت انس فاللنئ ہے دوایت ہے کہ حضور نبی کریم مضایقاتی نے ارشادفر مایا: ركعتان من المتاهل خير من الثنين و ثماثين ركعة من العزب ترجمه شادی شده کی دور کعت بے نکاح کی بیای رکعت ہے بہتر ہے۔ اور قیلی نے کتاب الضعفاء میں پینصد پٹ اس لفظ کے ساتھ روایت کی ہے کہ ركعتان من ألمتزوج خير من عبعين ركعة من العزب شادی شده کی دورکعت غیرشادی شده کی سرز (۷۰) رکعت سے بہتر ہیں۔

(الافصاح في احاديث النكاح 'ابن حجر)

امت کے بہترین افرادشادی شدہ ہیں

حضرت حذیفه رفاطنو سے روایت ہے کہ رسول الله مطبق تی تانے فرمایا: خيار امتي المتزوجون (دیلمی مندالفردوس برقم ۲۸۶۷)

ترجمه میری امت کے بہترین لوگ شادی شدہ ہیں۔

فاكده

"المتروجون" كامعنى شادى شده بهي بوسكاب ادرشادى كرنے والا بهي ہوسکتا ہے جو حدود شریعت میں رہ کرایک سے جار شادی کرے کیونکہ بیلوگ شادی کے ذریعیا پی فطری خواہش کو جا ئز طریقہ ہے پورا کرتے ہیں اس کے برعکس وہ لوگ

THE THE THE THE CUIT YOU

جوشادی کے بغیر پاک دامنی افقیار کرتے ہیں وہ بھی گی طرح سے مشکلات میں کھنے ہوتے ہیں اور شیطان گراہ کرنے میں لگار ہتا ہے۔

شادی سے یا کدامنی میں اضافہ

حفزت حذیفه ڈٹاٹٹو سے روایت ہے کہ رسول اللہ مِشْنَعَیَّتِ نے ارشاوفر مایا: یازیں تزوج تزدد عفۃ الی عفتك (ابن ماجه کتاب الأکاح) مَهِ اے زیدِشادی کرلے تیری یاک دائمی میں اضافہ ہوگا۔

فائده

کونکہ جس کی شادی ہوجاتی ہے وہ عوماً دوسری طرف توجہ کرنے سے بچار ہتا ہے۔ایک صدیث پاک میں ہے کہ جب تجھے کوئی پیند آجائے تو اپنی بیوی کے پاس چلاجا کیونکہ اس کے پاس بھی وہ ہی ہے جواس کے پاس ہے۔

شادی حج اکبرے برابرہے

حطرت على الرتفني والني سروايت بك في كريم من والمان ارشاد قرمايا:

فائده

اگرکوئی شخص شادی کرے گا تواس کو جج اکبرکا ثواب ملے گالیکن اس کا پیرمطلب نہیں ہے کہ جس شخص پر ج فرض ہوشادی کرنے ہے اس کا جج ساقط ہوجائے گا۔ یہ

JERCIO JERUS (REIZUR)

مدیث میں جنتے بھی تو اب ندکور ہیں ان کا تعلق فضائل سے ہوادر فضائل میں ضعیف مدیث کا بھی اعتبار ہوتا ہے اور سیعدیث معین ہے کیاں اس مدیث کا پہلا جملہ بخاری اور سلم میں مروی ہے کیکن اس کا مطلب وہی ہے جوہم فائدہ کے شروع میں لکھ چکے ہیں اور حدیث کے دوسرے جملہ میں جو شادی میں جج کے درا ہم خرج کرنے کا فدکور ہے اس میں ادفاق جے سے اس برجج کا تو اب کھا جا تا ہے اس سے مراد فلی جج ہے۔

حكايت

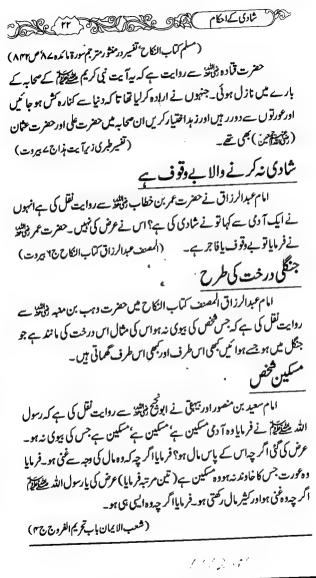
مروی ہے کہ ایک عابدانی ہیوی ہے اچھا سلوک کرتا تھا پہاں تک کہ وہ فوت ہوگئ اے کہا گیا کہ دوسری عورت سے تکاح کرلے اس نے انکار کردیا۔ ایک عورت نے کہا آپ میرے ساتھ نکاح کرلیں تا کیمیرادل خوش ہو(قرب کی سعادت نصیب ہو) لیکن وہ عابد نہ مانا۔اس بزرگ نے کہا کہ ایک شب جھے کومیں نے اپنی بیوی کو خواب میں دیکھا کہ آسان کے دروازے تھلے ہوئے ہیں اورلوگ ہوا میں اڑ رہے ہیں اوپرینچ آ رہے ہیں جب ان میں ایک کی نگاہ میرے اوپر پڑی تو وہ اپنے پیچیے والے دیکھ کر کہتا ہے بیمی ہے بد بخت دوسرا پیچیے والا کہتا ہے ہاں تیسرا کہتا ہے یہی ہے یمی ہے جھےان سے ماجرا یو چھنے کی ہمت نہ ہو کی جب آخری آ دمی میرے قریب سے گر را تو یں نے یو چھا کون ہے بدبخت جے بیلوگ بار بار کمدرے ہیں اور ایک دوسرے کی تقیدیق کردہے ہیں اس نے کہاتم ہی تو ہو۔ میں نے کہاوہ کیوں۔اس نے کہاوہ اس لئے کہاں ہے تبل ہم تیراعمل مجاہدین فی سبیل اللہ کے ساتھ لے جاتے کیکن ایک ہفتہ سے ہمیں تھم ملاہے ہم تیراعمل فالفین کے ساتھ لے جا کیں اس کی وجہ ہمیں معلوم نہیں اے بیا حساس ہوا کہ پنچوست نکاح نہ کرنے کی وجہ سے ہے۔ چنانچہ اٹھتے ہی کہا کہ میرا نکاح کردو۔ چنانچہ دیکھا گیااس کے بعداس کے پاس دؤ دو تورتیں نكاح ميں بيك وقت ہوتی تھيں۔ (تغييرروح البيان سورة بقر ٢٢٩٥)

نکاح (شادی) نه کرنے کی ممانعت

الله رب العزت قرآن مجيد ميں ارشاد فرما تا ہے۔ يَا يُّهُمَّا الَّذِيْنَ اَمِنُوْ الاَتُحَرِّمُوْ طَوْبِيْتِ مَا اَحَلَّ اللهُ لَكُمْ وَلَا اِتَعْتَدُهُ النَّ اللهُ لَا يُحِبُّ الْمُعْتَدِيْنِ. اللهُ لَا يُحِبُّ الْمُعْتَدِيْنِ. ترجمہ اے ايمان والوحرام نگھراؤوہ تقری چيزیں كراللہ نے تنہارے لئے طال كيں اور حدسے نہ بوھو بينك حدسے بوھنے والے اللہ كونا لپند ہيں۔ (كزالا يمان)

شان نزول

امام بخاری اور امام مسلم نے حضرت عائشہ صدیقہ وٹالیجا سے روایت نقل کی ہے کہ حضور نبی کریم مشطح آئے کے حصابہ نے از دائ مطبرات سے حضور مشطح آئے کی تنہائی کے معمولات کے بارے بیس پوچھا (بعد بیس) میں حابہ کہنے گئے میں عورتوں سے شادی نہیں کروں گا۔ یہ بات نبی کریم مشطح آئے نے فر مایا ان لوگوں کا کیا حال ہے جو یہ کہتے ہیں۔ لیکن بیش روزہ رکھتا ہوں اور افطار بھی کرتا ہوں۔ میں سوتا ہوں اور رات کوعبادت بھی کرتا ہوں میں کوت ہوں جس نے میری سنت ہوں میں گوشت کھاتا ہوں اور مورتوں سے نکاح بھی کرتا ہوں جس نے میری سنت ہوں میں گانے میں اور اضاف وہ میری امت میں سے نہیں۔



THE THE SEC THILLIST YOU

گھٹیااورشریر بےنکاھے ہیں

حضرت ابوذ راور حضرت عطیدین بشر ری انتهاین سے روایت ہے کہ رسول اللہ مطابع کیے نے ارشاد فرمایا:

من سنتنا النكام شرار كم عزابكم وأداذل موتاكم غرابكم -(جُمُع الروائد اليعلي طراني بحواله الافساح ابن جر)

ترجمہ نکاح ہماری سنت میں سے ہے تم میں شریروہ ہیں جو تم میں سے غیر شادی شدہ ہیں اور تم میں گھٹیا در بے کے مردے وہ ہیں جو تم میں سے غیر شادی شدہ ہیں۔

شادی کر لے ورند متذبذب لوگول میں سے ہوگا



یس سے ایک ساحل بررہتا تھا۔وہ دن کوروز ہر کھتا' رات کوعبادت کرتا' روزے اور نماز نه چھوڑ تا پھرایک ورت کی دجہ سے اللہ تعالیٰ کا افکار کیا جس مورت ہے اس نے عشق کیا تھااورائے رب کی عماوت کوترک کرویا۔اللہ نے اس کے سابقہ کل کی وجہ سے دامن رحت میں بلے لیا۔اللہ تعالیٰ نے اس پر نظر رحت فرمائی ۔ تو افسوں شادی کر لے ور نہ تو متذبذب لوگول میں سے ہوجائے گا۔ (تغیر درمنثور مترج من ٢ سورة ما ئده ١٨٥ ص ٨٥١)

دیلمی نے مندالفردوں میں حضرت عطیہ بن بشر سے روایت کیا ہے کہ اللہ تعالیٰ فرشتے اور تمام لوگ اس پر لعنت کرتے ہیں جوشادی ندکرے اور حضرت یجیٰ بن ز کریا مَلِیناً کے بعد کوئی بھی شخص مورتوں سے الگ رہنے والانہیں ہوا۔

(الانصاح في احاديث النكاح 'ابن حجر)





كن لوگول سے نكاح جائز نہيں

د نیا میں انسان کے وجود کو ہاقی رکھنے کیلئے قانون خدا کے مطابق دو نخالف جنس کا آپس میں ملنا ضروری ہے۔ کیکن ای قانون کے مطابق کچھا لیے بھی انسان ہوتے ہیں جن کا جنسی طور پر آپس میں ملنا قانون خدا کے خلاف ہے۔

چنانچاللدرب العزت ارشادفر ما تا ہے۔

ترجمہ تحرام ہوئی تم پرتمہاری مائیں ادر بیٹیاں ادر بیٹیں ادر پھوپھیاں اور خالا ئیں اور بھتیجیاں اور بھانجیاں اور تمہاری مائیں جنہوں نے دودھ پلایا اور وودھ کی بہنیں اور (تمہاری)عورتوں کی مائیں۔

فائده

قرآن کریم کی اس آیت کریمہ ہے معلوم ہوا کہ مان بیٹی بہن مچوپھی خالہ مجتبئی بھانمی دادی نانی پوتی نوائ مسکی ساس وغیرہ سے نکاح کر ناحرام ہے۔ هسٹلہ ماں ملکی ہو یا سوتیل بیٹی ملکی ہو یا سوتیل بہن ملکی ہو یا سوتیل ان تمام سے

یاس کی نوای یا پوتی ان تمام ہے بھی ٹکات حرام ہے۔ مسئلہ نتا ہے پیدا ہوئی بٹی اس کی نوائ اس کی پوتی ان تمام ہے بھی ٹکات کرتا حرام ہے۔ (بہارٹر بیعت ٹان کے تانون ٹر بیعت ٹان کے تانون ٹر بیعت ٹان

دودھ کے رشتوں کی حرمت

حفزت عمرہ بنت عبدالرحمٰن وحفزت مولیٰ علی فظافا سے روایت ہے کہ سر کار مدینہ مضف کیا نے ارشا دفر مایا:

الرضاعة تحرم ما تحرم الولادة

ترجمہ رضاعت (دودھ کے رشتوں) سے بھی وہی رشتے حرام ہوجاتے ہیں جو ولادت سے حرام ہوتے ہیں۔

(بخاری جس مدیث ۹۰ تر فدی شریف ج احدیث ۱۱۳۳)

فائده

یعنی کی عورت کا دود هیچین میں پیاتواس عورت سے مال کارشتہ قائم ہوجاتا ہے۔ اب اس کی بیٹی بہن ہے اس سے نکاح حرام ہے۔ حاصل کلام ہیکہ جس طرح سے اس کی بیٹی بہن ہے اس سے نکاح حرام ہے۔ حاصل کلام ہیکہ جس طرح اس دود هستگی مال کے جن رشتے داروں سے جمی نکاح کرنا حرام ہو۔ پلانے دالی عورت کی بچ کو هستگله نکاح حرام ہونے کیلئے ڈھائی برس کا ذمانہ ہے۔ کوئی عورت کی بچ کو دھائی برس کے اندراگر دود ھیلائے گو حرمت (لیمن نکاح حرام ہونا) ثابت ہو

المال جائے گا اور اگر ڈھائی برس کی عمر کے بعد پیا تو حرمت ٹابت نہیں ہوگی۔ (لیعن نکاح (بهارشر بعت ج اح ۷ قانون شر بعت ۲۰) حرام نبیں ہوگا) حفرت ابو بريره وفائف بروايت بكسيدعالم مطيع في أن ارشادفر مايا: لايجمع بين المراة وعمتها ولابين المراة وخالتها (بخارى ج٣ياب ٥٤ حديث ٩٨مملمج١) ترجمه کوئی مخض این بیوی کے ساتھ اس کی چیجی یا بھانجی سے نکاح نہ کرے۔ هستله عورت (بیوی) کی بین جا ہے گئی ہویا رضائی (لیخیٰ دودھ شریک) ہو۔ ہوی کی خالہ یا پھوپھی' جا ہے گئی ہو یا رضاعیٰ ان سب سے بھی بیوی کی موجود گی ہیں نکاح حرام ہے۔ اگر بیوی کوطلاق دے دی ہوتو جب تک عورت کی عدت ختم نہ ہواس کی بہن' پھوپھی' خالہ وغیرہ سے نکاح نہیں کرسکتا۔ (قانون شریعت ج۲)

عارسے زیادہ از اوج حرام ہیں

حصرت عبدالله ابن عباس وظفها ہے امام بخاری وخاتیئہ روایت کرتے ہیں کہ مأزاد على اربع فهو حرامر كأمه وابنته واخته

ترجمه عارسے زیادہ ہویاں ای طرح حرام ہے جیسے آ دمی کی اپنی بٹی اور بہن _

(بخارى جساس٥٥)

مسئله جس ميس مرداور ورت دونول كى علامتين يائى جائے اور بياتا بت نه دوكمرد ہے یاعورت تو اس سے ندمرد کا نکاح ہوسکتا ہے نہ ہی عورت کا۔ اگر کیا گیا تو محض باطل ب-(لين تكاحىن موكا) (بهارشر بعت جاح ۷) الیا مخص جوشرانی ہویا اور کسی طرح کا نشہ کرتا ہواس ہے بھی رشتہ نہیں کرتا

حاہیے۔

JERCH DESCRIPTION OF THE LUIC YES

شرابی سے بیٹی کا نکاح نہ کرو

حفرت ابن عباس وفائن سروايت بكر حضور مطيع في ارشاوفر مايا: من زوج ابنته او احد من أهله ممن يشرب الخمر فكانما قادها الى

الزنا۔ (دیلی مندالفردوں مدید پرقم ۲۹۳۵) ترجمہ جس فخص نے اپنی بیٹی یا اپنے گھریس سے کسی فرد کی شادی شراب پینے

ترجمہ میں ک سے اپنا بیں یا ہے سر میں سے میں روں سارہ ہرب پے والے خض سے کردی تو گویا اس نے اس کڑ کی گوگناہ کے راستے کی رہنما کی کردی۔

فائده

۔ اس لئے والدین کو چاہیے کہ وہ ایسے لڑکے کو نتخب کریں جو شراب نہ پتیا ہواور فواحش سے پچتا ہو ور نہ اس کی نحوست ہے ہوگی کہ بیالا کی بھی محفوظ نہیں رہے گی کیونکہ شراب چینے والا بے غیرت ہو جاتا ہے اور اپنی بیوی سے زنا پر دوسر سے کوا کساتا ہے یا بیوی کے گناہ براس کے سامنے حاکل نہیں ہوتا۔

حضورا کرم مِطْفِیَقِیْتُ ارشاد فرماتے ہیں کہ

''شرابی کے نکاح میں اپنی لڑکی نددو۔شرابی بیار پڑے تو اسے دیکھنے نہ جاؤ۔ اس ذات کی قسم جس نے جھنے نبی برق بنا کر بھیجا شراب پینے والے پرتمام آسانی کتابوں میں لعنت آئی ہے۔

حفرت اہام ابواللیث سرفکری بھٹنے یہ اپنی سند کے ساتھ اپنی تصنیف لطیف ''عبیدالغافلین'' میں روایت کرتے ہیں کہ

" دبعض صحابہ کرام سے روایت ہے کہ جس نے اپنی بیٹی کا نکاح شرابی مرد سے کیا تو اس نے اس زنا کیلئے رخصت کیا (مطلب میر کہ شرائی آدی نفے میں بکثرت طلاق کا ذکر کرتا ہے جس سے اس کی ہوئی اس پر حرام ہوجاتی ہے'') (حبیدالغافلین)

فاسق فاجرہے بیٹی کا نکاح نہ کرو

من زوجه ابنته من فأسق قطع رحمها (الافساح في احاديث الكاح ابن جمر) ترجمه جسن فرجه ابنته من فأسق قطع رحمها (الافساح في الترك على الكوك الموكل ا

حضرت النس ر النواس وايت ب كدرسول الله مضيطية في ارشا وفر مايا: من زوج كريمة من فاسق فقد قطع رحمها

من روج دریمه من قاسق ملک قطع رحمهد رجمه جوشخص بین کی شادی فاس سے کرتا ہے پس وہ قطع رحمی کرتا ہے۔

فائده

معاشرہ میں دنیا داری کی محبت کی دجہ سے لڑکی والے ایسے لڑکے کی تلاش میں ہوتے ہیں جود نیاو کی تعلق میں ہوتے ہیں جود نیاوکی تعلیم یا فتہ کاروباری ملازمت پیشہ دولت مند ہو چاہیے وہ تارک نماز فاصل فاجر شرابی اورداڑھی منڈ اکیوں نہ ہو بلکہ داڑھی والے حافظ عالم کے رشتہ کو پہند نہیں کرتے ہیں ہیں بیاریاں ہیں حالانکہ رشتہ میں طرفین میں عالم دیدار کا استخاب ہونا چاہیے تاکہ آخرت بھی اچھی ہواورد بیداری کی ترون جھی ہو۔

كافرمشرك سے نكاح حرام ہے

کافرومشرک مردیاعورت ہے مسلمان مردیاعورت کا نکاح کرناحرام ہے۔ اولی العدیدیا شافیات

الله رب العزت ارشاد فرما تا ہے۔

وَلاَ تُنْكِحُوا الْمُشْرِكِيْنَ حَتَّى يُومِنُولَ (مورة البقره آيت ٢٢١)

ترجم اورمشركول ك فكاح يس شدوجب تك ووايمان ندلا كي _ (كزالايان)

The r. The sea (1612 Usit) to **ھسئلہ** مسلمان عورت کا نکاح مسلمان مرد کے سواکسی بھی نہ ہب والے سے نہیں موسك (قانون شریعت ۲۰) الله رب العزت ارشاد فرما تا ہے۔ وكَلا تَنْكِحُوا الْمُشْرِكتِ حَتَّى يُومِن (سورة البقره) اورشرک والی عورتوں سے نکاح نہ کرو جب تک مسلمان نہ ہو جا کیں۔ (کنزالایمان) هسئله مسلمان مرد کا مجوی (آگ کی بوجا کرنیوالی) بت برست سورج بو جن والیٰ متاروں کو پوینے والیٰ ان تمام میں ہے کمی بھی عورت سے نکاخ نہیں ہوگا۔ (بهارشر بعت ج اح ۷) فائده آج کے اس دور بیں اکثر ہمارے مسلم نو جوان کا فرہ ومشر کہ مورتوں سے نکاح کرتے ہیں اور نکاح کے بعد انہیں مسلمان بناتے ہیں۔ بینهایت ہی غلط طریقہ ہے اورشریعت میں حرام ہے۔اوّل تو فکاح بی ٹیس ہوتا کیونکہ نکاح کے وقت تک اڑکی کفر

رِ قَائم تھی لہذا سرے سے نکاح بی نہ ہوا۔ پہلے اے ملمان کیا جائے چر نکاح کیا

یا در کھئے! کا فرومشرک مورت ہے مسلمان کر کے نکاح کرنا جائز تو ہے لیکن ہیہ کوئی فرض یا داجب نہیں۔ بلکہ بعض روایتوں کےمطابق حضورا کرم مضحقیم نے اسے پیند بھی جمیں فرمایا۔اس کی بہت ی وجوہات علاء کرام نے بیان فرمائی ہیں۔جن میں

جس نومسلم عورت سے آپ نے شادی کی اگر چہوہ مسلمان ہوگئی کیکن اس کے سارے میکے والے کا فر ہیں اور اب چونکہ وہ آپ کے رشتے وار بن چکے ہیں۔ TO THE SECOND OF THE SECOND OF

اس لئے آپ کی عورت اور خود آپ کوان سے تعلقات رکھنے پڑتے ہیں اور پھر آگے چل کر مختلف بُرائیاں جنم لیتی ہے اور نئے نئے اختلافات پیدا ہوتے ہیں۔

2) عورت كے نومسلم ہونے كى وجد سے اولادوں كى تربيت خالص اسلامى دھنگ ينبيس ہوياتى بـــ

3) اگر مسلمان مرد کا فرلژ کیوں سے نکاح کریں سے تو کنوری مسلم لڑکیوں کی تعداد میں اضافہ ہوگا۔ مسلم لڑکیوں کی تعداد میں اضافہ ہوگا۔ مسلم لڑکوں کی قلت ہونے لگے گی اور مسلم لڑکیوں کو بڑی عمر تک کنواری زندگی نئی ٹی برائیوں کے جنم کا سبب بنے گئے۔
گئے۔

4) دین اسلام میں مشر کا نہ رسموں کا رواج پڑے گا۔

اس طرح کی پینکڑوں باتیں ہیں جنہیں بیان کرناممکن نہیں۔ حاصل یہ کہ کافرہ ومشر کہ لڑکی یا عورت سے نکاح نہ کرے بہی بہتر ہے اس سے دین و دنیا کا بڑا نقصان ہے۔ ای لئے اللہ تعالیٰ نے جہاں مشرک عورتوں کو مسلمان کر کے نکاح کی اجازت دی وہیں مؤمن لونڈی سے نکاح کو زیادہ بہتر بتایا بہ نسبت اس کے کہ مشرکہ و کافرہ عورت سے نکاح کیا جائے۔

آ کشو مسلمان لڑکے غیر مسلم لڑکی ہے محبت کرتے ہیں۔ مسلمان لڑکے سے
پہلے محبت اور پھر شادی کرنے والی لڑکیاں اکثر ساتھ نہیں نبھاتی ہیں اور ذرای ان بن
ہوجانے پر' ہندوعیسائی و مسلم' تفریق کا بھیڑا کھڑا کرنے کی کوشش کرتی ہیں۔لیکن
جوعورت یالڑکی پہلے اسلام سے متاثر ہوئی اسے پیار و محبت یا شادی کی لا کے نبیری تھی اور
اسے دین اسلام پر قائم ہوئے ایک عوصہ گزرگیا۔ ایسی لڑکی یا عورت سے ضرور نکاح
کرلینا چاہے تا کہ اسلام تبول کرنے پر کنوارگی کی سزا کا طعنداسے غیر مسلم ندویں۔

اسٹ کی سیال کے اسلام تبول کرنے پر کنوارگی کی سزا کا طعنداسے غیر مسلم ندویں۔



بدمذ ہموں سے نکاح جائز نہیں

بدند بهب اوراس طرح کے فرتوں سے نکاح کرنے کے متعلق امام عشق ومحبت' عظیم البرکت' بالامنزلت' مجدد دین وملت' اعلیٰ حضرت الثاو امام احمد رضا خاں بم لطبیعے اپنی ملفوظات میں ارشاد فرماتے ہیں۔

''سنی مرد یا عورت کا رافعنی و بابی دیوبندی نیچری قادیانی کیکر الوی جند جمله مرتدین بین ان کے مردیا عورت سے نکاح نبین ہوگا۔ اگر نکاح کیا تو نکاح ندہوگر زنا خالص ہوگا۔ اوراد لادولد الزنا (زناسے پیداشدہ کہلائے گی)

فآویٰعالمگیری میں ہے۔

لايجوز نكاح المرتب مع مسلمة ولا كافرة اصلية ولا مرتبة وكذا لايجوز نكاح المرتبة مع احد (الملفوظ - ٢٥٥٥)

اکثر ہمارے کچھ کم عقل نامجھ کی مسلمان جنہیں دین کی معلومات وائیان کی اہمیت معلوم نہیں ہوتی وہ وہابیوں سے آپس میں رشتے جوڑتے ہیں۔ پکھ بدنسیب سب پکھ جاننے کے باوجود بھی وہابیوں سے آپس میں رشتے قائم کرتے ہیں' پکھ کی مسلمات خیال کرتے ہیں کہ وہابی عقیدے کی لڑکی اپنے گھر بیاہ کر لے آؤ پھر وہ ہمارے ماحل میں رہ کرخود بخود بی موجائے گی۔

THE THE SEC IN LOSE YOU

اقل قرید نکاح بی نہیں ہوتا کیونکہ جس دقت نکاح ہوااس دقت لڑکاسی اورلڑکی وہائی عقیدے پر قائم تھی۔ لبندا سرے سے نکاح بی نہیں ہوا سیننگر وں جگہ تو بید یکھا گیا ہے کہ کسی می نے وہائی گھر انے میں بیسوچ کررشتہ کیا کہ ہم کسی طرح سمجھا بجھا کر اور اپنا اپنے ماحول میں رکھ کر انہیں وہائی سے نکھی العقیدہ بنادیں کے لیکن وہ سمجھا کرتی بنا پاتے اس سے پہلے بی ان وہائی رشتے داروں نے انہیں بی پچھ ذیادہ سمجھا دیا اور اپنا ہم خیال بنا کرمعا ذاللہ!

سن سے وہائی بنا ڈالا۔ ساری ہوشیاری دھری کی دھری رہ گئی اور دین و دنیا دونوں ہی برباد ہوگئے۔ یہ بات ہمیشہ یا در کھئے کہا یسے تنص کو سمجھایا جاسکتا ہے جو وہابیوں کے بارے میں حقیقت سے واقفیت نہیں رکھتا۔ لیکن ایسے تنص کو سمجھا پاناممکن نہیں جوسب چھھ جانتا اور مجھتا ہے۔

علاء دیوبند (وہابیوں) کی حضور اکرم منطیحیّی ا 'انبیاء کرام' بزرگان دین کی شان اقدس میں گستاخیوں کو بچھتا ہے ان کی کتابوں میں وہ سب گستا خانہ عبارتوں کو پڑھتا ہے لیکن ان سب کے باوجود یمی کہتا ہے کہ بیر (وہابی) تو بڑے اچھے لوگ ہیں انہیں برائہیں کہنا جا ہے۔ایسے لوگوں کو بھمایا تاہمار ہے بس میں ٹہیں۔

الله تعالی ایسے بی لوگوں کے متعلق ارشاد فرما تا ہے۔

خَتَمَ اللهُ عَلَى تُلُوبِهِمْ وَعَلَى سَمْعِهِمْ وَعَلَى أَبْصَارِهِمْ غِشَاوَةٌ وَلَهُمْ عَلَى أَبْصَارِهِمْ غِشَاوَةٌ وَلَهُمْ عَذَابٌ عَظِيْم - (مورة القرة ٤٠)

ترجمہ اللہ نے ان کے دلوں پراور کا نوں پرمہر کردی اور ان کی آئکھوں پر گھٹا ٹوپ ہےاور ان کیلیے بڑاعذاب۔ (کنز الایمان)

لہذا ضروری ہے کہا ہے لوگوں ہے کہ جن کے دلوں پر اللہ نے مہر لگادی ہوان سے رشتے قائم نہ کئے جائیں ۔ورنہ شادی شادی نہ ہوکر محض زنا کاری رہ جائے گی۔

THE FT TO THE SERVICE OF THE LUIT YOU

الحمد لله! آج دنيا يس ني لزكول اورلز كيول كي كوئي كي نبين أورا نشاء الله قيامت تک اہلسنّت بڑی تعداد میں شان وشوکت کے ساتھ قائم رہیں گے۔

جنتي فرقه

حفرت عبداللدابن عمر فالفهاس روايت ب كهفيب دال ني سيد عالم نورمجسم مطفورة في عنب كي خرد يته وعد ارشاد فرمايا:

واك بني اسرائيل تفرقت على ثنتين وسبعين ملة وتفترق امتي على ثلاث وسبعين ملة كلهم في النار الاملة واحدة قالوا من هي يارسول الله؟ قال ما انا عليه واصحابي_

ترجمه بیشک قوم بنی اسرائیل بهتر فرقول میں بٹ گئی اور میری امت تہتر فرقوں میں بٹ جائے گی سب کے سب جہنمی ہوں گے صرف ایک فرقہ جنتی ہوگا۔ صحابہ كرام تْخَالْلْتِيمَ نْهُ عُرْضُ كِيا يارسول الله مِنْتُحَاتِيمَ إِوهِ جِنْتِي فرقه كون ساموگا؟ سركار دوعالم مَشْرِيَةً نِي أَرْثَادِفُرِ ما يا جومير إورمير إصحابه كي عقيد بربوگا-

(ترمذي جهاب ٢١٦ ايواب الايمان مديث ٥٣٧)

الحمد لله! بيتك وه جنتي فرقد المسنّت وجماعت كيسوا كوئي ثبين _ كيونكه بم سي الله رب العزت وحصورا كرم منطق ين كمراتب وعقمت كے اور صحاب كرام و بزرگان وین کی شان وعظمت کے دلول سے مانے والے میں اور الحمدللد! ہم ان بی کے عقيدوں پر قائم بيں - ہم سنوں كاعقيده ہے كه يه تمام فرقه مثلاً روافض وباني تبليغي، د يو بندی ٔ مودودی نیچری ٔ چکڑ الوی ٔ قادیانی۔وغیرہ سب کےسب گمراہ بدرین ٔ کا فرو مرتد وین اسلام سے پھرے ہوئے منافقین ہیں۔

آج زیادہ ترلوگ ئنی وہابی کے اس اختلاف کو چندمولویوں کا جھڑ اسجھتے ہیں یا پھر فاتخۂ عرک میلا دو نیاز کا جھگڑ آسیجھتے ہیں۔ یقیناً میان کی بہت بڑی غلط بنی ہے۔

TELLES TO THE SEAL CENTRAL TO خدا کوتم اہم سنیوں کا وہابیوں سے صرف انہیں باتوں براختلاف نہیں ہے۔ بلکہ ہم المنتكاو بايول عصرف اورصرف البات يربنيادى اختلاف بكدان وبايول کے علماء و پیشواؤں نے اپنی کتابوں اور تحریروں میں اللہ رب العزت وحضورِ اکرم مِنْ اللَّهُ اورانبیاء کرام محلبهٔ کرام و بزرگان دین کی شان اقدس پس گستاخیال کلمیس اوران کی شان وعظمت کا نداق اڑ ایا اورموجودہ و ہائی ایسے ہی جاہل علاء کوا پنابزرگ و پیشوا ہانتے ہیں اور انہیں کی تعلیمات وعقائد باطلہ کود نیا بھر میں پھیلاتے پھرتے ہیں یا کم از کم انہیں مسلمان سمجھتے ہیں۔ جارايروردگارعز وجل ارشادفرما تا ہے۔ (سورة بني اسرائيل ا ٢) يَوْمَ نَدُعُوا كُلَّ أَنَاسَ بِأَمَامِهِمْ ترجمہ جس دن ہم ہر جماعت کوان کے امام (پیشوا) کے ساتھ بلا کمیں گے۔ (كنزالايمان) اب ہم آ ب کے سامنے ان لوگوں کے عقائد انہیں کی کتابوں ہے پیش کر "رب میں جے بڑھ کرآپ خود ہی فیصلہ کیجئے کہ کیا ایس باتیں کہنے والے بیلوگ مسلمان كهلان كاحق ركمت بين؟ كيابيمسلمان كهلانے كوائق بين يانبين؟ فيصله

\$....\$....\$

اب آپ کے ہاتھ میں ہے۔

TER THE TER TENT I BILLIST

بدمذهبول كيعقائد

ہندوستان میں وہائی جماعت کی بنیاد رکھنے والے مولوی اسلمیل دہلوی اپنی کتاب بنام'' تقویۃ الا کمان'' جو بقول وہا ہیوں کے ہندوستان میں قرآن کے بعد سب سے زیادہ پڑھی جانے والی کتاب ہے۔

اس میں لکھتے ہیں کہ

جوکوئی (سمی بزرگ کی) نیاز کرے سمی بزرگ کواللہ تعالیٰ کی بارگاہ میں سفارش کرنے والاسمجھے تو بیشرک ہے اور وہ خض اور ابوجہل شرک میں برابر ہیں۔ (تقوية الايمان ص٢٠ مطبوعه الدارالسلفيه ٦٨٬ اے حضرت فيرلس مفيظ الدين روڈ بايم كله ممبئ (^ ****

یقین جان لیما چاہیے کہ ہرمخلوق خواہ چھوٹی ہویا پڑی اللہ کی شان کے آگے پهمارے بھی زیادہ ذلیل ہیں۔ (تقوية الايمان ص٣٠) د نیا میں سب گنهگاروں نے گناہ کئے ہیں۔ جیسے فرعون ہامان شیطان جتنے

گناہ ان سب گنبگاروں ہے ہوئے ہیں اگر کوئی آ دمی تمام دنیا کے گنبگاروں کے برابر گناہ کر کے لیکن شرک سے یاک ہوتو جتنے اس کے گناہ ہیں۔اللہ تعالیٰ اس پر اتنی ہی بخشش كريكايه (تقوية الايمان ص٧٢)

72 77 78 950 (K. 126) C الله کے مر (مکاری) ہے ڈرنا جا ہے کہ بعض وقت بندہ شرک میں پڑا ہوتا (4 اور بتوں سے مرادیں مانگتا ہے اور اللہ اس کے بہلانے کیلئے اس کی مرادیں پوری کرتا (تقوية الإيمان ص٧٤) -ج تمام انبیاء اللہ کے بےبس بندے ہیں اور ہمارے بھائی ہیں۔اللہ نے (5 (تقوية الايمان ص ٩٩) انہیں بڑائی دی اس لئے وہ ہمارے بڑے بھائی ہیں۔ حضورا كرم مضَّا عَلَيْهُمْ مركزه من السكَّة -(تقوية الايمان ص٠٠١) (6 اس کتاب تقوییۃ الا بمان کے متعلق دہابیوں کے شیخ العلماء ومحدث مولوی رشیداح گنگوی اینایک فتوے میں لکھتے ہیں کہ '' كمّاب تقوية الايمان كوايئ كهر مين ركهنا اور پرُ هناعين اسلام ہے''۔ (فآويٰ رشيدييص • ٨مطبوعه مكتبه تقانوي شهرديو بند ُ ضلع سهار نپوريو _ يي) لین جس کے گھریس میر کتاب ہے وہی مسلمان ہے اور جس کے گھر میں مید كتاب نيس وه اسلام سے خارج ہے۔ (معاد اللہ) كيونكه عين اسلام كا يمي مطلب انهی مولوی اسلعیل د ہلوی کی ایک اور کتاب "صراط ستقیم" بے۔اس میں لکھتے نماز میں حضورا کرم م منتظ کو آیا گا خیال لا ناایے گدھے اور تیل کے خیال میں ڈوب جانے سے بدتر ہے۔ (صراطمتنقیم ۱۸مطبوعه اداره الرشید دیوبند صلع سهار نپوریویی) وہابیوں کے ایک دوسرے عالم جنہیں وہائی حضرات ججة الاسلام كہتے نہيں تھکتے۔ جناب مولوی قاسم نا نوتوی ہیں'جن کو مدرسہ دیو بند کا بانی بتایا جاتا ہے۔ اپنی كتاب" تحذيرالناس" ميں لكھتے ہيں كہ

TERESTA PROPERTY (BILLIST YE بلفرض حضور مططَّعَ الآخياء كي بعد بھي كوئي نبي آجائے تو بھي حضور كي خاتميت ميں (1 کوئی فرق نہآئے گا۔ (تخذيرالناس ماامطبوعه مكتبه فيض جامع مجدد يوبنديو_ يي) امتی عمل میں انبیاء سے بطاہر مسادی ہوجاتے ہیں اور بسا اوقات بڑھ بھی مائے ہیں۔ (تحذیرالناسص۵) وہابیوں کے استاذ العلماء مولوی رشید احمد کشکوہی اپنی کتاب میں اپنا خبیث عقیدہ بیان کرتے ہوئے لکھتے ہیں کہ جو صحابه کرام نگانلیم کوکافر کیروه سنت جماعت سے خارج نه ہوگا۔ (لیمی صحابہ کو کا فر کہنے والا چخص مسلمان ہی رہے گا) (فنادى رشيدىيص ١٣٣ مطبوعه تفالوى ديوبنديو_ يي) محرم مين اوام حسين بنائظ كي شهادت كابيان كرنا، سبيل لكانا شربت يلانا (2 اليے كامول ميں چنده دينابيسب حرام ئے۔ (فناویٰ رشید بیص ۱۳۹) ای کتاب میں آ گے ایک جگداس کے برعکس لکھا کہ ہندد جوسودی (بیاج) کے روپے سے بیاؤلگاتے ہیں اس کا یافی مسلمان کو پیناجائزے_ (فآوڭارشدىيص٧٥٥) کو اکھانا ٹواپ ہے۔ (فآويٰ رشيد پيص ۵۹۷) انہیں رشید احمہ گنگوہی کے شاگرد اور دیو بندی جماعت کے ایک بڑے عالم مولوی خلیل احمد انبیٹھوی نے اسیخ استاد کنگوہی کی اجازت اور دیکھیریکھ میں'' براہین قاطعه "نا في ايك كتاب لكسى _ آية ويصف اس من انهول في كيا كل كلايا ب-لكھتے ہیں۔ حضور منظور المسترياده علم شيطان اور ملك الموت كوب سيطان كوزياده علم ہونا قرآن سے ثابت ہے جبکہ حضور کاعلم قرآن سے ثابت نہیں جو شیطان سے

عادى كارى كاركار زیادہ علم حضور کا ثابت کرے وہ مشرک ہے۔ (براین قاطعه ۵۵ مطبوعه کتب خاندامداد بید بوبند بول) (برابن قاطعه ص ۲۷۳) الله تعالى جھوٹ بولٽا ہے۔ (2 حضورِ اكرم مِشْغَوَيْتُم كاميلا دمنانا كنهيا (ہندوؤں كے ديوكرش) كے جنم دن (3 منانے کی طرح ہے بلکہ اس سے بھی بدتر ہے۔ (براین قاطعه ۱۵۲) مدرسدد بوبند کی عظمت الله تعالی کی بارگاہ میں بہت ہے۔حضور ملتے الله تعالی کے (4 اُرووزبان مدرسدد بوبند میں آ کرعلاء دیوبند ہے کی ہے۔ (براہین قاطعہ سب) حضور مطفی این قاطعه می ایم می ایم می ایم این قاطعه می ۵۵) وہاپیوں ٔ دیوبندیوں کے بزرگ و پیشوا مولوی محمود الحن نے اپنی ایک کتاب میں لکھ مارا کہ

1) جھوٹ ظلم وستم نتمام برائیاں (مثلاً زنا 'چوری' غیبت' مکاری وغیرہ) کرنا الله تعالی کیلیے کوئی عیب نہیں اور نہ ہی ان کاموں کی وجہ سے اس کی ذات میں کوئی نقصان آسکتا ہے۔ (جہدار تقل جاس 22)

اب آ ہے! وہائی تبلیغی جماعت کے حکیم الامت و مجدد مولوی اشرف علی تھانوی کی تعلیمات کو ملاحظہ فرمائیے۔مولوی اشرف علی تھانوی اپنی جماعت میں وہ مقام رکھتے ہیں کہ دیو بندیوں کے مزد یک ان کے پاؤں دھوکر پینے سے نجات مل جاتی ہے۔ چنانچے مولوی تھانوی صاحب کے شاگرد اور دیو بندیوں کے بردے ومتند عالم مولوی مجمع عاش البی میر شی اپنی کتاب میں تکھتے ہیں۔

''واللّٰدالعظیم مولا نا تھانوی کے چاؤں دھوکر پینا نجات اخروی کا سبب ہے۔ (تذکرۃ الرشیدج اص۱۱۱ مطبوعہ شخ زکریامفتی اسٹریٹ سہار نپور ٰیو۔ پی) بہر صال مولوی اشرف علی تھا نوی اپنے ایک رسالے میں لکھتے ہیں ۔

ا نادی کے احکام کے مطابق کے اس میں صفور ہی کا کیا کمال ایساعلم عیب قو ہرکی کو بچوں یا گلوں بلکہ تمام جانوروں تک دبش حاصل ہے۔

(حفظ الائمان ٨ مطبوعه دارالكتاب ديوبنديو _ پي)

2) انبى مولانا تقانوى كے ايك رسالے ميں ہے كدان كے ايك مريدنے كلمه پڑھا۔"لااله الاالله اشد على دسول الله (معاذ الله) اورائي پيرتھانوى سے خط كے ذريعے سوال پوچھا كەمىر ااس طرح كلمه پڑھنا تيجے ہے انہيں؟

ظاہرہے ہرایک صاحب ایمان یہ ہی کے گا کہ تھا نوی تی کو ایسے مرید کو یہ ہی کھنا چاہیے کہ ایسا کلمہ پڑھو لیکن تھا نوی نے اس کھنا چاہیے کہ ایسان کھی جرت و کے جواب میں اپنے مرید کر چو کھی کھا اسے پڑھ کر ایک عام انسان بھی جیرت و استجاب کے دریا میں غوطہ زن ہوجا تا ہے و تھا ہوی کا جواب پڑھے اور مردھنیے کھے

''اس واقعہ میں تسلی تھی کہ جس کی طرف تم رجوع کرتے ہو۔ وہ بعونہ تعالیٰ تمع سنت ہے''۔ (رسالہ الا مدادص ۳۵ مطبوعہ طبع المدالمان تھانہ بعون ہوں ہی) بیرتھانو کی کا جواب ہے کہ تمہارااس طرح کلمہ پڑھنا جائز ہے تسلی رکھواس کیلیے

ریشان نه دواییا کلمه پژهنا کوئی حرج نہیں رکھتا۔ مریدیچارہ گھبرار ہاتھا' کچھنوف کھا رہاتھا ای لئے پیرتھا نوی کوخط لکھا تھا' گرپیر جی نے ایسانٹخہ تجویز کیا کہ پوری تسلی ہوگئی۔

تھانوی کی ایک فقادے کی کتاب '' بہتی زیور'' ہے جوانہوں نے خاص طور پر خوا تین کیلے کہ سے مرف ایک خوا تین کیلے کہ سے مرف ایک خوا تین کیلے کہ سے مرف ایک مسئلہ ہم یہاں ہیاں کررہے ہیں جو تھانوی کی علمی صلاحیت کی جیتی جا تی تصویر ہے اور ان کے ذہن و فکر کی عکای کرتی ہے۔

المرادی کے احکام کے المحکام کے ا

3) ہاتھ میں کوئی بجس لگی تھی اس کولسی نے زبان سے تین دفعہ چاٹ لیا قو پاک ہوجائے گا مگر چا ٹنامنع ہے۔ (بہنچی زبور ۲ نجاست پاک کرنے کا بیان س ۱۸) مار میں میں اس میں اس کا دور کا بیار کا دور کا نہیں میں کا فید میں

ان سے ملئے یہ ہیں۔مولوی الیاس کا ندھلوئ جوتبلینی جماعت کے بانی وامیر

تھے۔ان کا کہناہے کہ

 حق تعالی (الله تعالی) کی کام کولینانہیں چاہتے ہیں تو چاہے انبیاء بھی کتی کوشش کرلیں تب بھی ذرہ نہیں بال سکتا اوراگر لینا چاہیے تو تم جیسے ضعیف ہے بھی وہ کام لے لیں جو نبیاء ہے بھی نہ ہوسکے۔

(مکا تیب الیاس م عوامطوصادار واشاعت دینیات جمابادی محضرت نظام الدین نی دملی)

لیجے صاحب! اب مولوی الواعلی مودودی کی بھی سنتے چلئے میمولوی الواعلی
مودودی وہ ہیں۔ جنہوں نے بنام جماعت اسلای ایک نئے فرقے کوجنم دیا۔ آج
اس فرقے کی کئی جائز و تا جائز اولا ویں وجود میں آچکی ہیں جوایس آئی کیم اور ایس
آئی او کے نام سے جانی جاتی ہیں۔ مودودی کا اپنی ان اولا دوں کے نام کیا فرمان ہے وہ کا مظام خطر فرما ہے۔ کی تھے ہیں۔

1) تم کوخدا کاعلم حاصل کرنے کی ضرورت ہے تم جاننا چاہتے ہو کہ خدا کی مرضی کے مطابق زندگی بسر کرنے کا طریقہ کیا ہے۔ تمہارے پاس خودان چیزوں کے معلوم کرنے کا کوئی ذریعی بیس ہے۔ اب تمہارا فرض ہے کہ خدا کے سچے پیٹیم کی تلاش کرو۔ اس تناش میں تم کونہایت ہی ہوشیاری اور سجھ یوجھ سے کام لینا چاہیے۔ کیونکدا گرسی غلط آ دمی کو تم نے پیٹیم سمجھ لیا تو وہ تمہیں غلط راستہ پرلگا دے گا۔ مگر جب تمہیں خوب جانج کی خلاق خض خدا کا سچا پیٹیم ہے واس پرتم جانج کی دال شخص خدا کا سچا پیٹیم ہے تواس پرتم کو پورااعتاد کرنا چاہیے اور اس کے ہر حکم کی اطاعت کرنی چاہیے۔

(رساله دینیات ٔ ص سیم مطبوعه مرکزی مکتبه اسلام ٔ نی د ہلی)

CERTURE SERVICE TO SER

اں پورے مضمون میں مودودی نے جوعقیدہ دینے کی کوشش کی ہے۔اس پر تبھرہ کرنے کیلئے کافی صفحات در کار ہیں۔ مختصر یہ کہ مودودی کے نزدیک اس دور میں بھی خدا کاسچا پیغیمر تلاش کرنے کی ضرورت ہے اور میتلاش فرض ہے۔

آ ہے مودودی اوران کی جماعت کی نخوت فکر کا اندازہ لگانے کیلئے پہنظر پہنجی

ملاحظہ فرمایئے۔

2) جولوگ حاجتیں طلب کرنے کیلئے اجمیر (خواج غریب نواز مسطیلیہ کی مزار پر) پاسالارمسعود (غازی مجسطیہ) کی قبر پاایسے ہی دوسرے مقامات پر جاتے ہیں وہ اتنا بڑا گناہ کرتے ہیں کہ آل اور زنا بھی اس سے کمتر ہے۔

(تجدید داحیاء دین ص۴ ۴ مطبوعه مرکزی مکتبه اسلامی نئی دیلی)

یمی مولوی ابواعلیٰ مودودی اپنی ایک ادر کتاب میں اپنی اعلیٰ درجہ کی بکواس

لکھتے ہیں۔ان کا پیمنفر داسلوب بھی ملاحظ فرمایئے ککھتے ہیں۔

3) سب جگداللہ کے رسول اللہ کی کتابیں لے کر آئے ہیں اور بہت ممکن ہے کہ بدھ کرشن ٔ رام ٔ کفو سٹس ٔ زردشت ٔ مانی 'ستر اطاقیاً غورث وغیر ہم انہی رسولوں میں سے ہوں۔ (جمیمات جام ۱۳۳ مطبوعہ مرکزی مکتبہ اسلامی ڈی دیل)



SERVICE SERVIC

حارااعلان

ہم نے یہاں جس قدر بھی وہائی جماعت و یو بندی جماعت ہلینی جماعت و جماعت اسلامی وغیرہ سے متعلق حوالے پیش کئے ہیں وہ انہیں کے علاء کی کتابوں سے نقل کئے ہیں۔ یا در ہے بیسب کتابیں آج بھی چھپ رہی ہیں اور ان کے مدرسوں و کتب خانوں برآسانی سے ل جاتی ہیں۔

جارا عام اعلان ہے کہ اگر کوئی صاحب ان باتوں کو یا حوالوں میں ہے کسی ایک حوالے کو بھی غلط ثابت کردیں تو انہیں بچاس ہزار (۵۰۰۰۰) روپے انعام دیے جاکیں گے۔

دعویٰ میں سیج ہوتو دلیل لاؤ

ہمارارب جل جلالہ ارشاد قرما تا ہے۔ میں میں مور ور سربرو در در یودو در اللہ در اللہ

قُلْ هَاتُوا بُرْهَانَكُمْ إِنْ كُنتُمْ صِيقِين (سورة لل ١٢)

جمه تم فرماؤ که این دلیل لاؤاگرتم سچ ہو۔ (کنزالایمان)

ادرایک دوسری جگدار شادر بانی بے ۔ فَاذْلُمْ يَاتُواْ بِالشَّهَدَآءِ فَأَوْلِيْكَ عِنْدَ اللهِ هُمُ الْكَذِبُونَ (سورة نور١٣)

مه جب ثبوت ندلا سكة والله كيزويك وي جمول بير

(كنزالايمان)

وہابیوں کے ان عقا کد کی بناء پرعلماء حرمین شریفین (مکہ معظمہ و مدینہ منورہ کے جلیل القدرعلاء دین) اورتمام علماء اہلسنّت نے وہا بیوں کو کافر مگراہ 'بددین' مرمّد اور منافق قراردیا۔علاء کرام ان لوگوں کے بارے میں ارشاد فرماتے ہیں۔

من شك في كفرهم وعذابهم فقل كغر

جیان (وہابیوں) کے کفریش اوران کے عذاب میں شک کر ہے وہ خود کا ف (بحواله حسام الحرمين على مخرالكفر والمين)

حضرت ابو ہریرہ مضرت انس بن مالک مضرت عبداللہ بن عمر اور حضرت جار فَقُالُتُ سے روایت ہے کہ حضورا کرم مضافی آنے ارشادفر مایا:

ان مرضوا فلاتمودوهم وان ماتوا فلا تشهدوهم ران لقيتموهم فلا تسلموا عليهم ولاتجالسوهم ولاتشاربوهم ولاتراكلوهم ولاتناكحوهم ولا تصلوا عليهم والا تصلوا معهم - (ملم ابوداؤوابن اج مكلوة عقل ابن حبان وغيره) ترجمه اگر بدند بب بددین متانق بیار پڑے تو ان کو پوچھنے نہ جاؤ اوراگر وہ مر جائے توان کے جنازے پر نہ جاؤ۔ان کوسلام نہ کرو۔ان کے پاس نہ بیٹھو۔ان کے ساتھ کھانا نہ کھاؤنہ ہونہ ہی ان کے ساتھ شادی کرواور ندان کے ساتھ نمازیڑھو۔

گمراہول سے دور بھا گو

حضور نی کریم مشیقی ارشادفر ماتے ہیں۔

اياكم واياهم لايضلونكم ولايفتنونكم (مىلم ترىف)

ترجمہ مسلم اہوں سے دور بھا گوانہیں اپنے سے دور کروکہیں وہتمہیں بہکا نہ دیں



گىتاخ كون؟

حفرت ابن عدی ڈٹائٹنز حضرت مولی علی ڈٹائٹنز ہے روایت کرتے ہیں کہ حضور اقدیں مِشْنِیکَ آنے ارشاد فر مایا:

من لم يعرف عترتي والانصار والعرب نهو لاحدى ثلث اما منافق واما الزانية واما امرو حملته بغير طهر

(بین بحوالدارادة الادب لفاض النسب م ۲ من ازاعلی حضرت برانسید) ترجمه جومیری اور میری آل کی عزت نه کرے اور میرے انصاری صحابه کا اور عرب کے مسلمانوں کا تن نه بیچانے وہ تین حال سے خالی نہیں۔ یا تو وہ منافق ہے۔ یا

عرب کے مسلمانوں کا کن نہ پیچائے وہ مین حال سے خالی ہیں۔ یا تو حرام کی اولاد ہے۔یاجیضی بچہ(ماحواری کی حالت میں جنا ہوا بچہ)

بدمذهب كي تعظيم ندكرو

ام المومنين حضرت عائشه صديقه والتحواروايت كرتى بين كه حضور نبي كريم مضاعقة نے ارشاد فرمایا:

من وقر صاحب بدعة فقد اعان على هدم الاسلام

(ابن عسا کرابولیم طبرانی بحواله ازالة العاد بعجد الکداند عن کلاب الغاد ص اسم) ترجمه جس نے کسی بددین کی توقیر (تعظیم) کی اس نے اسلام کے ڈھادیے میں مددی _

بدند ہوں کوحضرت علی زالنیئ نے زندہ جلاویا

------حضرت عکرمہ زنامند ہے روایت ہے کہ

حضرت مولی علی مشکل کشا و فاتین کی خدمت میں چند بددین گستاخ چیش کئے

THE THE SERVICE OF TH گئے تو آپ نے انہیں زندہ ہی جلا دیا۔ جب بی خبر حصرت ابن عباس ڈاٹٹیز کو پیٹی تو انہوں نے فرمایا:''اگر میں ہوتا تو انہیں نہ جلاتا کیونکہ رسول اکرم مِشْتَوَیْقِ نے کسی کو جلانے سے منع فرمایا ہے بلکدانہیں قتل کرتا کدرسول الله مطفی ایج استاد فرمایا جواپنا دین تبدیل کرےائے آل کردو''۔

(بخاری چس باب ۱۰۲۹ مدید ۱۸۱۴ تر ذی ج ابا ۹۸۳ مدید ۱۳۸۹)

منافقو ل اور كافرول يرتخق كاحكم

اللّدرب العزت ارشادفر ما تاہے۔

يَأَيُّهَا النَّبِّي جَاهِدِ الْكُفَّارَ وَالْمُنْفِقِينَ وَاغْلُظْ عَلَيْهُمْ - (سورة توبهـ) ترجمه اےغیب کی خبر دینے والے (نبی) جہاد فرماؤ کا فروں اور منافقوں پر اور ان رسخی کرو۔ (کنزالایمان)

اور فرما تا ہے اللہ رب تبارک و تعالی _

وَمَنْ يَّتَوَلَّهُو مِنْكُو فَإِنَّهُ مِنْهُمْ إِنَّ اللَّهَ لَايَهُدِي الْقُوْمَ الظَّلِيمِينَ

(سورة ما ئدوا۵)

اورتم میں جوکوئی ان ہے دوی رکھے گا تو وہ انہیں میں سے ہے۔ بیٹک اللہ بےانصافوں کوراہ نہیں دیتا۔ (کنزالایمان)

اورفرما تا ہےرب العزت

وَأَتَّبَعَ هَوْنُهُ فَمَثَلُهُ ۚ كَمَثَلُ الْكُلْبِ إِنْ تَحْمِلُ عَلَيْهِ يِلْهَثُ أَوْ تُدُّرُّكُهُ يَلْهَثُ ذَٰلِكَ مَثَلُ الْقُوْمِ الَّذِينَ كَنَّاءُوْا بِالْتِعَدَ (سورة الاعراف ٢١١)

ترجمہ اور (جو) اپنی خواہش کا تالع ہوا تو اس کا حال کتے کی طرح ہے تو اس پر

حمله كرية زبان نكالے اور چيوڙ دي تو زبان نكالے۔ بيحال ہے ان كا جنہوں نے

بدند ہب جہنی کتے ہیں

حضرت ابوامامه خالفه سروايت م كدرسول ما النيكانية في ارشاد فرمايا:

اصحاب البدع كلاب اهل النار

ترجمه بدندهب جهنيول كے كتے ہيں۔

(وارقطني بحوالدازالة العار بحجر الكرائع عن كلاب الناريص٣٣)

مدیث یاک میں ہے کہ

ان الله لایستحی من الحق ایحب احد کھ ان تکون کریمته فراش کلب فکرهتموة لیس لنا مثل السوء التی صارت فراش مبتدع کالتی کانت فراش الکلب (بحوالدازالة العار بعجر الکراند عن کلاب الدارس ۳۳۳) ترجمہ بینک اللہ ق بات فرمانے میں نہیں شرما تا کیا تم میں کی کو پندا آتا ہے کہ اس کی بٹی یا بہن کی کتے کے یتی جھیتم اے براجانو کے دمارے لئے بریمش نہیں ہودری وی وہ ای بی ہے جھے کی کتے کے تقرف میں آئی۔

لمحفكر

اب بھی کیا کوئی غیرت مندانسان اپنی بٹی ایسے کافروں' منافقوں کے یہاں ویالپند کرےگا؟

اب بھی کیا کوئی غلام رسول اپنے آقاد مولی منتظ بھنے کے ان گتاخوں سے دشتہ جوڑنا جا ہے گا؟

ہمارا بیرموال ان لوگوں سے ہے جن میں غیرت کا ذراہے بھی حصہ باتی ہو۔ جنہیں دولت سے زیادہ اللہ درسول کی خوشنودی چاہیے ادر رہے وہ بوگ جو کسی دیاوی

شادی کے احمال یا پھر مال و دولت سے متاثر ہوکر وہا بیوں سے رشتے قائم کئے اس ہوئے ہیں یار شنے داری کرنا چاہتے ہیں تو ان کے متعلق زیادہ پھی کہنا فضول ہے۔ وہ اپنی اس ہوں وال کی میں جتنی دور جانا چاہیں 'چلے جا کیں۔ اب اسلام کا کوئی قانون۔ شریعت کی کوئی دفع کوئی زنجیران کے اس اسلے ہوئے قدم کوئییں روک سکتے لیکن شریعت کی کوئی دفع کوئی ذریعے بھینا ایک دن اللہ اور اس کے رسول کومند دکھانا ہے۔ ہاں! ہاں! ہیں اور دیا در ہے بھینا ایک دن اللہ اور اس کے رسول کومند دکھانا ہے۔

نکاح کس سے کیاجائے؟

الجھی برادری میں رشتہ کرو

تخمیرو النطفکم وانکحوا لاکفاء وانکحوا ایمهم فان النساء یلدن اشباه اخوانهن واخوتهن - (بیقی عالم این این اخوانهن واخوتهن - (بیقی عالم این این این النوم ۲۰ این نطفول کیلئے (شادی کیلئے) اچھی جگہ تلاش کرو کفو (یعنی برادری) شی بیاه ہواور کفو سے بیاه کرلاؤ کر عور تیل این کنبے کے مشابہ یجے پیدا کرتی ہیں ۔

فائده

اس حدیث پاک سے دویا تیں معلوم ہوئیں۔ایک تو یہ کہ شادی کیلئے اچھی جگہ تاتی کی جائے اوردوسرا یہ کہا ہے گئے (برادری) میں نکاح کرنا بہتر ہے۔اپی برادری میں نکاح کرنا بہتر ہے۔اپی برادری کے برت سے فائدے ہیں۔مثلاً اولا داپی برادری کے لوگوں کے مشابہ بھیا ہوگی جس کی وجہ سے دوسر بےلوگ دیکھتے ہی بیجان جا تیں گے کہ برادری کے میں تیجہ سے کہ برادری کے میں تیجہ سے کہ برادری

الماكود ٥٠ كالماكود الماكود ١٤٠١ كالماكود ١٤٠١ كالماكود الماكود الماكو ک غریب لڑ کیوں کی جلد ہے جلد شادی ہو جائے گی۔ تیسرا فائدہ پیہے کہ شادی میں اخراجات کم ہوں گے۔ چوتھا فائدہ میہ ہے کہ اپنی بی برادری کی اڑکی ہوتو وہ برادری کے طور طریقے ' گھر کے رہن مہن تہذیب و تھن سے پہلے سے بی واقف ہے۔ البذا گھر میں جھگڑ ہے ونا اتفاقی کا ماحول پیدانہیں ہوگا۔

یا نچواں فائدہ ہیہ ہے کہ برادری کی وہ لڑکیاں جو بہت زیادہ خوبصورت نہیں ہیں ان کی بھی شادی ہوجائے گی۔ا کثر دیکھا گیاہے کہلوگ دوسروں کی برادری ہے خوبصورت اڑی تلاش کر کے بیاہ کر لے آتے ہیں جبکہ ان کے کنبے میں اڑکیاں کنواری رہ جاتی ہیں اور جب بہت ی لؤ کیوں کی طویل عرصے تک شادی نہیں ہو یاتی ہے تو بعض اوقات وہ کی بدمعاش آ وارہ مرد کے ساتھ گھرسے بھاگ جاتی ہے یا چرکسی اور طرح کی مختلف برائیوں میں پھنس جاتی ہے۔ان وجوہات کی بناء پر برادری میں ہی شادی کرنے کو بہتر بتایا گیا ہے اپی جرادری میں کوئی نیک سیرت لڑ کا یا لڑ کی نہ ہوتو دوسری برادری میں بھی شادی کر سکتے ہیں۔

بهترعورت كاانتخاب كرو

حضرت امام محمر بن المعيل بخاری ذاننو روايت کرتے ہیں۔

ما يستحب أن يتخير لنطفه من غير ايجاب

ترجمه مستحب ہے کہا پی نسل کیلئے بہتر ورت چنے الیکن بیرواجب نہیں۔

(بخاری ج۳'یاب۳)

حضرت عائشه و النجاب وايت بكر حضور في كريم مضيَّدَ أن ارشادفر مايا: تخروالنطفكم فانكوا اكفاء وانكحوا اليهمر (ائن مايرُ دارْطَني ما كم يميل)

اي جيم كيلي (يول كا) انتخاب كروكفوين فكاح كرواور كفووالول كونكاح دو_

ایک اور مدیث یس ہے کررسول اگریم مطاع اللہ نے فرمایا:

THE COLL OF THE CASE OF THE CASE OF

اطلبوا مواضع الاكفاء لنطفكم فانما الرجل ربما اشبه اخوالم (الانساح في اماديث الكان الن جم)

ر مد کراپ بختم کیلئے کفو کے مواقع دیکھو کیونکہ بسا اوقات آ دمی اپنے ماموں کے مشایہ ہوتا ہے۔(شکل میں بھی اور کمل میں بھی)

مبدور المبدور المبدوايت بكرهفورني كريم مطيعة أنه ارشادفر مايا:

تخير والنطفكم فأن انساء يلذان اشباه اخوانهن واخواتهن _ (الزادك في فيض القدر رج ٣)

ر جسادی کا سیاتی ہے۔ ترجمہ اپنے تخم کیلئے انتخاب کرو کیونکہ تورتیں بھائی بہنوں کے مشاباولا دہنتی ہیں۔ (لیعنی تنہارا بچیان کی شکل اور کرداریر ہوگا)

حفرت عائشر تفاهيا سروايت بكرهفور في كريم مضيّرَة في ارشاوفر مايا: روجو الاكفاء وترجوا جواالاكفا واختاروا لنطفكم واياكم ولزنج فانه خلق شوه-

راہی میں میں میں ہے۔ ترجمہ ہم پلدے شادی کرواور ہم پلد کو نکاح دواور اپنے بخم کیلئے (عورتوں کا)

انتخاب کرواپنے آپ کوزنگیوں (کالوں) سے بچا کے رکھنا۔

فائده

جب گورے کی کالی رنگ کی عورت سے شادی ہوگی تو اس سے طبعی طور پرنفر ت ہوگی اور نباہ نہ ہو سکے گا اس لئے حدیث میں شنع کیا گیا ہاں وہ کالے مردیا کالی عور تیں جو بااخلاق اور دین دار ہووہ بداخلاق بدرین گوروں سے بہتریں ہیں۔

حضرت انس والني سروايت ہے كه ني كريم مشكر الله في ارشا وفر مايا:

تزوجوا في الحجر الصالح فان العرفق وساس. الحج نبل هم شاري على خدر مايس ق

ترجمہ اچھی نسل میں شادی کرورگ خفیہ اپنا کام کرتی ہے۔



(دارقطنی بحواله: ارادة الا دب لفاضل النسب ص٢٦ أزاعلي حضرت بيلشيله)

اور فرماتے بی جارے پیارے آقاد مولی مطبع اللہ:

اياكم وخضواء الذعن المزاة الحسنا في المزبت السوم

ترجمه محورت وريالى سے بچ اور برى نسل مى خوبصورت مورت ہے۔ (دارقطنى بحوالہ: ارادة الا دب لفاض النسب م٢٧)

فائده

لڑکی کا خوبصورت ہونا ہی کانی نہیں بلکہ خوبی توبہ ہے کہ لڑکی پردہ دار نماز روزے کی پابند ہواس کا خاندان تہذیب وتدن میں ربن مہن میں درست ہواور بالخصوص ن میں العقیدہ ہو۔ اگر آپ نے ابن سب باتوں کا خیال رکھتے ہوئے نکاح کیا تو آپ کی دنیا و آخرت کا نمیاب ہے اور آ کے الی لڑکی کے ذریعے فرماں برداری نمیجی و دنیاوی خوبوں سے بہرور ایک بہتر نسل جنم لیتی ہے۔ چنانچے سرکار دو عالم

مِصْفَاتُهُ نِي مِينِ انْهِينِ بِانُونِ كَاحْكُم ديا ہے۔

خاندانی عورت سے نکاح کرو

حضرت امام محمة غزالي عِلْضِيِّه ارشاد فرمات بين-

" وورت العصفي نسب والى شريف النفس بويديني اليه خاندان سي تعلق ركهتي

ہوجس میں دیا نتداراور نیک بختی پائی جائے۔ کیونکہا یے خاندان کی مورت اپنی اولا د کی تعلیم وتر بیت کا اہتمام کرتی ہے''۔ (احیاءالعلوم ہے)

رشته دارول میں شادی کرو

الناكم في قومه كالمعشب في دارة الله الكبيرة "طراني كبير)

حر ان قرام میں نکاح کرنے والا اپنے گھر گھاس اگانے والے کی طرح

حفرت ابوامامه فالني سروايت بم كم حفور من آن في ارشادفرمايا:

لاتقوم الساعة حتى يتزوج الرجل النبطية ويترك بنت عمد

(طبرانی مجمع الزوائدج ۴)

ترجمہ تیامت اس وقت قائم نہیں ہوگی جب تک کہلوگ غیروں سے شادی نہیں کریں گے اوراپنی چیاز اواولا دکوچھوڑ دیں گے۔

فائده

آ ج کل بیعام رواج ہو چکا ہے کہ قریبی رشتہ دارلز کیوں کو چھوڑ کرلوگ غیروں میں اپنے لڑکوں کو بیا ہتے ہیں۔اپنی قوم میں نکاح کرنے والدا پنے گھر میں سبز ہ لگانے والے کی طرح ہے جیسا کہ او برحدیث میں وارد ہوا ہے۔

<u>چاروجہ سے نکاح کیا جائے</u>

حضرت ابو ہریرہ وحضرت جابر ٹاناتھا ہے روایت ہے کہ حضورا کرم <u>مٹے ک</u>اتیا نے ارشاوفر مایا:

تفكم المرة لا ربع لما ولحسبها وجمالها ولدينها فاظفر بذات (بخارى عمل بدات من الدين - (بخارى عمل بدائل من الدين - (بخارى عمل بدائل من المرتب عورت سے چار چيزوں كى وجہ نكاح كيا جاتا ہے - (1) اس كے مال كسب (2) اس كے مال كسب (4) اور اس كو يندار مونے كسب بيلن قود يندار عورت كو حاصل كر -

ایک روایت جس کے سب رادی معتبر ہیں کہ

معليك بذات الدين والخلق_

The for the season of the seas

ترجمه دين داراور حسن خلق دالي كواي لئے پندكر_

مدیث میں ہے کہ

تنكح المرلة على احدى خصال ثلاث تنكح المراة على مالها. وتنكح المراة على دينها وخلتها فخذ بذات الدين والخلق تربت يمينك. (ابريطي احد برازان حال واقطي عام)

ترجمہ عورت سے تین خصلتوں کی دجہ سے نکاح کیا جاتا ہے(۱) عورت سے اس کے مال کی دجہ سے (۳) اور عورت سے اس کے مال کی دجہ سے (۳) اور عورت سے اس کے خاتی کی دجہ سے ۔پس تیرادا ہنا ہاتھ فاک آلود ہودین دارادرا خلاق والی کو اپنا (ہاتھ خاک آلود ہو نے دالی بات بطور توجہ دلانے کیلئے ہے اُڑا بھلا کہنے کے طور پڑہیں ہے) خاک آلود ہو نے دائی زائش نے سے دوایت ہے گہر سول کریم منظم آتے نے ارشاد فر مایا:

من رزق حسن صورة وخلق زوجه صالحة وسخاء فقد اعطى عطمه (مندالفروس عنماس ویلی)

ترجمہ جس مخض کوحن صورت اور بااخلاق نیک بیوی اور سخاوت کی صفت عطا فرمائی گئی اس کواس کا (جنت کی بغتوں کا پڑھے) حصہ (یااس کی نیکیوں کا پڑھے حصہ دنیا میں بھی) دے دیا گیا۔

فائده

۔۔۔۔۔۔ میہ نینوں صفات بعض دفعہ نیک فخض کواس کےاعمال کےصلہ میں دی جاتی ہیں یا بعض دفعہ اللہ تعالیٰ کی طرف سے فعمت کے طور پر عطا کی جاتی ہیں۔

حفرت ابو ہریرہ 'حضرت عمر اور حضرت ابوحاتم مزنی میں تشاہین سے روایت ہے کہ رسول اکرم منظر کی آنے ارشاد فرمایا کہ جب تمہارے پاس کوئی ایسا فخص آئے ایک روایت میں ہے کہ جب تمہیں کوئی شخص نکاح کاپیغام وے جبکہ تم اس کے اخلاق اوراس دین کو پیند کرتے ہوتواس کو نکاح دے دواگرتم نے ایسانہ کیا تو زیمن پرفتنداور

بهت برا فساد بوگا _______ (الافصاح في احاديث النكاح ابن جمر)

فائده

ان احادیث مبارکہ ہے معلوم ہوا کہ دیندارعورت سے نکاح کرنا فضل ہے۔ دیندارعورت شوہر کی مددگار ہوتی ہے اور تھوڑی روزی پر قناعت کر لیتی ہے۔ اس کے برخلاف دین سے دورعورتیں ناشکر گزار نافرمان اور شوہر کی شکایت دوسروں کے سامنے بیان کرنے والی ہوتی ہیں اور گنا دومصیبت میں جتلا کردیتی ہیں۔

اعلیٰ حضرت امام احمد رضا خال مخطیعیہ '' فقاد کی رضوبیہ'' میں فرماتے ہیں۔ دیندارلوگوں میں شادی کرے کہ بچے پر ٹانا' ماموں کی عادتوں اور حرکتوں کا بھی اثریڈ تاہے''۔ (فاضا دل ۲۰۰۰)

دینداراور بااخلاقعورت سے نکاح کرو

حضور نبي كريم مطفع آيم في ارشادفر مايا:

لاتزوجوا النسآء لحسنهن فعسى حسنهن ان يرديهن ولا تزوجوهن لاموالهن فعسى اموالهن(الخُ)

ترجمہ عورتوں سے ان کے حسن کے سبب شادی نہ کرو ہوسکتا ہے کہ ان کا حسن تمہیں تباہ کردے۔ ندان سے مال کے سبب شادی کرو ہوسکتا ہے کہ ان کا مال تمہیں گنا ہوں میں جتلا کردے۔ بلکہ دین کی وجہ سے نکاح کیا کرو۔ کالی چیٹی بدصورت لونڈی اگردین دار ہوتو بہتر ہے۔ (ابن ماجہ ج) احدے ۱۹۲۲ احیاء العلوم ج)

حضرت الوجريره وللفو سعدوايت م كرسول الله مُنْفَقَق من ارشادفر مايا: تفكح المراة لا رابع لمالها ولحسبها ولجمالها ولدينها فاظفر بذات

المالال الدين تربت يداك (بخاري مسلم الوداؤد ابن ماجه نسائي كماب الكاح) ترجمہ عورت کے ساتھ چار دجہ سے نکاح کیا جاتا ہے۔(۱)اس کے مال کی دجہ ے (۲)اس کے فائدان کی دجہ ہے (۳)اس کے جمال کی دجہ ہے (۲)اس کے وین داری کی وجہ سے تیرے ہاتھ خاک آلود ہوں دین دار سے شادی کر۔

بداخلاق عورت كانقصان

جمة الاسلام حفرت سيدناامام محمة غزالي <u>بخطيطية</u> ارشادفر ماتے ہيں _

"أگركونى عورت خوبصورت توبير كريريز كاروپارسانيس تويزى بلاب بدمزاج عورت ناشکر گزارٔ زبان دراز ہوتی ہے اور مرد پر بے جا حکومت کرتی ہے الی عورت کے ساتھ زندگی بدمزہ ہوجاتی ہے اور دین میں خلل پردتا ہے'۔ (کیمیائے سعادت)

فائده

یا در کھئے!اگرآپ نے صرف الی لڑکی سے نکاح کیا جو مال ودولت (جہز) تو خوب ساتھ لائی اور خوبصورت بھی بہت تھی لیکن دیندار نہیں اور نہ ہی تہذیب و اخلاق کے معاملے میں بہتر تو آپ اس کے ساتھ یقیناً ایک اچھی اور خوشحال زندگی نہیں گز ار یکتے۔ایسی لڑکی کی وجہ ہے گھر میں ہمیشہ دبنی تناؤاور آئے دن گھر میں خانہ جنگی کاماحول بنار ہتا ہے۔ نتیجہ بیر کہ آخر کار ماں باپ سے دور ہونا پڑ جاتا ہے۔

اس لئے جہاں آپ خوبصور تی 'مال ودولت کود کیھتے ہیں ان سب سے زیاد ہ اہم ہے کہ آپ سب سے پہلے لڑکی کا اخلاق اس کا خاندان اور خاص کروہ دیندار ہے یانہیں میضرورد کیھے تب ہی آپ ایک کامیاب زندگی کے مالک بن سکتے ہیں اگر ایک خوبصورت اڑی میں بیخوبیاں نہیں اوراس کے برعس کی بدصورت اڑی میں دینداری ہوتو وہ بدصورت اڑکی اس خوبصورت اڑکی سے بہتر ہے۔ اکثر ہمارے مسلمان بھائی دولت مند فیشن پرست اڑکی پر مرتے ہیں اور دولت کو بہت زیادہ اہمیت دیتے ہیں'

THE SECTION YOU

جبكه دولت سے زیادہ و بنداری کواہمیت دین جا ہے۔

حضورا قدس مصطر المنظمة في ارشاد فرمايا:

''جوکوئی حسن و جمال یا مال و دولت کی خاطر کسی عورت سے نکاح کرے گا تو وہ دونوں سے محروم رہے گا اور جب دین کیلئے نکاح کرے گا تو دونوں مقصد پورے ہوں گے''۔ (کیمیائے سعادت)

صرف خوبصورتى كيليئة نكاح ندكرو

رسول الله مطفي والماكم

"عورت كى طلب دين كيليح بى كرنى جابي جمال كيلي فهين" _

اس کے معنی میہ ہیں کہ صرف خوبصورتی کیلئے نکاح نہ کرے نہ مید کہ خوبصورتی و هورتی ہے کہ خوبصورتی و هورتی ہے ہیں کہ صرف اولا دحاصل کرنا اورسنت پر عمل کرنا ہی کمی مخص کا مقصد ہے خوبصورتی نہیں چا ہتا تو میہ پر ہیزگاری ہے۔ (کیمیائے سعادت) رسول اللہ منظم کوئے نے ارشاد فر مایا:

لاتنكوالمراة لحسنها فعسى حسنها ان يرديها ولاتنكحو المراة لما لها فعسى مالها ان يطغيها والكحوها لدينها فلامة سوداء جرباء ذات دين افضل من امراة حسنها لا ابن لهذ (ابن لجدُ كَابِالرَكَاحَ طُرانَ "بَيْقَ)

ترجمہ عورت ہے اس کے حسن کی وجہ سے نکاح نہ کروہوسکتا ہے اس کا حسن اس کو تباہ کرد سے اور نہ ہی عورت اس کے مال کی وجہ سے نکاح ہوسکتا ہے کہ مال اس کوسر کش کرد سے اور نکاح کرواس ہے اس کی دینداری کی وجہ سے کیونکہ کالی خارثی دین دار

لونڈی اس خوبصورت عورت ہے افضل ہے جودین دار نہ ہو۔ علامہ ابرا ہیم تختی موسطیعے حضرت انس بن مالک بڑائنڈ سے روایت کرتے ہیں

معامداً براتيم في وسطية مطرت أن بن كدرسول الله مطيعة أنه فرمايا:

BELON THE SERVICE YES

جس فحض نے کی عورت ہے اس کی شان وشوکت کی وجہ سے نکاح کیا۔اللہ
تعالیٰ اس کی ذات میں اضافہ کر دے گا اور جس فحض نے کی عورت ہے اس کی مال
داری کی وجہ سے نکاح کیا اللہ تعالیٰ اس کے فقر میں اضافہ کر دے گا اور جس فحض نے
اس عورت سے حسن و جمال کی وجہ سے نکاح کیا۔اللہ تعالیٰ اس کی خماست میں اضافہ
کر دے گا اور جس فحض نے کمی عورت سے اس لئے شادی کی کہ وہ اپنی نگاہ کی
حفاظت کرے گا یا کمی عورت سے صلح رحمی کی وجہ سے نکاح کیا تو اللہ تعالیٰ اس کیلئے
عورت میں برکت ڈال دے گا اس عورت کیلئے اس مرد میں برکت ڈال دے گا۔

(حلية الاولياءام ابولعيم ج٥)

حفرت عبادہ بن صامت سے روایت ہے کہ رسول اللہ مظیّ کی آنے فر مایا: لایختار حسن المرأة علی حسن ڈینھڈ (کزلیمال ۲۰ ابوا شخ) زجمہ عورت کے حسن کواس کے دین کے حسن پرتر جج نددی جائے۔

فائده

آج کل معاشرہ میں عمو مان احادیث کے خلاف عمل ہوتا ہے دینداری کے مقابلہ میں عورت ہے حسن کورتے دی جاتی ہے۔ جس کی وجہ سے معاشرہ میں فداد ہو ھا گیا ہے۔ جس کی وجہ سے معاشرہ میں فدار ہوں گیا ہے۔ اگر شادیاں اس کے برعس ہونیں اور دیندار کورتے جم ہوتی تو لوگ اپنی بیٹیوں کو دین کی تعلیم ورتر بیت دیتے اور معاشرہ بہترین ہوتا۔

فرمان خداوندي

الله عزوج الرشاد فرماتا ہے۔ اِنْ يَكُونُونُ اُفَدَاءً يُغْنِهِمُ اللهُ مِنْ فَضْلِهِ (سورة نور٣٣) ترجمہ اگردہ فقیر (غریب) ہونواللہ اسے غی کردے گائے فضل سے۔ (کنزالا بمان) لہٰذااگر کی لڑی میں دینداری زیادہ ہوچاہے وہ کتی ہی غریب کول نہ ہواس SECTION SECTIONS AS

ے شادی کرنا بہتر ہے کیا عجب کہ اللہ تعالیٰ اس سے شادی کرنے اور اس کی برکت سے آپ کوبھی دولت سے نواز دے۔ آپ کواس نیک اورغریب لڑکی سے خوشی اور وہ دلی سکون حاصل ہوسکتا ہے جوالیک دولت مند بدمزاج ماڈرن فیشن برست اڑکی ہے نہیں حاصل ہوسکتا۔ ہاں! اگر کوئی لڑکی دولت مند ہونے کے ساتھ ساتھ ہی دیزار' نیک سرت وش اخلاق برده دار موادرالی از کی ہے کوئی شادی کرے تو یہ یقینا بزی خوش نصیبی کی بات ہے۔ میشک اللہ تعالی مال ودولت اور چیرہ کونہیں دیکھیا بلکہ تقوی و یر ہیزگاری کود کھتاہے۔

محبت کرنے والی سے شادی کرو

حفرت انس بخائفة سے روایت ہے كدفر مايا كدرسول الله مضفيقية نكاح كاسم فرماتے اورخصی ہونے مے منع کرتے اور فرماتے محبت کرنے والی بچہ جینے والی سے نكاح كروكيونكه يس قيامت كدن تمهاري وجه انبياء عبلطام يركثرت حاصل كرول (مجمع الزاوئدج ١٠٠٣م طبراني اوسط بيهتي كتاب النكاح)

حضرت معقل بن يبار والله عدوايت عي كدرسول الله من يوا في فرمايا:

تزوجوا الودود الولود فأني مكاثربكم الامر

(تخفة المودود في احكام المودودُ ابن جوزي)

ترجمه مستحبت کرنے والی زیادہ بیخ جننے والی سے شادی کرو کیونکہ میں تمہاری وجہ سے امتوں کے سامنے کشرت حاصل کروں گا۔

المام الوقيم عِلْنَصْلِيد حفزت عمر زفائنو سے روایت کرتے ہیں کہ آپ نے ارشاد فرمایا: لعر ليط عبد بعد ايمانه بالله شيئا خير امن امراة حسنة الخلق ودود ولود-ترجمه آدى پرالله پرايمان كے بعد حسن اخلاق والى مجت كرنے والى زياده يج جننے والی عورت ہے بہتر کوئی چیز نہیں دی گئ۔

THE TO THE SERVICE YOU

ایک صحیح حدیث میں ہے کہ تہماری مورتوں میں بہتر وہ ہے جب اس کی طرف اس کا خاوند دیکھے تو اس کوخوش کر دے اور جب اس کو تھم کر ہے تو اس کی فرما نبر داری کرے اور جب اس سے غائب ہوتو اس کی اپنے متعلق اور اس کے مال کے متعلق حفاظت کرے۔

آ خرت کی مددگارغورت سے شمادی کرو

حضرت ثوبان زائش سے روایت ہے کہ حضور نمی کریم مضیح آیا نے ارشاد فرمایا:
لیتخن احد کھ قلبا شاکر او لسانا خاکرا و ذوجه مومنة تعینه علیٰ امر
الاخرقة
ترجمہ تم میں سے ہرایک کوچا ہے کہ وہ شکر کرنے والاول اور ذکر کرنے والی زبان
اور بیوی کواختیار کرے جواسے آخرت کے معاملہ میں مددگار ہے۔

حضرت ابوامامہ رفائلنئ سے روایت ہے کہ حضور نبی کریم مضافیقیا نے فرمایا:

ترجمہ شکر کرنے والا دل و کر کرنے والی ذبان اوروہ بیوی جو تیری دنیا اور دین کے معالمہ بین تیری مدوکرے میں۔ معالمہ بین تیری مدوکرے اس سے بہتر ہے جس کولوگ بطور ترزانہ جمع کرتے ہیں۔

نكاح كيلئة استخاره

کی نے کام کوشروع کرنے سے پہلے استخارہ کرنا چاہیے۔استخارہ اس ممل کو کہتے ہیں جس کے کرنے سے فیبی طور پر بید معلوم ہوجاتا ہے کہ فلاں کام کرنے ہیں فائدہ ہے یا نقصان ۔اوراگروہ کام آپ کیلئے اچھا ہے تو استخارہ کی برکت سے غیب سے امراگروہ کام آپ کیلئے بہتر نہیں ہے تو قدرتی طور پر سے امراگروہ کام آپ کیلئے بہتر نہیں ہے تو قدرتی طور پر انسان اس کام سے بازر ہتا ہے۔

استخارہ اور شکون میں بہت فرق ہے۔ شکون جادوگروں ستاروں سے میروں سے میروں سے میروں سے میروں سے میروں سے میروں سے میرہ اوراس سے میرہ دوسری چیزوں کے ذریعے لیتے ہیں۔ جادوگروں مجومیوں جوتیھوں اور سفل علم جانے والوں کے پاس آگے پیش آئے والے حالات جانے کیلئے جاتا اوران کی باتوں پریقین کرنا کفر ہے۔

حضورا كرم مطيحة إرشاد فرمات بي_

من اتی کاهنا فصد طایقول فقد بری هما انزال علی محمد سین و آثر جمد جو کی کا بن کے پاس جائے اوراس کی بات کی سیجھے۔ تو وہ کافر ہوااس چیزے جو کھ سین و کافر ہوا اس چیزے جو کھ سین کی آثر کی از ل ہو گی۔ (ایوداؤدج سیاب ۲۰۰ سدیث ۵۰۷)

THE THE SERVICE OF THE LUIC OF

فرمان رسول طلفي علية

نى كريم من المناقلة في ارشاد فرمايا:

من اتى كاهنا فساله عن شئى حجبت عنه التوابة اربعين ليلة فان

صدقه بما قال كفر

(مجم كبير طبراني - بحاله - فآوي افريقة ص ١٤٦) ترجمہ جوکی کا بن کے پاس جائے ادراس سے کوئی غیب کی بات یو عصے واس کی ع لیس دن توبه قبول نه مواورا گر کا بن کی بات پریفتین رکھے تو کا فر ہو گیا۔

'' فآويٰ تارغانيه''ميں ہے۔

يكفر يقوله أنا اعلم المسروقات او انا اخبرنا خبار الجن ايني-

(فآویٰ تا تر خانیه بحواله فآویٰ افریقه ص۱۷)

ترجمہ جو کیے میں چھپی ہوئی چیز وں کو نجان لیتا ہوں یا جن کے بتانے سے بتادیتا ہوں تو وہ کا فرہے۔

ای طرح شکون لینا شریعت اسلامی میں شرک بتایا گیا ہے۔شرک و گناہ ہے۔ جے اللہ بھی معاف نہیں فر مائے گا۔ شرک کرنے والا بمیشہ بمیشہ جہم میں رہےگا۔

حضرت ابن مسعود رفی نی نے رسول کریم مضطَقِیّل کا پیدارشاد بیان کیا کہ شکون

لینا شرک ہے۔ فلکون لینا شرک ہے۔ اگر چہا کٹر لوگ فلکون لیتے ہیں۔

(مڪلوةج ٢ حديث ٢٣٨)

حفرت امام احمد بن عنبل عظیار نے لکھا ہے کہ

"فَكُون لِيمَاشِرك مِ".

''طبرانی'' نے حضرت ابن عمر ڈالٹنڈ کے حوالے سے کھھاہے کہ

· 'شگون لیما شرک ہے' اور سالفاظ نین مرتبہ ادا کئے ۔ پھر کہا سفر کو جانے والا

كى شكون كى وجه سے لوث آئے تو اس نے رسول مضيّحة پر نازل شدہ احكام الٰجي

العن قرآن كريم) كا الكاركيا" ـ (طبراني) المن الكاركيا" ـ (طبراني)

روایت ہے کہ''جو شخص کی شگون کی روسے اپنا کام نہ کرسکا تو یقینا اس نے شرک کیا''۔ (ما ثبت بالسنی ایام السنہ ص ۱۳)

میں میں اس کے شرک ہے کہ اس میں کسی غیر اللہ کومؤ ٹر حقیقی مانا جاتا ہے۔ اگر کسی غیر اللہ کومؤ ٹر حقیقی نہ مانا جائے تو وہ شرک نہیں حرام ہے۔

یادرہے فنگون اور فال میں بہت فرق ہے۔ جبیبا کہ حضرت سیدنا امام طبی بعظیجے نے ککھاہے کہ ' فال اور فنگون میں فرق ہے۔

حفرت الس خاتئذ نے حضورا کرم منطق آتی کا بدارشاد بیان کیا ہے کہ'' چوت اورشگون کوئی چیز نہیں البتہ فال پسندیدہ ہے۔ صحابہ کرام ڈٹٹائلٹ نے دریا دت کیا۔ یارسول اللہ منطق کی آفال کے کہتے ہیں؟ارشادفر مایا:وہ اچھی بات ہے''۔

(ما ثبت بالسند في ايام السندص ۵۷)

فشكون اور فال كے متعلق مزيد تفصيلات جائے كيليے حضرت علام محقق شاه عبدالحق محدث وہلوى عملے السند "كا مطالعة كاتف السند"كا مطالعة كرس ...

استخارہ میں کسی نے کام کے شروع کرنے سے پہلے اللہ تعالیٰ سے دعا کرنا اور اسکی رضامعلوم کرنا مقصد ہوتا ہے۔ بیر حضور سیدعالم منتے ہیجی آئی کی سنت اور صحابہ کرام گٹانگذیم و بزرگان دین کاطریقہ ہے۔

حضرت جابر بن عبدالله وظفا فرماتے ہیں۔

كان رسول الله صلى الله عليه وسلم ويعلمنا الاستخارة في الامور كما يعلمنا السورة من القرآن_

(بخارى ح اياب ۲۳۸ كور شده ۱۰۸۸ تر ندى ج اياب ۳۳۳ مدر شد ۲۲۳)

TERESTITION OF SELECTION OF

ترجمه رسول الله عِضَاتَةَ تَهِمِين بركام مِن اسْخَاره كرنے كى الىي تلقين فرماتے تھے جیے قرآن کی کوئی سورت سیکھاتے۔

سركارمدينه منطي كيام في ارشادفرمايا:

''الله تعالیٰ ہے استخارہ کرنا اولا د آ دم (یعنی انسانوں) کی خوش بختی ہے اور

استخارہ نہ کرنا ہد بختی ہے''۔

استخارہ نے کام کوشروع کرنے سے پہلے کرنا چاہیے۔ جیسے نیا کاروبار شروع

كرنا ہؤمكان بنانا ہوئ خريد نا ہؤ كسى سفر يرجانا ہوؤكوئى خى چىز خريد نا ہو۔وغيرہ وغيرہ۔

ان سب میں نقصان ہوگا یا فائدہ بہ جانے کیلتے استخارہ کاعمل کیا جانا جا ہے۔اب چونکہ شادی ایک ایبا کام ہے جس پر ساری زندگی کے سکون و آرام ومسرت کا

دارومدار ہے۔ بیوی اگر نیک بربیزگار محبت کرنے والی خوش مزاج ہوگی تو زعد گی خوشیوں سے بعری ہوگی اور آنے والی شل بھی ایک بہترنسل ثابت ہوگی۔

کیکن اگریوی بدمزاج ٔ بدکار ٔ بے وفا ہوئی تو ساری زندگی جھگڑوں سے مجری

اورسكون ئے خالى موگى۔ يہاں تك كه چرطلاق تك نوبت پہنچ جائے گى۔ البذا ضروری ہے کہ شادی سے پہلے ہی معلوم کر لیاجائے کہ جس اڑکی یاعورت کواپی شریک

زندگی بنانا جا ہتا ہے وہ دین ودنیا کے اعتبار سے بہتر ثابت ہوگی پانہیں۔

نحوست کس چیز میں ہے

حضرت عبدالله ابن عمر ٔ حضرت مهل بن سعد الفائلة ، سے روایت ہے کہ جمفور

اكرم مص المناق فرمايا:

ان كأن في شئ فتى الفرس والمراة والمسكن_

ترجمه اگرخوست کی چیز میں ہے تو وہ کھر عورت اور کھوڑا ہے۔ (لینی اگر دنیا میں كوئى چزمنوس موتى تويهو كتى تقى ليكن موتى نہيں ہے)

THE TO THE SERVICE OF THE USE OF

(مندامام اعظم باب ۱۲۱ موطالهم الكن ت المستل الأستدان باب المصديث ۲۱ بخارى ج ۳ باب ۲۰۳ مديث ۲۱ بخارى ج ۳ باب ۲۰۳ مديث ۲۰۳۳ معلوة و ۲۲ مديث ۲۵۳۳ معلود و ۲۲ مديث ۲۰ مدیث ۲۰ مد

حفرت سیدناام مرتدی و شخطی اس صدیث کے متعلق ارشاد فرماتے ہیں۔ هذا حدیث حسن صحیح لینی بیرصدیث حسن سجے ہے۔

(تذى جەس ۲۹۵)

پیروری پاک احادیث کی اور دیگر کتابوں میں جیسے مسلم شریف طبرانی امام احمد برزاز حاکم وغیرہ میں بھی نقل ہے۔ اس سے پہلے ایڈیشن میں ہم نے بیر مدیث بخاری شریف کے الفاظ میں لفل کی تھی اس بار مزید حوالہ جات بڑھا دیے گئے ہیں۔ آپ او پر پڑھ پی کے کہ یہ ایک حدیث ہیں جو صحابی رسول حضرت ابن عمر وحضرت اس میں سعد افکا تک ہتے نے مصور نبی کریم میں تھی تھی ہے۔ البتداس حدیث میں لفظ ' شخوست' سے کیا مراد ہے علاوہ کی محد ثین نے نقل کیا ہے۔ البتداس حدیث میں لفظ ' شخوست' سے کیا مراد ہے اللہ تاس حدیث میں لفظ ' شخوست' سے کیا مراد ہے۔ اللہ تاس حدیث میں لفظ ' شخوست' سے کیا مراد ہے۔ اللہ تاس حدیث میں لفظ ' شخوست' سے کیا مراد ہے۔ اللہ تاس حدیث میں لفظ ' شخوست' سے کیا مراد ہے۔ اللہ تاس کی آخری ہے۔

نحوست کی تشریح

اس حدیث کی شرح بیل بعض ائمه محدثین نے بدیران کیا ہے کہ اگر نحوست ہوتی تو وہ گھر، عورت اور گھوڑ ہیں ہو سکی تھی نحوست کوئی چیز بی نہیں۔ ائمہ محدثین کے اقوال کی تفصیل دیکھنے کیلئے حضرت شاہ عبدالحق محدث دہلوی مجسطیم کی تعنیف لطیف ''ماثلبت بالسندہ فی ایام السندہ' کا مطالعہ کریں۔ یہاں اس کی تفصیل بیان کریانا طوالت کا سب ہے۔

ای حدیث کی تشریح میں جارے پیارے امام امام اعظم ابوصیفه زائند اپی

THE THE SERVICE OF THE LEVEL OF

مندیں صحابی رسول حفزت این پریدہ ڈٹائٹو سے روایت کرتے ہیں کہ

فشؤمر الداران تكون ضيقة لهاجير ان سؤء وشؤم الغرس ان تكون

حموحاً وشؤم المراة ان تكون عاقرا زاد الحسن بن سفيان رضي الله عنه سلية الخلة، عاقرا_ (مندامام اعظم باب١٢١)

ترجمہ مستحمر کی نحوست میہ ہے کہ وہ ننگ ہواور پڑوی پُرے ہو گھوڑے کی نحوست

یہ ہے کہ سرکش ہو۔اور عورت کی نحوست میر کہ بداخلاق ہو (امام اعظم مخطیع فرماتے

ہیں) حضرت امام صن بن مفیان ومضیعے نے (اپنی مند میں)اس میں اضافہ کیا اور کہا كه بداخلاق اور بانجه مو_

ال حدیث میں عورت کی نحوست سے مراد با نجھ ہوتا جوآیا ہے وہ حضرت امام

حسن بن سفیان بطشیله کی اینی ذاتی رائے ہیں۔اسے حضرت حسن بن سفیان مخطیلیہ

نے این مندیس نقل کیا ہے اور امام اعظم ابو حنیفہ رفائن نے اسے روایت کیا۔

مسكر نحوست كے بارے ميں روايات مختلف الفاظ سے وارد ہيں اوراس كي

تشریحات میں بھی علاء کرام کی آ راء مختلف ہیں۔لبذااس سلسلے میں حضرت حسن بن سفیان زلائش کے قول کی تاویل کرنا عی مناسب ہے اور اس سے وہ چیز مراد نہیں لی

جاسکتی جو بظا ہر نظر آ رہی ہے۔(والله تعالی اعلم وعلمہ جل مجدہ اتم واتھم)

اب رہا بہ کدا کا برعلاء کے نزدیک عورت کی ٹوست سے کیا مراد ہے اسے

جانے کیلئے مندرجہ ذیل مزید تشریحات کو ملاحظہ فرمایئے۔

ای حدیث کی شرح میں امام اہلسنّت اعلیٰ حضرت امام احدرضا خاں فاصل

بریلوی برنشیا ارشاد فرماتے ہیں۔

''گھر' گھوڑ اادر عورت منحول ہوتے ہیں' بیسب بحض باطل ومردود خیالات

ہندوؤں کے ہیں شریعت مطہرہ میں ان کی کوئی اصل نہیں ۔ شرعاً مگر کی توست بیہ ہے

JERTAL JERNER LRITOIR JO

کہ تک ہو ہمائے (پڑوی) اُرے ہوں۔ گھوڑے کی ٹھست یہ ہے کہ شریر ہو بدلگا ما بدر کاب ہواور عورت کی ٹھست یہ ہے کہ بدرویہ (بداخلاق زبان دراز) ہو۔ باتی یہ خیال کہ عورت کے پہرے سے یہ ہوا قلال کے پہرے سے یہ یہ سب باطل اور کافروں کے خیال میں''۔ (فاقل رضویہ جو انصف آخر سم ۲۵۲)

صدر الشريعة حفزت علامه محمد المجدعلى مِحرات الله يُحروه آفاق تصنيف" بهار شريعت "ميں حديث نقل فرماتے ميں كه

حضرت سعد بن ابی وقاص بڑائین نے روایت کی که رسول اکرم منظائیا ہے۔ ارشاد فرمایا: '' تین چیزیں آ دمی کی نیک بختی سے ہیں اور تین چیزیں بد بختی سے ۔ نیک بختی کی چیزوں میں سے نیک عورت اور اچھا مکان ہے ' یعنی بڑا ہواور اس کے پڑوی اجتھے ہوں اور اچھی سواری ۔ اور بدئشتی کی چیزیں بدعورت 'یُر امکان' بری سواری ہے' ۔ (امام احمد براد حاکم بحوالہ بارٹریعت ناص کے)

عورت کا فتنه بہت زیادہ نقصان دہ ہے

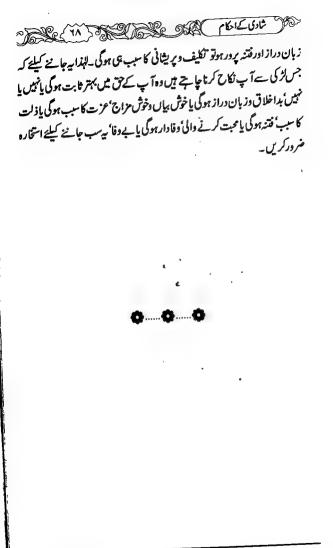
حضرت اسامه بن زيد وظاف فروايت كيا كرحضور مطيع ولي فرايد الشادفر مايا: ما تركت بعدى فتنة اضر على الرجل من النساء-

ترجمہ میرے بعد کوئی فتنہ ایسا باتی نہیں رہاجومردوں پرعورت کے فتنے سے زیادہ

نقصان ده مور (بخاری شریف ج ۳ باب ۲۴ حدیث ۸ ترندی شریف ج۴ باب ۳۰۰ ·

مديث ١٨٢ ، مشكوة شريف ٢٠ مديث ٢٩٥١)

فائده



استخاره كرنے كاطريقه

جس سے تکان کرنے کا ارادہ ہوتو پیغام یا مگئی کے بارے بین کس سے ذکر نہ کر سے۔ اب رات کو خوب المچی طرح وضوکر کے جتنی نقل نمازیں پڑھ سکتا ہے دؤ دو رکعت کرکے پڑھیں۔ پھر نماز ختم کرنے کے بعد خوب اللہ کی شیخ بیان کر بے رکعت کرکے پڑھیں) جیسے۔ اللہ ہ اکبر سب سے اللہ ہ اللہ ہے۔ اللہ میان رحمد سے ارحمید سیاکر یہ ہے۔ وغیرہ ۔ پھراس کے بعد بید عاضو ع و خشوع کے ساتھ پڑھیں۔

اللهم انك تقدو لا اقدر و تعلم ولا اعلم وانت علام الغيوب فأن رايت ان في ديني الغيوب فأن رايت ان في ديني ونيأى واخرتي فأقدر هالي وان كان غيرها خيرا منها في ديني واخرتي فأقدر هالي.

ترجمہ اے اللہ تو ہر چیز پر قادر ہے اور میں قادر نہیں۔ اور تو سب پکھ جانتا ہے میں پکھنیس جانتا۔ بیٹک تو غیب کی باتوں کوخوب جانتا ہے۔ اگر (لڑکی کا نام لے) میرے لئے میرے دین کے اعتبارے دنیا و آخرت کے اعتبارے بہتر ہوتو اس کومیرے لئے مقدر فرما دے۔ اور

TERES CONTRACTOR SENT SON (اگر وہ میرے لئے بہتر نہ ہوتو) اس کے علاوہ اور کوئی لڑ کی یا عورت

میرے حق میں میرے دین وآخرت کے اعتبارے اس بہتر ہوتو اس كومير ب لئے مقدر فرماد ب

(حصن حمين ٔ از حفرت امام محمد بن محمد الجزري شافعي عِلْطيدٍ) اں طرح استخارہ کرنے ہے انشاءاللہ عز وجل سات دنوں میں خواب یا پھر بیداری میں ہی اللہ تعالیٰ کی جانب ہے اپیا کچھ ظاہر ہوگا یا کچھ اپیا کچھ واقع ہوگا جس ہے آپ کواندازہ ہوجائے گا کہ اس لڑکی یاعورت سے نکاح کرنے میں بہتری ہے ماتہیں ۔

دوم اطريقه

رات کو پہلے دورکعت نماز اس طرح پڑھیں کہ پہلی رکعت میں سورۃ فاتحہ (الحمد شریف) کے بعد 'قبل پیایھا الکفرون ''اوردوسری رکعت میں سورة فاتحہ کے بعد۔

"قل هو الله احد" يرع اورسلام بهيركردعاير هـ (وي دعاجوبم في او يربيان کی ہے) وعاسے پہلے اور بعد میں ایک مرتبہ سورة فاتحداور گیارہ عمیارہ مرتبد دروو

ثر لیف ضرور بر^د ھے۔

بہتریہ ہے کہ بیمل سات مرتبہ دو ہرائیں (یعنی سات روز لگا تار رات کواس طرح عمل کرے۔ایک ہی رات میں سات مرتبہ بھی کرسکتے ہیں)استخارہ کرنے کے بعدفورأ باطهارت قبله كي طرف رخ كرك سوجائ

اگرخواب بیں سفیدیا ہرے رنگ کی کوئی شئے نظرا کے تو کامیابی ہے بیٹی اس لوکی سے تکاح کرنا ٹھیک ہوگا اور اگر لال یا کا لے رنگ کی شئے نظرا کے تو سمجے کہ كامياني نيس _ يعن اس الرك عن الكاح كرف يس يُراكى ب_ (والله تعالى اعلم)



منكنى يانكاح كابيغام

فرمان خداوندی

الله رب العزت ارشاد فرما تا ہے۔

ولَا جُناءً عَلَيْكُمْ فِيْماً عَرَّضَتُمْ بِهِ مِنْ خِطْبَةِ النِّسَام (سورة البقره ٢٣٥) ترجمه اورتم پرگناهٔ بیس اس بات ش که جو پرده رکه کر (پرده کے ساتھ) تم عوراؤل کونکاح کا پیام دو۔ (کنزالایمان)

فاكده

جب کسی لڑکی یا عورت ہے شادی کا ارادہ ہوتو اسے شادی کا پیغام دیئے ہے پہلے میرورد کید لیس کہ اس لڑکی یا عور کوکسی اور شخص نے پہلے ہے ہی پیغام تو نہیں دیا ہے یا اس لڑکی کو نکاح کا پیغام دیا ہو ہا اس لڑکی کو نکاح کا پیغام دیا ہو یا اس کے رشتہ کی بات کسی کے متعلق چل رہی ہوتو اسے ہرگز پیغام نہ دے کہ اسے شریعت اسلامی میں بخت نا پہند کیا گیا ہے۔

کسی کے پیغام پر پیغام نددو چنانچ مدیث پاک میں ہے۔

The Let The State of the List of

حضرت ابو ہریرہ وحضرت عبداللہ ابن عمر نگانگذا ہے روایت ہے کہ حضورا کرم مَصْلَالًا في أرشاد فرمايا:

ولايخطب الرجل على محطبة امحيه حتى يترك الخاطب قبله اوياذن (بخاري ج مويث ١٢٩ مؤطاامام الكج ٢) ترجمہ کوئی فخص اینے اسلامی بھائی کے پیغام پرائ لڑک کو نکاح کا پیغام نہ دے۔

یمال تک که پهلاخوداراد وترک کردے پااسے پیغام جیمیخ کی اجازت دے۔

منگنی کیاہے؟

متكن دراصل نكاح كادعده ہے اگر بیدنہ بھی ہوتو جب بھی كوئی حرج نہيں البذا بہتر تو یہ ہے کہ متلنی کی رسم بالکل ختم کر دی جائے اس کی کوئی ضرورت نہیں ہے۔ آج كل اسے ايك ضرورى رسم بناليا كيا عيادراسے شادى كى طرح نبھاتے ہيں۔شادى ک طرح اس میں فرچ کرتے ہیں۔اس رسم میں روپیوں کی بربادی کے سوا پھیٹیں۔ لہذااس رواج کوچپوڑ ناہی بہتر ہے۔مروجہ مثلیٰ کی رسم میں مسلمانوں میں انتہائی مبالغہ پایا جارہا ہے۔ غالبًا ہم نے بیرسم ہندوؤں سے میکھی ہیں۔ کیونکہ اس انداز سے رسم کی ادا نیکی سوائے ہندوستان و یا کستان کے اور کہیں نہیں یائی جاتی بلکہ عربی فاری زبانوں میں اس کا کوئی نام بھی نہیں۔اس کے جتنے بھی نام ملتے ہیں سب ہندی زبان کے ہیں۔ چنانچہ۔مُنگنی سکائی کڑ مائی سا کھ وغیرہ بیاس کے نام ہیں اوران میں ہے کوئی بھی عربی وفاری کانہیں_(واللہ تعالی اعلم)

اگرمنگنی کا کرنا ضروری ہی ہوتو اسے نہایت ہی سادگی سے کرلیں۔اس طرح ہو کہ لڑ کے کے چند قرابت دارلڑ کی کے پہاں جمع ہو جائیں ادران کی خاطر و تواضع لڑکی دالے پان ٔ چائے ٔ یا شربت ہے کردیں لڑکے والے اپنے ساتھ دولہن کیلیے ایک حرات المحام الم





نکاح سے پہلے لڑکی دیکھنے کا حکم

کی لڑکی یا عورت کو کمی غیر مرد کواس وقت دکھانے میں کوئی حرج نہیں جب وہ اس سے شادی کا ارادہ رکھتا ہو یا اس نے اسے شادی کا پیغام بھیجا ہو لیکن لڑکے کے دوسرے مردرشتے داروں یا دوستو ل کونین دکھانا چاہیے کہ وہ سب غیرمحرم ہیں۔ (جن سے لڑکی کا پردہ کرنا ضروری ئے) لہذا صرف لڑکا اور اس کے گھر کی عور تیں ہی لڑکی کودیکھیں۔

نکارے پہلے عورت کودیکے نامتحب ہے لیکن اس بات کا ضرور خیال رکھے کہ لڑکے کولڑ کی اس طرح دکھائے کہ لڑکی کو اس بات کی بھنگ بھی نہ لگے کہ لڑکا اے دیکھے رہا ہے (یعنی تھلم کھلا سامنے نہ لا ئیں) اگر اس احتیاط سے دکھایا جائے گا تو اس میں کوئی حرج نہیں بلکہ بہتر ہے کہ بعد میں کی فتم کی غلط نہیں نہیں ہوتی۔

صحابه كرام وعنسية عين كاعمل

حضرت محمد بن سلمه وْفَاتْعُهُ فرمات بين كه

'' میں نے ایک عورت کو نکاح کا پیغام دیا۔ میں اسے دیکھنے کیلئے اس کے باغ میں چھپ کر جایا کرتا تھا۔ یہاں تک کہ میں نے اسے دیکھ لیا۔ کسی نے کہا۔ آپ ایسی حرکت کیوں کرتے ہیں حالانکہ آپ حضور نبی کریم منطق آیا کے صحابی ہیں؟ تو میں نے

16 (20 78) TO SEE (16) (16) (20) اسے جواب دیا کررسول اللہ مض كور الله عن ارشاد فرمایا" جب اللہ تعالی كى كول ميں کمی عورت سے زکاح کی خواہش ڈالےاوروہ اسے بیغام دی تواس کی جانب دیکھنے (اين ماجدج الباب ١٩٣ عديث ١٩٣١) میں کوئی حرج نہیں''۔ حضرت مغیرہ بن شعبہ رفائعة فرماتے ہیں کہ میں نے انسار کی ایک لڑ کی کو تکا ح کا پیغام بھیجااوراس کا ذکر حضور نبی کریم مطبح ایج اسے کیا۔ آپ نے یو چھاتم نے اس کو دیکھا بھی ہے میں نے عرض کی نہیں۔آپ مشکر آپ نے فرمایا اس کو دیکھ لو کیونکہ ہیہ طریقة تم دونوں کے درمیان ہمیشہ کے تعلقات کے بدستور قائم رکھنے والا ہے۔ (لینی مودت والفت ہمیشہ رہے گی) چنانچہ میں ان کے پاس کمیا ادراس لڑکی کے والدین سے بیہ بات ذکر کی توان میں سے ایک دوسرے کی طرف دیکھنے لگا میں اٹھ کر جانے لگا تولز کی نے کہااس آ دمی کومیرے پاس بلاؤ تو میں اس گھر کی دیوار کے ایک کونے پر کھڑا ہوگیا وہ کہدری تھی کہا گررسول اللہ مِشْطَعَاتِ نے تجھے میرے دیکھنے کا تھم دیا تو مجھے دیکھ لے ورنہ میں خود تیرے سامنے آ جاؤں گی تا کہ تو مجھے دیکھ سکے۔ جنانچے میں نے اس کودیکھااوراس سے شادی کرلی۔ پس میں نے کسی بھی عورت سے شادی نہیں کی جو مجھےاس سے زیادہ محبوب ہواور نہ ہی اس سے زیادہ شان والی سے اور نہ ہی اس سے زیادہ مجھ پرکوئی شان والی ہوئی۔ حالا نکہ میں نے ستر عورتوں سے نکاح کئے ہیں۔ (المستدرك للحاكم ج٢ بيهتي سنن الكبري ج ١٨ بن مايد برقم ٢٧ ١٨ منداحه ج٣) حضرت جابر ذاللة سے روایت ہے كه رسول الله مشكر آنے فرمایا كه تم میں سے جب کوئی فخض کسی عورت کو نکاح کا پیغام دے لینی اس کو پیغام دینے کا ارادہ کرلے تواس پرکوئی گناہ ہیں کہ وہ اس کود کھے لے اگر چیدوہ نہ جانتی ہو۔

(ابوداؤد كتاب الكاح) ابويعلى نے روايت كيا ہے كررسول الله مضي يتا نے ارشاد فرمايا كه جبتم ميں

المرابع المرا

فائده

پیغام نکار کی دونوں صورتیں درست ہیں جا ہے خود بات کرے یا کی کے ذریعہ کرائے دیکھتے ہیں بھی بیدونوں طریقے استعمال کرسکتا ہے۔

حضرت جابر زاللي سے روايت ب كه حضورا كرم مطابقة كم في ارشاد فر مايا:

اذا خطب احد، كم المولة فان استطاع ان ينظر الى ما يدعوة الى نكاحها فليفعل - (ابوداؤدن ٢٠)ب ٢٠٠٠ مديث ٣١٢)

ترجمہ جبتم میں سے کوئی کی عورت کو نکاح کا پیغام دے قواگراس عورت کو دیکھنا ممکن ہوتو د کھے لیے

حفرت سيدنا الم بخارى بمِ الشيئد نے اپنی مشہور کتاب صحیح بخاری "کتاب النكاح" بيں نائل ہے۔ النكاح" بيں نائل ہے۔ بہلے ورت كود كھنے كے متعلق ایک خاص باب قائم كيا ہے۔ جس كانام" النظر الى المواۃ قبل الترويد، "يعنى نكاح سے بہلے ورت كود كھنا ہے۔ اس باب بيس الم بخارى نے كئى حديثيں لائى ہے جس سے ثابت ہوتا ہے كہ نكاح سے بہلے ورت كود كھنا جا رئے ہے جا نچاس باب كى ايك طويل حديث ميں ہے جس كا خلاصہ بہ ہے كہ كا خلاصہ بہ ك

ایک صحابیکا نکاح کی درخواست کرنا

حضورا کرم منظفیّقیّق کی خدمت اقدس میں ایک مرتبہ ایک صحابیہ خاتون حاضر ہوئیں اور آپ سے نکاح کی درخواست کی لیکن حضورا کرم منظفیّقیّق نے اپناسر مبارک جمکالیا اور انہیں کچھ جواب نہ دیا۔ ایک صحافی نے کھڑے ہو کرعرض کیا۔ یارسول اللہ TERESTATION OF TENEVISION OF من الرآپ کواس عورت کی حاجت نہیں ہے تو اس کا نکاح میرے ساتھ فرما د بجة مركاددوعالم مطاورة كان سے يو چينے برمعاوم بواكدان كے باس مفلى كى وجسے کچھرویے بیے کٹر اوغیرہ نہیں یہاں تک کہمراداکرنے کیلئے ایک انگوشی تک مجی نہیں ہالبت قرآن کی کھے سورتیں یادیں۔ چنانچے حضور نی کریم مطابقات نے ان كِقرآن كريم جانخ كے سبب اس محابيه خاتون كا نكاح ان محالي سے فرماديا۔ (بخاري ج٣ باب٧٥ مديث١١٣) فائده علاء کرام فرماتے ہیں کہ بیخصوصیات انہیں محالی کیلئے مخصوص متمی اور رسول ہے۔آج اس طرح سے نکاح کرنا جا ترجیں۔ (الوداؤرج ٢٠٠١) نکاح سے پہلے دیکھناسنت ہے ای طرح کی دوسری حدیث میں ہے کہ "رسول اكرم مضيكيم كو خواب ميل حفزت عائشرمد يقد وظاهي كو نكاح سے يملے د کھايا گيا"۔ (بخاري ج٣ أباب ١٥ مديث١١١) ان حدیثوں سے امام بخاری مططیعے نے بیٹا بت کیا ہے کہ عورت کو نکاح سے يبلحد مكمناجا ئزے۔ جمة الاسلام سيدناا ما محمد غزالی <u>عمط</u> بيه فرماتے ہيں كه '' نکاح سے پہلے عورت کود کھے لینا حفزت امام شافعی مخطیعیے کے زو یک سنت (کیمیائے سعادت) امامغزالی بیر مطیعیہ آ مے نقل فرماتے ہیں۔

TORKEY TO THE THE LEVE YOU ''عورت کا جمال محبت والفت کا ذریعہ ہے اس لئے نکاح کرنے سے پہلے اركىكود كيم ليناسنت بيرگول كاقول بكيمورت كوب ديكي جو تكاح موتاب اس كانجام يريشاني اورغم بـــــ (كيميائے سعادت) حضور سيدنا غوث الأعظم شيخ عبدالقادر جيلاني ذليني الي تصنيف لطيف "غدية الطالبين'' ميں ارشاد فرماتے ہیں۔ ''مناسب ہے کہ نکاح سے پہلے عورت کا چیرہ اور ظاہری بدن لینی ہاتھ منہ وغیرہ دیکھ لئے تا کہ بعد میں نفرت یا طلاق کی نوبت نہآئے کیونکہ طلاق اور نفرت الله تعالى كوسخت نا پسند ہے'۔

(غنية الطالبين باب٥)



لڑکی کی رضامند<u>ی</u>

آپ نے اکثر دیکھا اور سنا ہوگا کچھ غیر مسلم مسلمانوں کو طعند دیتے ہیں کہ اسلام نے عورتوں کے ساتھ تا انسانی کی ہے۔ حالانکدان کم عقلوں کو بیٹین سوجتا کہ ان کے دھرم نے عورتوں کے کتنے ہی حقوق کا کس بے در دی سے گلا گھوٹنا ہے۔ یہ کم فہم عورتوں کو مزکوں بازاروں اورا پئی جھوٹی عبادت گا ہوں ہیں ادھنگی حالت ہیں کھلے عام گھو ہے تھی ہیں۔ یہی دجہ ہے کہ ان کے خود ساختہ دھرم ہیں مرد وعورتیں ہی نہیں بلکہ ان کے دیوی دیوتا بھی عاشق مزاح نظر آتے ہیں۔

کسی شاعرنے کیا خوب کہاہے۔

عورتیں پنچیں بال بکھرائے مندر میں پوجا کیلئے دیوتا مندر سے باہر لکلے اور خود پچاری ہوگئے

ہم صاف طور پر کہد دیتا چاہتے ہیں کہ بیٹک ند ہب اسلام ایسی بیہودہ حرکوں کی ہرگز اجازت نہیں دیتا۔وہ محورتوں کو بازاروں اور سڑکوں پر کھلے عام اپنے حسن کا مظاہرہ چیش کرنے سے تختی سے منع کرتا ہے۔لیکن یا درہے وہ عورتوں کوان کے جائز حقوق دینے بیس کوئی کی بھی نہیں کرتا اور نہ ہی عورتوں کے ساتھ گر اسلوک کرنے ان

کرنے کا دی کے دکام کے مطاب کا انسانی کرنے کی اجازت دیتا ہے وہ ہر معالمے

علی مورد اس سے برابری اورانسانی حسن سلوک کرنے کا مردول کو کھم دیتا ہے۔ میں مورد اس سے برابری اورانسانی حسن سلوک کرنے کا مردول کو کھم دیتا ہے۔

چنانچیشر بیعت اسلامی میں جہاں کی معالموں میں عورتوں کی مرضی ضروری سجی جاتی ہے وہیں شادی کیلئے اس کی رضامندی بھی ضروری ہے۔

نکاح کیلے اڑک کی رضامندی ضروری ہے

حفرت ابو ہریرہ وحفرت عبداللہ بن عباس شی تلتیم سے روایت ہے کہ حضور اکرم مطفی آئے آئے ارشاد فر مایا:

لاتنكح لكبرحتى تستيا مرورضاها فسكوتها ولاتنكح الشبحتى تستافان

(مندانام اعظم باب ۱۲۳ ایوداودج ۲ مدید ۳۲۳ تندی جا باب ۷۵۳ عدید ۱۰۹۹) ترجمه کوارتی کا لکاح شرکیا جائے جب تک اس کی رضا مندی شرحاصل کرلی

رجمہ اوار ن کا نکال نہ لیا جائے جب تك اس ن رضا مندن نہ ماس سرن جائے اور اس كا چيد رہنا اس كى رضا مندى ہے اور نہ بى نكاح كيا جائے بود كا جب

تك اس سے اجازت ندلی جائے۔

بیٹی کے نکاح کیلئے ماں سے بھی مشورہ کرو

حضرت عبدالله ابن عمر فاللي سروايت ب كدرسول الله مضايمة في ارشاد

فرمايا:

امروا النساء في بناتهن - (ايوداوُدريم ١٥٠٠ منداجر ٢٠)

۔ ترجمہ عورتوں سے ان کی بیٹیوں کے متعلق (شادی کے دفت) مشورہ کرلیا کرو۔

فائده

مشورہ کرنے سے مال کی حوصلہ افز ائی ہوجائے گی اور خاوند سے جھکڑا نہ کرے گی کہتم نے میری بیٹی کی شادی کے متعلق جھ سے مشورہ نہیں کیاان کے مشورہ کے بعد کر شادی کے احکام کی کھی کھی کہ اس کا مشورہ قبول کر لے چاہتو نہ

عورت کا نکاح اس کی مرضی کےمطابق کردیا

اس کے دیورے کردیا جس سے وہ نکاح کرنا جا ہی تھی۔

حضرت عبدالله بن عباس وظفاروایت کرتے ہیں کہ

ان امراة تونى عنها زوجها ثعر جاء عد ولدها فخطبها فابى الاب ان يزوجها وزوجها من الاخر فانت المراة النبى عبر النب فذكرت ذلك له فبعث الى ابيها فحضر فقال ما تقول هذا قال صدقت ولكنى زوجتها مين هو خير منه ففرق بيهنما وزوجها عد ولدها منه ففرق بيهنما وزوجها عد ولدها من ففرق بيهنما وزوجها عد ولدها مرجم الكي ورت كورت كورت كور النبام المحم المبري المراة المرائع المرائع المرائع المرائع المرائع ورائع المرائع ورائع المرائع ورائع ورائع

وضاحت

حضرت ملاعلی قاری عرفشیای اس حدیث کے متعلق تحریر فرماتے ہیں۔ ''ابن قطان بڑاٹھنڈ نے کہا ہے کہ حضرت ابن عباس بڑاٹھنڈ کی بیر صدیت صحیح ہے اور بیٹورت حضرت خضاء بنت غذام بڑاٹھیا تھی جس کی حدیث امام مالک وامام بخاری THE AT THE SERVICE YOU بھی لائے ہیں کہان کا نکاح حضوراقدس مطبقی ہے ردفر مادیا تھا''۔ حفرت امام بخاری نے اپنی صحیح میں بیرحدیث حفرت خنساء بنت خذام مُثاثِعیا ے ان الفاظوں کے ساتھ نقل کی ہے۔ ان اباها زوجها وهي ثيب فكرهت ذالك فاتت رسول الله عَشَيْكَمْ فرد (مؤطاامام الكج ٢ بخاريج ٣ صديث ١٢٥) ترجمہ ان کے والدنے ان کا نکاح کردیا جب کہ دہ اس نکاح کو تا پیند کرتی تھیں۔ وه رسول الله مِضْعَاقِيَّةٌ كَي خدمت اقدّس مِين حاضر ہوڭئيں _ آپ نے فرمایا كه'' وه نكاح نهير ۽ وا"_ ان تمام احادیث مبار که سے معلوم ہوا کہ شادی سے پہلے کنواری لڑی اور پیوہ ساجازت لینا ضروری ہے۔اور جارے آقادمولی سرکاردعالم مطابقیا کی بہت ی بیاری سنت بھی ہے۔ · رسول الله طلطي علي كاعمل ممارك چٹانچە مديث ياك يس ہے۔ حضرت ابو ہر رہ وہائشہ ہے روایت ہے کہ كان النبى فَصَرَاحَ إذا زوج احلى بناته أته حدرها فيقول ان فلا نايذكر فلانة ثمر يزوجها ــ (مندامام اعظم باب۱۲۳) حضور نبی کریم منتیج آیا پی کسی صاحبز ادی کوکسی کے نکاح میں دینا چاہتے توان کے یا س تشریف لاتے اور فرماتے۔ ' فلال شخص (یہاں ان کا نام لیتے) تمہاراذ کر کرتا ب اور پھر (صاحبزادی کی رضامندی معلوم ہوجانے پر) نکاح پڑھادیا کرتے تھے۔ آئ دیکھا بیجار ہاہے کہ مال باپاڑی کی مرضی کوکوئی اہمیت نہیں دیتے اور

Marfat.com

ا پی مرضی کےمطابق جہاں جا ہتے ہیں شادی کر دیتے ہیں۔اب شادی کے بعد اگر

جملاکیا حرج ہے۔

لڑی ہے اس کی مرضی معلوم بھی کرنی چاہیے۔ کیونکہ اسے ہی ساری زندگی
گزارنا ہے۔ موجودہ دور میں لڑکی کی اجازت کو نکاح کے دفت کی ایک رسم بنا دیا گیا
ہے لڑکی کو دولہن بنا دیا گیا۔سارے مہمان آ گئے۔ اب چارہ ناچاراہے ہاں کہنا ہی
پڑے گا۔ ابیانہیں ہونا چاہیے بلکہ نکاح ہے بہت پہلے خود اشاروں میں یا کسی رشتے
دار عورت کے ذریعہ بالکل صاف صاف طور پر اجازت لے لیں۔اگرلڑکی سے کھل کر
کہنے میں ججبک یا شرم محسوں ہورہی ہوتو دیے لفظوں میں اظہار کرے بیسنت بھی ہے۔
حضرت ابن عہاس بڑالٹوئنے سے روایت ہے کہ

حضور نبی کریم منظی کی آنے جب اپنی صاحبزادی حضرت فاطمہ زالی کی انکاح حضرت علی کرم اللہ و جہدے کرنے کا ارادہ فرمایا تو آپ حضرت فاطمہ زنالیجا کے پاس تشریف لائے اورارشاد فرمایا 'ان علیا یہ نکوٹ' علی تمہاراذ کرکرتے ہیں۔(یعنی متہیں نکاح کا پیغام جیجاہے) (مندام مطلم بابساتا)

ای اول کا پیام میجائے کا نہایت ہی بہتر طریقہ ہے جو پینا م کے وقت ضروری بیا اور ت مال کرنے کا نہایت ہی بہتر طریقہ ہے جو پینا م کے وقت ضروری ہے۔ ایسے ہے۔ ویسے بہت سے الفاظ ہیں جو اجازت لیتے وقت دیلفظوں میں کہ سکتے ہیں۔ جیسے قلال کو تہمارا ذکر کرتا ہے۔ فلال تم پر بہت مہریان ہے۔ فلال کو تہماری ضرورت ہے۔ فلال کا پینام تہمارے کئے ہے۔ وغیرہ (جہال جہال لفظ فلال کو تہماری ضرورت ہے۔ فلال کا پینام تہمارے کئے ہے۔ وغیرہ (جہال جہال لفظ

TERE AT TOTAL SER (KIZUIT) TO فلال المعابد بال الرك كانام ليس) تكار كيلي الوكى كى اجازت ضرورى باس كاصاف مفادیہ ہے کرائ کی کی جس سے شادی ہورہی ہاس کووہ سملے سے جانتی بھی ہواور اس دیکھا بھی ہوور نہ غیر معلوم خف کے بارے میں اجازت لینا لغوو بے کارہے۔ مسئله لڑکی یاعورت سے اجازت لیتے وقت ضروری ہے کہ جس کے ساتھ نکاح کرنے کا ارادہ ہواس کا نام اس طرح لیس کہ قورت جان سکے۔اگریوں کہاا یک مردیا لڑ کے سے شادی کردوں گایا یوں کہ فلاں قوم کے ایک شخص سے نکاح کر دوں گا تو ہیہ جائز نہیں۔اور بیاجازت صحیح بھی نہیں۔ (قانون شریعت ۲۵) لڑکی کی خاموثی ہی اجازت ہے قال محمد بن اسمعيل (المعروف به امام بخاري رُاتُرُدٌ) عن عائشه وَثُاثُهُا قالت يارسول الله عَظِيَرَا إن البِكر تستحى ؟قال رضاها صمتها (بخاری چ۳'باب نمبر ۱۲ مدیث ۱۲۳) امام بخاری زنانیز نقل فرماتے ہیں کہ حضرت عائشہ معدیقد وظافیانے عرض كيا- يارسول الله مصطريقية إكوارى لؤى تو نكاح كى اجازت دين مين شرماتى ب؟ ارشادفر مایا''اس کا خاموش موجانای اجازت ہے'۔ (بخاری) یعن کسی لؤنے کے بارے میں کنواری سے اجازت کی جائے اور وہ خاموش رہے تواس کواس کی رضا سمجھا جائے گا۔ کیونکہ شرم کی وجہ سے کنواری اڑ کی تھلم کھلا' مہاں'' نہیں کہ گی اورا گرکوئی عورت مطلقہ (طلاق شدہ) یا بیوہ ہے تو اس کا خاموش رہنا کافی نہیں۔بلکہاس کی زبانی اجازت ضروری ہے۔ هستله اگرعورت كوارى بوق صاف صاف رضامندى كے الفاظ كم يا كوئي الى حرکت کرے جس سے رامنی ہونا صاف معلوم ہوجائے۔مثلاً مسکرادے یا ہنس دے یا پھراشارے سے ظاہر کرے۔ (قانون شریعت ۲۰)

THE NO THE SER (I EVE USE) اوراگرا نکار ہوتواس طرح سے صاف صاف کے۔ جھےاس کی کوئی ضرورت

نہیں۔ یا پھر کھے۔وہ میرے لئے بہترنہیں۔وغیرہ دغیرہ جس طرح بھی مناسب طور برظا بركر سكتى مواس طرح سے ظا بركرد ، پھرمال باب بر بھى ضرورى ہے زياده دباؤ

نەۋالىس يازېردىتى نەكرىي _ بےجاد باۇ ۋالنايازېردىتى كرنا جائزىنېيں _

حضرت ابو ہر رہ والله سے روایت ہے کہ رسول الله مطفی میج آ ارشاد فرمایا:

اليعمة تستأمر في نفسها فأن صمتت فهو اذنها وأن ابت فلا جواز (ترزي حائبات ۲۵۷ مديث ١٠١١)

ترجمه بالغ كوارى لاكى سے اس كے فكاح كى اجازت كى جائے اگروہ خاموش ہو

جائے توبیاس کی طرف سے اجازت ہادراگرا تکارکرے تواس پرکوئی زبردی نہیں۔ بالغه وعا قلة عورت كا نكاح بغيراس كى اجازت كے كوئى نہيں كرسكتا۔ نهاس كا

باپ نهاسلامی حکومت کا بادشاه عورت کنواری جویا بیوه -اس طرح بالغه وعاقل مرد کا نکاح بغیراس کی مرضی کے کوئی نہیں کرسکتا۔

(قانون شریعت ج۲)

مسئلہ کنواری لڑکی کا نکاح یالڑ کے کا نکاح ان کی اجازت کے بغیر کردیا گیا اور

انہیں نکاح کی خبر دی گئی تو اگر عورت جیپ رہی یا ہنمی یا بغیر آ واز کے رو کی تو نکاح منظور ہے سمجھا جائے گا۔ای طرح مرد نے انکارنہ کیا تو نکاح منظور ہے سمجھا جائے گا۔لیکن

مرد باعورت میں ہے کسی ایک نے بھی اٹکار کر دیا تو نکاح ٹوٹ گیا۔

(فيَّاويُ رضوبه ج ۵ ص ۱۰ و انون شريعت ٢٠)

بیتمام شرعی مسائل ہیں جن کا جاننا اوران پڑمل کرنا ضروری ہے جس میں ماں باپ کی بھی ذمدداری ہے کہ وہ اپنی اولاد کی خوثی کا خیال رکھیں۔ اور اولاد کا بھی فرض ہے کہ وہ ماں پاپ اور گھر کے دیگر بزرگوں کا کہا ما نمیں اور وہ جہاں شادی کرانا جا ہیں ان کی رضامندی میں ہی اپنی رضا سمجھیں کہ ماں باپ بھی بھی اپنی اولا د کا پُر انہیں جا ہے۔

PERCAN THE SER (BILLIST O

حضرت ابو ہریرہ دخالیئ سے روایت ہے کہ نبی کریم مضافقاً نے ارشاد فرمایا:

لاتزوج المراة المراة ولا تزوج المراة نفسها فان الزانية هي التي تزوج

(ائن ماجرج أحديث ١٩٥٠ مخلوة ج ٢ حديث٢٠٠٢)

ترجمه کوئی عورت دوسری عورت کا نکاح نه کرے اور نه کوئی عورت اینا نکاح خود

كرے _ كونكدزانير (زناكرنے والى) وہى ہے جواپنا نكاح خودكرتى ہے۔

(ابن ماجهٔ مفکلوة)

هسئله بالغ ائر کی نے ولی (ماں باپ وغیرہ) کی اجازت کے بغیر خود اپنا لکاح حجیب كريااعلانيكيا تواس كے جائز ہونے كيلتے بيٹرط ہے كيثو براس كاكفوہو_ يعني ند بب خاندان یا بیشے یا مال یا حال چلن میں عورت سے انبا کم نہ ہو کہ اس کے ساتھ اس کا نکاح ہونا لڑکی کے مال باب و خاندان والوں اور دیگر رشے داروں کیلئے بعزتی شرمندگی دیدنا می کاسب موراگراییا به وه وه نکاح ند موگار (قادی رضویه ی ۵ م ۱۳۲۷) مسئله شادی کی تاریخ متعین کرتے وقت دولین کے ایام چیش سے نیخ کیلیے اس کی رضالی جائے۔بیان علاقوں میں نہایت ضروری ہے جہاں نکاح کے بعدای دن یا ایک دن بعدر خصتی ہوتی ہے۔.





حق مهر کابیان

آپ کا اور جارابیہ مشاہرہ ہے کہ سلمانوں میں آج بڑی تعداد میں ایسے لوگ ہیں جوشادی تو کر لیتے ہیں' مبر بھی بائد ھتے ہیں لیکن انہیں اس بات کی معلو مات نہیں ہوتی کہ مہر کتے قتم کا ہوتا ہے۔اور ان کا نکاح کس قتم کے مہر پر طے ہوا ہے۔البذا مسلمانوں کو پیجان لینا ضروری ہے۔مہرکی تین قشمیں ہیں۔

ہم چل ہے ہے کہ خلوت سے پہلے مہر دینا قرار پایا ہو(جا ہے دیا بھی بھی جائے)

مېرموجل په ہے که مېرکې د قم د ہے کیلئے کوئی وقت مقرر کر دیا جائے۔

<u>۔</u> ہر مطلق *یہ ہے کہ جس میں پچھ طے نہ کیا جائے۔*

(فآوى مصطفوييج ٣٠ ص ٢٧ ، بهارشر يعت ج ا ح ٧)

ان تمام مہر کی قسموں میں مہر معجّل رکھنا زیادہ افضل ہے۔ (یعنی رخصتی ہے پہلے عی میرادا کردیاجائے)

(قانون شریعت ج۲)

TERE AN THE SER (KILUIT)

هسئله مهر مجل وصول کرنے کیلئے اگر عورت چاہے آوا پنے آپ کو شوہر سے دوک کتی ہے۔ لیٹن بیر اختیار ہے کہ دولی (مباشرت) سے بازر کھے اور مرد کو حلال نہیں کہ عورت کو جورت کو جورت کو حرف کورت کو جورت کو حرف اس وقت تک حاصل ہے جب تک مہر وصول نہ کر لے۔ اس دومیان اگر عورت چاہے آتی مرضی سے دلی کر سکتی ہے۔ اس دوران بھی مردا پی بیوی کا نان نفقہ بند نہیں کر سکتا۔ جب مرد عورت کو اس کا مہر دے دے آو عورت کو اپنے شوہر کو دلی کرنے سے کر سکتا۔ جب مرد عورت کو اس کا مہر دے دے آت عورت کو اپنے شوہر کو دلی کرنے سے دو کرنا جائز نہیں۔ (نا دی مطفویہ جس میں ۲۰ تا نون شریعت جس

روس با برین در می در هستگله ای طرح اگر مهر موجل تفار گینی مهرادا کرنے کی ایک خاص مدت مقرر تقی)اور وه مدت ختم هوگئی تو عورت شو بر کودهی کرنے سے دوک سکتی ہے۔ (قانون شریعت ج ۲)

حق مبر کے عوض عورت حلال ہوتی ہے

امام احمد بمطنطنی نے حضرت جاہرین عبداللہ رفائٹی سے روایت تقل کی ہے کہ رسول اللہ مطنع آج آنے فرمایا اگر ایک آ دمی ہاتھ بحر کھانا عورت کوئق مہر کے طور پر دے دے تو وہ عورت اس کیلئے طال ہوجائے گی۔

امام ابن الى شيب في حضرت ابن الى لديه (وطنين) سدوه الني داوات روايت نقل كرت ين كدرسول الله مطنع و أن فر ما يا جس في ايك در بم ك بدله ين اس حلال كياده حلال موكن _

امام ابن ابی شیب نے حضرت عامر بن ربیعه بول الله سے روایت نقل کی ہے که ایک آ دی نے دو جوتوں کے عوض ایک عورت سے شادی کی تو رسول الله مطفقاتین نے اس کے نکاح کوجا نزقر اردے دیا۔

فائده

ان احادیث سےمعلوم ہواحق مبر میں نقذی بھی دی جاسکتی ہے اس کے علاوہ

THE AT THE DESCRIPTION OF THE LEGIC OF

سونا' چاندی' کھانے پینے کی چیزیں اور زیمن' مکان' کار' کیڑے' جوتے وغیرہ۔ حضور نبی کریم مضح کیا نے ارشاد فرمایا کہ جس شخص نے عورت کے حق مہر میں ایک تھیلی کے بھراؤ کی مقدارستو ادا کیایا کھجور دی تواس نے (عورت کواپنے لئے) حلال کرلیا۔ (ابوداؤرنے اس مدیث کوروایت کیا اوراس کے موقوف ہونے کارائی قرار دیا)

حق مبرمعاف كرنے كيلئے مجبود كرنا جا ترجبيں

مسئله عورت کومبر معاف کرنے کیلئے مجبور کرنا جائز نہیں۔ (قانون تربیت ۲۰۰۰)
اس زمانے میں زیادہ تر لوگ یکی تجھتے ہیں کہ مہر دینا کوئی ضرور کی نہیں بلکہ یہ صرف ایک رسم ہے۔ پچھو گول کا خیال ہیں کہ مہر طلاق کے بعد بی کہ عبر اس لئے رکھتے ہیں کہ عورت کومبر دینے کے خوف سے طلاق نہیں دے سیکھا۔

حضرت موی مَالینا کاحق مبردینے کیلئے مزدوری کرنا

حضرت عتبه فالله سعدوايت بكرسول الله من عَلَيْ في ارشاوفر مايا:



ان موسى اجل نفسه لشبع بطنه وعفة فرجد

(ابن ماجه كتاب الرهون باب اجارة الاجبير)

حفرت موی مَالِیناً نے اپنے پیٹ کے سیر کرنے اور شرم گاہ کی حفاظت کیلئے اینے آپ کومزدوری پرلگایا۔

فاكده

جو فخص بیوی کے حصول کیلئے اور اس کے حق مہر کی ادائیگی کیلئے محنت مزدوری اور کاروبار کرے گا اس کو بھی اللہ تعالی اجرعطا کرے گا۔ جبیبا کہ حفرت سیرنا مویٰ فَلِينًا فِي حَفْرت شعيبِ مَلِيلًا كَي بِيني كِما تحدثًا لا كِحق مهر من سات سال اجرت یرکام کیا۔

حضرت عتبہ بن مندسلمی زالتہ سے روایت ہے کہ ہم رسول اللہ مضافرہ ہے

یاس تنقیق آپ نے سورۃ''طس'' پڑھی یہاں تک کہ حضرت مویٰ مَلِیٰلا کے قصہ تک ينجے اور فرمایا كەحفرت موڭ مَلْلِتانك نے آئھ سال یا دس سال اپنی یاک دامنی اور كھانے

یر مزدوری کی_ (تغيير درمنثورمترجم ج٥٥ ٣١٣)

حضرت ابوذر ڈاٹنٹ سے روایت ہے کہ مجھے رسول اللہ مطاقع آنے فرمایا جب

تجھ سے پوچھا جائے کہ دونوں مدتوں میں سے کس مدت کو معزت موکی مَلِيْلا نے يورا کیا تو کہنا جوان میں سے بہترین اور زیادہ تنم پوری کرنے والی تنی ۔ جب تجھ سے یو جیما

جائے کس عورت ہے آپ نے شادی کی تو کہناان دونوں میں ہے جو چیوٹی تھی۔

(تغيير در منثور مترجم ج٥ص ٣١٧)

فائده

د ونول مدنول سے مراد حصرت شعیب مَالِينلانے حضرت مویٰ مَلْينلا سے اپنی بیٹی

المراكب المراك کے بیا ہے کیلئے ایک حق مہر طے کیا تھا اور وہ یہ تھا کہ آٹھ سال یا دس سال تک میری نوکری کریں بیآ تھ سال یا دس سال کی دونوں مدنیں اس میں بطورسوال وجواب کے ذکرکی گئی ہیں۔ فرمان خداوندي ہاراربعز وجل ارشادفرما تاہے۔ وأتوا النساء صدفيهن بحلة (سورة النساء ٩) ترجمه اورعورتوں کوان کے میرخوشی ہے دو۔ (كنزالايمان) شان نزول امام سعید بن منصور عبد بن حمید ابن جریزابن مندراورابن ابی حاتم نے ابوصالح مطیع سے روایت نقل کی ہے کہ جب کوئی آ دمی عورت کا نکاح کرتا ہے تو مہراہے وييغ كے بجائے خود لے ليتا الله تعالى نے اس سے منع كيا اور بير آيت نازل فرمائي ۔ امام ابن ابی حاتم نے مقابل (مطلعین) کا قول نقل کیا ہے کہ "أَتُو اليِّسَاء "كامعنى بعورتول كودواور "صَدَّ تَحِيهنّ "كامعنى بان حتى مبر (تغيير درمنثورج ٢ص ٣٢٨) اورفرما تابالله عزوجل فَهُمْ استمتعتم به مِنهن فأنوهن أجورهن فريضةٍ ــ فَهُا استمتعتم به مِنهن فأنوهن أجورهن فريضةٍ ــ (سورة نياي۲۲) توجن عورتول کونکاح میں لانا جا ہوان کے بند ھے ہوئے مہرانہیں دو۔ (كنزالايمان)

حلال مال سے حق مہرادا کرو صفورنی کریم مشکرتانے ارشادفر ماما کہ



استحلو افرج النساء بالحيب اموالكم

(كنزالعمال ١٢٥ الافصاح ابن حجر)

جمه عورتوں کی شرم کا ہیں اپنے پاکیزہ اموال کے ساتھ حلال کرو۔

فائده

لیخن عورتوں سے جب نکاح کروتو حق مہر میں حلال مال دیا کرویہ حق مہر بیوی کی صحبت کا بدلہ ہے جیسے محبت نکاح کر کے حلال طریقے سے کی گئی ایسے ہی بیوی کو

ل محبت کا بدار ہے بیسے محبت تقام کر مے حلال حریدے سے بی کی ایسے ہی ہو کی او اس کا عوض بھی حلال چز ہے دیا جائے۔ اس کا عوض بھی حلال چز ہے دیا جائے۔ (محموم بدالا حدة ادری)

هستله مورت اگر ہوش وحواس کی در تھی میں راضی خوشی سے مہر معاف کردے تو معاف ہوائے گا۔ بال اگر مارنے کی جمکی دے کرمعاف کرایا اور عورت نے مارے

خوف سے معاف کرویا تو اس صورت میں معاف نہیں ہوگا اور اگر مرض الموت میں معاف کرایا جیما کے واس سے مہر معاف کرایا جیما کہ کوام میں رائج ہے کہ جب عورت مرنے لگتی ہے تو اس سے مہر

سفات کراہے ہیں تدور میں رون ہے تدب ورت سرے میں ہو ور سے م معاف کراتے ہیں تواس صورت میں ورش کی اجازت کے بغیر معاف نہیں ہوگا۔

(فآويٰ عالمكيري ج أور فقار مع شاي ج٢)

جہالت کی انتہاء

ا کشر مسلمان اپنی حیثیت سے زیادہ مہر رکھتے ہیں اور بیر خیال کرتے ہیں کہ زیادہ مہر رکھ بھی دیا تو کیا فرق پڑتا ہے دینا تو ہے ہی ٹیس۔ پیخت جہالت ہے اور دین سے مذاق ایسے لوگ اس مدیث کو پڑھ کرعبرت حاصل کریں۔

حق مهر بنددینے کا وبال

ابویعلیٰ طبرانی اور بہیں ۔ حضور نبی کریم مشے کو آنے ارشاد فر مایا: روز مرے گازانی مرے گائے دیا ہے کا کہ اور نیت بیاہ و کہ گورت کو مہر میں سے پچو نددے گاتو جس روز مرے گاز آنی مرے گائے ۔ (ابو یعلی طبرانی بیلی نجوالہ بہار شریعت نا اس کے الد عنهان سے امام ابن ابی شیبہ نے حضرت عائشہ اور حضرت ام سلمہ رضی اللہ عنهان سے روایت نقل کی ہے کہ گورت کے تق مہر اور مز دور کی اجرت سے شدید کوئی چیز نہیں۔ روایت نقل کی ہے کہ گورت کے تق مہر اور مز دور کی اجرت سے شدید کوئی چیز نہیں۔ (تغیر درمنشور متر ہم ج م مع مع میں ۲۲۹)

لبذامهرا تنابی رکھ جتنا دیئے کی حیثیت ہے اور مہر جتنی جلدی ہو سکے ادا کر دے کہ یمی افضل طریقہ ہے۔

حق مهر کتنا هو

رسول مقبول مطفحاتية ارشاد فرمات بير-

' وعورتوں میں وہ بہت بہتر ہے جس کاحسن و جمال زیادہ جواور مہر کم ہو''۔

(کیمیائے سعادت)

حضرت عائشہ زلاھا ہے روایت ہے کہ رسول اللہ مطابقی آئے ارشاد فرمایا: عورتوں میں سب سے زیادہ برکت والی وہ ہیں جن کاحق مہرتم سے باندھا گیا (منداحمہ ج۲) عالم متدرک ج۲ ہیج فی السنن ج۸)

حضورسیدناامام محمرغزالی مخطیطیه فرماتے ہیں۔

''بہت زیادہ مہریا ندھنا مکروہ ہے۔ کیکن حیثیت سے کم بھی نہ ہو''۔

(كيميائے سعادت)

کچھلوگ کم ہے کم مہر یا ندھتے ہیں اور دلیل بیدیتے ہیں کہروپ پیسوں سے
کیا ہوتا ہے دل ملنا چاہیے میہ بھی غلط ہے۔ مہر کی اہمیت کو گھٹانے کیلئے اگر کوئی کم مہر
باندھے تو بیر بھی ٹھیکٹ ہیں عورتوں کو اپنا مہر زیادہ لینے کاحق ہے اور اس حق سے ان کوکوئی
مردروکٹ نہیں سکا۔

TORES OF THE SEA (I WILL)

مېر کی زیاده سے زیاده کتنی مقدار ہو بیرحد شریعت میں متعین نہیں۔جس حدیر بات طے ہوجائے اتنامہر یا ندھاجائے کیکن مہر کی کم ہے کم حد متعین ہے۔

حضرت جابر وفافنه سے روایت ہے کہ رسول الله مطفیقی نے فرمایا کہ

لاتفكحوا النساء الأالاكفاء ولايزوجهن الاالا أولياء ولايمهرو دون

(مجمع الزاد كدج 6 طبراني بيبق سنن الكبري كتاب الكاح) ترجمہ عورتوں کی شادی نہ کروگران کے ہم مرتبدلوگوں میں اوران کا نکاح نہ کریں

مگران کے سر پرست اور دس درہم ہے کم ان کاختی مہرنہ با ندھا جائے۔

حق مبر کم ہو

روایت میں ہے کہ حضرت بسیدنا عمر فاروق وٹائٹنڈ زیادہ حق مہر ہا ندھنے سے منع كرتے اور فرمائے تھے كەرنول الله عِنْ اللهِ عَنْ اللهِ عَلَيْ اللهِ عَلَيْ اللهِ عَلَى اللهِ عَلَيْ اللهِ عَلَي ہے ہیں کیا۔ (نسائی ابودا وُ دُرّ ندی ٔ ابن ماجه)

مدیث یاک میں ہے۔

لامهر اقل من عشرة دراهم ليني مبروس درجم جإ ندى سے كم نهور مسٹلہ مہرکی کم ہے کم مقدار دی درہم جائدی ہے۔ اور دی درہم جائدی دوتولہ ساڑھے سات ماشہ کے برابر ہوتی ہے۔ لٰہذا اتنی جاندی نکاح کے وقت بازار میں جتنے کی ملے کم سے کم استے رویے کا مہر ہوسکتا ہے۔ اس سے کم کانہیں ہوسکتا۔ (فآويٰ عالمگري ڄا' فآويٰ فيض الرسول ڄا' ص١٢)

ازواج مطهرات كاحق مهر

حضرت خديجة الكبري وفأثلجا كاحق مهربين جوان اونث يتصاورايك روايت كے مطابق بارہ اوقيه سوناحق مهر تھا جورسول الله مضطَوَّيَةِ نے اوا فرمايا الل علم كزويك

ایک او تیہ جالیس درہم کا ہوتا ہے اس حساب سے بارہ او تیہ چار سواس درہم ہوئے۔ حضرت عا كشهصديقه ونالنحها كاحق مبرجار سودرجم تقا_ حضرت حفصه وذافعها كاحق مهرجيا رسودر بهم قفاب حضرت ام حبیبه وفاضحا کاحق مهرشاه نجاشی وفاشیز نے چار ہزار درہم ادا کیا تھااور ایک روایت میں جا رسودر ہم بھی آیا ہے۔ حضرت سوده وخانلحها كاحق مهرجيا رسودر بهم تها_ حفرت زينب بنت جحش وناتيجا كاحق مهرجا رسودر بهم تفا_ حضرت ميمونه وفالثحا كاحق مهرجا رسودر بم قفا حفرت جويره وفالنعها كاحق مبرتهي حارسودرجم تقااورحق مبركيساته بدل كتابت بفحى ساتھ تھا۔ حفزت صفيه وفانلحا كاحق مبران كاآ زادكرنا مقرركها كماتها_ (السمط الثمين في منا قب امهات المونين علامه متبطري نزبة الجالس ج٢)

(السمط الثمين في منا قب امهات المومنين علامه محبّ طبرئ نزبية المجالس ٢٠)
حضرت ام سلمه تظلفها كاحق مبر گھر كا سامان تھا جس كى قيت دس درہم تقى ـ
طبرانی نے روایت كیا ہے كہ حضور نبی اكرم مشتق تيت نے ان سے گھر كے سامان پر نكاح
كيا۔ (ايوداؤدالطي الكي الهز از بحوالد الافصاح في احاد ہے النكاح)

Ø.....8....A



رسوم شادی

شادی میں طرح طرح کی رسمیں برتی جاتی ہیں۔ ہر ملک میں نی رسم ہرقو ماور ہرخا ندان کا اپناالگ رواج۔ بیکوئی نہیں مجھتا کہ شرعاً بیر سمیں کسی ہیں۔ مگر بیضرور ہے کہ رسموں کی پابندی اب حد تک کی جائے کہ کسی حرام کام میں جتلا نہ ہو۔ پھولوگ رسموں کی اس قدر پابندی کرتے ہیں کہنا جائز دحرام کاموں کو بھلے ہی کرنا پڑے مگر رسم نہ چھوٹے یائے۔

پاک و ہند ہیں عام طور پر بہت ی رسموں کی پابندی کی جاتی ہیں۔ چسے رت جگا 'ہلدی کھیلنے کی رسم نہار کُ شادی کے پہلے یا بعد ہیں جوا کھیلنا 'وعول باج ناچنا گانا ' گنے باجوں اور پٹاخوں کے ساتھ بارات نکالنا 'ویڈ پور یکارڈ نگ وغیرہ وغیرہ ۔ جبکہ ان رسموں میں بے پردگی چچھورا پن عیاشی اور حرام کا موں کا وجود ہوتا ہے۔ جوان لڑکے اور لڑکیاں ہلدی ہندووں کے تہوار' ہولی کی طرح کھیلتے ہیں۔ تا چنا گانا بہودہ ہنی خات اور لڑکیاں ہلدی ہندووں کے تہوار' ہولی کی طرح کھیلتے ہیں۔ تا چنا گانا بہودہ ہنی خات اور لڑکیاں ہلدی ہندوں تو سود پر دو پر قرض کینے ہیں۔ اگر ان تمام رسموں کی پابندی کیلئے رو پے شہول تو سود پر دو پر قرض کینے ہے بھی تہیں چو کتے۔ بیمان ممکن تبین کہ ہر تم پر الگ الگ عوان قائم کر کے تقصیلی بحث کی جائے۔ کہاں ممکن تبین کہ ہر تم پر الگ الگ عوان قائم کر کے تقصیلی بحث کی جائے۔ کہا کہاں محتوی ہوئے ہیں۔ انسان پند کیلئے ای قدر کافی اور کہا حرار شادی کے اعلام کی اعلام کی است در مرم جالی کیلیے قرآن واحاد یث کے فزانے بھی ندکانی۔

فرمان خداوندی

الله رب العزت ارشاد فرما تا ہے۔

وَلا تُبَيِّرُ تَبْنِيْدُ تَبْنِيْدُ الْمُبَنِّدِيْنَ كَأَنُواْ الْحُوانَ الشَّيْطِيْنِ وَكَانَ الشَّيْطُنُ لِرِيَّهِ كَفُوْداً -لِرِيَّةٍ كَفُوْداً -ترجم اورفضول نازا أبيك (فضول) از ان والشيطانوں كے بعائى بين اور

(كنزالايمان)

شیطان این رب کابرانا شکرا ہے۔ فرمان نبوی ملسط میانی

سركارمدينه في المان الما

" بیشک سود کا ایک روپ لینا چیش مرتبدزنا کرنے سے بڑھ کر ہے۔ بیشک سود لینا پی مال کے ساتھ ذنا کرنے سے مجی برتر ہے۔ صدیث یس ہے۔ الربوا سبعون حویا ایسرھا یدی الرجل امه۔

(بحوالة ناوی مصطفویت الرجل امه۔

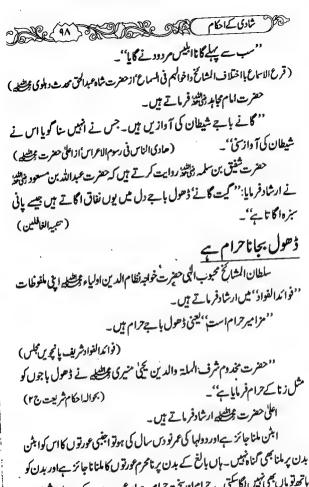
حضوراقدس مطفقیق نے ارشادفر مایا:

''جس نے جوا کھیلا گویا اس نے خزیر (سؤر) کے گوشت اور خون میں ہاتھ رحمیا''۔

'' فناوی مصطفوریہ' میں ہے۔

''جوئے کا حرام ہونا زنا کے حرام ہونے کی طرح ہے کہ زنا بھی حرام تطعی اور جوابھی حرام تطعی''۔ (فاونی مصفویہ جاس ۵۷)

> گاناسننا' گاناگاناحرام ہے حضور نی کریم مظیمیجانے ارشادفر مایا:



بدن پر مانا بھی گناہ نہیں۔ ہاں بالغ کے بدن پر نامحرم عورتوں کا ملنا نا جائز ہے اور بدن کو ہاتھ تو ماں بھی نہیں لگاسکتی۔ بیرترام اور بخت ترام ہے اور عورت مرد کے درمیان شریعت نے کوئی منہ بولا رشتہ ندرکھا بیشیطائی وہندوائی رسم ہے۔ (فآوئی رضویہ ن) قصف آخرم ہے۔

المال عادى كالمال المال المال

شادی پردف بجانا جائزہے

حضرت عائش و المنظم عن وايت بكرسول الله منظمة في ارشادفر مايا: اعلنوا هذا الدكام وجعلوة في المساجد واضربوا عليه ابالدفوف (ترقد كا الافعارة في احد الكام علم الماسم جر)

ترجمہ اس نکاح کا اعلان کیا کردادراس کومساجد میں منعقد کیا کردادراس پردف بجایا کرد۔

حضرت محمد بن حاطب زائمتو سروایت ہے کدرسول الله مِنْ اَلَّمَا فَر مایا: فصل مابین الحرام والحلال ضرب الاف والصوت فی النکام (نسائی کتاب الکاح باب اطلان الکاح بالصوت این ماجہ کتاب الکاح باب اطلان الکاح برقم ۱۸۹۲) رجمه وف بجانا اور نکاح میس آواز بلند ہونا حرام اور حلال کے درمیان فرق ہے۔ درم

فائده

حفرت عمر فالنوز نے ایک طبل کی آ واز سی تو فر مایا ید کیا ہے لوگوں نے عرض کی نکاح ہور ہائے تو فر مایا نکاح کی خبر کو پھیلاؤ۔

حضرت انس فران ہے دوایت ہے کہ حضور ٹی کریم مضافیق نے ارشادفر مایا: زخوا ابنتی یعنی رقیة و دخوابین یدی پا

(مندالفردوں بحوالہ الافصاح فی احادیث النکاح ابن جر) ترجمہ میری بیٹی لیٹن رقیہ کوشو ہر کے پاس پہنچا دواوراس کے سامنے دف بجاؤ۔

JERCIN JANGER (RICUR)

فائده

بلکہ بینڈکورہ چزیں آئ کل گناہ کیرہ کے ذمرہ میں ہیں ان میں محرم اور نامحرم سب تماشاد کیھتے ہیں اور اس میں مغرب کی آ ذرار کی نسواں کا فریب بھی ہے۔ دف بجانا مردوں کیلئے بطور نکاح کے اعلان کے ہاس کا شادی کے گانے باہے کے ساتھ کوئی تعلق نہیں اور شادی کے موقعہ پر بینڈ باج بھی حرام ہیں بے حیائی کی تر تی میں مسلمانوں کی شادیوں میں خوش آ ھاز گلوکاروں کو مردوں اور عورتوں کے سامنے شادی کے موقع پر جدیدتر تی یافتہ سازوں کے ساتھ جمع عام میں بھایا جاتا ہے اور شادی کے موقعہ پر جدیدتر تی یافتہ سازوں کے ساتھ جمع عام میں بھان کو خوش خاصرین اس کے عشقیہ گانے سنتھی اور اپنا ایمان برباد کرتے ہیں اس لئے ان تمام کرتے ہیں۔ اللہ تعالی اس کے رسول میں گئی ہے کہا داش کرتے ہیں اس لئے ان تمام جیزوں کی اسلام میں کوئی گئی آئی ہیں ہے۔ سنا گیا ہے کہ پیض لوگ شادیوں پر منحروں کو بلاکر مزاحیہ ڈراے دکھاتے ہیں اور پھٹی لوگ خسر سے اور طوائفوں سے رتھی کراتے ہیں۔ مسلمانوں چاہیے اس حرام کام سے بچیں اور اپنی مان کہن بین بینی بہوکواس بہودہ ہیں۔

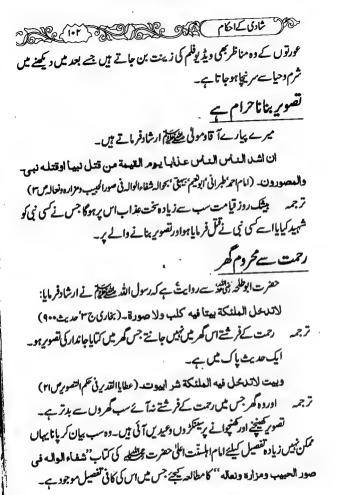
0....0....**0**

THE CONTROL OF THE CO

ويذيوفكم كيحرامرسم

آئ کل شادی بیاہ میں ویڈ یوفلم بنانا شادی کا ایک حصد بن چکا ہے۔ ادھر قاضی صاحب نکاح کا خطبہ پڑھ رہے ہیں۔ قال العبی مضف کے آلدی کا من سنتی۔ لیجئے صاحب ادھر پیشیطانی آلدی اسلامے آ کھڑا اموا اور پھرای پر بس نہیں بلکہ اب بیشیطانی آلد (یعنی ویڈ یو کیمرہ) زنانہ کمرے میں پہنچا اور ہماری ماں بہنوں کو بے پردہ کرنے لگا۔ وہ لوگ جنہوں نے ہماری ماں بہنوں کو بھی نہیں دیکھا تھایا جن سے وہ پردہ کرتی تھیں وہ اب ویڈ یو کے ذریعے کھے عام مجلس میں دکھائی دیے گیس۔ (استغفراللہ)

بخبری میں بے حیائی



Marfat.com

6..... **6**..... **6**



ويذيونكم اور بركارتا ويليس

جب بی خرابیان مسلمانوں کو بتائی جاتی ہیں توان کے چند بہانے ہوتے ہیں۔
ایک تو یہ کہا کریں صاحب ہماری کورتیں اور لڑ کے نہیں مائے ہم ان کی وجہ سے بجور
ہیں۔ یہ بہانہ تھن بیکا رہے۔ حقیقت یہ ہے کہ آدی مرض خود مردوں کی بھی ہوتی ہے
تھی ان کی کورتیں اور لڑ کے اشارہ یا نری پا کرضد کرتے ہیں ور شمکن نہیں کہ ہمارے
گر میں ہماری مرضی کے بغیر کوئی کام ہوجائے۔ جان لیجئے کہ تن تعالیٰ نیت سے خبردار
ہے۔ بعض گھر کے بزرگوں کو دیکھا گیا ہے کہ آگے آگے فرزند کی بارات ناج گانے
ہے۔ بعض گھر کے بزرگوں کو دیکھا گیا ہے کہ آگے آگے فرزند کی بارات ناج گانے
کے ساتھ جا رہی ہے اور چیچے پیچے یہ حضرت بھی لاحول پڑ سے ہوئے چلے جا دہ
ہیں اور کہتے ہیں۔ ''کیا کریں بچنیس مان''۔ یقینا بیلا حول خوثی کی ہی ہے۔ ور نہ جب
بیکا م اس قدر برا ہے کہ آپ کو لاحول پڑ سے کی ضرورت پڑگئی تو آپ اس بارات میں
کرکیارہے ہیں؟ حضرت شی سحدی شیرازی محصلے نے کیا خوب فر مایا ہے۔

كەلاحول كويندشادى كنال

دوسرابہاند سیہوتا ہے کہ ہم کوعلائے اہلسنّت نے یہ باتیں بتائی ہی نہیں اور نہ اس سے دوکا اس لئے ہم لوگ اس سے عافل رہے۔اب جب کدیرسوم چل پڑیں ہیں لہذا ان کا بند ہونا مشکل ہوگیا ہے۔ یقیناً یہ بہانہ بھی غلامے ساما المسنّت نے ان

Carlie Jan Carlott Jan رسموں سے ہمیشہ اپنے واعظ ونقار پر بیل منع کیا۔اس کے متعلق کما بیل ککھیں۔ جبکہ مسلمانوں نے ہمیشہاسے نظرائداز کیااوراسے قبول نہ کیا۔ چنانچە امام ابلسنت اعلی حضرت فاضل بریلوی ومصطبحه نے ہمیشہ نُری رسموں اوريرى بدعوں كے خلاف رنمائل كھے۔آپ نے ايك كماب كھى۔ "جلى الصوت لنهى الدعوة امام المدوت" جس عن صاف صاف فرمايا كرميت كي جملم كا كمانا امیرول کیلئے ناجا نز ہے صرف غرباء ومساکین کھا کیں۔ایک تماب کھی '' ہادی الناس فى دسوم الدعداس "جس ش شادى بياه كى حرام رسمول كى بُرائيال اورشرى احكام و شرى رسمين بيان فرما كيل - ايك كمّاب كلحيّ "مروجه النجا لاخروج النساء" جس میں بیٹا بت فرمایا کہ موائے چند موقعوں کے باقی جگہ تورت کو گھرے لکنا حرام ہے۔ ووكما يريكمي "شفاء الواله في صور العبيب ومزارة ونعاله "أور عطايا لقدير فى حكم التصوير"جس من تعزير كفنيوان اور بنائ كورام ثابت فرمايا - كس كس كتاب كا ذكركيا جائے۔ اعلی حضرت وعضیے نے سینکروں كتابیں ان عنوانات پر تفنيف فرمائي بين- آخر مين ايك اور كتاب كا نام من ليجيّـ "اسلامي زندگي" جو حفرت حکیم الامت مفتی احمہ یارخاں نعبی میشنے نے خاص شادی بیاہ کی رسموں کے متعلق لکھی ہے۔غرض کہ بہت ہےعلاء نے ان عنوانات پر کتا بیں تکھیں۔ان سب کا نام اوران کی کتابوں کا ذکراس کتآب بیش ممکن بھی تونہیں کہ میری کتاب کاعنوان کچھ اور ہے۔اعلی حضرت وطنطی نے کن کن عنوانات رسینکروں تصانیف اپنی یادگار چھوڑی السياس كالنصيل جان كيلئ ناچيزى كتاب"الم احدرضا تحقيق ك من ينه من"كا مطالعه کرس_

بہرحال مسلمانوں کا تیسرا بہانہ بیہ دتا ہے کہ بہت سے عالموں کے یہاں بھی تو بیسب رسمیں ہوتی ہیں۔فلاں عالم کے لڑکے کی بارات ڈھول با جوں کے ساتھ گئ سی نادی کے ادکام کے میں کہ میں کہ ان کے ادکام کوئٹ نہیں کرتے اور وہ خود زکاح کے دفت ویڈ یوفلم کرواتے ہیں۔ فلال برے عالم نے دیڈ یوکلم کے دفت ویڈ یوکلم کے دوغیرہ وغیرہ و

اس بہانہ کے جواب میں میضرور کہوں گا کہ دراصل اہلنت و جماعت کوجس قدر غیروں نے نقصان نہیں پہنچایا ہے اس سے گئ گناہ زیادہ ایسے ند بذب مولو ہوں نے نقصان پہنچایا ہے۔ گویا۔

ال محركة ك لك في محرك جراع سے

اس سے قطعی انکارٹیس کہ ایسے پنم ملا چندروپوں کی خاطر شریعت کے مسائل کو بھی نداق بنادیتے ہیں اور اپنی جموٹی مولویت کا رعب جھاڑنے کیلئے بے بچے مسئلے بیان کرتے ہیں اور اپنی نفسانی خواہشات کو غلاتا ویلوں سے بھی خابت کرنے کی کوشش کرتے ہیں یا پھر ہیچارے سیٹھ صاحب کے احسانوں تلے دیے ہیں اس لئے سیٹھ صاحب کے احسانوں تلے دیے ہیں اس لئے سیٹھ صاحب کے اور کے لئی کی مثادی میں زبان ٹیس کھلتی۔

اے عزیز وایا در کھو! اسلام کی بنیا دایے گمراہ مولو ہوں پر ٹبیس کہ ہم ان کے فعال کودلیل بنائیں کہ ہم ان کے فعال کودلیل بنائیں کہ ہم ان کے معتمدین کی بنیا دایے قرآن داحاد ہے انکر دین بزرگان دین اور علاء معتمدین کے اقوال ہی کافی ہیں۔ ہمیں کی بھی کام کے ناجائز دحرام ہونے کا جوت قرآن داحاد ہے ہیں اور معتمد علاء دین دبزرگوں کے اقوال ہے دیکھنا چاہئے نہ کہ ان نشس پروزامیروں کے چاپلوس مولو یوں کے افعال ہے۔ اور یہ می یا در کھئے! بروزم شرآپ کے کاموں کی پوچھآپ ہے ہوگی آپ یہ کہ کر نہیں نی جائیں گے کہ فلال آپ کے کاموں کی پوچھآپ ہے ہوگی آپ یہ کہ کر نہیں نی جائیں گے کہ فلال مولوی صاحب ایسا کرتے تھے اس لئے ہم نے بھی ایسا ہی کیا علم دین حاصل کرنا آپ بریمی تو فرض ہے۔

 Care in the second of the cont of ترجمه علم دین حاصل کرنا ہرمسلمان مرداور جورت پر فرض ہے۔ لبذا برمسلمان برضروري ب كدوعكم حاصل كرياور ترام وحلال جائز وناجائز میں تمیز سیکھیر مسلمانوں کا چوتھا بہانہ بیہ ہوتا ہے کہ اگر ہم شادی دھوم دھام سے نہیں کریں مے تو لوگ ہم پر طعنہ کے محرکہ کنوی کی وجہ سے بیر سمیں نہیں کی اور بعض احباب ہی كبيل مے كديد اتم كى مجلس بيان ناج كا نائيں كو يا متيبہ براها جار ماب یہ بہانہ بھی بیکارولغو ہے۔ایک سنت گوزندہ کرنے بھی سوشہیدوں کا تواب مایا ہے۔ کیا بیر واب مغت بی مل جائے گا۔لوگوں کے طعنے اورعوام کے مذاق اول اول برداشت کرنے پرس کے اور دوستواب بھی لوگ طعنے دینے سے کب باز آتے ہیں۔ كوئى كھانے يش نقص نكالبّ كوئى جيرًكا فداق اڑا تا ہے تو كوئى اور طرح كى شكايت کرتا ہے۔غرض کہ لوگوں کے طعنے سے کوئی کمی وقت رہے نہیں سکا۔لوگوں نے اللہ و رسول كوعيب لكائے انہيں طعنے ديئے۔ تو تم ان كى زبان سے كس طرح في سكتے ہو۔ پہلی تو کچومشکل پڑے گی محر بعد میں انشاء اللہ وہ بی طعنے دینے والے لوگ تم کو دعا کیں دیں گے اورغریب وغرباء کی مشکلیں آسان ہوجا ئیں گے۔ یا نجواں بہانہ بیہوتا ہے کہ اللہ تعالیٰ نے ہمیں نواز اہے۔ ہمارے ارمان ہیں۔ ائی دولت لٹارہے ہیں اس میں کی کے باپ کا کیاجا تاہے بھلا شادی بھی کوئی بار بار ہوتی ہے'مولویوں کوتوبس اینے ہی کام ہیں بیمت کر دُوہ مت کرو۔وغیرہ۔ مسلمانوں کے اس بہانے میں غرور د تکبری بوآتی ہے۔ اکثریہ بات دولت مند حضرات کتے ہیں۔سب سے بہتر توبیہ وتا کہ مسلمان اپنی اولاد کے نکاح کیلئے خاتون جنت شنرادی رسول حضرت فاطمة الزهره وَالْحُوَاكُ لَكَاحَ بِاكُ وَمُونِه بِناتِے لكِن آه افسوس! آج مسلمان رسول الله ﷺ ' حضرت موليٌ على وحضرت فاطمة حال شادی کے اطام کے اللہ اللہ میں اللہ

خدا کی تم اگر سرکارکون و مکال مظیر کی مرضی مبارک ہوتی کہ میری گئت جگرکی شادی ہوتی کہ میری گئت جگرکی شادی ہوئی دھوم دھام ہے ہوتو و نیا کی ہر نعت آپ اپنی صاجز ادی کے قدموں میں لاکر رکھ دیے ۔ اورا گر حضور مظیر کے سال کر رکھ دیے ۔ اورا گر حضور مظیر کی تحقیل کا نزانہ موجود تھا ، جوایک دھام کرنے کا تخزانہ موجود تھا ، جوایک ایک جنگ کیلئے ہزار ہزاراونٹ اور لاکھوں اشرفیاں حاضر بارگاہ کر دیے تھے۔ لیکن چونکہ مشایرتھا کہ قیامت تک پرشادی مسلمانوں کیلئے نمونہ بن جائے اس لئے نہایت سادگی سے بیاسلامی رسم اوا کی گئی۔ لہذا ہم گذارش کریں گے کہ اے میرے دبی سادگی سے بیاسالمانی رسم اوا کی گئی۔ لہذا ہم گذارش کریں گے کہ اے میرے دبی

ما ئيوا پني شادى مياه سان تمام حرام رسمول كونكال با بركر واور نهايت سادگ سه نكاح ك سنت كوادا كرو-حضور ني كريم مضيح في ارشاد فرمات بين

''شادی کواس قدر آسان کردو که زنامشکل موجائے۔ آسانی کرومشکل میں نیڈالؤ'۔

0....0...0



وولهااوردبن كوسجانا

شادی کے موقع پر دولہا اور دلہن کومہندی لگائی جاتی ہے۔ کنگھن با ندھا جاتا ہے اور تکار کے روز سہرا بائدھ کر زبورات سے جایا جاتا ہے۔ لبذا یہاں چنداہم مسائل بیان کردیتانها بهت ضروری ہیں۔

مسئله عورتون كوباته ياؤل يس مبندى لكاناجائز بكديدزين كى چيز ب_لين بلاضرورت چھوٹے بچول کے ہاتھ یاؤل پس مہندی لگانا نہ جا ہے۔ لڑ کیوں کے ہاتھ ياؤل مين مبندي لگاسكتے ہيں۔جس طرح ان كوزيور پہنا سكتے ہيں۔

(بهارشر بعت جائح١١)

فائده

اس مسلمے پند چلا کہ عورتیں اور بڑی لڑکیاں مہندی لگاسکتی ہیں۔ جاہے شادی کے موقع پرنگا ئیں یا اور کسی موقع پر۔

عورتوں کا مہندی لگانا جائز ہے سركارمديد مطفيكي في ارشادفرمايا:

"عورتول كوچا يك ماته ياؤل پرمهندى لكائين تاكمردول كى باتھ سے

سے شادی کے اعلام سے احتیاطی میں کی غیر مرد کو دکھ جائے تو اسے فوراً پہۃ مثابہ ند ہوں۔ اور اگر کسی وقت بے احتیاطی میں کسی غیر مرد کو دکھ جائے تو اسے فوراً پہۃ مطلح کا کہ مورت کس دیگ کی ہے (لینن کا لی ہے یا گوری۔ کیونکہ ہاتھوں کے دیگ کو

> د کچر کبھی انسان کے چہرہ کے رنگ کا اندازہ ہوجا تا ہے") ای مصریف انسان کے جہرہ کے رنگ کا اندازہ ہوجا تا ہے")

ایک مدیث پاک میں ارشاد ہوا۔ در مصرف بیٹ ڈیسے کئی تھی ہوئے دیتے میں مصرف میں مصرف

'' زیادہ نہ ہوتو ناخن ہی رنگین رکھیں''۔ (فاوی رضوبہ جه نصف آخرم ۱۳۹) البداعورتوں کومہندی لگانا پیٹک جائز ہی نہیں بلکہ ضروری ہے کہ بیا ہاتھوں کا بردہ ہے اور ای طرح ہرفتم کے جایدی وسونے کے زیورات پہنزا بھی جائز ہے۔

ردہ ہے اور ای طرح ہر سم کے چا ندی وسونے کے زیورات پہننا جی جا تز ہے۔ لیکن مردول کومبندی لگانا اور کی بھی دھات کا زیور پہنا حرام ہے۔ چاہے دولہا ہی

دولها كومهندي لكاناجا تزنبيس

ووبہ و ہمدل مان جو رہیں شاہزادہ اعلیٰ حضرت حضور مفتی اعظم ہند پھر شطیعہ کے فناویٰ میں ہے کہ آپ سے سوال یو چھا گیا۔

دولہ کومہندی لگانا درست ہے یا نہیں؟ دولہا چاندی کے زیورات پہنتا ہے۔ کنگھن باندھتا ہے اس صورت میں نکاح پڑھا دیا تو درست ہے یا د

(اس سوال کے جواب میں آپ نے فرمایا) مردکو ہاتھ یاؤں میں مہندی لگانا تاجا زے نوب ہیں ایک جواب میں آپ نے فرمایا) مردکو ہاتھ یاؤں میں مہندی لگانا تاجا زج نوب ہینا گناہ ہے۔

یہ سب چیزیں پہلے اتر وائے پھرٹ آپر معائے کہ جتنی دیر نکاح میں ہوگی اتی ویروہ دولہا اور گناہ میں رہے گا اور برے کام کوقد رہ ہوتے ہوئے نہدو کنا اور دیر کرنا خود گناہ ہے۔ باتی اگر زبور پہنے ہوئے نکاح ہوا تو ندروکنا اور دیر کرنا خود گناہ ہے۔ باتی اگر زبور پہنے ہوئے نکاح ہوا تو نکاح ہوا تو نکاح ہوا تو نکاح ہوا تو نکاح ہوا تو

و خادل کا افال کا افال

حضرت ابو ہرمیرہ ڈٹائٹو سے روایت ہے کہ

" حضوراكرم مطاقية كے پاس ايك يجوا حاضر كيا كما جس نے اپنے ہاتھاور

پاؤں مہندی سے دیکئے ہوئے تھے۔ حضور مشکھی آنے اے دیکھ کرارشادفر مایا۔ "اس نے مہندی کیوں لگائی ہے " ؟ لوگوں نے عرض کیا۔ "میورتوں کی نقل کرتا ہے " سر کار

تے ہمدن یوں نوں ہے ؛ ووں سے حرس بیا۔ بیوروں میں سر منطقاتی نے تھم فرمایا کداسے شہر بدر کردو۔ البذااسے شہر بدر کردیا گیا''۔

(ابودادُدج٣ صديده١١٥)

امام المِسنّت اعلیٰ حضرت وطشیلیه '' فقاد کی رضوبیهٔ میں فرماتے ہیں۔ '' ہاتھ یاؤں میں بلکہ ناخنوں میں ہی مہندی لگانا مرد کیلیے حرام ہے''۔

(فنا وي رضويه جه نصف آخرص ١٣٩)

ایک نیم مولوی صاحب نے ہمارے ایک عزیز سے کہا کہ مرد کومہندی لگانا حرام ضرور ہے لیکن اگر اپنے ہاتھ کی چھوٹی انگلی میں تھوڑی می لگالیں تو حرج نہیں۔ (معاذ اللہ) ہمارے اس دوست نے جواب دیا۔ ' تو پھرکوئی شخص کہ سکتا ہے کہ شراب

حرام ضرور ہے مرتھوڑی کی لی جائے تو حرج نہیں'؟

بنیں کہ ای میں ان کی نجات ہے۔

غرض کہ آج کل کے چند نیم مولو یوں نے بیشعار بنا رکھا ہے کہ مسائل کی کتابیں پڑھنے کی بجائے اپنی نفس پرتی میں جمہد ہے چھرتے ہیں اوراپنی ہاتھ عشل سے اوٹ پٹا نگ نے نئے مسئلے پیدا کرتے رہتے ہیں۔ انہیں اتی تو فیق نہیں ہوتی کہ جتنی دیروہ اپنی ناتھ عقل پر ذور دیتے ہیں اتی دیرکوئی مسائل کی کتاب ہی پڑھ لیس اور مسئلہ کو کتاب سے دیکھ کر بتائے انہیں تو اپنی واہ واہ ہی اور اپنے آپ کوعلامہ کہلوانے میں من مزہ آتا ہے۔ اللہ تعالی انہیں تو فیق دے کہ وہ علی عش سے معنوں میں پرو

0...0...0



دولها كوسهرا يبهنانا

سرا پہننا مہار ہے۔ لینی پہننے تو ندکوئی تواب اوراگر نہ پہنے تو ندکوئی گناہ یہ جو عوام ہیں مشہور ہیں کہ سہرا پہننا حضور نبی کریم ﷺ کی سنت ہے۔ بیچنس باطل اور سراسرجھوٹ ہے۔

مجدداعظم سیدنا امام احمدرضا خال مختصلی ارشاد فرماتے ہیں۔

''سہرانہ شریعت ہیں منع ہے نہ شریعت ہیں ضروری یا مستحب۔ بلکدا یک دنیاوی رسم ہے۔ کی تو کیا! نہ کی تو کیا! اس کے علاوہ جوکوئی اسے حرام گناہ و بدعت و ذلالت بتائے وہ سخت جھوٹا سراسر مکار ہے۔ اور جواسے ضروری و لازم سمجھے اور ترک کو بُرا جانے اور سہرانہ پہننے والوں کا نما آل اڑائے وہ صرف جابل ہے''۔

(هادى الناس في رسوم الاعراس مسهم)

سہرا گلاب کے پھولوں کا ہو

دولے کا سمرا خالص اصلی ہولوں کا ہونا چاہیے۔ گلاب کے پھول ہوں تو بہت بہتر ہے کہ گلاب کے پھول حضورا کرم مشخ آنے آئے پید مبارک سے پیدا ہوئے۔ اورائے آپ مشخ آنے آئے پند فرمایا جیسا کہ احاد یٹ کی اکثر کتا ہوں سے ثابت ہے۔ حضرت محدث سیدی امام شخ شہاب الدین احمد قسطانی فی مشطعے اپنی تصنیف

TERE IN THE SEE (I WILL IN) "مواهب الدنيه، "مل اورحفرت محقق شاه عبدالحق محدث د بلوي عطيها الي شمره آ فاق تعنيف مدارج النبوة "من روايت كرتے بن ك ''شب معراج حضورا كرم مطيعة إلى ك پسيند مبارك سے كاب كا چول پيدا موا اورایک روایت میں ہے کہ چنیلی حضور مطابقاً کے پسیندمبارک سے بیدا ہوئی"۔ (مواهب الدنيه دارج النوةج ١) حالانكه محدثین کی اصطلاح میں بیرحدیث محت کا درجہنیں رکھتی لیکن فضائل میں حدیث ضعیف بھی قابل اعتبار ہے۔جبیا کہ یہی حضرت امام قسطلانی 'حضرت ابوالفرح نہروانی مخطیعے ہے آ گےروایت کرتے ہیں کہ "نیر حدیثیں جن میں ذکر ہوا کہ حضور مضح فیا کے پیدم مارک سے گاب پیدا ہوا اگر چہرمحدثین کواس میں کلام ہے کیکن ان حدیثوں سے جو پچھ آیا ہے وہ نبی کریم منظ كالم كالمراب المنظل وكرم وججزات مل سالك قطره باوران كثرت مل س بہت تھوڑ ا ہے جن سے پروردگارعالم نے اپنے حبیب مضائقی کو کرم فرمایا۔ محدثین کا ان میں کلام کرنا اسناد کی تحقیق و تھیج کے لیاظ سے بے ٹاممکن ہونے کی بناء برنہیں''۔ (موابب الدنيه بحواله مدارج النوة ق ج ا) حضورا كرم مصيحة ارشادفرمات بي-"جوكونى ميرى خوشبوسو كلمناجاب وه كلاب كوسو تكفي" _(مدارج الملوة حا) معلوم ہوا کہ گلاب کا وجود حضور نی کریم منطققیۃ کے پیندمبارک سے ہےاور كلاب كاسونكنا كوياسركار دوعالم مضيجية ك خوشبوسو تكف كمثل بياى لتي علماءكرام

فرماتے ہیں۔ ''جب بھی کوئی گلاب کے پھول کوسو تکھے تواسے چاہیے کہ وہ حضور مضافیّا پر درود شریف پڑھے''۔ رور شادی کے اعلام کی میں میں میں میں اس میں ہوتو خالص گلاب یا چنیلی کے چھولوں کا سرا پہنے۔سرے

میں چک والی پنیاں ندہوں کہ بیزینت ہے اور مرد کوزینت کرنا اور ایمالباس پہننا جو چک دار ہو حرام ہے۔ دولہن کے سہرے میں اگر چک والی پنیاں ہوں تو کوئی حرج

چک دارہو مراہ نہیں کہ عورتوں کوزینت جائز ہے۔

یں مدوروں اور سے ب رہے۔
پچھاوگ سم سے میں روپ (نوث) وغیرہ لگاتے ہیں یہ فضول خربی اور غرور
و تکبری نشانی ہے اور تکبر شریعت میں سخت حرام ہے۔ لہذا اگر سمرا صرف خوشبودار
پھولوں کا بی ہواوراس پر زیادہ روپے بربادنہ کئے جا کیں کہ شادی ایک دن کی ہوتی
ہجر تو یہ ہے دوسرے دن سم رے کوشتو پہنا جاتا ہے اور نہ بی وہ کی کام کا ہوتا ہے۔ سب سے
بہتر تو یہ ہے کہ گلے میں ایک گلاب کا ہارڈ ال لیا جائے۔ یہی زیادہ منا سب ہے۔



دولہااوردلہن کوسجاتے وقت کی دعا

دلہن کو جوعورتیں ہجا ئیں انہیں چاہیے کہوہ دلہن کو دعا ئیں دیں۔ حدیث پاک ہیں ہے۔حضرت عائشہ صدیقہ فطانی ارشاد فرماتی ہیں۔ ''حضور نبی کریم مضطانی ہے جب میرا نکاح ہوا تو میری والدہ ماجدہ مجھے سرکار مدینہ مضطانی کے دولت کدہ بچرلائی وہاں انصار کی کچھ عورتیں موجودتھیں انہوں

ر جھے ہجایا اور پیدعادی۔ نے جھے ہجایا اور پیدعادی۔

عَلَى الْغَيْرِ وَالْبَرَكَةِ وَعَلَى عَيْرِ طَآزِرِ) ترجمه خيروبركت موادرالله في تبهارا تعييه أحجما كيا_

(بخاري ج ۴ باب ۸۵ مديد ۱۳۲)

للغدا ماری اسلامی بہنوں کو بھی جائے کہ جب بھی وہ کسی کی شادی کے موقع پر

جائیں تو دلہن ہجاتے وقت یا پھراس سے ملاقات کرتے وقت ان الفاظ میں دعادیں۔ ای طرح دولہے کے دوستوں کو بھی چاہیے کہ وہ دو لہے کو سہرایا ندھتے وقت یہی دعادیں۔ بخاری شریف کی ایک دوسری روایت میں ہے کہ

''حضورا کرم منطقیقیا نے حصرت عبدالرحمٰن بن عوف بناتین کوان کی شادی پر اس طرح برکت کی دعاار شادفر ما کی تھی''۔



نكاح كابيان

ایک غلط ہی کاازالہ

اعلی حضرت امام احمد رضاخاں فاضل بریلوی بوطنی ارشاد فرماتے ہیں۔

"کچولوگوں کا خیال ہے کہ نکاح محرم کے مہینے میں نہیں کرتا چاہیے بید خیال فضول وفلط ہے۔ نکاح کی مہینے میں منع نہیں۔
فضول وفلط ہے۔ نکاح کی مہینے میں منع نہیں۔

مسئللہ اکثر لوگ ماہ صفر میں شادی بیاہ نہیں کرتے 'خصوصاً ماہ صفر کی ابتدائی تیرہ تاریخیں بہت زیادہ منحوں مائی جاتی ہیں اور ان کو'' تیزہ تیزئ' کہتے ہیں بیسب جہالت کی باتیں حدیث پاک میں فرمایا کہ صفر کوئی چیز نہیں بعنی لوگوں کا اسے منحوں جمسانطط ہے۔ ای طرح ذیقعدہ کے مہینہ کوئی بہت لوگ براجائے ہیں اور اس کہ منحوں جمین کوئی میں شادی نہیں کرتے ہیہ می جہالت و کوئی کا مہینہ' کہتے ہیں اور اس ماہ میں بھی شادی نہیں کرتے ہیہ می جہالت و کوئی تاریخ کوہوں کی ہے۔

(بهارشربیت ج۲ ح۲۱ ص ۱۵۹)

لوگوں میں یہ می مشہور ہے کہ ہر ماہ کی چاند کی چدرہ تاریخ کے بعد نکاح نہیں کرنا چاہیے جے دہ اپنی زبان میں اثر تا چاند کہتے ہیں اور ان تاریخ س کومبارک نہیں

TERESTA (BIZUIT)

جانے بلک جاند کی ایک تاریخ سے پندرہ تاریخ تک کی تاریخوں کومبارک مانا جاتا ہے اورائے پڑھتا چاند کہتے ہیں۔ بیسب جہالت ولغویات ہے اسلام میں اس کی کوئی اصل نہیں۔ شریعت اسلامی کے مطابق کی مہینے کی کوئی تاریخ منحوں نہیں ہوتی بلکہ ہر دن ہر تاریخ اللہ عزوجل کی بنائی ہوئی ہیں۔ غرض کہ ہر مہینے کی کمی بھی تاریخ کو تکاح کرنا درست ہے۔

نکاح کس دن کیاجائے؟

حفرت ابن عباس فالمن المستدوايت بكدسول الله مطالقية في ارشادفر مايا: والجمعة يوم خطبة الدكاح (الانساح في احاديث الكاح علامه ابن جر)

ترجمه اورجمعه خطبه نكاح كادن ہے۔

حضورسیدناغوث الاعظم شیخ عبعالقادر جیلانی بغدادی پر بیطنی نقل فرماتے ہیں ک'' فکاح جعرات یا جمعہ کو کرنامتحب ہے۔ صبح کی بجائے شام کے دفت فکاح کرنا بہتر وافضل ہے''۔
(فنیة الطالبین باب۵)

اعلیٰ حفرت امام احمد رضاخاں فاضل بر ملوی پوشیجیے '' قادیٰ رضوبی' میں نقل فرماتے ہیں کہ'' جعد کے دن اگر جعد کی اذان ہوگئی ہوتو اس کے بعد جب تک نماز نہ پڑھ کی جائے نکاح کی اجازت نہیں کہ اذان ہوتے ہی جعد کی نماز کیلئے جلدی کرنا واجب ہے پھر بھی اگر کوئی اذان کے بعد نکاح کرےگا تو گئے ہوگا۔ گرنکاح توضیح ہو جائے گا''۔

(فاد کی رضوبیج کا مراک کی ادان کے بعد نکاح کرےگا تو گئاہ ہوگا۔ گرنکاح توضیح ہو جائے گا''۔

دولہادلہن دونوں کے ماں باپ کا یا پھر کسی ذمہ دارر شتے دار کا فرض ہے کہ نکاح کیلئے صرف اور صرف می عالم یا قاضی کو ہی بلوائیں۔ قاضی وہائی دیو بندی م مودودی نیچری غیرمقلدوغیرہ ضہو۔ TELL THE TELL THE LEIL OF THE

امام عشق ومحبت مجدد اعظم اعلی حضرت امام احمد رضاخال محطیعید ارشاد فرماتے میں کہ '' وہائی سے نکاح پڑھوانے میں اس کی تعظیم ہوتی ہے جو کہ حرام ہے۔ لہذا اس ہے بچنا ضروری ہے''۔ (الملفوظ جسم میں اس کی اسلام علی سے المسلوط علی سے میں اس کا اسلام علی سے المسلوط کی سے ا

نکاح ساجد میں کیاجائے

حضرت عائشهمد يقد تلا التي المساجد واصر بوا عليه بالاخوف اعلنوا هذا الديماء وجعلوة في المساجد واصر بوا عليه بالاخوف وليولم احد كمر امراة وهو يخضب بالسواد وليولم احد كمر امراة وهو يخضب بالسواد وليعد الهذ (يبقى بحوالدالاصفاح في احد يشارك علاما بن الماح كر امراة وهو يخضب بالسواد ترجم اس نكاح كي شير كرواوراس كومساجد شي منعقد كيا كرواوراس پردف بجايا كرواور با كرة مي س مرايك وليمه كيا كرا اگر چدا يك بكرى كساته مى كول نه بهواور جبتم ميس سے كوئى شمى عورت كونكاح كا پينام دے جبكدوه سياه خضاب كرتا موال كون تهيا كے۔

فائده

اس مدیث سے سیاہ خضاب کا جواز ٹابت نہیں ہوتا کیونکہ مدیث میں 'ان من فعلہ لا پریہ رانحة الجنة ای مع الناجین ''ینی جس نے ایہا کیاوہ جنت کی خوشبونہیں سو تکھے گا لیمی نجات یا فتہ لوگوں میں سے نہیں ہوگا۔ سیاہ خضاب کی حرمت کے بارے میں اعلیٰ حضرت امام احمد رضا خال پر یلوی عراضیا ہے کا رسالہ ' مک العیب'' کا مطالعہ کریں۔

شرا ئطاكا نكاح

نکاح کے شرائط میں ہیہے کہ دوگواہ حاضر ہوں اوران دونوں کو اہوں کا بھی

SECTIVE SECTIONS AS ت صحح العقيده ہونا ضروري ہے۔ مسئله ایک گواہ سے نکاخ نہیں ہوسکیا جب تک کہ دومردیا ایک مرداور دو گورتیں مسلمة سني عاقله بالغدنه هول_ (فآويل رضويهج ۵ ص ١٦٣) مسئله سب کواہ ایسے بدند ہب ہیں کہ جن کی بدند ہی حد کفر تک بھن چکی ہو ہیے و ہائی دیو بندی ٔ رانضی نیچری چکڑ الوی قادیانی غیرمقلدُ دغیرہ تو نکات نہیں ہوگا۔ (فآوىٰ افريقه ١٢) حضرت ابن عباس وفاطن سے دوایت ہے کہ حضورِ اکرم مضافیقی نے ارشاد فرمایا: البغايا اللاتي ينكحن انفسهن بغير بيئة (ترندى جا اياب ۵۱ كامديث ۱۰۹۵) كوابول كے بغير نكاح كرنے والى عورتيل ذائير (زناكار) ہيں۔



بعدنكاح شيريني تقسيم كرنا

اعلیٰ حضرت مخطیعے ارشاد فرماتے ہیں کہ

''(نکار کے بعد) چھوہارے (تھجور) حدیث میں لٹانے کا تھم ہے اور لٹانے میں کہ ہے اور لٹانے میں لٹانے کا تھم ہے اور لٹانے میں بھی کوئی حرج نہیں اور میں حدیث دارتطی ویسٹی وطعنا دی سے مردی ہے''۔

(الملفوظ الحفظ التا اعلیٰ حصرت میں معلوم ہوا کہ نکاح کے بعد مصری و محجور لٹانا جا ہے۔ یعنی لوگوں پر بھیریں۔

لیکن لوگوں کو بھی جا ہے کہ وہ اپنی جگہ پر بیٹھے رہیں اور جس قدر ان کے دامن میں کرے وہ اٹھالیں۔ زیادہ حاصل کرنے کیلئے کی پر ندگر پڑیں۔ اب موجودہ ت تی ک

دور میں لٹانے کی بجائے پیکٹ بنادیئے گئے ہیں جس میں تقریباً تمام میوہ جاتے ہوتے ہیں تقسیم کئے جاتے ہیں۔



دولهااور دلبن كومبارك باد

نکاح ہونے کے بعددو لہے کواس کے دوست احباب اور دلہن کواس کی سہیلیاں مبارک با داور برکت کی دعا کریں۔

حضرت ابو ہر پرہ زمالشہ سے زوایت ہے کہ

"جب كونى فخص فكاح كرتا تو حضور ني كريم مطفيقية اس كومبارك باددية ہوئے اس کیلئے دعا فرماتے۔

بأرك الله لك وبارك عليك وجمع بينكما في خير-

(ترندى چائيا ٢٨٠٤ كا حديث ٨٨٠ أالوداؤدج ٢ باب ١١١ حديث ٣٦٣)

الله تعالى مبارك كرے اورتم يريركت نازل فريائے اورتم وونوں ميں بھلائي



جہزرکا بیان

لڑ کی کو جہزر ینا سنت ہے۔

حضرت جابر بن عبدالله رخالفيز سے روایت ہے کہ

ان عائشه زوجت يتيمة كانت عدرها فجهزها رسول الله سُخَيَّامً من

(منداهام اعظم باب۱۲۲)

ترجمہ حضرت عائش صدیقہ نظامی نے ایک یتیم بچی کا نکاح کیا جے آپ نے پالا تربیہ ارال بال مشکلات زام کی بنایں سے جن دا

تھا تورسول الله منظيمَ آيا نے اس کواپنے پاس سے جہيز ديا۔

فائده

اس حدیث سے معلوم ہوا کہ جہنر دینا سنت رسول مشتیکی آج ہے۔ گر ضرورت سے زیادہ دینا اور قرض کے کرد ینا درست نہیں۔ جہنر کیلئے بھی کوئی حد ہونی چاہیے کہ جس کی ہرخریب وامیر پابندی کر سے۔ امیر ول کوچاہے کہ جس کی ہرخریب وامیر پابندی کر سے۔ امیر ول کوچاہے کہ وہ اپنی بیٹیوں کو بہت زیادہ جہنر نددیں۔ جاسجا کر دیکھا دیکھا کر جہنر دینا بالکل مناسب نہیں۔ ناموری کی لا کج بھی اپنے گھر کو آگ ندلگا تیں۔ یا در کھئے کہنام اور عزت تو اللہ تعالی اور رسول اللہ بھی تام کی بیروی میں ہے۔



جيز ميں قرآن ياك دينا

قتم کھائی تھی کہ اپنی بیٹی کو جیز میں دنیا کی ہر چیز دوں گا۔اور دنیا کی ہر شئے تو باد شاہ بھی نہیں دے سکتا۔اب میں کیا کروں کدمیری میتم پوری ہوجائے۔آپ نے فرمایا کہ تو ا بنی لڑکی کو جہیز میں قر آن کریم دے دے کیونکہ قر آن شریف میں ہر چیز ہے۔ پھر پیر آیت پڑھی۔

وَلَا رَكْبٍ قُلَا يَابِسِ إِلَّا فِي كِتْبٍ مُّبِيْن

(تفيرروح البيان بااسورة يونس السك كتغير)

لڑ کے والوں کو چاہیے کہ لڑکی والے اپنی حیثیت کے مطابق جس قدر بھی جہز دیں اسے خوثی خوثی قبول کرلیں کہ جھیز دراصل تخدے کی تھم کی تجارت نہیں لڑ کئے والوں کا این طرف سے ما تک کرنا کہ میہ چیز دؤوہ چیز دو کی ہٹ دھرم بھکاری کے بھیک ما تکنے سے کی طرح کمنہیں۔

مسئلہ جمیز کے تمام مال پر خاص مورت کا حق ہے۔ دوسرے کا اس میں پکھ حق (فأوى رضويه ج٥ص٥٢٥)

دولہا کو کیا تخفہ دیا جائے؟

حارے ملک میں بیردان ہرقوم میں پایاجا تاہے کہ نکاح کے بعد دولہن والے دد لہے کو پچھ تھنے دیتے ہیں جس میں کپڑے کا جوڑا 'سونے کی انگوٹی اور گھڑی دغیرہ ہوتی ہیں یخنددینے میں کوئی حرج نہیں لیکن اس میں چند ہاتوں کی احتیاط بہت ضرور ی ب-مثلاً آپ جوانگوهی دو لې کودين ده سونے کی ندمو۔ هسئله مردکوکی بھی دھات کا زیور پہٹنا جائز نہیں۔ عورت کوسونے کی انگوشی اور

سونے چاندی کے دوسرے زیور پہننا جائز ہیں۔ مرد صرف چاندی کی ایک بی انگوشی
ہیں سکن ہے ۔ لیکن اس کا وزن ساڑھے چار ماشہ کے موجا چاہے۔ دوسری دھا تیں
چسے لوہا 'پیٹل ٹا نابا' جست وغیرہ ان دھا توں کی انگوشی مرد اور عورت دونوں کو پہننا
ناجائز ہے۔
حضرت عبداللہ بن پر بیدہ ڈواٹٹو اپنے والد ماجدے دوایت کرتے ہیں کہ
ایک شخص حضور مطابق کی ضدمت میں پیٹل کی انگوشی بہن کر صاضر ہوا۔ سرکار

معرت حبراللد بن بریده دی مقد اسے والد ما جد سے روایت ارسے بیل له

ایک فض حضور منطق کی خدمت بیل پیشل کی انگوشی پہن کر حاضر ہوا۔ سر کار

دوعالم منطق کی آئے ارشاد فرمایا "کیابات ہے کہتم سے بتوں کی ہوآتی ہے " انہوں
نے وہ انگوشی کھینک دی چر دوسرے دن لوہے کی انگوشی پہن کر حاضر ہوئے۔ فرمایا
"کیابات ہے کہتم پر جہنیوں کا زیورد کھتا ہوں " عرض کیا" یارسول الله منطق کیا آبا چر

کس چزی انگوشی بناؤں "؟ ارشاد فرمایا۔" چا ندی کی اور اس کوساڑھے چار ماشے

ے نیادہ فد کرتا''۔ (ابوداؤدج س باب ۴۹۲ مدے ۱۹۱۱) مسئله مردکودوا معضیال پہنا عام ہے اندی کی بی کول ندہو سخت تا جائز ہے۔

ای طرح ایک انگوشی میں کئی تک ہویا ساڑھے چار ماشے سے زیادہ وزن کی موتو وہ مجمی ناجائز و گناہ ہے۔ (۱۸ احکام شریعت ۲۳ س۱۲۰)

مسئله انگوشی کا محید (تک) برتم کے پھر کا بوسکتا ہے عقین یا توت زمرد فیروزه ا وغیر باسب کا محید جا تزہے۔ (در مخار دردالحار اون شریت ۲۰ م ۱۹۲)

للبذاد و لیے کوسونے کی انگوشی شددے بلکداس کی بجائے اس کی قیت کے برابر کوئی اور تخفہ یا پھر چاندی کی صرف ایک انگوشی ایک تک والی ساڑھے چار ماشہ ہے کم وزن کی ہی دیں۔ورند دینے والے اور پہننے والا دونوں گنبگار ہوں گے۔

ممکن ہے آپ کے دل میں بیر خیال آئے کہ اگر چاندی کی انگوشی ویں گے تو کیالوگ کہیں گئے بہت زیادہ بدنا می ہوگی۔وفیرہ۔وفیرہ۔قو ہوشیار!بیسب شیطانی

THE STATE OF THE CUIT YOU وموسے ہیں ابلیس مردود ای طرح بدنا می کا خوف دلا کرلوگوں سے غلط کام کروا 7 ہے۔ ہم آپ سے ایک سیدھی کی بات پوچھتے ہیں کہ آپ کواللہ عز وجل اور اس کے رسول مضائقاً کی خوشنودی جاہیے یا لوگوں کی واہ! واہ! سوچے اورایے مغیرے ہی اس کا جواب طلب سیجیحے۔ شادی کےموقع پراکٹر دو لیم کو گھڑی دی جاتی ہے۔ گھڑی کی زنجیر (چین) کے متعلق چندمسائل یہاں بیان کئے جارہے ہیں اس پڑمل کرنا ضروری ہے۔ سر کارسیدی اعلیٰ حضرت امام احمد رضا خال مخطیطی اینے ایک فتویٰ میں ارشاد فرماتے ہیں۔ ' محری کی زنجر (چین) سونے طاندی کی مردکو حرام ہے اور دوسری دھاتوں (جیسے لوما' پیتل'اسٹیل وغیرہ) کی ممنوع۔ان کو پمین کرنماز پڑھنااورامامت كرنا مكروه تحريمي (ناجائز دگناه) ہے۔ (احکام شریعت ۲۵س۱۵) حضور مفتی اعظم ہند و شکیے اینے فتوی میں ارشاد فرماتے ہیں۔ '' وہ گھڑی جس کی چین سونے یا جا ندی یا اسٹیل وغیرہ کسی بھی دھات کی ہو۔ اس كااستعال ناجائز ہے اوراس كو پىئ كرنماز يرد هنا گناهٔ اور جونماز يردهي واجب الاعاده ب(لین اس نماز کادوباره پرهناواجب بورند کنهگار موگا) (بحواله ما بنامه استقامت كانيور جنور ١٩٧٨ء) اس لئے بمیشدوہی گھڑی پہنے جس کا پشہ چمڑے پلاسٹک یاریگزین کا کپڑے وغیرہ کا ہو۔ اسٹیل یا کسی اور دوسری دھات کا نہ ہواور شادی کے موقع پر بھی اگر دو لہے کوتھنہ میں گھڑی دینا ہوتو صرف چمڑے یا چلاسٹک کے بیٹے والی ہی گھڑی دے۔ O....O....O

THE THE THE SECTION OF

جهير سنت مصطفي العنت خدا؟

مقاله نگار:صونی بإصفایا د گاراسلاف حضرت علامه مفتی علی احمر سندهیادی

(سابق شيخ الحديث منهاج القرآن يو نيورش لا مور)

(سابل تا الحديث متهائ القرآن يويوري لا جور) وه نكاح بابركت ہے جس ميں بو جھود مشقت كم جولينى نىد جېزر ينايزے نەمبر

۔ کسی عورت ہے اس کا مال ہفتم کرنے کیلئے شادی کرنے والا مرد کمییزو بے

عیرت ہے۔ ۳) جووالدین اپنی پکی کا نکاح جمیز کا تقاضا کرنے والے ہے کرتے ہیں وہ ظالم

ہیں اورا پی پی کوالی آگ میں کھینک رہے ہیں جس میں وہ ہمیشہ جلتی رہے گی۔ ۴) ہبترین جیزا بی بچی کو دینی تعلیم دینا ہے۔

۰) ۴ کی کو جنیز دے کر ورا ثت ہے محروم کرنا ظلم عظیم اور تھم خداوندی کی خلاف ۵) گلر کی کو جنیز دے کر ورا ثت ہے محروم کرنا ظلم عظیم اور تھم خداوندی کی خلاف

-> رورون ورزی ہے۔

ورری ہے۔ جہیز کی رسم

(1

اتی ضروری اور عام ہوگئ ہے کہ لوگ جہر کے بغیر شادی کو کمل ہی نہیں سجھتے۔ یہ ایک معاشرتی بُرائی بن گئ ہے جس کی وجہ سے لوگ معاشی طور پر بہت زیر یار ہو جاتے ہیں۔قرض لیتے ہیں جائدادر بمن رکھتے ہیں اور عمر پھر قرض اور معاشی پریشانی کے چکر میں تھنے رہتے ہیں یکی سبب ہے کہ پاک و ہند کے بہت سے علاقوں میں

THE STATE OF CHILLIP لڑ کی کی پیدائش کوایک مصیبت اور ہار سمجھا جاتا ہے اورا کثر اس پر رنج وافسو*س کر*تے ہیں۔ جہز دینے کی رسم محض روایات پر بن ہے اور بیاس لئے بہت یُر کی اور نقصان رساں بن گئی ہے کہ اس کوشادی کا سب سے اہم حصہ اور خاندان کی عزت کا مسئلہ سمجھ جاتا ہے۔ چنانچہ لوگ محض مصنوعی عزت کیلئے اپنی حیثیت سے مجی زیادہ جیز دیتے ہیں اوراس کی وجہ سے متعل طور برمعاثی مشکلات میں جتلا ہوجاتے ہیں۔ كيارسول الله مطفالة في الني بيليون كوجميز دياتها؟ بعض لوگوں کا خیال بیہ ہے کہ حضور عائظ التا ہے نے حضرت نے حضرت فاطمہ تطلعجا كوجهيزديا تفالبذا جهيزديناسنت بإلين سيخيال بالكل غلط ب_حقيقت بيب حضور عَلِيْكُمْ اللَّهُ مَعْرِت عَلَى مُؤْتِنَّهُ كِيمِر بِرست تَصْ اور شادى كے بعد ان كا الگ گھر بسانے کیلئے چند نہایت ضروری چزیں اس قم سے متکوادیں جو حضرت علی ذالتو نے حق مېر كے طور پردى تقى دورندا گرجېز دىيامقىمود بوتا تو حضور غايطاقا ا دوسرى بينيوں كو بحى جیز دیتے اس کی وجہ پڑی کہ آپ کی دوسری ویٹیاں جن گھروں میں بیای مکیں وہاں گریلوضرورت کا سامان پہلے سے ہی موجود تھا۔اس لئے کسی قتم کے سامان کی تیاری ك ضرورت نتيجي كل حفرت على ذائنة كالبيلے سے اپناكوئي كمر موجود ندتھا اور روايات میں ہے کہ ایک محالی حضرت حارث انساری ڈٹائٹز نے اپنا ایک مکان انہیں پیش کیا۔ جس كيليح ببرحال تعوثرے بہت گھريلوسامان كى ضرورت بھى جوحضور عا القام نے مبركى رقم سے تیار کروایا جو حضرت علی ذائتی کی شادی سے پہلے اداکی تھی نہ تو حضور ملیظ المام نے دوسرى بينيول كوجيز ديا اور ندامهات الموشين نظافها جيز لائي اكرجيز ديناسنت رسول ہوتا تو صحابہ کرام وی کی ایش بیٹیوں کو جیز و پیتے کین اس کی کوئی مثال نہیں لتی - حالانکه محابر کرام دی می این کوسنت نبوی پر عمل کرنا سب سے زیادہ محبوب و مطلوب تغابه JERCIIT JOSE DE LEICUIT DE

المسنّت اورالل تشیح کی متفقر روایات ہے تابت ہے کہ حضور سیرہ فاطمہ وُٹالٹھا کے جیز کا سامان مہرکی رقم سے تیار کیا گیا تھا۔

المسنّت كى مشہور كتاب شرح زرقانى ميں مستقلّ عنوان ' ذكر تروق على بفاطمة ولاق ''قائم كيا كيا ہے اوراس كے تحت فدكورہ جيز كانفسيل يوں بيان كائى ہے۔

والله على المرسل الله عليه وآله وسلم فقلت: تزوجنى فاطهة قال حتى اتيت النبى صلى الله عليه وآله وسلم فقلت: تزوجنى فاطهة قال اعتدك شنى؟ فقلت فرسى ودرعي- قال اما فرسك فلا عبدلك منها واما درعك فبعها فبعتها من عثمان بن عفان باربع مانة وثمانين درهما ثمر ان عثمان ردالداع الى على فجاء بالدرع والدراهم الى المصطفى صلى الله عليه وآله وسلم فدعا لعثمان بدعوان كما فى رواية فجئته بها فوضعتها فى حجرة فقبض منها فيضة فقال اى بلال ابتع يهالنا طيبا وفى رواية ابن ابى عيثمه عن على امر صلى الله عليه وآله وسلم ان تجعل ثلث الاربعة مانة وثمانين فى الطيب وأمرهم ان يجهزة فجمل لها سرير مشروط ووسادة من ادم حشرهاليف.

(شرح زرقانی علی مواجب اللدنيه ملبوعه بيروت ۳۹۳ ج ۲م ۳۰ سيرت رسول عربي مولانا نور بخش تو کلي ص ۲۹۹)

حضرت علی زائند فرماتے ہیں کہ یہاں تک کہ میں نے حضور ملطاقاتی کی خدمت میں حاضرہ ہوکرعوض کیا کہ آپ حضرت فاطمہ تظافوں کو جھ سے بیا ہنا پند فرما ئیس گے۔حضور ملطاقاتی نے فرمایا کہ تیرے پاس کچھ مال ہے۔ میں نے عرض کیا کہ میرا گھوڑا ہے یا زرہ فرمایا گھوڑے کی تیجے ضرورت رہے گی لیکن زرہ فروخت کر دیا۔اس دوچنا نچے میں نے حضرت عمان زائند کے باتھا ہے ۸۸ دیتار میں فروخت کردیا۔اس کے بعد حضرت عمان زائند نے وہ زرہ بھی تحقہ واپس کردی۔حضرت علی زائند نے دو درہ بھی تحقہ واپس کردی۔حضرت علی زائند نے رہ داور

TERECITY TO THE SERVICE OF THE SERVI اس کی قیمت لے کرحضور علی اللہ اللہ کی خدمت میں دوبارہ پیش ہوئے۔حضور علی اللہ اللہ نے حضرت عثمان ذائنیز کے حق میں دعا فر مائی جیسا کہ دوایت میں ہے۔ پھر میں نے وہ رقم حضور علينا ينام كوييش كى جوآب نے اپنى كوديس ركھ كى حضور علينا اللہ اللہ اللہ ميں ے ایک مٹی بحر کرفر مایا کہ بلال (فٹائٹ) اس قم کی خوشبوخر پد کر ہمارے پاس لاؤ۔ ا بن ضیممہ نے حضرت علی فڑائنڈ کی زبان سے جوروایت بیان کی اس کے الفاظ یوں میں کر حضور عظامی کے فرمایا کہ ان جارسواس درہم کی ایک تہائی لیتی ایک سو سائھ درہم کی خوشبوخر بدی جائے پھر حضور علالظہ نے لوگوں کو فرمایا کہ وہ حضرت فاطمه وثالثها كاسامان تياركرين چنانجيان كيليخ ايك بني موئي جاريا كي اورايك جرثي تكيه جس میں مجبور کی چھال بھری تھی تیار کئے گئے۔ (شرح زرقانی علی موابب اللد نیم ملجوعه بیروت ۱۳۹۳ مطبح مصر۱۳۲۵ ۲۶ مص ۲۷۸) خطیب قرآن میں جہزی تفظیل درج ذیل ہے۔ تخت خواب ایک عدد (1 چڑے کی توشک جس میں تھجور کے بیتے بھرے تھے۔ایک میں اون۔ یانی بھرنے کی جھاگل ایک عدد مثك ايك عدد (1 چکی ایک عدد (۵ كوزة كلى دوعد د (4 گھڑاایک عدد (4

Marfat.com

لوٹا ایک عدد

گرم جا درایک عدد

لكژى كاپيالدايك عذو

(\

(9

(1.

The ira The See of the Cost (خطیب قرآن نی آخرالز مان ص ۲۷ ۲۴۷ مصنفیسیدم تضلیحسین فاصل تکھنوی) الم تشيع كي مشهور ومعروف كمّاب "جلاالعيون" ترجمه حالال ص١٤١٣ الم مِن تفصیل''شادی جناب فاطمہ'' کےعنوان کے تحت لکھا ہے۔'' جناب امیر نے فرمایا حضرت رسول مِنْ المِنْ اللهِ عَلَيْهِ فِي مِنْ اللهِ ال میں گما اور زرہ فروخت کر کے اس کی قیت حضرت کی خدمت میں لایا اور رویے حضرت کے دامن میں رکھ دیئے۔حضرت نے جھے سے نہ بوچھا کتنے رویے ہیں اور میں نے بھی کچھ نہ کہا۔ بعد اس کے ان میں سے ایک مٹھی رویبہ لیا اور بلال کو بلا کر دیا اور فرمایا۔ فاطمہ کیلئے عطر وخوشبو لے آؤ۔ پھران میں سے دوم تھیاں ابو بکر کوریں کہ بازار میں جااور کیڑ اوغیرہ جو پچھے'' اثاث البیت'' درکار ہے لیے آ ۔ پھرعثان بن یاسرکو اورایک جماعت صحابہ کوابو بکر کے پاس جمیجی اور سب بازار میں پہنچے ان میں سے جو محض چے لیتا تھا ابو برصدیق بڑائٹو کےمشورہ سے لیتا تھا۔ایک بیرا بن سات درہم کو اورایک مقعه جار درجم اورایک جا درسیاه خیبری اورایک کری جس کے دونوں یا ٹ خرمے کی جھال سے جڑے ہوئے تھے اور دوتو شک جامہائے مصری۔ ایک خرمہ کی چھال سے بھرا ہوا اور دوسرا پھم کوسفند ہے اور جار بھکتے بوست طا نف کے جن کو گیاہ اذخرے بعرا ہوا تھااورایک بردہ پشم اورایک بوریائے سحری اور چکی اور بادیدرومی اور ايك دهول چرر كااوركاسه چوني دوده كيليخ اورايك مشك ياني كيليخ اورايك آفتاب روغی اورایک سبوئے سنراورکوز ہائے سفالیس خرید کئے جب سب اسباب خرید بھے۔ ابوبکراور دیگراصحاب ندکورہ سامان لے کر ملاحظہ فرماتے اور کہتے تھے خداونداس کو

روضة الصفا في سيرة الانبياء والملوث والخلفاء_

میرے الل بیت برمبادک کر"۔

مجی ال تشیع کی مشہور کتاب ہے۔اس کی ج ۲ ص ۲ کے ۲۳ پر شرح زرقانی

ے ملی جاتی روایت ہے جس کی اصل فاری عبارت یوں ہے۔

"از عکرمدروایت است که حضرت علی فاطمه زیرارا خواستگاری نمود - حضرت رسول فرمود که جهراورا چه سازی؟ جواب داد که نزدش چیز نیست - حضرت فرمود که زره حلیم کو کبااست؟ عرض کردموجوداست - حضرت فرمود که آن را صداق ساز _ که زره حظیم کو کبااست؟ عرض کردموجوداست - حضرت فرمود که آن را صداق ساز _ خوید کو یند که حضرت علی آن را روه را بچها رصد و به شان دوریم بعثمان فروخت و آن زر هے بود فراخ و تنقین و پیچشمشیر براد کارنی کرده شان بعد از خریدان تحضرت علی بختید و مرتضی علی فراخ و تنقین و پیچشمشیر براد کارنی کرده شان بود بخدمت مصطفی آرد حضرت در باره عثمان زره و بها را مود و رویت آنست که دو دانگ وجه نه کوره را پیوے خوش صرف کردند _ چهار دعا فرمود _ رویت آنست که دو دانگ وجه نه کوره را پیوے خوش صرف کردند _ چهار دا اگ اورا در چهار معروف داشند دازان جمله دو جاری گفته اید و بعض از جزئم ایت دیگر کرچمان که که که دان و یک تهائے از ان جنس و جمعی دو تهائے گفته اید و بعض از جزئمات دیگر کرچمان الیه بود از ان زرمر تب ساختد _ *

مكان

حضرت علی خوالنی حضور می الفاتیا کے پاس ہی رہتے سے شادی کے بعد ضرورت ہوئی کدا لگ گھر لیس حضرت حارثہ زفائنی کے متعدد مکانات سے ۔ جن میس سے تی وہ حضور علیہ الفاتیا کے فند رکر چکے سے حضرت فاطمہ زفائنی نے حضور علیہ الفاتیا سے عرض کیا کدا نمی سے وکی اور مکان دلواد ہیں ۔ آپ نے فرمایا کہ کہاں تک ؟ اب ان سے کہتے ہوئے شرم آتی ہے۔ حضرت حارثہ زفائنی نے سنا تو دوڑ ہے آئے کہ یارمول اللہ معلی اللہ معلی اللہ معلی اللہ معلی ہوئی ہوتی ہے کہ وہ میرے پاس رہ جائے ۔ غرض انہوں لیسے ہیں جھے واس سے زیادہ خوشی ہوتی ہے کہ وہ میرے پاس رہ جائے ۔ غرض انہوں لیسے ہیں جھے واس سے زیادہ خوشی ہوتی ہے کہ وہ میرے پاس رہ جائے ۔ غرض انہوں نے اپنا ایک مکان خالی کر دیا۔ حضرت فاطمہ دفائنی اس میں اٹھ گئیں۔ (سیرت النی مخال خوری تفصیل طبقات این سعدت ہیں ۱۳۲ وراصا ہے۔ سے سے سے دیکھی اس میں سے سے دیکھی کے ۔

ر شادی کے اطام کی مسلسلی کی مسلسلی کی مسلسلی مولانا نور بخش تو کلی مسلسلی کی مسلسلی کی مسلسلی مسلسلی مال رقتی و ادائے رسم کیلئے مکان کراید پرلیا پھر حضرت حارثہ بن فعمان والنونے نے دے دیا۔

(سيرت رسول عرني ١١٩)

رصتی کے بعد حضور علقالته کامل

ریس کے بہت میں میں میں جب سے است بات میں اللہ میں است میں اللہ میں است میں است میں است میں است میں است میں است الم کورہ بحث سے واضح ہوگیا کہ جبیز سنت نہیں کیونکہ حضور مطابع آتے ہے جو چند چزیں حضرت فاطمہ نظامی کودی تھیں۔وہ حضرت علی نواٹند کی اٹی رقم سے تھیں۔حضور

* علالتها نے مر پرست ہونے کی دیثیت سے فریداری کا انظام کردیا۔

اگریت لیم بھی کرلیا جائے کہ حضور ملی التا آت ہے جیزیں اپی طرف سے فرید کر
ویں تو بھی جیز کا مطلقاً سنت ہوتا تا بت نہیں ہوتا کیونکہ حضرت علی ڈٹائٹو آپ کی کفالت
میں تھے۔ جس طرح باپ بیٹے کو علیحدہ کرتے وقت کچھ سامان کا انظام کر دیتا ہے اس
طرح آپ نے بھی چند چیزیں عنایت فرما دیں۔ کیونکہ آپ حضرت فاطمہ وعلی ناٹٹو ا
دونوں کے ولی اور کفیل تھے۔ آج بھی اگر کسی لاک کا والد اپنی لاکی کی شادی کسی ایس
لاکے ہے کرے جو اس کی کفالت میں ہواور لاکے کے پاس اپنا مال نہ ہوتو لاکی کا
والدی ضروری سامان کا انظام کرے گا تا ہم جماری اس وضاحت سے بیہ نہجھ لینا
عالیہ کے اسلام میں لاکیوں کو بچھ دینا منع ہے۔ والدین پیدائش سے لے کر جوانی تک

اپنی بچوں کو بہت کچھ دیت رہتے ہیں اور شادی کے بعد بھی دہ ایسا کرتے رہتے ہیں اور شادی کے بعد بھی دہ ایسا کرتے رہتے ہیں اور شادی کے بعد بھی دہ ایسا کرتے رہتے ہیں اور کرسکتے ہیں۔ سوال یہاں' رسم جیز' کے بارے ہے کہ دہ کی طرح سنت رسول نہیں وگر نہ حضور میں بھلے آئی بیٹیوں کو جیز دیتے ۔ لیکن آپ نے تو غریب والدین کی سہولت کیلئے امت مسلمہ کیلئے آئی بہترین اور قابل تقلید مثال پیش کی کہ جس پڑ عمل سہولت کیلئے امت مسلمہ کیلئے آئی بہترین اور قابل تقلید مثال پیش کی کہ جس پڑ عمل کرنے سے ہمارے ہاں کی مروجہ رسم جین تو کم از کم وہ ای عمل ہی کو اردینے پر مصر بین تو کم از کم وہ ای عمل ہی کو سنت رسول قر اردین کہ جو حضور میں انہا تھا ہے نے حضرت فاظمہ رفایتھا کی شادی کے سلسلے سنت رسول قر اردین کہ جو حضور میں انہا تھا کہا ما ضروریات کی چیزیں مہرکی اس رقم سے میں کیا کہ اس کے نئے گھر کو بسانے کیلئے تمام ضروریات کی چیزیں مہرکی اس رقم سے مردی کئیں جو حضرت علی فوائٹ نے بیٹی ادا کر دیا تھا۔ ہمارایقین ہے کہ اگر اس سنت رسول پر حضور میں بھی تھی ادا کر دیا تھا۔ ہمارایقین ہے کہ اگر اس سنت رسول پر حضور میں بھی تھی ادا کر دیا تھا۔ ہمارایقین ہے کہ اگر اس سنت رسول پر حضور میں بی تی گرائی فوری طور پرختم ہو بھی۔ ۔ رسول پر حضور میں بھی ترکی کی مطابق عمل کیا جائے تو پھر بھی ہماری ہماری کی میں بھی کرنے کو فری طور پرختم ہو بھی ہے۔ ۔

نکاح کے مقاصد

حضور عيظ لمرام في مرمايا كورت سن تكاح چاروجول سركياجا تا ب-ولسا لها ولحسبها ولجمالها ولدينها فاظفر بذات الدين تربت يداك-

(متغق عليه مشكلوة ص ٢٧٧)

اس کے مال پر ٔ خاندان پر ٔ حسن پر ٔ دین پر اور تم دین والی کواختیار کروگر د آلود

ہوں تمہارے ہاتھ۔ مفتی احمد یار خال فیمی عطفیلہ اس صدیث کی تشریح میں فرماتے

ہیں ٔ خام طور پر بیلوگ عورت کے مال ٔ جمال اور خاندان پر نظر رکھتے ہیں ان جی چیز وں

کو دیکھر کر نکاح کر سے ہیں مگر عورت کی شراخت و دیندار کی تمام چیز وں سے پہلے دیکھو

کہ مال و جمال فانی چیزیں ہیں۔ وین لا زوال دولت نیز ویندار مال دیندار چیجفتی

ہے۔ ڈاکٹر اقبال نے کہا خوب شعرفر مایا۔

JOHN (IFT TO THE CHILLIST)

بے ادب ماں با ادب ادلاد جن سکتی نہیں معدن زر معدن فولاد بن سکتی نہیں

(مرات جهمس)

لمبے چوڑے <u>فتنے</u> وفساد

حضور عليظ لينام نے فرمايا:

اذخطب اليكم من ترضون دينه وخلقه فزوجوة ان لاتفعلوة تكن فتنة في الارض وفساد عريض - (مكلو ق ٢٦٤/٢)

ترجمہ کے جبتمہیں پیغام نکاح وہ مخف دے جس کی دینداری اوراخلاق تم کو پیندہیں تا بردی کا سات کے تابیع میں معرفہ فتن سات میں است میں است

تو نکاح کردواگریدنہ کرو گے تو زمین میں فتنے اور لیے چوڑے فساد ہریا ہوجا کیں گے۔ لینی جب تنہاری لڑکی کیلئے ویندار عادت واطوار کا درست لڑکا مل جائے تو

محض مال کی ہوں میں اور لکھ پتی کے انتظار میں جوان الرکی کے نکاح میں دیر نہ کرو۔ اس لئے کہ اگر مال دار کے انتظار میں الرکیوں کے نکاح نہ کئے گئے تو ادھر تو الرکیاں

بہت کنواری بیٹھی رہیں گی اورادھرلڑ کے بہت سے بے شادی رہیں گے۔جس سے زنا تھلے گا اور زناکی وجہ سے لڑکی والوں کو عار وننگ ہوگی۔ بتیجہ یہ ہوگا کہ خاندان آپس

میں اور یں مے قبل وغارت مول مے جس کا آج کل ظہور مونے لگاہے۔

(مراةج ۵ص۸)

بابر کت شادی

حضور علی المنظام نے فرمایا۔ان اعظم الدکام ہر کہ ایسرہ موانہ۔بڑی برکت والانکاح وہ ہے جس میں ہو جمود مشقت کم ہو۔ حضرت علامہ فتی احمد یارتعبی عراضی ہے کھتے ہیں یہ کلمہ نہایت جامع ہے یعنی

شادی کے اعلام سے فریقین کا خرج کم کرایا جائے۔ مہر بھی معمولی ہو جہز بھاری نہ ہواگر دیا جس نکاح میں فریقین کا خرج کم کرایا جائے۔ مہر بھی معمولی ہو جہز بھاری نہ ہواگر دیا جائے۔ کوئی جانب مقروض نہ ہوجائے۔ کی طرف سے شرط تخت نہ ہو۔ اللہ کو تو کل پر لڑکی دی جائے۔ وہ نکاح پڑائی بارکت ہے۔ آئ ہم حرام رسمول نہ بہودہ و رواجوں کی وجہ سے شادی کو " خانہ بربادی" بلکہ" خانہ بربادی" بنا لیتے ہیں۔ اللہ تعالی اس صدیت یاک پڑلل کی تو فیق دے۔ (مرات نے ہیں۔ اللہ تعالی اس صدیت یاک پڑلل کی تو فیق دے۔ (مرات نے ہیں۔ آئے واب جہز

حضور نی کریم منظوری کارشاد ہے کہ جس گھر میں لڑکی پیدا ہوتی ہے اس میں رحمت و برکت داخل ہوتی ہے گرا تھا کیوں کو عام طور پراس لئے اچھا نہیں سمجھا جا تا کہ انہیں جہیز دینا پڑتا ہے جو بہت گراں گزرتا ہے کہ انسان لڑکی بھی دے اور مال و دولت بھی سمیٹ کرساتھ دے اور پھر خبر نہیں کہ دہ سسرال کوراس بھی آئے یا نہ وہ دولت بھی سمیٹ کرساتھ دے اور پھر خبر نہیں کہ دہ سسرال کوراس بھی آئے یا نہ وہ اسے آباد کریں گے یا برباد گر کسی طرف سے عورت کے اصلی جمیز اور سامان زیب و زینت (دین تعلیم) کی تیاری اور خوا ہش نہیں کی جاتی ۔ بلکہ عارضی اور نمائش چیز وں کی فراہمی اور فرمائش کی جاتی ہے جس کی وجہ سے گھر کی خیر و بر کرت اٹھ جاتی ہے۔ فراہمی اور فرمائش کی جاتی ہے کہ جر سلمان اپنی لڑکی کو خاند داری کی تربیت اور دین کی

ا سے سرورت ہے مہر سمان ہیں رن دھ سندار م اللہ کوشق تعلیم دے۔ تا کہ اُسے تن اللہ وتن العباد ادا کرے۔ گھر کوسنجالئے سرال کوشق ر کھنے اولا دکی پرورش اور رشتہ داروں و ہمایوں سے حسن سلوک کا سلقہ آ جائے اگر عند اللہ سرخرو کی مطلوب ہے تو لڑکی کو اسلام کا لباس دے عبادات کا زیور پہنائے۔ دین کی پابندی سکھائے سنت کا عطر لگائے مبرورضا اور تو کل و تقوی کا سنگھار کرائے۔ حسن اخلاق سے مالا مال کرے علم و عمل کا سرمایہ دے اور شرم وحیاء کا پردہ کرائے۔ ہمت سے ذیادہ جمیز دے کرائی جا در سے زیادہ پاؤں نہ پھیلائے۔ قرض نہ اٹھائے جائیدادنہ بیچے کی کی حق تلفی نہ کرے۔ براوری سے نہ شرمائے ہی اپنا فرض ادا ر نے کی کوشش کرے۔ انگشت نمائی سے ندورے۔

سرال والوں کو بھی زرومال کا حریص نہ ہونا چاہیے کہ یہ کی سے وفانہیں کرتا بلکہ عام طور پرفتنہ وعذاب کا موجب ہوتا ہے۔ وہ خانہ آبادی کوسب سے بڑی نعمت مجھیں اور اس نعمت کا شکر بجالانے کیلئے اپنی بہوسے حسن سلوک سے پیش آئیں تاکہ یہ نعمت کا باعث نہ ہو۔

نو جوانو! باغيرت بنو!

می عورت سے محض اس لئے شادی کرنا کہ اس کا مال ہضم کرے انتہائی بے غیرتی اور کمینہ پن ہے مورت کی کمائی پر پلنے اور اس کے مال پر دیجھنے والا''مرد''نہیں ''جیجو''' ہے۔ کیونکہ''مرد''عورت کو کما کر کھلاتا ہے۔ اس کی کمائی نہیں کھا تا۔ اس کمینے کی مجلس سے بچواور اس کا بایکا ئے کردواور ہرایک نوجوان اپنے والدین سے کہدد سے کہد سے کہد ہے کہ میں باکردار لڑکی سے شادی کروں گا۔ اگر چہاس کے والدین کو ایک وقت کی روثی میں باکردار لڑکی سے شادی کروں گا۔ اگر چہاس کے والدین کو ایک وقت کی روثی میں میں میں میں میں میں میں اس کے اس کے مالدین کو ایک وقت کی روثی میں میں میں میں میں میں میں میں اس کا کھا۔

لڑ کی کے والدین کو جاہیے کہ ظالم نہ بنیں

لڑکی کے والدین کو بھی چاہیے کہ وہ ہوش ہے کام لیں۔ اگر سرال والے جہز کا نقاضا کریں تو انہیں لڑکی نددیں۔ اگر چیدی نقاضا برائت آنے کے وقت ہی کیوں نہ ہو۔ الی صورت ہیں نکاح پڑھائے بغیر برائت والیس کردیں۔ اس میں شرمندگی محسوس ندکریں ورندا ہے ہاتھوں آپ اپنی چک کو جہنم میں وتھلیل کرخود بھی بمیشہ کیلئے عذاب میں جٹلار ہو گے اور چی بھی کے ویکہ انہیں چکی کی بجائے آپ کے مال کی زیادہ ضرورت مے ظاہر ہے قدرای چیز کی ہوتی ہے جس کی ضرورت ہو۔

البتة اگر ہونمارو با كردار بچيل جائے خوا ، غريب ہى ہواس سے اپنى بكى كى

شادی کرنے میں تا خیر نہ کریں نہ ہی کمی ہم می گرم محموں کریں۔اگر مخبائش ہوتو اسے
مجھر قم دے کراپنے زیر نگرانی کوئی کام کرادیں تا کہ وہ اپنے پاؤں پر کھڑا ہو تھے۔
لڑے کو بھی چاہیے کہ دور قم قرض کی نیت سے لے ادریہ سمجھے کہ میں نے بیر قم
دالپس کرنی ہے اگر چہ بعد میں وہ از خود ہی معاف کیوں نہ کردیں اور ان کے ڈیل
دسان کا شکر گزار ہو۔

غربت دور کرنے کا بہترین طریقه امیرا درغریب کی شادی

امراء کوچا ہے کہ وہ اپنی اولا دکی شادیاں ایسے مخصوں سے کریں جواہیے سے غریب ہوں اور اس کی ترکیب ہیں ہے۔ عرب ہوں اور اس کی ترکیب ہیں ہے کہ شادی سے پہلے لڑکے یالٹر کی کواپنے مصارف سے دینی اور اعلی تعلیم دلائی جائے اور ان کواس قابل بنایا جائے کہ وہ خودا پی ضروریات اور افلاس کو دور کرسکیس ۔ اس کے بعید جب وہ کمانے کھانے کے لائق ہوجا کیس تو چھر ان سے اپنی بیٹیوں کی شادیاں کردیں ۔ اگر لوگ اس طرح شادیاں کریں تو تھوڑ ہے ۔ ان سے اپنی بیٹیوں کی شادیاں کردیں ۔ اگر لوگ اس طرح شادیاں کریں تو تھوڑ ہے ۔ بیسے ہیں۔ بیس ور ان کو ذات کے گڑھے سے نکال سکتے ہیں۔

عذربيجا

بعض آ دمی بی عذر پیش کرتے ہیں کہ کیا کریں پھے دنیا کا دستور ہی الیا ہوگیا ہے کہ اپنے سے کم حیثیت رکھنے والے خاندانوں میں شادی کرنے سے کنبہ برادری میں عزت کی ناک کٹ جاتی ہے ۔ لیکن اس عذر میں پھے معقولیت نہیں ہے۔ اکثر لا لی کے باعث بے جوڈشادیاں ہوتی ہیں جس کی وجہ سے کنبہ برادری میں عزت کم ہوجاتی ہو آگر کنبہ برادری میں بغیر لا لیج کے کی غریب عزیز کے ہاں شادی کی جائے تو دل سے عزت کریں گے ندان کے بے آبرد کی یا عزت میں فرق آئے گا۔ اب وہی بڑے گھر انوں میں شادی کرنے سے واہ داہ تو ضرور ہوجاتی ہے گرشاید ہی ایک وہ شخص

TOTAL TOTAL OF YEAR (BILLIST YOU سب سے تحسین و آ فرین لینے میں کامیاب ہوئے ہوں گے ورندد مکھا تو یہی گیا ہے کہ ایک نے تعریف کی دوسرے نے ایک نہ ایک نقص ٹکال ہی دیا۔ دعویٰ سے کوئی ا کے مختص بھی پنہیں کہ سکتا کہ اس کے انتخاب اور کا میا بی پرتمام اعزہ وا قارب اور اہل غاندان نے سیے دل سے تحسین اور آ فرین کیا ہوا کثر ہزار ماروپیکا جہز دینے اور چڑ ھاوا چر ھانے کے باو جود بھی لوگوں نے بُرا بھلا کہا ہے اور نقص ٹکالے ہیں۔خاص کرالی شاد ماں جو کسی لالچ کی وجہ ہے کسی بڑی جگہ کی جاتی ہے۔ان کی نسبت تو لوگ خوب یا تیں بنایا کرتے ہیں۔کوئی کہتاہے کہ ذات گی خاک میں کوڑی آئی ہاتھ میں۔کوئی بولهًا ہے قربان جاؤں اس دولت کے اس کے بھی بڑے کرشے ہیں۔''کیسی نیو بنیاد پر کیسی مارت بن منگئ ' کوئی بولین' الله کی شان کمی کی ہنڈیا شاہی باور چی خانہ' ۔ جولوگ ان شادیوں سے کنبہ برادری میں عزت بڑھانی جائتے ہیں ان کا حشر تو یمی ہوا کرتا ہے۔اس لئے ان بزرگ بھائیوں اور بہنوں سے جن کوخدا تعالی نے دولت دے رکھی ہے۔ بیگذارش ہے کہ اپنی اولا دکی شادی کرتے وقت دولت کی فکرنہ کریں بلکہ ان غریب اور شریف مسلمانوں کی اعانت کریں جواس وقت مفلسی کے

تو یکی ہوا کرتا ہے۔ اس لئے ان بزرگ بھائیوں اور بہنوں ہے جن کو خدا تعالیٰ نے دولت درکتی ہوا کرتا ہے۔ اس لئے ان بزرگ بھائیوں اور بہنوں ہے جن کو خدا تعالیٰ نے دولت دولت کی فکر نہ کریں بلکہ ان خریب اور شریف مسلمانوں کی اعانت کریں جو اس وقت مفلس کے باعث تباہ ہونے والے ہیں اگر آپ غریب اقربا کو ففلس کی ذلت سے نجات دلانے کی کوشش کریں گے واللہ تعالیٰ دین ودنیا ہیں ان پی رحتوں ہے آپ کو مالا مال کرے گا جو طریقہ عرض کیا گیا ہے اس میں آپ کی دولت آپ ہی کے کام آگے گی اور آپ کو معادت مند بہوئیں اور اطاعت گزار دامادل سکیں کے جو آپ کے گھروں کے چشم و سعادت مند بہوئیں اور اطاعت گزار دامادل سکیں گے جو آپ کے گھروں کے چشم و حیاغ ہوں گے۔

بہترین جہزتعلیم نسواں ہے

حضور منظی آنے ارشاد فرمایا ہر مسلمان مرد اور مسلمان عورت پر علم کی تلاش فرض ہے اور فرمایا حضور منظی آیج نے کسی والد نے اپنے ولد (لڑکے یا لڑکی) کوئیک THE SEE LEILUIT YOU ادب سے افضل کوئی عطیہ عطانہیں کیا۔

تعلیم نسوال سے مرادینبیں کماین بہویٹی کو کسی ہدین وضلالت آمیز استانی ولیڈی کی تربیت میں دے دیا جائے کہوہ ہرروز ہمارے گھر میں یا سکول وکالج میں علم

پڑھانے کے بہانے سے اپنی '' پٹی پڑھائے'' اور نہ بیمراد ہے کہ لڑ کی کو قعلیم یانے کیلئے انگریزی انتظام کے گرل سکول میں بھیج کر بے حیائی اور بدچلنی کا درواز ہ اس پر

کھول دیا جائے اور نہ میتقصود ہے کہاس کوالیے دوراز کاراور غیرمفیدعلوم وفتون میں

ڈالا جائے جواس کے فرائض اس کی طافت اوراس کی مصلحت کے منافی میں بلکہ تعلیم نسوال سے ہمارا مدعا میرے کداس کوعلم کے زیورسے دیندار ڈی شعور گھر بسانے والی

اور بچوں کی خوش اسلونی کے ساتھ تربیت کرنے والی نیک فی بی بنایا جائے اور اس غرض كيلي اس كى تعليم كمريس ياكى المياسلاى زنانددرسديس مونى عاسي جوندبى حیا و تجاب کیلئے دینداروں کے گھر کا ساحکم رکھتا ہواور وہ تعلیم دی جائے جو قرآن مجید

کے ترجمہ اور حدیث وفقہ کی چند کتابوں پر مشتمل ہو۔ ضرورت کے مطابق حباب اور أردو لكھنے كى طرف بھى توجه دلا كى جائے كى قدر تاريخ وجغرافيہ ہے بھى واقف كيا

جائے ٔ ساتھ ساتھ اس کے اخلاق واطوار اور خیالات وجذبات کو عملاً دینداری اور فرض

شنای کی راہ پرڈالا جائے۔علم الاخلاق خصوصاً حقوق العباد کی تعلیم ضروری سمجی جائے اورتر بیت اطفال اوراصول خاندداری کی کما میس کافی طور پر پیز هائی جا کیس اوربس _

تعلیم نسواں پراعتر اضات ادران کے جواب

بعض لوگ کہتے ہیں کہ فورتیں علم پڑھ کرمغرور ہو جا کیں گی اور مردوں کی برابری کا دعویٰ کرنے لگیں گی۔جس ہے شوہروں اور بیویوں میں نااتفاقی اور گھروں میں فتنہ ونساد پیدا ہوں گے ان لوگوں کو یا در کھنا جا ہیے کہ انسان میں تکبر وغرور' خود لبندئ حسدب بغض اور خو عرضى وغيره فساد بيدا كرف والى برائيال جس قدر بهوتى

سی ان کاسب بمیشہ جہالت اور یے علی ہوتی ہے اوران برائیوں کا علاج وہی چیز ہے جس سے جہالت دور ہو۔ اور وعلم کے سوااور پھٹیمیں علم بی تمام عیوب و نقائص اور جس سے جہالت دور ہو۔ اور وعلم کے سوااور پھٹیمیں علم بی تمام عیوب و نقائص اور تمام برائیوں کو دور کرنے والا ہے۔ نہ کہ پیدا کرنے والا ۔ جو شخص ہیہ ہے کہ علم پڑھنے سے غرور اور خود پسندی بیدا ہوتی ہے۔ اس کی سہ بات الی تجب انگیز ہے جس طرح کوئی ہیہ ہے کہ کہوری کے طلوع ہونے سے اعد بھرا چھا جاتا ہے۔ ہاں سدورست ہے کہ اگر علم پڑھ کوئی نہ کیا جائے یا بری قتم کی تعلیم حاصل کی جائے تو سے عوب بیدا ہو سے تا ہی سے کرائی کی جائے تو سے عوب بیدا دونوں کے ساتھ خاص نہیں ہے۔ اس میں مردو کورت ہوئے ہیں۔ کیا ان کو نہ دی جائے یا کوئی خراب قتم کی تعلیم حاصل کریں تو کیا کیا گل کھلاتے ہیں۔ کیا ان کو نہ دی جائے یا کوئی خراب قتم کی تعلیم حاصل کریں تو کیا کیا گل کھلاتے ہیں۔ کیا اس خرا بی کا تک یہ ہوا وراخل ایقہ بھی بالکل اسلامی ساتھ کل کی تاکید ہوا وراخلاتی وعادات کی گرانی کی جائے اور طریقہ بھی بالکل اسلامی ساتھ کل کی تاکید ہوا وراخلاتی وعادات کی گرانی کی جائے اور طریقہ بھی بالکل اسلامی سے جروم کردیا جاتا ہے۔ پس جس تھی ہی سے جروم کردیا جاتا ہے۔ پس جس تعلیم سے حروم کردیا جاتا ہے۔ پس جس تعلیم سے ساتھ کل کی تاکید ہوا وراخلاتی وعادات کی گرانی کی جائے اور طریقہ بھی بالکل اسلامی ساتھ کل کی تاکید ہوا وراخلاتی وعادات کی گرانی کی جائے اور طریقہ بھی بالکل اسلامی

جاہل عورت کے سبب سے گھر میں جو جو فتنے فساد اور لڑائی جھکڑ ہے ہیدا
ہوتے ہیں۔وہ ایک علم والی اور بجھ دارعورت سے بھی ممکن نہیں عورت علم پڑھے گاتو
اس کومعلوم ہوگا کہ خداد قد تعالیٰ س بات سے خوش ہوتا ہے۔رسول اللہ منطق آئے کیا
کیا ارشاد ہیں۔خاوند کے حقوق کیا ہیں۔خانہ داری کے بہترین اصول کون کون سے
ہیں۔اولا دکی مناسب تربیت کے طریقے کیا کیا ہیں۔خویش ویگانے لوگ کیا کیا حق
رکھتے ہیں اور اس کومعلوم ہوجائے گا کہ ان کا موں میں کوتا ہی کرنے والا گنہ کا رہے اور
وہ ترب میں سی عذاب کا مستحق ہوگا۔

بعض کا بیاعتراض ہے کہ عور تیں علم پڑھ کرخوش پوش اور مزاج دار بن جا کیں گی اور گھرکے کام کاج کرنے چھوڑ دیں گے۔ یہ بھی چھن وہم ہے علم ایسی چیز نہیں کہ

TERCINO TRANSPORTATION OF THE PROPERTY OF THE اں کو پڑھ کرانیان اپنے ان فرائض کو بھی ترک کردے جو پہلے بجالا تا تھا۔ بلکہ علم سے آ دى كومعلوم بوتا ہے كديمر ، ذمدكيا كيا فرض بين اوراس كواداندكرنے كى صورت میں کیا گناہ لازم آتا ہے لہذا عور میں علم پڑھ کر آرام طلب بننے کی بجائے اپنے فرائض سے دانف ہوں گے اووہ ان کو بجالانے کیلئے زیادہ مستعد ہوجا ئیں گی۔ان کوعلم کے ذر بعیہ سے معلوم ہوجائے گا کہ گھر کا کام کاج ہر چیز کی تگرانی اولاد کی تربیت خاص انہی کا فرض ہے ان کواس بات کا یقین ہوجائے گا کہوہ گھر کی سلطنت کی وزیر ہیں جس کے ذمہ تمام انتظام ہوتا ہے۔ بعض کا خیال ہے کہ نوشت وخواند سے عورتوں کے اخلاق پر برااڑ پڑتا ہے اور لکھنا پڑھناان کی پیدائش بے حوصلگی اور ناعاقبت اندیثی کے ساتھ مل کرخراب تیجہ پیدا کرتا ہے۔اگرغور کریں توسمجھ سکتے ہیں کہ بیٹنیال بھی سراسر غلط ہے۔علم ایسی چیز نہیں جواخلاق کو بگاڑ دے۔ بلکہ بےعلم نہ خود خدا کے حقوق کو جانتا ہے نہ بندوں کے حقوق سے واقف ہے اور نداس کوتملوں کی جز اور سزا کی خبر ہے اگراخلاق مگڑ سکتے ہیں تواس کے بگڑ سکتے ہیں لیکن جس شخص کوعلم ہے اور وہ نیکی وبدی کی جز اوسز اسے واقف ہاس کے افلاق بگڑنے کا ہرگز اندیشنہیں۔ ہاں اگر پڑھانے وائی استانی ماتھ پڑھنے والی لڑکیاں کوئی ایساند ہبر کھتی ہوں۔جس کی مجہ سے ان کے پاس اٹھنے بیٹھنے سے مسلمان اڑ کیوں کی خصلتوں کے مجڑ جانے کا ڈر دہویادین اور اخلاق کاعلم پڑھا کراس پڑمل کرنے کی ترغیب ندولا کی جائے یا ایس تعلیم دی جائے جس میں دینی چاشنی نہ ہویا تعلیم کے ساتھ اخلاق وخصائل کی تكرانى نه كى جائے توبيا نديشد درست موسكا بےليكن اس ميں علم كاقصور نہيں طريقة تعليم كاقصور ب-اس ميں مرد بھى برابر كے شريك بين -امام غزالى بول اللہ اللہ اللہ اللہ اللہ اگرانسان ایسی حالت میں علم پڑھنے گئے کہاس کے اخلاق خراب ہوں تو وہ خواہ کی علم

حر شادی کے افکام کے میں اس کا میں کو حاصل کرے اس سے اچھا نتیجہ حاصل نہیں کر میں ا

حضرت عا كشهاورحضرت فاطمة الزهران الثياعالمه فاضلة تعيس

حضرت عا تشرصد يقد و اللها كما م و فضل كا اعدازه اس سے لكا سكت بيس كه مديث روايت كرنے اورسنت نبوى كى باريكياں بجھنے بيس آپ بوے بردے اہل فضل صحاب كى بم رتبہ بيس اور علم وين كے اعلى اركان بيس ان كاشار ہے اس كے علاوه عربي

حضرت فاطمہ وٹاٹھوانے ایسی اعلیٰ تعلیم پائی تھی کہ آپ کو ملک عرب کے اکثر تعلیم یا فتہ مردوں کے برابر قابلیت حاصل تھی۔اکٹر صحن خانہ میں بیٹے کروعظ فرما تیں آپ

ے نظیاب بھی تاریخ کی کتابوں میں موجود ہیں جونهایت مرل اور پر جوش ہیں۔

ام ہانی علامہ سیف الدین حنفی بوطنطیجہ کی والدہ علم نحوُ فقہ اور حدیث میں اپنی نظیر نہیں رکھتی تھیں ۔حتیٰ کہ امام حلال الدین سیوطی بوطنطیجہ نے ان سے مدتوں علم حدیث مڑھا۔

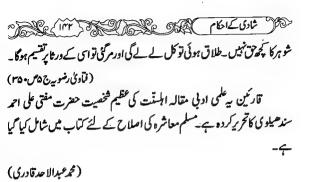
لڑ کیوں کو درا ثت سے محروم کرنا 'ظلم عظیم ہے

ادبیات اوراشعار میں بھی ان کو بڑی واقفیت تھی۔

مروجہ رسم جھیز کا بہانہ بنا کرا کھ لوگ لڑکیوں کو وراثت ہے محروم کردیتے ہیں جو کہ نظاعظیم اور قرآن پاک کے صرح حکم کی خلاف ورزی ہے اس لئے کہ ہر وارث کو خواہ مرد ہو یا عورت وراثت سے اس کا حصد ینا ضروری ہے۔ رسمایا جر اُمعاف کرائے اور شرما شری معاف کرنے سے معاف نہیں ہوتا۔ ہاں اگر صاحب حق برضا ورغبت اور اپنی خوثی سے معاف کرنے معاف ہوجائے گا۔

(مرتب)

جہزکس کی ملکیت ہے؟





رخفتی کا بیان

^{خص}تی رات کے وقت کی جائے

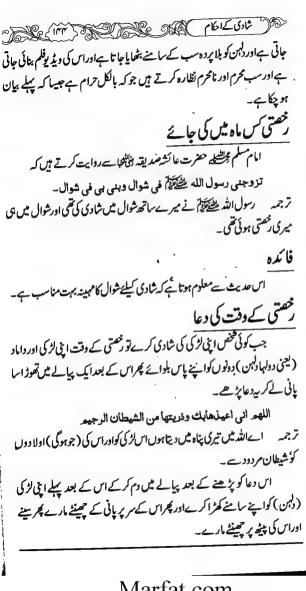
حضرت على دفاتند سے روایت ہے کہ رسول الله مضافیق نے ارشاد فرمایا:

زفوا عرائسكم ليلا واطنموا ضحى - (مندالفردوس جارقم ٣٣٣٨)

ترجمہ اپنی دلہنوں کورات کے وقت رخصت کرداورضیج کے وقت (ولیمہ کا) کھانا کھلاؤ۔

فائده

داین کورات کے دقت رخصت کرنے کا اس لئے علم ہے تا کہ شادی ہیں شریک لوگ اس کورخصت ہوتے ہوئے نہ دہ مکھ کیسیں جیسا کہ مدیدہ منورہ ہیں آئ سے چودہ سو سال قبل کسی تشم کی روش کا انتظام نہیں ہوتا تھا سوائے بعض گھروں ہیں دیا جلانے کے اوراند ھیری رات ہیں جب گھروں ہیں دیا جل رہا ہوا در دہم کی درسے دوسر سے کھر شین جب گھر ہیں دیا جل کہ دہم کی راس کی رخصتی کو چھپادیتی تھی۔ لیکن آج افسوس سے کہنا پڑتا ہے کہ دہمن کی اس طرح کی مسنوں رخصتی کی بجائے گئوں کی بار دوس میں اور شادی والے گھروں ہیں قبوب روشی کی بجائے شادی والے گھروں ہیں گلیوں ہیں بازاروں ہیں اور شادی والے گھروں ہیں گلیوں ہیں بازاروں ہیں اور شادی والے سے سرخوب روشی کی



اللهم الى اعينه بك وذريته من الشيطان الرجيم

یانی لے کر بیدہ عایز ھے۔

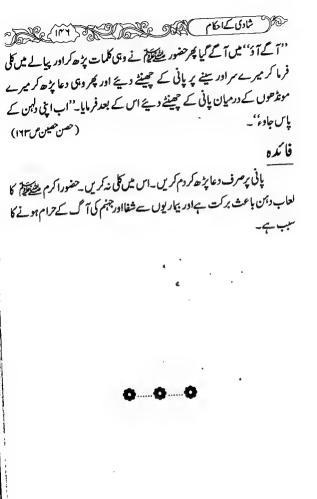
ترجمہ اے اللہ میں تیری پناہ میں دیتا ہوں اس کڑے کو اور اس کی (جو ہوگی) اولا دس ان کوشیطان مردود ہے۔

پانی پر دم کرنے کے بعد پہلے کی طرح داماد کے سراور سینے پر پھر پیٹھ پر چھینے مارے اوراس کے بعدرخصت کروے۔ (حصن حمین)

حضرت فاطمه وفالنفها كى زحصتى كووتت حضور مطفيعاً فيأ كاعمل

حضرت امام محمد بن محمد بن جزری شافعی ڈٹاٹنڈ آپی مشہور زمانہ کتاب''حصن حصین'' میں حدیثے نقل فرماتے ہیں۔

''جب رسول الله منظم نے حضرت مولی علی مشکل کشاء کرم الله و جہ الکریم
کا نکاح حضرت خاتون جنت فاظم تا از جره نظافیا ہے کردیا تو آپ ان کے گھر تشریف
لے گئے اور حضرت فاظم نے فرمایا۔ ''تحوث اسا پائی لاؤ'' ۔ چنا نچہ وہ ایک لکڑی کے
پیالے میں پائی لے کرحاضر ہوئیں۔ آپ نے ان سے وہ پائی لیا اور ایک گھونٹ پائی
دئن مبارک میں لے کر پیالے میں ڈال دیا اور ارشاو فرمایا۔ ''آگ آؤ'' حضرت
فاظمہ نظافی سامنے آ کر کھڑی ہوگئیں تو آپ نے ان کے سر پر اور سینے پروہ پائی چھڑک اور بیدہ فالی وہ پیٹے کرو' حضرت فاظمہ نظافی حضور منظافی آئی کی طرف پیٹے کرکے کھڑی ہوگئیں' تو آپ
پیٹے کرو' حضرت فاظمہ نظافی حضور منظافی کی کھرف دیا۔ اس کے بعد قربی ہوگئیں' تو آپ
نے باتی پائی میں بھی بھی میں دعا پڑھ کر چھڑک دیا۔ اس کے بعد آپ نے حضرت
علی نظافیٰ کی جانب رخ کر کے فرمایا۔ '' بیانی لاؤ'' حضرت علی نظاف کہتے ہیں کہ میں بھی





شبِ زُفاف (سہاگ رات) کے آ داب

جب دولہا' دلہن کمرے میں جا کیں اور تنہائی ہوتو بہتر بیہے کہ سب سے پہلے دلہن ٔ دلہا دونوں وضوکرلیں اور پھر جائے ٹمازیا کوئی پاک کپڑا بچھا کر دور کھت ٹمازنقل شکرانہ پڑھیں اگر دلہن چیش کی حالت میں ہوتو ٹمازنہ پڑھے کین دولہا ضرور پڑھے۔

میاں بیوی کاسب سے پہلامل

حضرت سلمان فارس وظائمة سے روایت ہے کہ حضور نبی کریم منتظ کیاتی نے ارشاد فرمایا:

اذا ترواج احدكم فليكن اول ما يجتمعان عليه طاعة الله وان يصلى وتصلى خلفه ويدعو وتومن- (رواه ابن عدى الكائل ٢٦)

ترجمہ جبتم میں سے کوئی شادی کرنے تو سب سے پہلا کام جس پر بیمیاں ہوی جمع ہووہ اللہ کی اطاعت ہے وہ اس طرح سے کہ مرد آئے (نفلی) نماز کی امامت کرائے اور عورت اس کے پیچیے نماز پڑھے اور مرددعا کرے اور عورت آمین کیے۔

فائده

آج کل لوگ شادی کے موقع برشادی کوعبادت کی بجائے گناہ کا مجموعہ بنا

TERS IN TOTAL SERVE SERVE SERVE SO

دیتے ہیں۔ غیرشرگی رسم ورواج 'ہندوانہ رسیس مغربی تہذیب' کلوط ماحول' ناج گانا' موسیقی وغیرہ اور جومسلمان اس طرح شادی کا پروگرام نہیں کرتے تو ان پرانگشت نمائی کی جاتی ہے اور بہت کوساجا تا ہے اور کہتے ہیں بیشادی نہیں تھی مرگ تھی۔

محبت پیدا کرنے کاعمل

حضرت عبدالله ابن مسعود والشئة فرمات ہیں کہ

. ''ایک جنس نے ان سے بیان کیا کہ پس نے ایک جوان لڑکی سے نکاح کرلیا ہے اور بچھے اندیشر ہے کہ دہ ججھے پندئیس کرے گی۔ حضرت عبداللہ بن مسعود وہائٹور نے فرمایا۔''محبت والفت اللہ عزوجل کی طرف سے ہوتی ہے اور نفرت شیطان کی طرف سے ہوتی ہے اور نفرت شیطان کی طرف سے جہتم اپنی یوی کے پاس جاؤ تو سب سے پہلے اس سے کہوکہ وہ تمہارے پیھے دور کھت نماز بڑھے۔'

اللهم بأرك لى في أهلى وبأرك لهم في وأرزقني منهم وأرزقهم مني اللهم اجمع بنينا ما جمعت وفرق بيننا أذا فرقت الى خير-

ان شاءالله تم اسے محبت كرنے والى اور وفا كرنے والى پاؤ كے''۔

(تغيير درمنثورمترجم ح اص ١٩٠ نفية الطالبين باب٥)

نماز کی نبیت

پھرجس طرح دوسری نمازیں پڑھی جاتی ہیں ای طرح یہ نماز بھی پڑھے (بعنی پہلے الحمدشریف کھرکوئی ایک سورۃ ملائے) نماز کے بعداس طرح سے دعا کر ہے۔



شبِ زُفَاف کی خاص دُعا

نماز اور دعا پڑھ لینے کے بعد دلہن دولہا سکون واطمینان سے بیٹھ جا کیں پھر اس کے بعد دولہاا پٹی دلہن کی بیشانی کے تھوڑے سے بال اپنے سیدھے ہاتھ میں زمی کے ساتھ محبت بھرے انداز میں پکڑے اور بیدد عا پڑھے۔

اللهم انى اسئلك من خيره وخيرما جبلتها عليه واعوديك من شرها وشرما جبلتها عليم

ترجمہ اےاللہ میں تجھ سےاس کی (بیوی کی) بھلائی اور خیر و برکت ما تکتا ہوں اور اس کی فطری عاد توں کی بھلائی اور تیری پناہ چاہتا ہوں اس کی برائی اور فطری عاد توں کی ٹرائی ہے۔

حضرت عمره بن شعيب والني سے روايت ب كدحضور سركار دو عالم مضافة

ارشادفر ماتے ہیں۔

''جب کوئی شخص نکاح کرے اور پہلی رات کواپٹی دلہن کے پاس جائے تو زمی کے ساتھ اس کی پیشانی کے تھوڑے بال اپنے سیدھے ہاتھ میں لے کربید عا پڑھے۔ (وہی دعا جوہم اوپر بیان کر پچکے ہیں)

(الإداؤدج ٢ أباب٢٦ أحديث ٣٩٣ مصن حصين ص١٦٢)

JOSE (101) TO THE STATE (1612 USB)

فب زُفاف كي دعا كي نضيلت

سنب زفاف کروزاس دعاکو پڑھنے کی فضیلت بیں علاء کرام ارشاد فرماتے ہیں۔''اللہ رب العزت اس کے پڑھنے کی برکت سے میاں یوی کے درمیان اتحاد و
اتفاق اور محبت قائم رکھے گا اور عورت بیں آگر نہ ائی ہوتو اے دور فرما کراس کے ذریعے
نکی پھیلائے گا' اور عورت ہمیشہ شوہر کی خدمت گرارُ وفادار اور فرما نبر دارر ہے گی''۔
آگرہم اس دعا کے معنوں پر غور کریں تو ہم پائیس کے کہ اس بیس ہمارے لئے کننے امن
وسکون کا پیغام ہے۔ بید عا ہمیں درس دیتی ہے کہ کی بھی وقت انسان کو یا دالہی سے
عافل نہ ہونا چا ہے بلکہ ہر وقت ہر معالم بیس اللہ کی رحمت کا طلب گار رہے۔ البذا



ايك بزي غلط بني كاازاله

کچھولوگوں کا خیال ہے کہ جب کی باکرہ سے پہلی باریجامعت کی جائے تواس
سے خون کا اخراج ضروری ہے۔ چنا نچہ بیہ خون کا آناس کے باعصمت پاک دامن
ہونے کا جوت سمجھا جاتا ہے۔ اگر خون بند دیکھا گیا تو عورت بدچلن آوارہ سجمی جاتی
ہے اور عورت کے باعصمت ہونے اور اس کی دوشیزگی پرشبر کیا جاتا ہے۔ بھی بھی بی
شک اس قدر زندگی کو گر وااور بدمزہ کر دیتا ہے کہ نو بت طلاق تک جا پہنچتی ہے۔ ممکن
ہے کہ اس کا بیان بظا ہر طبع گرای کوشش معلوم ہولیکن تجر برشاہد ہے کہ پینکڑ وں زندگیاں
ہے کہ اس کا بیان بظا ہر طبع گرای کوشش معلوم ہولیکن تجر برشاہد ہے کہ پینکڑ وں زندگیاں
میک وشید کی بنا پر جاہ ہو چکی جیں۔ لہذا اس مسئلے پر روشی ڈالنا نہا بیت ضروری ہے۔
کیا عجب کہ ہمار ہے اس مضمون کو پڑھنے کے بعد کوئی طلاق نامی دریا جس خوطہ زن ہو
کرا پی خوشیوں کوموت کے گھاٹ اتا رنے سے بی جانب ایک پتی ہی جمعلی ہوتی
کواری لاکھوں کے مقام خصوص میں اندر کی جانب ایک پتی ہی جمعلی ہوتی

تواری از یول نے مقام حصوص میں اندر بی جانب ایک پی ی بی ہوں ہے جہے پردہ بکا دت یا پردہ عصمت وغیرہ کہتے ہیں۔اس جلی میں ایک چھوٹا ساسوراخ ہوتا ہے جس سے من بلوغ کے بعد حیث کا خون اپنے مخصوص ایام پر خارج ہوتا رہتا ہوتا ہے۔ایک باکرہ سے پہلی بار جب کوئی مردمباشرت کرتا ہے تو اس کے آلے کے کھرانے سے دیکھی بھٹ جاتی ہوتا ہے اور مورت کو سے بیجھی چھٹ جاتی ہوتا ہے اور مورت کو سے بیجھی جس کے تیجہ میں تھوڑ اسا خون کا اخراج ہوتا ہے اور مورت کو سے بیجھی جس کے تیم کے میں تھوڑ اسا خون کا اخراج ہوتا ہے اور مورت کو

THE CONTROL OF THE COST OF

معمولی تکلیف کا احساس ہوتا ہے پھر یہ پردہ ہمیشہ کیلئے ختم ہوجا تا ہے۔
چونکہ یہ جھلی تپلی اور نازک ہوتی ہے تو بعض اوقات کس کسی با کرہ کی معمولی ک
چوٹ یا کسی حادثے کی وجہ سے یا بعض اوقات کسی کی خود بخو د پھٹ جاتی ہے۔ آئ
کل اکثر لڑکیاں کار' سائکیل وغیرہ چلاتی ہیں پچھلڑکیاں کھیل کو داور ورزش اور دگیر
مونت' مشقت وغیرہ کے کام بھی کرتی ہیں جس کی وجہ سے بھی میہ پردہ بکارت بعض
اوقات پھٹ جا تا ہے۔ اور ظاہر ہے ایسی لڑکیوں کی جب شادی ہوتی ۔ ہے تو مرد پچھنہ
ماکرشک ہیں جلل ہوجا تا ہے۔

'' سی کسی دوشیزہ کی میں جھلی الیمی کیک دار ہوتی ہے کہ مباشرت کے بعد بھی نہیں کھٹتی اور جماع میں رکاوٹ کا سبب بھی نہیں بنتی اور نہ ہی خون کا اخراج واقع ہوتا ہے۔ لاکھوں میں سے کسی ایک کی میجھلی اتنی موٹی اور سخت ہوتی ہے کہ پھٹتی ہی نہیں جس کسکتے آپریشن (Opration) کی ضرورت پڑتی ہے۔

لہذا اگر کمی شخص کی شادی ایسی باکرہ ہے ہوجس ہے پہلی مرتبہ قرابت ہونے پرخون کا اثر طاہر نہ ہوتو ضروری نہیں کہ وہ آوارہ عیاش و بدچلن رہ چکی ہو۔اس لئے اس کی عصمت پاک دامنی پرشک کرنا کسی بھی صورت میں جائز نہیں۔ جدب تک کہ بدچلن ہونے کا کھمل شرعی ثبوت شرعی گواہوں کے ساتھ نہ ہو۔

فقد كى مشهورز ماندكتاب تنوير الابصاد "مي ب-

من ذالت بسکارتھا ہو ثبة اوورود حیض اور جراحة اور كبربكر حقیقة - (تؤیرالابصارُ نزآدي رضويہ ۱۲ م ۳۷) ترجمہ جس كا پرده عصمت كودئے حيض آنے يا زخم يا عمرزياده ہونے كى وجہ ہے

عربمہ سنگ کا فاعروہ سنگ ودھے میں اسے یا رہ یا سر ریادہ ہونے کا دہبہت بھٹ جائے تو وہ عورت حقیقت میں با کرہ (کنواری ٔ پاک دامن) ہے۔



هب زُفاف کی باتیں بتانامنع ہے

کچھ لوگ اپنے دوستوں کوشب ز فاف (پہلی رات) میں بیوی کے ساتھ کی ہوئی باتیں مزے لے کر ساتے ہیں۔ دولہا اپنے دوستوں کو بتاتا ہے اور دلبن اپنی سہیلیوں کو بتاتی ہے۔سنانے والا اور سننے والے اسے بدی دلچیں کے ساتھ مزے لے کر سنتے ہیں اور لطف اندوز ہوتے ہیں۔ یہ بہت ہی جاہلانہ طریقہ ہے بھلا اس سے زیادہ بے شرمی اور بے حیائی کی بات اور کیا ہو سکتی ہے۔

يوم قيامت شريرترين شخض

حفرت ابوسعيد خدري زائي ساروايت بكررسول الله مضايحيا فرمايا:

ان من شرار الناس منزلة عنمالله يومر القيامة الرجل يغفى الى امرائة وتقضى اليه ثمز يغشي سرهاك

ترجمہ قیامت کے دن اللہ تعالی کے نزدیک لوگوں میں شریرترین وہ فخض ہوگا جو

اپنی بیوی کے ساتھ سوتا ہے اور وہ اس کے ساتھ سوتی ہے بھر وہ اس کے راز کو پھیلاتا

فائده

اس حدیث میں تا کیدہے کہ میاں ہوی اپنے مابین کے حالات کسی غیر مخص کو

هب زُفَا ف كى باتيس بتانے والا

حضرت ابو ہریرہ دفاتشہ سے روایت ہے کہ

''ز مانے جاہلیت میں لوگ اپنے دوستوں کو اور عورتیں اپنی سہیلیوں کورات

شری ہوئی با تیں اور حرکتی بتایا کرتے تھے۔ چنا نچرسر کار مدینہ منطق آن کوال بات کی فرہوئی تو آپ نے اسے خت ناپند فرمایا اور ارشاو فرمایا۔

ذلک مثل شیطانہ لقیت شیطانا فی السکة فقضی منها حاجته والناس ینظرون الیه۔

(ابوداو درج ۴ باب ۱۲ مدیث ۲۰۸) ترجمہ جس کمی نے صحبت کی با تیں لوگوں میں بیان کی اس کی مثال الی ہے ترجمہ جس کمی نے صحبت کی با تیں لوگوں میں بیان کی اس کی مثال الی ہے جس شیطان عورت شیطان مرد سے ملے اور لوگوں کے سامنے ہی کھلے عام صحبت بی مسلطے مام صحبت کی با تیں لوگوں کے سامنے ہی کھلے عام صحبت

کر ز لگز"_

0---0---0



ایک مثالی شادی

حضرت سعید بن میتب بولطیلی اسلامی دنیا میں 'سیّدالیّا بعین'' کے لقب ہے ملقب ہیں۔ آپ کو پانچے سوجلیل القدر صحابہ کی ٹاگر دی کا فخر حاصل ہے۔حضرت سعید بن میتب مخطیعی بچاس برس تک معجد نبوی میں بیٹھ کر تشوگان علوم نبوی کی بیاس بجمات رب - علاؤه ازي آب مشجور تن بستى (أعْلَمُ النَّاسَ بعِلْم رَسُولَ اللَّهِ) حضرت ابو ہریرہ زفائشۂ کے داماد بھی تھے۔حضرت سعید بن میتب بمنظیماتہ کی ایک لڑکی فاطمتهی موصوفه کوقر آن از برمونے کے علاوہ پانچ ہزار احادیث زبانی یادتھیں اورحسن ظامرى كى بيحالت تقى كـ "اجمل النسافى العرب" كامقول عفيف كت شين زبان ز دخلائق تھا غرض كەفاطمە كاخلق ظاہرى اورخلق باطنى ميں اسے عصر ميں كوئى شريك و سہیم نہ تھا۔ فاطمہ کا بیشہرہ س کرعبدالملک بن مروان نے (جومراکش سے لے کر افغانستان تک دا حد حکمران تھا) چاہا کہ کسی صورت فاطمہ کواپنے ولی عہد بیٹے ولیدین عبدالملك كعقديس دردر وليد كعياثي بعلي اسلام برجري شره آ فاق تقى _ وليدا گرچ ايك فقيدالثال تاجدار كاولي عهد تفاليكن كردار مين فاطمه بنت سعیدے سراسر مختلف واقع ہوا تھا۔عبدالملک نے ایک خاص معتمد معترمعزز شاہی کی وساطت سے یہ پیغام حضرت سعید بن میتب وطنطید کی خدمت میں پہنچایا کہ میرے الن الماری الما

جس سے آبک متزازل الایمان فحف پراس کے قلب کو مجروح کرنے کے بعد نہایت آسانی اور سہولت سے ہرطرح کا قبضہ کیا جاسکتا ہے۔ یعنی مبلغ تنیں ہزار رو پیانعام اورایک بزے جلیل القدر منصب کا قلم دان آپ کے حوالے کردینے کا دعدہ سایا۔

حضرت سعید بن میتب وطنطی نے نہایت بے باکی اور بے خونی سے کہا کہ مجھے کوئی اٹکارنیس مگر بات یہ ہے کہ ولید شرافی ہے 'بداخلاق ہے' عیاش ہے اور قرآن سر میں

كريم كبتائها

يَكَيُّهَا الَّذِينَ اَمَنُوا قُو الْفُسَكُم وَالْهِلِمُم نَاراً (سورة تحريم) جمه الني جانون اورائي الله خاندكونارجهنم سے بچاؤ۔

ایک بداخلاق بودین جاہل شخص کے نکاح میں لڑی کودے دینا جرم عظیم ہے۔جس کی تو تھا ہے۔ جس لی تو تھا ہے۔ جس کی تو تھا ہور کی اپنا ہمسر تلاش کرے قاصد نے بیدو کھا اور دوٹوک جو اب عبد الملک کو من وان نے آگ گولہ ہو کر کہا من وگن جا کر کہددیا۔ جو اب کے سنتے ہی عبد الملک بن مروان نے آگ گولہ ہو کر کہا کہ اس سعید کے ساتھ وہ سلوک اور معالمہ کیا جائے گا۔ جس سے مجبور ہو کروہ خودا پی کہ شامی حرم راجس لائے گا۔

بغاوت كاحجوثاالزام

گورز مدینہ کے نام شاہی تھم صادر ہوا کہ حضرت سعید ابن المسیب (عِراضیہ) امیر المونین کے خلاف خفیہ بعنادت کا مرتکب ہوا ہے اور اس کی سزا فی الحال میہ تجویز پائی ہے کہ سوکوڑے لگائے جا نمیں اور سزاد ہے دالے دس نو جوان زور آ ور فتنب کے جا نمیں۔ جب ایک آ دمی اپنی پوری قوت کے ساتھ دس ضربیں لگائے تو فور آ دوسرا تا زہ

TERCION THE TERCES OF THE LEGIC OF THE دم شروع کردے۔ازاں بعد بروفاب میں ٹمک ملا کرسعید کوشسل کرایا جائے۔ بعداز عشل اون کے کپڑے برفاب میں بھگوکر پہنائے جائیں۔ تین دن رات متواتر میدان میں کڑی مگرانی میں کھڑارکھا جائے۔ چنانچہ ویسا ہی کیا گیا۔حضرت سعیدین میتب وططیلے نے میسز انہایت خندہ پیشانی سے برداشت کی سر ابھکننے کے بعد حسب معمول مجدنبوي مصطفحة مين متدريس حديث مين مشغول مو كئے _ پچھ عرصے بعد ایک دن اختیام درس پر جب لوگ واپس جارہے تھے تو اپنے ایک شاگرد ابودواع" کو بلا کرفر مایا که تین دن تم نظرتیس آئے۔ شاگردرشید" ابووداع" نے جواب میں عرض کیا کہ جناب میری ہوئی کا انتقال ہوگیا ہے۔ تین روز اس کے سوگ میں مشغول رہا۔ حضرت سعید بن میتب و بطنے نے فرمایا دوسری شادی کا ارادہ ب؟ "ابدوداع" نعوض كيا كرحضوت مجصدودن سيمتواتر فاقد ب_ مي تكاح كسطرح كرسكتا بول ميرى نا ذارى اورا فلاس كابيرهال ب كدا كربالفرض كو كي فخض مجھے رشتہ دے بھی تو میں ایک درہم مہر ادا کرنے کی طاقت اور گنجائش نہیں رکھا۔ "ابووداع" كى بات سننے كے بعد حفرت معيد بن ميتب م السلاء في بائج اشخاص کے نام گنوائے اور فرمایا کہ ان کومیرے نام پرای وقت بلاکرلاؤچنانچ حسب ارشادوہ پانچ اشخاص کو بلا کرلائے۔ جب سب آپ کے پاس بیٹھ گئے تو حضرت سعید بن میتب زلائد نے ایک مسنون خطبہ دیا۔خطبہ سے فارغ ہونے کے بعد فرمایا کہ میری بیٹی فاطمہ جس کا رشتہ امیر الموثنین عبدالملک بن مروان نے اپنے ولی عہد کے واسطے ما نگا اوراپی پوری سلطنت کا زورایزی چوٹی تک لگانے کے بعد نا کام اور بے مرادر ہا ہے۔ میں اپنی گرہ سے میلنے دی درہم'' ابووداع'' کی طرف سے حق مہرادا کرنے کے بعدال مفلس اورناداو هخص" ابودداع" سے اس کا نکاح کر ماہوں۔ مر المالال المالال

زخصتی

"دا بوودائ" کہتے ہیں کہ بی ایجاب و قبول کے بعدا پی جمونیزی بی آیااور جمعے بار بار بیودہم ساتا تا تھا کہ بی ما جرا اور بید سند کہیں خواب کا ندہو۔ بھلا یہ کب ہوسکتا یہ کہ جس مقصد اور جس غرض کے حاصل کرنے کے واسطے حکومت وقت خزائے خرج کرنے اورا پی قبر و مائی قوت کا پورامظا ہرہ کرنے کے بعد بھی نا کا مردی ہو۔ جھ جیسا افلاس زدہ فحض اس دولت کو کس طرح پاسکتا ہے۔ بیس ای کشکش اوراد جیز بن بیس تھا افلاس زدہ فحض اس دولت کو کس طرح پاسکتا ہے۔ بیس ای کشکش اوراد جیز بن بیس تھا کہ اسالہ العالمین بیواقع اور حقیقت ہے یا خواب اور خیال ہے۔ تو باہر کے ک نے دستک دی بیس دوڑتا ہوا دروازے پر پہنچا اور پوچھا کہ کون ہوتو جواب بیس آواز آئی کے دست دی بیس دوڑتا ہوا دروازے بر پہنچا اور پوچھا کہ کون ہوتو جواب بیس آواز آئی کہ ''سعید بن میسب' ہوں۔ بیس نے عرض کیا حضرت خیر باشد! رات کے وقت تشریف آوری کا سبب؟ اگر میر مضافح گئی تھم تھاتو جھے بالیا ہوتا۔ آپ نے کیوں تکیف فرمائی فرمائی فرمائی کوئی کام نہیں کوئی تھم نہیں۔ آئ فاطمہ تبہارے نکاح میں آ کر تہماری یوی ہوچکی ہے بیس نے اس کورات اپنے گھر میں رکھنا مناسب نہیں سمجھا۔ اسے ساتھ لایا ہوں اس کوئی کو اس اپنے گھر میں رکھنا مناسب نہیں سمجھا۔ اسے ساتھ لایا ہوں اس کواندرجانے دو۔

"ابو وداع" کہتے ہیں کہ اس فرشتہ سیرت مجسمہ عصمت کو میرے حوالے کرکے خدا حافظ کہااور حضرت سعید بن مسیّب پی شیطی والپس تشریف لے گئے۔ (تحریر حضرت مولانا محمد بخش مسلم پیشنے بی اے خطیب مسلم سجد بیرون لو ہاری کیٹ لاہور)

0-0-0

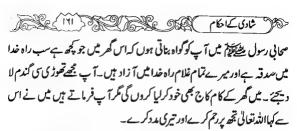


ایک سعادت مند دلهن

حضرت سیدنا سلمان فاری و النی فرماتے میں کہ میری شادی کندہ قبیلے کی ایک عورت سے ہوئی جس کا نام صواب تھا۔ جب میں دلہن کے پاس جانے لگا تو دروازے پردک گیا اوراس کا نام سواب تھا۔ جب میں دلہن نے جواب نددیا میں نے پررک گیا اوراس کا نام لے کردیکارا اگر افسوس اس نے جواب نددیا میں جو پر پکارااے فلانی کیا تو کو تگی ہے (کا چواب نہیں دے رہی) یا ہری کہ شخ نہیں؟
تو اس نے جواب دیا اے صحابی رسول میں نہ تو کو تگی ہوں اور نہ ہری نی تو یک اور دیکھا واتو دیکھا واتو دیکھا دیکھا کہ جب میں اندرواخل ہوا تو دیکھا

دلبنیں بولنے سے حیا کرتی ہیں۔ آپ فرماتے ہیں کہ جب میں اندر داخل ہوا تو دیکھا کہ گھر میں پردے گئے ہوئے ہیں۔ آپ فرمان ہجا ہوا ہوا ہو دنہیں کہ گھر میں پردے گئے ہوئے ہیں۔ فیتی سامان ہجا ہوا ہے اور دیش کپڑے سے دکھر میں سے کہنا اسے فلائی کیا تیرے گھر کو بخار آ گیا ہے تو اس اسے کپڑے اور ھار کھے ہیں یا چرخانہ کو جبکندہ قبیلے میں آ گیا؟ تو اس نے جواب دیا الی بات منہیں بلکہ دہنیں اینے گھر کو ہجاتی ہیں۔

آپ فرماتے ہیں پھر میں نے نظرا ٹھا کردیکھا تو خادم کھانا لئے سامنے کھڑے تھ میں نے کہامیں نے تعنور ٹی کریم منطقاتیآ کوفرماتے ہوئے سنا کہ جوزم وطائم بسر ' پرسوئے اورلہاس شہرت پہنے اور عالی شان سواری پرسوار ہواور من پہند کھانے کھائے وہ جنت کی خوشبونہیں سونگھ سکے گا۔ آپ فرماتے ہیں (بیرن کر) پرزوجہ کہنے لگے۔اے



(بح الدموع مترجم ازعلامه ابن جوزي مطبوعه مكتبة المديندلامور)



أيك متوكل دلهن

حضرت شاہ شجاع کر مانی مختصیمہ شاہی خاندان سے تعلق رکھنے کے ہاوجود عظیم المرتبت بزرگ ہوئے ہیں۔ایک مرتبہ ثاہ کر مان نے آپ کی صاحبز ادی کے ساتھ نکال مرنے کا پیغام بھیجا تو آپ نے نئن دن کی مہلت، مآئی اور نین دن مجد کے اطراف اس نیت سے چکر کا نتے رہے کہ کوئی درویش کا مل مل جائے تو میں اس سے نکاح کردوں۔ چنانچہ تیسرے دن ایک ہزرگ خلوص قلب کے ساتھ مسجد میں نماز ادا كرتے ہوئ مل كے تو آپ نے دريافت كيا كه كماتم نكاح كے خواہش مند ہو۔ انہوں نے کہا میں تو بہت مفلوک الحال ہوں مجھ سے کون اپنی لڑکی کا نکاح کرسکتا ہے۔ آپ نے فرمایا کہ میں اپنی لڑکی تمہارے نکاح میں دیتا ہوں۔ چنانچہ یا ہمی رضا مندی سے نکاح ہوگیااور جب صاحبزادی اپنے شوہر کے پاس پیٹی تو دیکھاایک کوزے میں یانی اورایک کلژاسو کھی ہوئی روٹی کارکھا ہوا ہے اور جب شوہرے پوچھا کہ یہ کیا ہے تو انہوں نے کہا آ دھایانی اور آ دھی روٹی کل کھالی تھی اور آ دھی آج کیلیے بچار کھی تھی۔ پیہ س كريوى في الي والدين كم بال جانى كى خوابش كى توشو برن كها كمين تو پہلے ہی جانتا تھا کہ شاہی خاندان کی لڑکی فقیر کے ساتھ گذارانہیں کر سکتی لیکن پیوی نے جواب دیا کہ بیہ بات نہیں ہے بلکہ میں تو اپنے والدسے بیز شکایت کرنا جا ہتی ہوں شادی کے احکام کے است کے انگام کے است کے انگام ایک متی شخص سے کر رہا ہوں مگر اب معلوم ہوا ہے کہ میر انگاح تو ایسے شخص سے کردیا گیا ہے جس کا اللہ تعالیٰ کی ذات پر تو کل نہیں ہے اور دوسرے دن کیلئے کھانا بچا کر دکھتا ہے جو تو کل کے بالکل منافی ہے لہذا اس کھر میں یا تو میں رہوں گی یا بیرو ٹی رہے گی۔

(تذکر قالا ولیا میسر جم ص ۹۹ مطبوعة وری رضوی کسے خانہ لاہور)





دعوت وليمه

' ولیمه کرناسنت مو کده ہے' ۔ (جان پو جھ کرولیمہ نہ کرنے والایخت گنهگارہے)

(کیمیائے سعادت)

''ولیمه بیرے که شب ز فاف کی صبح کواینے دوست ٔ احباب ٔ عزیز وا قارب اور محلّه کے لوگوں کوخسنب استطاعت (حیثیت کے مطابق) دعوت کریے۔ دعوت کرنے

والوں کا مقصد سنت برعمل کرنا ہو۔ نہ رہے کہ میری واہ واہ ہوگی''۔

(ببارشر بعت ج۲ ۲۲)

حفرت عبدالرحمٰن بن عوف وناشؤ كابيان ہے كہ مجھ سے بى كريم مضاكاتيا نے ارشادفرمایا:

اولم ولوشاة

(بخاری ج۳ ٔ پاپ۹۷ ،مسلم ج۱٬ ص۳۵۸ مؤطاا مام ما لک ج۲٬ کتاب الفکاح)

ترجمه وليمكروج إاكباي بكرى ذائح كرو

استطاعت ہوتو ولیمہ میں کم از کم ایک بکری یا ایک بکرے کا گوشت ضرور ہوکہ سر کار دوعالم مطبح این نے اسے پند فر مایا۔لیکن اگر حیثیت نہ ہوتو پھر اپن حیثیت کے مطابق كسى بھى قتم كا كھانا كھلاسكتے ہيں كهاس يہ بھى وابمهادا ہوجائے گا۔

ولیمہ سنت ہے

حفرت صفيه بنت شيبه والفحا فرماتي هيل-

جمه نی کریم مض و آنی این این اواج کاولیمددوسر جو کے ساتھ کیا تھا۔

حضرت خدیجه وظافینها کی شادی پرولیمه

روایت ہے کہ حضور نبی کریم مضیقیق کا فکاح حضرت خدیجہ وٹالیجا سے ہوا۔
جب آپ نے انہیں رخصتی کر کے اپنے گھر لے جانا چاہا تو حضرت خدیجہ وٹالیجا نے
عرض کیا۔اے محمد مشیقیق کیا آپ جارہے ہیں آپ پہلے ایک دواونٹ وغیرہ ذرّح
کریں اورلوگوں کو کھانا کھلا کیں۔ چنا نچہ آپ مشیقی آ نے ایسا ہی کیا اورلوگوں کو کھانا
کھلایا یہ پہلا ولیمہ تھا جوحضور نبی کریم مشیقی آ نے حضرت خدیجہ وٹالیجا کے ساتھ فکاح
کے موقع پرکیا۔ (السمط الثمین فی منا قب امہات المؤسین علامہ محب طبری)

حضرت عائشه والنيحها كى شادى پرولىمه

حضرت عاکشہ رفائعیا فرماتی ہیں اللہ کی قسم میر کی شادی پر نداون ذرج ہوئے اور نہ بحری ذرج کی گئ البتہ ایک پیالہ تھا جس ہیں پچھ تھوڑا بہت کھانے پینے کو تھا اور وہ بھی حضرت سعد بن عبادہ وہ فائٹو نے حضور نبی کریم مشیقاتی کی خدمت میں بطور ہدیہ بھیجا تھا۔
تھا اور میں ہیا چھی طرح جانتی ہوں کہ بید حضرت سعد دفائٹو نے ہی بھیجا تھا۔
(السمط الشمین فی منا قب امہات المومنین)

THE CITY THE THE CHILLIST OF

حضرت زينب رخالفها كى شادى يروليمه

امام بخاری بم نظیلی حضرت انس کے طریق سے روایت کرتے ہیں۔وہ فرماتے

ہیں کہ حضور نبی کریم مطبقاتی آنے حضرت نسینب و فاضحا کی شادی پر ایسا شاندار ولیمہ کیا کہ ہم نے کسی دوسری زوجہ کی شادی پر نیدو یکھا۔ حضرت انس بڑالٹوز کے شاگر دحضرت

ٹابت بھالٹنئ کو بوچھااس دلیمہ میں کیا پیش کیا گیا تھا آپ نے فرمایا کہ حضور نبی کریم مِشْخِلَا نِے اس ولیمہ میں کھانا اور گوشت پیش کیا تھا اور اس کثرت ہے تھا کہلوگ باتی چھوڑ کر چلے گئے۔ (بخاري مسلم منداحر بحاله السمط الثمين)

حضرت صفيه وخالفها كي شادي يروليمه

حضرت انس زلائنة نے فرمایا حفرت صفیہ زلائھا کا حق مبرآ زاد کرنا ہی تھا اور انہیں حضرت امسلیم مخالفہانے تیار کیا اور رات کو ہارگاہ نبوی مشیقی میں بھیج دیا اور شب ز فاف گذارنے کے بعد صبح کوحضور نبی کریم منطق کیا نے فرمایا جس کے پاس کھانے پینے کو کچھ ہے وہ اس دسترخوان پر لا کر ر کھ دے۔حضرت انس ڈاٹٹھ فرماتے ہیں کہ کوئی پنیر لے کر آیا کوئی تھجوریں لایا کوئی تھی وغیرہ لایا اس سے ایک حلوہ ساتیار کیا گیا ہیہ آب مُطْخِعَاتِهُمْ كَاوْلِيمْهُ مِقَاـ (السمط الثمين في منا قب امهات المومنين)

وليمه مين تاخيرجا ئزنہين

سيدناامامغزالي ذاليني '' كيميائے سعادت'' ميں ارشادفر ماتے ہيں۔ '' ولیمه میں تا خبر کرنا ٹھیکے نہیں اگر کسی شرعی وجہ سے تا خیر ہوجائے تو ایک ہفتہ

کے اندراندرولیمہ کرلیما چاہیے۔اس سے زیادہ دن گزرنے نہ پائے''۔

(کیمیائے سعادت)

هستله وعوت دلیمه صرف پہلے دن یا اس کے بعد دوسرے دن کریں یعنی دوہی دن

علام شادی کے اعلم کے اعلام کا ان اور ان کا ان میں ان میں ان کا ان میں ان میں ان میں ان میں ان میں ان میں ان می

تک بدوموت ہوسکتی ہے اس کے بعدولیمہ اور شادی ختم ۔ (بہار شریعت ۲۰ م۱۲)

ولیمه کب کیاجائے؟

حضرت ابن مسعود فالنيو سروايت بك في كريم طفي و أن ارشا وفر مايا:

طعام اول يوم حق وطعام يوم الثانى وسنة وطعام يوم الثالث سمعة ومن سمع سمع الله به (ترزى ج الثالث مديث ١٩٩٩ البوداؤدج ٣٠ مديث ٣٣٩) ترجم پہلے دن كا كھانا (ليتى شب زفاف كدوسر بيروز وليم كرنا) حق ہے۔ (اس كرنا بى چاہيے) دوسر دن كا كھانا سانے اور شير دن كا كھانا سانے اور شير سيدن كا كھانا سانے اور شير سيدن كا كھانا سانے كار ليتى شهرت كيلئے ہاور يوكوئى سانے كيلئے كام كرے كا الله تعالى اس سائے كار (يعنی الله تعالى اس كرسزا طے كى)

حضرت قمادہ خالتی روایت کرتے ہیں کہ

حضرت سعید بن مستب بنائند کو دلیمه میں پہلے روز بلایا گیا تو دعوت منظور فرمائی۔دوسرے روز دعوت دی گئ تب بھی قبول فرمائی اور تیسرے روز بلایا گیا تو دعوت منظور نہ کی بلانے والے کو کنکریاں ماریں اور فرمایا کہ ''سٹینی بگھارنے والے اور دکھاوا کرنے والے بین'۔

(ابوداؤرج ٣ صديث ٣٨٩)

دعوت قبول كرنا سنت ہے

دعوت قبول کرنا سنت ہے۔ بعض علاء کے نزدیک دعوت قبول کرنا واجب ہے۔ دونوں قول بظاہر سیمعلوم ہوتا ہے کہ اجابت سنت موکدہ ہے۔ ولیمہ کے سوا دوسری دعوقوں میں بھی جانا افضل ہے۔ دوسری دعوقوں میں بھی جانا افضل ہے۔ حصرت عبداللہ ہن عمر ڈائھی روایت کرتے ہیں۔ رسول اللہ المنظمَاتِیَا نے ارتباد

اذا دعى احدكم الى الوليمة فليهاتها

(بخاری ج۳ مدیث ۱۵۹ مسلم ج۱ مؤطاامام مالک ج۲)

زجمہ جبتم میں سے کی کوولیمہ کھانے کیلئے بلایا جائے تو دہ ضرور جائے۔ حضرت ابویر ہرہ ڈٹائند سے روایت ہے کدرسول اللہ منظ عَلَیْ اللہ اراد فرمایا:

من ترك الدعوة فقد عصى الله ورسوله_

(بخاري جس عديث ١٦٣ أمسلم ج١)

رجمہ جودعوت قبول کرکے نہ جائے اس نے اللہ تعالیٰ اور اس کے رسول منظ کیا آجا۔ کی نافر مانی کی _

حفرت حمید بن عبدالرحمٰن حمیری فالیو نے حضور اکرم مطابقی کے ایک صابی سے روایت کی کہ نبی کریم مطابق نے ارشاد فرمایا کہ

سے روایت ن کہ بی کری منطق ہے ارتباد کر مایا کہ '' جب و مختص وعوت دینے بیک وقت آ کیں تو جس کا گھر تمہارے گھر ہے

ت بہواں کی دعوت قبول کرواوراگرایک پہلے آیا تو جو پہلے آیا اس کی دعوت قبول کرؤ'۔ کرؤ'۔

بغيردعوت كدنه خانا

دعوت میں بغیر بلائے نہیں جانا چاہیے۔ آج کل عام طور پر کی لوگ دعوقوں میں بن بلائے ہی چلے جاتے ہیں اور انہیں نہ ہی شرم آتی ہے اور نہ ہی اپنی عزت کا سے میں ا

کچھ خیال ہوتا ہے۔ گویا۔ طالب نان میں تقدام میال

ء مان ندمان بیس تیرامهمان سرکا *دمدینه منطقطی*آنے ارشاد فرمایا:

'' دعوت میں جاؤجب کہ بلائے جاؤ''اورفر مایا:

المراكب المالي المراكب المراك

(ابوداوُدج٣٠ عديث٣٢)

ز جمہ جو بغیر بلائے دعور میں گیا وہ چور ہو کر داخل ہوا اور غارت گیری کرکے

اليركى صورت ميں باہر لكلا . (يعني كناموں كوساتھ كے كرنكلا)

براوليمه

صدیت پاک میں اس ولیمہ کو بہت بُرا ہنایا گیا ہے جس میں امیروں کوقو بلایا جائے اورغر باء ومساکین کوفراموش کر دیا جائے۔الی دعوت یقیناً بہت بُری ہے جس میں امیروں کی خاطر تواضع خوب بڑھ چڑھ کرکی جائے اورغریوں کونظرا نداز کر دیا جائے یا نہیں حقارت کی نظر سے دیکھا جائے۔

حضرت ابو مريره وفالنفؤ روايت كرت مي كدرسول الله مطيع النافي الشادفر مايا:

شرالطام طعام الوليمة يدعى لها الاغنيآء وبترك الفقرآء

(بخارى ج ما حديث ١٩٣١ مسلم ج الإداؤدج ١٣ حديث ١٩٣٣ مؤطاامام ما لك ٢٦)

ترجمہ سب سے براولیمہ کا وہ کھانا ہے جس میں امیر وں کوتو بلایا جائے اورغریبوں کونظر انداز کر دیا جائے۔

آئ کل مسلمانوں میں ایک اورنی جدت پیدا ہو چکی ہے وہ کہ دعوت میں دو قسم کے کھانے ہوتے ہیں۔ سادہ اور کم لاگت والا کھانا مسلمانوں کیلئے اور بہترین قسم کے کھانے غیرمسلم دوستوں کی غاطر تو اضع کے پکوان غیرمسلم دوستوں کی غاطر تو اضع میں اس قدر نفو کیا جاتا ہے کہ پوچھے مت۔ ہمارے ملک پاکستان میں حکومتی پابندی کے باوجود ولیمہ پراس قدر کھانے کا انتظام کیا جاتا ہے کہ ہرفتم کا وافر مقدار میں کھانا کے باوجود ولیمہ پراس قدر کھانے کا انتظام کیا جاتا ہے کہ ہرفتم کا وافر مقدار میں کھانا ہوتا ہے اگر ایک کھانا پکایا جائے تو لوگ الگلیاں اٹھاتے ہیں اس لئے غریب بیچارہ قرض یا سود پر پیسے لئے کرولیم کرتا ہے بیاوگ کھا کر چلے جاتے ہیں بعد میں وہ غریب قرض یا سود پر پیسے لئے کرولیم کرتا ہے بیاوگ کھا کہ تو بیں بعد میں وہ غریب

TERCIZO TENZUSTE DES (ENZUSTE) قرض وسود کے بوجھ میں دبار ہتا ہے جو کہ بالکل غلط ہے۔ فرمان خداوندي الله رب العزت اوشا وفرما تاہے۔ إِنَّ اللَّهُ بَرَى ءُمِنَ الْمُشْرِكِينَ وَرُمُودُهُ . (سورة توبه) ترجم الله بیزارے مشرکوں نے اور (بیزارہے) اس کارسول۔ (کزالا بمان) اورفرما تاالثد تإرك وتغالي يَايُّهَا الَّذِينَ امْنُوا إِنَّمَا الْمُشْرِكُونَ نَجَسْ-(سورة التوبه ۲۸) اے ایمان والو! مشرک زے نایاک ہیں۔ (كنزالايمان) الله كرسول مطفي آن ارشاد فرمات بين-''جو کا قرول کی تعظیم و تو قیرہ کرے یقیناً اس نے دین اسلام کوڈ ھانے میں مدد (ابن عدى ٰ ابن عسا كر طبر اني ميه بي ' ابونييم في الحلية) بتائي جن لوگوں كے متعلق الله عزوجل ورسول مضي الله كام ب_ان کی خاطر تواضع میں اس قدرمبالغہ کرنا اورمسلمانوں کوان سے کم درجہ میں شار کرنا کہاں

کی خاطر تواضع بین اس قد رمبالغه کرنا اور مسلمانوں کوان سے کم درجہ بین تمار کرنا کہاں تک سے جے؟ پچھلوگ کہتے ہیں کہ''صاحب! ہم ہندوستان میں رہتے ہیں دن رات ان کے بی اٹھنا بیٹھنا ہے ہمارے کاروباری تعلقات ہیں اسلئے بیرسب پچھرکرنا ضروری ہے''۔ اس کے جواب میں صرف اتنا ہی کوں گا کہ''اے میرے بھائی! فررا بیتو بتا کو کہ عوف پر مسلم بھی اپنی شادی ہیا ہے کے موق پر مسلمانوں کیلئے الگ ان کا پندیدہ کھانا کے عوم ایم بین او پھر ہم کیوں کفاروں سے مسلحت (Compermoise) کریں جی نہیں! تو پھر ہم کیوں کفاروں سے مسلحت (Compermoise) کریں کی نیوں ملک جس میں مسلمانو سے کریں' یقینا ایک دعوت اور ایے والیم کا کوئی تو اب نہیں ملی جس میں مسلمانو سے نیادہ کھاروں کے ایک کا دورا ہے۔

میبل کری پر کھانا

آج کل ٹیبل کری پرجوتے پینے ہوئے کھانا' کھانے کا فیشن ہو چکا ہے۔جس دعوت میں ٹیبل کری کا انتظام نہ ہووہ وعوت گھٹیاتھ کی وعوت بھی جاتی ہے۔

نیچے بیٹھ کر کھانا سنت ہے

ترجمہ جب کھانا کھانے بیٹھوتو جوتے اتارلو کہاس میں تمہارے پاؤں کیلئے زیادہ راحت ہے اور بیا چھی سنت ہے۔

ٹیبل کری پر کھانے کے متعلق مجدود ین وملت اعلیٰ حضرت امام احمد رضا خال فاضل پر میلوی <u>مجلط</u>یا ارشاد فرماتے ہیں۔

'' ٹیمل کری پر جوتے پہنے ہوئے کھانا' کھانا عیسائیوں کی نقل ہے اس سے دور بھا گے اور رسول اللہ منظی کی آتا ہے اس دور بھا گے اور رسول اللہ منظی کی آتا ہے اور شادیا دکرے۔ من تشبه بقوم فھو منھم۔ لینی جوکی توم سے مشابہت پیدا کرے وہ آئیس میں سے ہے۔اسے روایت کیا امام احمر ابوداؤڈ ابولیعلی والطبر انی نے صحیح سندے ساتھ۔(فاوٹی افریقٹر ۵۳)

بیقو ٹیبل کسی پر کھانے کے متعلق تھم تھا مگر موجودہ دور میں تو آئی ترتی ہوگی ہے کہ اکثر جگہہ کھڑے کھڑے کھانے کا انتظام ہوتا ہے۔ اس میں ایسے سلمان زیادہ

TERECIET TO THE SERVICE OF THE PERIOD OF THE شریک ہیں جن کے مر پر سوسائٹی میں موڈرن کہلانے کا بھوت سوار ہے اور جیرت بالائے جیرت کہاس بھکاری طرز کی دعوت کواسٹینڈ رکا نام دے دیا گیا ہے۔ الله تعالى نے انسان كو اشرف المخلوقات بنايا 'اور اسے كھانے پينے' سونے جا گئے چلنے پھرنے اٹھنے بیٹھنے غرض کے ہرمعالمے میں جانوروں سے الگ منفر دامتیازی خصوصیات سے نوازا ہے لیکن تعجب! آج کا انسان جانوروں کے طریقوں کواپنانے میں ہی اپنی ترتی سمجھ رہا ہے اور اس پر پھو لے نہیں سار ہا ہے۔اللہ تعالیٰ مسلمانوں کو جانوروں کی طرح کھڑے ہو کر کھانے پینے سے بچنے کی تو فیق عطافر مائے۔ آمین مسئله بجوک کے کاناست ہے بھوک بحرکر کھانامباح ہے (یعنی نداواب ندہی

گناہ) اور بھوک سے زیادہ کھانا حرام ہے۔ زیادہ کھانے کا مطلب پیہ ہے کہ اتنا کھایا جس سے پید خراب ہونے (لینی بدہضمی ہونے) کا گمان ہے۔

(قانون شریعت ج۴ ص ۱۷۸)

شادی بیاہ ویگر تقریبات پر مردوعور توں کامل کر کھانامنع ہے

آج كل مسلمانوں ميں ايك نئ چيز اور دائج ہوگئ ہے۔ وہ يہ كہ خواتين ميں مرد اورنو جوان لڑ کے کھانا کھاتے ہیں۔ کھانے کے دوران بیہودہ گذہ خاق کڑ کیوں سے چھٹر چھاڑ اور بدتمیزی کی ہر حدکو پار کرلیا جاتا ہے۔کیااس کے حرام وگٹاہ ہونے میں کسی کوکوئی شک ہے۔

رسول الله منطق كمانية في ارشاد فرمايا:

لعن الله الناظر والمنظور اليه

(بيهيل في شعب الإيمان مشكوة ج٢ صديث ٢٩٩١)

الله کی لعنت بدنگانی کرنے والے پر اور جس کی طرف بدنگانی کی جائے۔

''جو خص کی عورت کو بدنگاہی ہے دیکھے گایا مت کے دن اس کی آ تکھوں میں

THE SILVE SEE SEE SELLISE YOU يكھلا ہواسيسہ ڈالا جائے گا''۔

اس يُر عطريق بريابندي لگانا برمسلمان برضروري ب-خاص كر جارے گر کے بزرگوں برخاص ذمہ داری ہے کہ وہ شادی بیاہ کے موقعہ برعورتوں میں م دول کو جانے اور کھانا کھلانے ہے رو کے ورنہ یادر کھئے !محشر کے دن سخت یو چھ ہوگی اور آ ب سے یو چھاجائے گا۔''تم قوم میں بزرگ تھے تم نے اپنی جوان نسلوں کو حرام کاموں سے کیوں ندروکا تھا'اس بےحیائی کے خلاف تم نے کیوں اقدام ندکیا''۔ بتائے اس وقت آ یے کے پاس کیا جواب ہوگا۔ الله عزوجل كرسول منطق آنة في ارشاد فرمايا:

(الحديث) الساكت عن الحق شيطان اخرس-بُرائی دیکھ کرحق بات کہنے سے خاموش رہنے والا گونگا شیطان ہے۔





أ داب مباثرت

الله رب العزت ارشاد فرما تا ہے۔

فَالْنَ بَاشِرُوهُنَّ وَالْبَعْوُا مَا كَتَبَ اللَّهُ لَكُورٍ (مورة البقره ١٨٨)

ترجمہ نوابان سے محبت کرواور طلب کروجواللہ تعالیٰ نے تہمارے نصیب میں کھاہو۔ ، کزالایمان

اپنی بیوی سے قربت کرناصدقہ ہے

نى كريم منطق لين في ارشاد فرمايا:

''تم میں سے کسی کا اپنی بیوی سے مباشرت کرنا بھی صدقہ ہے۔ صحابہ کرام نے عرض کیا۔'' یار نول اللہ مطفظ کیا آ کوئی شخص اپنی شہوت پوری کرے گا اور اسے اجر

ئے عرش کیا۔ ' یار خول اللہ منطق آج ! کوئی حص اپنی تہوت پوری کرے گا اور اسے اجر بھی ملے گا''؟ حضور منطق آج انشاد فرمایا:'' ہاں!اگروہ حرام مباشرت کرتا تو کیاوہ

گنهگار نه دوتا! ای طرح ده جائز مباشرت کرنے پر اجر کامستی ہے'۔ اس بات کا ہمیشہ خیال رکھے کہ جب بھی مباشرت کا ارادہ ہوتو یہ معلوم کرلے

کہ کہاں عورت چیش سے تو نہیں ہے۔ چنانچہ عورت سے صاف مو چھے لے اور
کر کہیں عورت چیش سے تو نہیں ہے۔ چنانچہ عورت سے صاف مو چھے لے اور
عورت کی بھی مذر داری میں کا گر میں ایک میں تاریخ کا بریدہ شک کی میں میں میں ا

عورت کی بھی ذمہ داری ہے کہ اگر وہ حائضہ ہوتو بے بھجک اپنے شو ہر کواس ہے آگاہ کرے۔اگرعورت حالت جیف میں ہوتو ہرگز ہرگز مباشرت نہ کرے کہ ان ایام میں شادی کے افکام کے افکام کے اس مسلم کا مفصل بیان ان شاء اللہ آئے آئے گا۔
مباشرت کر تا بہت برنا گناہ ہے۔ اس مسلم کا مفصل بیان ان شاء اللہ آئے آئے گا۔
اکم عور تیں شادی کی پہلی رات حالت جیف میں ہونے کے باوجودشرم کی وجہ
سے بتاتی نہیں ہیں یا اگر کہہ بھی و ہے تو بہت کم مروہ و تے ہیں جو مبر سے کام لیتے ہیں۔
پھر اس جلد بازی کی سزاعمر بھر ڈاکٹروں اور تحکیموں کی فیس کی شکل میں بھگتے پھر تے
ہیں۔ الہذا مرداور عورت دونوں کو ایسے موقعوں پر مبر و تحل سے کام لینا چاہے۔ پھر مرد

مطلب پرست ہوتے ہیں انہیں صرف اپنے مطلب ہے ہی لیما ہوتا ہے۔ وہ دوسروں کی خوثی کی کوئی اہمیت نہیں دیتے اور یہی اصول وہ اپنی ہیوی کے ساتھ بھی روار کھتے ہیں۔ چنانچہ جب ان کے ول میں خواہش جماع ہوتی ہے تو یہ نہیں دیکھتے کہ عورت اس کیلیے تیار ہے یانہیں 'وہ کہیں کسی دکھ در دیا بہاری میں مثلا تو نہیں ہے۔ ان سب باتوں ہے انہیں کوئی مطلب نہیں ہوتا وہ بے صبری کے ساتھ عورت سے اپنی خواہش کی تھیل کر لیتے ہیں۔ اس ترکت سے عورت کی نگاہ میں مردی عزت کم ہوجاتی ہے اور وہ مرد کو مطلب ہیں ماس نہیں ہو

صحبت بایرده کریے

حضرت عتب بن السلمي ذائية سے روایت ہے کہ رسول الله منظم آیا ہے ارشاد فرمایا:

یا تا جود ونوں طرف ہے آگ برابر لگی ہوئی _ کامنظر پیش کر سکے _

اذا اتى احدكم اهله فليستتر ولايتجرد تحرد الحميرين-

(ابن ماجيرج ا'باب ٢١٢' حديث ١٩٩٠)

ترجمہ ہم میں جوکوئی اپنی بیوی کے پاس جائے تو پر دہ کر لے اور گدھوں کی طرح نہ شروع ہوجائے۔

الم م محمغز الى م الشيخ روايت كرت مين كدس كارمدينه م الشيكة أن في ارشاد فر مايا:

TERECIET THE SERVICE OF THE CHILLY OF ''مردکو جاہے کداپنی عورت پر جانوروں کی طرح نہ کرے۔ محبت سے پہلے قاصد ہوتا ہے۔ صحابہ کرام نے عرض کیا۔ یارسول الله مطبق ی اوہ قاصد کیا ہے؟ ارشاد فر مایا: وه بوس کناراورمحبت آمیز گفتگوه غیره بین " _ (کیمیائے سعادت) محبت آميز گفتگو كرنا اوردل بهلانا ام المومنين حفرت عا كشرصديقه وفالنحيا سے مروى ہے كدرسول الله مطابقة لم نے ارثاد فرمایا کر''جومردا بی بیوی کا ہاتھ اس کو بہاانے کیلئے پڑتا ہے اللہ تعالیٰ اس کیلئے ایک نیکی لکھودیتا ہے۔ جب مردمجت ہے عورت کے گلے میں ہاتھوڈ الّا ہے اس کے حق میں دس نیکیا ل کھی جاتی ہیں اور جب عورت سے جماع کرتا ہے تو دیناو مافیہا ہے بہتر ہوجا تاہے''۔ (غدية الطالبين باب٥) بیوی سکون کا باعث ہے ' حضرت نافع بن الارزق بمِطني نے حضرت ابن عباس بنائنڈ سے یو چھا کہ' ہین لبساس ليكبعه ''كاكيامطلب ہے تو حضرت این عباس زمانٹیئے نے فرمایا وہ (عورتیں) تمہارے لئے سکون ہیں ہم ان کی طرف سے رات اور دن کوسکون لیتے ہو۔ ابن الارزق نے کہا کیا عرب بیم عنی جائے ہیں۔حضرت ابن عباس بٹاٹٹو نے فرمایا ہاں کیا تونے تابغه بن زيبان كايي ول نہيں سا۔ اذاما الضجيع ثنى عطفها تثنت عليه فكانت لباسا ترجمہ جب عورت کے پہلو میں اس کا خاوند سوتا ہے تو وہ اس پرلوٹرا ہے اور وہ اس پرلوٹتی ہے تو دوان کیلئے سکون کا باعث ہوتی ہے۔ (تغییر در منثور مترجم خاص ۵۱۸) صحبت کی دعا

صحبت سے پہلے خود بے چین نہ ہوجائے اپنے آپ پر پورااطمینان رکھے جلد

CALLON DE SER LEILUSE DE بازی نہ کرے۔ پہلے بیوی سے پیارومحبت بھری گفتگو کرے پھر بوس و کنار کے ذریعے ا عماش ت كلئ آماده كرے اوراس دوران دل ہى دل ميں كدوعا يڑھے۔ بسم اللهِ الْعَلِيِّي الْعَظِيْمِ اللَّهُ أَكْبَرُ اللَّهُ أَكْبَرُ ترجمه الله كام سے جو بزرگ و برترعظمت والا ب_الله بهت بوا ب_الله اس کے بعد جب مرد عورت محبت کا ارادہ کرلیں تو بر ہنہونے سے قبل ایک مرتبه ورة اخلاص يزهيس حكُلْ هُوَ اللَّهُ أَحَد اللَّهُ الصَّمَدُ اللَّهُ يَلِدُ ولَكُمْ يُولَدُ ٥ وَلَمْ يَكُنْ لَّهُ كُفُواً أَحَدِ ٥ سورة اخلاص يڑھنے كے بعد بيدعا يڑھيں۔ يسم الله اللهم جنبنا الشيطان وجنب الشيطان ما رزقتنا-(بخاري جس مسلم ج ا'احياء العلوم جس حصن حصين) الله كے نام سے _ا باللہ دور كرتم سے شيطان مردود كواور دور كرشيطان مر دودکواس اولا دہے جوتو ہمیں عطا کرے۔ نيك اولا دكاحسول كسيع؟ حضرت عبداللدائن عباس والعناس روايت بكرسول كريم مضاعية لمن ارشادفر مایا: قدربينها في ذلك اوقضي ولد لم يضره شيطان ابدا-(بخاري جسا حديث ١٥٠ مسلم ج ائتر ذي ج ا حديث ١٠٨٧) ترجمہ جو محض اس دعا کومعبت کے دنت پڑھے گا (وہی دعا جواد پرکھی گئی ہے) تو اللَّد تعالى اس مِيرْ ھنے كوا گراولا دعطا فر مائے تو اس اولا دكوشيطان بھى بھى نقصان نہ پہنچا

Marfat.com

سکے گا۔

THE THE THE CHILLIST YOU

دعانه يزهض كاوبال

-------اس حدیث کی شرح میں حضور سید ناغوث اعظم شیخ عبدالقادر جیلانی وُناتُندُ اپنی كتاب 'غنية الطالبين' ميں _حضرت محقق شخ عبدالحق محدث دہلوی وطنظيمہ اپنی تصنیف ''اهيعة اللمعات شرح مشكلوة ''ميں۔اورسيدي اعلیٰ حضرت امام احمد رضاخاں مخطیجیے '' فآویٰ رضویه''میں ارشاد فرماتے ہیں۔

''اگر کو کی شخص صحبت کے وقت دعا نہ پڑھے (لیتنی شیطان مردود سے اللہ کی یناہ نہ مائے) تو اس مخف کی شرم گاہ سے شیطان لیٹ جا تا ہے اور اس مرد کے ساتھ شیطان بھی اس کی بیوی سے محبت کرنے لگتا ہے اور اس جماع سے جواولا دپیدا ہوتی ہے وہ نافر مان کر ی خصلتوں والی بے غیرت اور بددین مراہ ہوتی ہے۔شیطان کی اس دخل اندازی بحسبب اولا دمیں تیاہ کاڑی آجاتی ہے' ۔ (والعیاذ باللہ)

(غية الطالبين باب فأاحية اللمعات فآوي رضوبين ٩ نصف اول ص ٢٦)

بخاری شریف کی ایک عدیث میں ہے کہ حضرت سعد بن عبادہ ڈٹائٹنڈ نے فرمایا: ''اگر میں اپنی ہیوی کے ساتھ کسی کو دیکھ لوں تو تلوار ہے اس کا کام تمام کر وول ان کی اس بات کوئ کرلوگول نے تعجب کیا۔ اللہ عز وجل کے رسول منطق کیا نے ارشاد فرمایا: لوگواجمهنی سعد کی اس بات پر تعجب آتا ہے حالانکہ میں تو ان سے زیادہ غيرت والا ہوں اور اللہ تعالی مجھے سے زیادہ غیرت والا ہے''۔ (بخاری ج۳'باب ١٣٧) کیا آپ گوارا کریں گے کہ آپ کی بیوی کے ساتھ کوئی اور مرد مباشرت

کرے۔ یقیناً اگر آپ میں غیرت کا تھوڑ اسابھی حصہ موجود ہے تو آپ میہ ہرگز گوارا نہیں کریں گے۔ پھر بتائے آپ یہ کیے گوارا کر لیتے ہیں کہ آپ کی بیوی کے ساتھ

شیطان مردود بھی محبت کرے۔ (دالعیاذ ہاللہ) لہذا اس مصیبت سے بچنے کیلئے جب بهى صحبت كري توياد كرك دعا يره صلياكم المم المم اعود بالله من الشيطن الرجيم ہسم اللہ الرحمن الرحمد الم مور پر ها یو کی۔
عالیًا آج کل بہت ہے ہمارے بھائی ایے ہوں گے جو صحبت کے وقت دعا
نہیں پڑھے مثاید بہی وجہ ہے کہ نملیں بے غیرت نافر مان اور دین سے دور نظر آرہی
ہیں۔ ہمارااور آپ کا روز مرہ کا مشاہدہ ہے کہ اولا دسے باپ کہتا ہے کہ بزرگوں کے
مزارات پر حاضر ہونا چا ہیے۔ بیٹا بزرگوں کے مزاروں پر جانے کو زنا اور قل سے برتر
سمجتا ہے۔ باپ کا عقیدہ ہے کہ رسول اللہ مشاہدہ آجا ہمارے آقا و مولی ہیں۔ بیٹا رسول
اللہ مشاہد آجا ہے جیسا بشراور بڑے بھائی سے زیادہ سمجھنے کو تیار نہیں۔ (معاذ اللہ)
غرض کہ اس طرح کی سیکڑ وں مثالیں ہیں کہ دنیاوی معالمہ ہویا چھردین اولا دا ہے
غرض کہ اس طرح کی سیکڑ وں مثالیں ہیں کہ دنیاوی معالمہ ہویا چھردین اولا دا ہے
ماں با ہے اور بزرگوں سے باغی نظر آتی ہے۔ اللہ تعالی مسلمانوں کوتو فیتی دے۔





جماع كالشحيح مقام

الله تبارك وتعالى قرآن عظيم مين ارشاد فرما تا ہے۔ يِسَاّقُ كُورْ حَرْثُ لَكُمْ فَأَنُّواْ حَرْثُكُمْ اللّي شِنْتُمْ وَكَيِّمُوْ الْأَنْفِسِكُمْ ۖ

(سورة البقرة ٢٢٣)

ترجمہ تمہاری عورتیں تمہارے لئے تھیتیاں ہیں تو آ وَا بِی کھیتیوں میں جس طرح چاہواورا پے بھلے کا کام پہلے کرو۔ (کنزالا یمان)

شان نزول

حضرت ابن عمر ذلائع، سے روایت ہے کہ

'نیآ بت کریمهمباشرت کے متعلق تازل ہوئی''۔ (بخاری ج اعدیث ۱۲۷۰) امام وکیع ابن ابی شیب عبد بن حمید بخاری ابوداؤ دُتر فدی نسائی ابن ماجه ابن

جریر ابوقعیم حلیہ بیں اور بیبی (مرتضیم) سنن میں روایت کرتے ہیں کہ حضرت جابر وہائٹونا نے فرمایا کہ یہودی کہتے تھے کہ جب مردعورت کے پیچھے کی طرف سے فرج میں وطی

کے حرمایا کہ یہود وں سہتے سے کہ جب مرد حورت کے پیچیے می طرف سے قرح میں وطی کرے اور وہ حاملہ ہوجائے تو بچہ بھیٹگا پیدا ہوتا ہے اس پر اللہ تعالیٰ نے بیر آیت کریمہ نازل فرمائی۔

ر سول الله مصَّحَةَ إِنَّ فِي ارشاد فرمايا جب وطي فرج ميں ہوتو آ مے كى طرف سے

الله كے پيارے حبيب سركار مدينہ مشكرة نے ارشاد فرمايا:

''صحبت صرف عورت کی فرج میں ہی ہونی چاہے۔ چاہے آگے ہے کرے
یا پیچے ہے وائیں کروٹ ہے ہو یا بائیں کروٹ ہے جس طرح کوئی شخص اپنے
کھیت میں جس طرف ہے آتا چاہے آتا ہے ای طرح اس کی بیوی اس کیلئے کھیت کی
مائند ہے اس سے وطی کمی بھی سمت سے کی جاستی ہے لیکن وطی صرف فرج میں ہی
ہونی چاہیے۔
(احیاء العلوم)

فائده

خیال رہے اپنی ہوی ہے صحبت آ کے کے مقام میں کرے ڈبر میں نہ کرے کیونکہ حدیث میں آیا ہے کہ دبر میں دطی کرنے والا ملعون ہے۔ یعنی دطی سیدھا کرکے کرے الٹی کیکن املے مقام کی طرف۔

نسائی اور ابن حبان نے حضرت ابن عباس ڈٹاٹٹنڈ سے روایت کیا ہے کہ رسول اللہ منٹے ہی نے غربایا اللہ تعالی طرف نظر رحمت نہیں فرما تا جو کسی مرد سے بدفعلی کرتا ہے یاعورت کی ڈبریش وطی کرتا ہے۔

انزال کے وقت کی دعا

جس وقت انزال ہولیتی مرد کی منی اس کے آ لے سے نکل کرعورت کی فر خ میں داخل ہونے گلے اس وقت دل ہی دل میں بید عا پڑھیں۔ م

اللهم لاتجعل للشيطان فيما رزقتني نصيباً

(حصن حمين فآوي رضويه ج٩ نصف آخرص ١٦١)

ترجمه اے الله شیطان کیلیے حصہ نہ ہنااس میں جو (اولاد) تو ہمیں عطا کرے۔

PERSONAL SERVICES OF SELECTION اس دعا کی تعلیم دینا اس بات کی شہادت ہے کہ اسلام ایک تکمل دین ہے جو زندگی کے ہرموڑ پراپناتھم نافذ کرتا ہے تا کہ مسلمان کی بھی معاملے میں کی دوسرے دهرم وقانون کامختاج شدرہ اوراس دعایش دوسری حکمت بیر بھی ہے کہ مسلمان کسی بھی حال میں یا دالی سے عاقل ندر ہے بلکہ ہرحال میں اللہ کی رحمت کا امیدوار رہے۔ ساتھ بی مید بات بھی یا در کھنا ضروری ہے کہ آنے والی اولا د کیلئے اللہ تعالیٰ کی بارگاہ میں دعا تو کی جائے کہاللہ تعالی اسے شیطان سے محفوظ رکھے کیکن جب اولا د پیدا ہوجائے اوراہے شیطانی کاموں سے ندروکے اسے بُری ہاتوں سے منع نہ کرے اوراچھی ہاتوں کا حکم ندد ہے تو برسی تجیب وتجب خیز ہات ہوگی۔اس لیے آگاہ ہوجا ہے کہ بیددعا ہمیں آئندہ کیلیے بھی عمل خیر کرنے کی دعوت فکر دیتے ہے۔ انزال كے فور أبعد الگ نهرو' حفرت سیدنا امام مجموغز الی وطنسیایه روایت کرتے ہیں کہ حضورا کرم مضطیعیا نے ارشادفر مایا که ''مردیس بیکمزوری کی نشانی ہے کہ جب مباشرت کا ارادہ کرے تو یوس و کنار ے پہلے جماع کرنے لگے اور جب انزال ہو جائے تو صبر نہ کرے اور فوراً الگ ہو جائے کہ عورت کی حاجت پوری نہیں ہوتی "_ (كيميائے معادت) ا مام اہلسنّت اعلیٰ حضرت امام احمد رضاخاں بریلوی عِطشینہ فرماتے ہیں کہ ''انزال ہونے کے فور أبعد عورت سے جدانہ ہوں یہاں تک کہ عورت کی بھی عاجت پوری ہو۔ حدیث پاک میں اس کا بھی تھم ہے۔ اللہ عز وجل کی بیٹار دورودیں اس نبی رحمت منطیقی پر جنہوں نے ہم کو ہر باب میں تعلیم خیر دی اور ہماری دنیاوی و دین حاجتوں کی کشتی کو بغیر کسی دوسرے کے سہارے نہ چھوڑا''۔ (فَأُولُ رَضُوبِيحِ ٩ نَصْفُ ٱخْرُصُ ١٦١)

چنانچیم دکوانزال ہوہی جائے تو فورا مورت ہے الک نہ ہو جائے بلہ ای طرح کچھ دیراور مھبرے رہے تا کہ عورت کا بھی مطلب پورا ہو جائے۔ کیونکہ عورت کو دریس انزال ہوتا ہے۔

بعدمباشرت عضوخصوص كى صفائى

صحبت کے بعد مرداور عورت الگ ہوجا کیں پھر کی صاف کپڑے سے پہلے
دونوں اپنے اپنے مقام مخصوص کوصاف کریں تا کہ بستر پر گندگی نہ گئے پائے۔مفائی
کے بعد پیشاب کرلیں کہ اس کے بہت سے فائدے اطباء نے بیان کئے ہیں۔جن
میں سے چندیہاں ذکر کئے جاتے ہیں۔

1) اگر مُرد کے آلے میں پھھٹی باقی رہ گئی ہوتو پیشاب کے ذریعے نکل جاتی ہے۔ کیونکہ اگر تھوڑی ہی منی عضومیں او پر رہ جائے تو بعد میں پیشاب میں جلن اور تھجلی کی بیاری ہونے کا اندیشہ ہوتا ہے۔

2) پیشاب جراثیم کش ہوتا ہے (کیونکہ پیشاب میں جراثیم کوختر کرنے والے اجزاء پائے جاتے ہیں) اس لئے پیشاب کے وہاں سے گزرنے سے اس جگہ کی ساری گندگی ختم ہوجاتی ہیں اور شرم گاہ کی نالی صاف ہوجاتی ہے۔ اس طرح کے اور بھی کئی فائدے ہیں جن کی تفصیل یہاں طوالت کاسب ہیں۔

فائده

پیٹاب کے عضوتاسل سے جدا ہونے کے بعد اور مُصندُ سے ہونے پرخود بیشاب کے کروڑ ہا جراثیم بڑھ کرنقصان دہ ٹابت ہوتے ہیں۔اس لئے اسلامی شریعت میں پیٹاب کا کسی طرح کا بھی استعال حرام ہے۔

THE JAN THE SERVICE YES

پیشاب کر لینے کے بعدشرم گاہ اوراس کےاطراف کے حصہ کواچھی طرح سے دھولیس اس سے بدن تندرست رہتا ہے اور تھجلی کی نیاری سے بچاؤ ہوجا تا ہے۔

لیکن یادر کے ام اشرت کے فوراً بعد شندے پانی سے نددھوئے کہ اس سے

بخار ہونے کا خطرہ ہوتا ہے۔ اس لئے کہ صحبت کے بعد جسم کا درجہ حرارت بڑھ جاتا حدیات ماتا

ہے۔ اورجم میں گری آ جاتی ہے اگر گرمجم پر شندا پانی ڈالا جائے گا تو بخار جلد ہونے کا خطرہ ہے۔ لائد اصحبت کرنے کے بعد تقریباً پانچ وں منٹ بیٹھ جائے یالیٹ جائے

تا کہ بدن کی حرارت اعتدال پر آ جائے پھراس کے بعد پانی کا استعال کرے اگر جلدی ہوتو ملکے گرم پانی سے شرم گاہ دھونے میں کوئی نقصان نہیں _

چندمزیدآ داب

جيماكم بم يبل بيان كر في بين كه فد جب اسلام مارى برجكه برحال يس

رہنمائی کرتا ہوانظر آتا ہے۔ یہاں تک کرمیاں ہوی کے آپسی تعلقات میں ہمی ایک

بہترین دوست ورہنماہن کرا بحرتا ہے اور ہماری بعر بوردہنمائی کرتا ہے۔ یہاں ہم شری روشن میں مباشرت کے چند مزید آ داب بیان کررہے ہیں۔

جنہیں یا در کھنا اور اس پڑمل کرنا ہر شادی شدہ مسلمان مردوعورت پر ضروری ہے۔ -

صحبت تنہائی میں کریں

آپ نے سڑکوں پر سینما ہال میں اور باغوں میں کطے عام کچھ پڑھے کھے
کہلانے والے موڈرن انسان دیکھے ہوں گے جوانسانی شکل میں جانورنظر آتے ہیں
کیونکہ وہ سڑکوں وباغوں میں ہی وہ سب پچھ کر لیتے ہیں جوانہیں ٹہیں کرنا چاہیے لیکن
الحمد للہ! ہم مسلمان ہیں اور اشرف المخلوقات اس لئے ہم پر ضروری ہے کہ ہم اسلام کا
تھم مانیں اور موڈرن جانور نما انسانوں کی نقل ہے بچیں ۔ لہذا یا در کھتے صحبت ہمیشہ

شادی کے احلام سے اور ایک جگرے جہال کی کے اچا تک آنے کا خطرہ نہ ہواوراس وقت کرہ میں اندھیراکرلیں روثنی ہرگز نہ ہو۔
مسئلہ یوی کا ہاتھ پار کرمکان کے اندر لے گیا اور دروازہ بند کر لیا اور لوگوں کو معلوم ہوگیا کہ وقی (مہاشرت) کرنے کیلئے ایسا کیا ہے تو یہ کروہ ہے۔

ہولیا کہ وی (مباہرت) مرح سے ایسا میا جودیہ روہ ہے۔

مسئلہ جہاں قرآن کریم کی کوئی آیت کریمہ کی چیز پر کھی ہو۔ اگر چداو پر شیشہ

(کانچ) ہو۔ جب تک اس پر کپڑے کا غلاف ندڈال لے وہاں صحبت کرنا یا برہنہ بے

ادبی ہے۔

(فاوئی رضویہ جو انسف آخر م ۲۵۸)

حضور سید ناغوث اعظم مِنْ تَعْدِیة الطالبین ' میں اور اعلیٰ حضرت امام احمد رضا خاں مِراشیجیه اپنی ملفوظات ' الملفوظ'' میں فرماتے ہیں۔

جو بچینجفتا ہے اور دوسروں کے سامنے بیان کرسکتا ہے اس کے سامنے صحبت کرنا مکروہ (تحریمی) ہے۔ (یعنی شریعت میں پالپندیدہ ونا جائز ہے)''۔

(غنية الطالبين باب٢ ألملفو ظرج٣ ص١٣)

مباشرت سے پہلے وضو

مباشرت سے پہلے وضو کر لینا جا ہے کداس کے بہت سے فائدے ہیں۔جن میں سے چندہم یہاں بیان کرتے ہیں۔

1) وضوکرنا ثواب اور باعث برکت ہے۔

2) مباشرت سے پہلے وضو کرنے کی حکمت ایک میکھی ہے کہ مرد وعورت دونوں میں میدا ہو کہ محبت ہم صرف اپنی خواہشات نفسانی کی تحیل کیلئے

THE INT THE SERVICE YOU نہیں کررہے ہیں۔ بلکہ نیک صالح اولا دپیدا کرنا مقصود ہے اور دوسری حکمت ہیہے کہ کسی بھی وقت یا دالہی سے عافل نہیں ہونا جا ہے۔ مرد باہر کے کامول سے اور عورت گھر کے کاموں کی وجہ سے دن مجر کے تتھے اوندھے ہوتے ہیں۔ تفکاجہم دوسرے کیلیے فائدہ بخش نابت نہیں ہوتا۔ لہذا وضو کرلیناچسی قوت اورخوداعهادی کاسب بنهاہے۔ دن جركى بھاگ ڈوريس جسم وچېره پردھول مٹی اور جراثيم موجودر ہے ہیں۔ جب مرد وعورت بوس و کنار کرتے ہیں تو یہ جراثیم منہ اور سانسوں کے ذریعے جم میں داخل ہو سکتے ہیں جس سے آ گے مختلف امراض کے پیدا ہونے کا خطرہ ہوتا ہے۔ایے سینکڑوں فائدے ہیں جووضو کرینے سے حاصل ہوتے ہیں۔ نشے کی حالت میں مباشرت کرنامنع ہے شریعت اسلامی میں ہرفتم کا نشر رام ہے اور اسلام میں شراب کوتو ام النبایث (یعنی تمام برائیوں کی ماں) تک بنایا گیا ہے۔ دوحدیث یاک کا حاصل بیہے کہ ''جس نے شراب بی گویااس نے اپنی ماں کے ساتھ زنا کیا''۔ (بحواله فياوي مصطفوبيرج ا'ص٧٧) رسول الله مطفيكية ارشاد فرمات بين. الايشرب الخمر حين يشربها وهو مؤمن_ (بخاري ج٣ باب٩٢٨ صديث١٤١) شراب پینے وفت شرابی کا ایمان ٹھیک نہیں رہتا ہ اور فرماتے ہیں بیارے آ قامطی کیا مدمن الخمران مأت لقي الله كعابدوثن_

JOHN THE THE LANGUAGE OF THE MENTERS OF THE MENTERS

(امام احدُ ابن حبان بحواله فناوي رضويه ج٠١ ص ٨٨)

ترجمہ شرابی اگر بغیرتو بہ کئے مریے تو اللہ تعالیٰ کے حضوراس طرح حاضر ہوگا جیسے بتوں کی بوجا کرنے والا۔

حضرت ابو بريره و فالنوس وايت ب كسيدعا لم مضفي آخ ارشاد فرمايا:

من زنى اوشرب الخمر نزع الله منه الايمان كما يخلع الانسان القميص من راسه . (عاكم بحوالة قادي رضويين ١٠٠٠ ص ٢٥٠)

ترجمہ جوزنا کرے یا شراب ہے اللہ تعالیٰ اس سے ایمان ایسے تینی لیتا ہے جیسے آدی اپنے سرسے (آسانی کے ساتھ) کرتھ تینی لیتا ہے۔

حضرت امام ابواللیث سمرفندی وطنطیر فرماتے ہیں۔

''خدا کی قتم! شراب اور ایمان ایک دل میں جمع نہیں ہوسکتے۔اور اگر کسی کے دل میں ایمان ہوائی ہوں گئے ہے۔ (اس دل میں ایمان ہواور وہ شراب ہے تو شراب اس کے ایمان کو ختم کر دیتی ہے۔ (اس کے کہ شرائی آ دمی نشے میں ہوتا ہے تو اس کی زبان سے کلمہ کفر جاری ہوجاتے ہیں)

التے کہ شرائی آ دمی نشے میں ہوتا ہے تو اس کی زبان سے کلمہ کفر جاری ہوجاتے ہیں)

(حیرانا فاللین)

حضرت اساء بنت يزيد و المنتجيا فرماتى ہے كدميں نے رسول الله منطحة كيا سے سنا آپ نے فرمایا:

''ایک دفعہ تراب (کا ایک گھونٹ) پینے سے چالیس روز تک شرابی کی نماز' روزہ اور دیگرا عمال قبول نہیں ہوتے دوسری دفعہ پینے سے ای روز تک' تیسری دفعہ پینے سے ایک سوہیں روز تک۔

حضرت ابو امامہ فی لئے سے روایت ہے کہ رسول اکرم سید عالم ملطے آیا نے اور مایا کہ

"الله تعالی فرما تا ہے۔ قتم میری عزت کی جوکوئی میرابندہ شراب کا ایک گھونٹ

The LIAN THE SECTION OF

بھی ہے گامیں اسے اتنائی پیپ پلاؤں گا''۔ (اہام احمرُ بحوالہُ بہارشریعت جائے ہو) ای طرح 7 م کا کی بر' تازی کی تھے' یہ اداریث گرے نے جنتر بھر السرید دیں۔

ای طرح و کئی بی برئازی گانج نبراون شوگر وغیرہ _جنتی بھی ایسی چیزیں ہیں جن سے نشرآتا ہووہ شریعت میں حرام ہے۔

حضرت ام المونين امسلمه وظلهجاار شادفر ماتي بين _

نهى رسول الله يُشْتَرُيمُ عن كل مسكر ومفتر

(امام احمرًا بوداؤرُ بحواله فيآوي رضوبيرج ١٠ ص ٣٩)

ترجمہ رسول اکرم مِشْطَعَیْنَ نے فرمایا ہر چیز جونشہ لائے اور ہر چیز کوعقل میں فتور ڈالےحرام ہے۔

تحکیموں اور ڈاکٹروں نے کہاہے کہ

'' نشنے کی حالت میں مباشرت کرنے سے رہو میںک بین ما می بیماری پیدا ہو جاتی ہے۔اوراولا دایا بھی (لنگڑی لوٹی) پیدا ہوتی ہے''۔

خوشبوكا استعال كرنا

مباشرت سے پہلے خوشبولگانا بہتر ہے۔ سر کارمدینہ مضطَقَیّن کو خوشبو بہت پہند میں ۔ آپ ہمیشہ خوشبو کا استعال فر مایا کرتے تھے تا کہ ہم غلام بھی سنت پر عمل کرنے کی نیت سے خوشبولگایا کریں۔ در نہ اس بات میں کی کو کوئی شک وشبہ نہیں کہ آپ کا وجود مبارک خود ہی مہلکار ہتا اور آپ کا مبارک پسینہ خود کا نئات کی سب سے بہترین خوشبو ہے۔ مباشرت سے قبل خوشبو کا استعال کرنا سنت ہے۔ خوشبو سے دل ود ماغ کو تازگی اور سکون ملتا ہے اور جماع میں دلچہی پوھتی ہے۔

حافظ الحديث حضرت امام قاضى نفيل عياض ائدلى ما كلى مِسْطيد الني شهره آفاق تصنيف لطيف "كتاب الشفاء بتعريف حقوق المصطفى" شمن ارشاد فرمات بين -"حضورا كرم مِسْئِرَيَة كوخوشبو بهت زياده پندتى - ربا آپ كاخوشبواستعال حرات وه ای وجہ سے تھا کہ آپ کی بارگاہ ٹیں ملائکہ حاضر ہوتے تھے۔ اور دوسری وجہ یہ تی کہ خوشبو آپ کو بالذات میں کم معین و مددگار ہے۔ خوشبو آپ کو بالذات

محبوب نہیں تھی بلکہ بالواسطہ لیعن شہوت کا زور کم کرنے کی غرض سے محبوب تھی ور نہ حقیقت محبت تو آپ کوذات باری تعالی کے ساتھ مخصوص تھی''۔

(شفاء شریف ج اباب۲)

لیکن یادر ہے کہ صرف عطر کا ہی استعال کر ہے۔افسوں کہ آج کل خالص عطر کا مناہمی د شوار ہوگیا ہے اب عمو ما جوعطریات بازاروں میں ملتے ہیں ان میں کیمیکلز ہوتے ہیں ان کالباس میں استعال کرنا جائز ہے لیکن سراورواڑھی میں لگانا نقصان دہ ہوتے ہیں ان بیرے میں اسپرٹ کی ملاوٹ ہوتی ہے جو کہ شراب کے تھم میں ہے۔

ہے۔اسپرے میں اسپرٹ کی ملاوٹ ہوئی ہے جو کہ شراب کے علم میں ہے۔ اعلیٰ حضرت امام احمد رضا خال بولٹیلیے ارشاوفر ماتے ہیں۔

ا کی سرت کام مرفعا کان رکھیے ارساد کرمائے ہیں۔ ''الکوال (شراب) والےعطر (یا اسپرے) کا استعال گناہ ہے۔ بلکہ ایسے

عطر کی خوشبوسو کھنا بھی نا جا ئزئے''۔ (ناویٰ رضویہ ج۰ اس ۸۸)

سرن و بر وصائل کی جو ہے۔ اس کئے صرف ایسے عطر کا استعال کرے جس میں اسپرٹ (الکوہل) نہ ہو۔ الکوہال والے سینٹ یا عطر کی پہچان میہ ہے کہ اسے اگر جھیلی پر لگایا جائے تو شعنڈک محسوں ہوگی اور فور اڑبھی جائے گا۔

عورتیں ایسے عطر کا استعال کریں جس کی خوشبو ہلکی ہو۔ ایسی نہ ہو کہ جس کی خوشبو ہلکی ہو۔ ایسی نہ ہو کہ جس کی خوشبواڈ کرم ردوں تک چن جائے۔ آج کل اکثر عورتیں ایسے اسپرے عطریا چھر پورڈ ر' کریم وغیرہ کا استعال کرتی ہے کہ جس گلی ہے گزرجائے ساری گلی مہک اٹھتی ہے اور من چلاڑ کے ہائے ہائے لگار نے لگتے ہیں اور سیٹیاں بجا بجا کر بیہودہ حرکتیں کرتے ہیں۔ ایسی عورتیں اس حدیث کو یہ ھرعبرت حاصل کریں۔

حضرت ابوموی والله بروایت برکه نی کریم مشیقی نے ارشادفر مایا:

2000 190 700 180 180 180 180 700 TO

ايما امراة استطعرت فمرت على قوم ليجد وامن ريحها فهي زانيةـ

(الوداؤدج٣ صديث ا24 نسائيج٣ بإب كماب الزدية) ترجمه جب كوئى عورت خِشبولگا كرلوگوں ميں نكلتي ہے تا كه انہيں خوشبو پنجے تو وہ

عورت زانیہ ہے لینی زنا کروانے والی۔

مہا شرت کھڑے کھڑے نہ کریں

مباشرت کھڑے کھڑے نہ کریں کہ بیہ جانوروں کا طریقہ ہے۔ اور نہ ہی میشے بیٹھے کہ بیمرداور عورت دونوں کیلئے نقصان دہ ہے۔اس طریقے سے مباشرت کرنے سے بدن لاغراور خاص کرمرد کاعضو تناسل جڑ سے کمزور ہوجاتا ہے اور اگر حمل قراریا جائے تو بچہ کزوراً پٹک (ہاتھ یاؤں سے اپانچ) پیدا ہوتا ہے یا پھرجم کا کوئی حصہادھوراہوگا۔

بعض معتمدعلاء دین نے فر مایا ہے کہ

'' کھڑے کھڑے مباشرت کرنے ہے اگر عورت کو تمل قراریا جائے تو اولا د

بدد ماغ 'ادر بيوتوف ہوگي يا پيدائش طور پرينم يا گل پيدا ہوگ''۔

حكيمون كاس متعلق حقيق بديكه '' کھڑے رہ کرمباشرت کرنے سے رعشہ (بدن ملنے) کی بیاری ہو جاتی

ے_(والعیاذیاللہ)

مباشرت كالميح طريقه بهب كهبسر برليني ليني اوراورعورت ينحى جانب اور مرد اویر کی جانب ہو جیسا کہ قرآن کریم میں بھی حضرت آ دم مَلِيْتِلَا اور حضرت حوا

وظافوا کے واقعہ میں اس طرف اشارہ کیا گیا ہے۔

اللّٰدرب العزت ارشادفر ما تاہے۔

فَلَمَّا تَغَشَّهَا حَمِلَتْ حَمِلاً خُفِيفًا (سورة الاعراف١١٦)

JERCIAI JOSEPH LEIZUSE JOSEPH

ترجمہ پھر جب مراداس پر چھایا اے ایک ہلکا ساپیٹ رہ گیا۔ (کنزالا ہمان)
اس آیت کر بہہ ہمیں سبق ملتا ہے کہ جماع کے وقت عورت دیت لیٹے
اور مرداس پر (الٹا) لیٹے کہ اس طریقہ سے مرد کے جسم سے عورت کا جسم ڈھک بھی
جائے گا۔ جبیبا کہ آیت کر بہہ میں ان جملوں کے ساتھ کہ'' بھر مرداس پر (یعنی عورت
بر) چھایا'' سے اشارہ کیا گیا ہے اور اس طریقہ سے مباشرت قانون فطرت کے مطابق
ہے۔ اب اگر اس کے خلاف ورزی کی گئی تو بہر حال نقصان تو ضرور ہوگا۔ دیکھا جائے
تو اس طریقے میں زیادہ راحت و آسانی ہے۔ عورت کو اس سے مشقت نہیں ہوتی اور
مردی منی کا آسانی سے خروج ہو کرعورت کے فرج میں دخول ہوتا ہے اور استقر ارحمل
جلد قراریا تا ہے۔

عکیم بوعلی مینا جواپنے زمانے کا ایک مشہور ومعروف حکیم گزراہے۔اس نے کھھاہے کہ

'''اگر عورت او پر اور مردینچے ہوتو اس صورت میں مرد کی کچھٹی اس کے عضو میں باتی رہ کر نتفن پیدا کرے گی اور پھر بعد میں تکلیف واذیت کا باعث بنے گ''۔ مدر سر میں م

قبله كى طرف رخ نه مو

حضورسیدناامام محمر غزالی مخطیطی فرماتے ہیں۔

'' محبت کرنے کے آ داب میں سے ایک ادب میمی ہے کہ محبت کے وقت منہ قبلہ کی طرف سے چیرلیں''۔ (کیمیائے سعادت)

حضورسیدی اعلیٰ حضرت عِلْضیلیہ فرماتے ہیں۔

''صحبت کے وقت قبلہ کی طرف منہ یا پٹیٹھ کرنا کمروہ و خلاف ادب ہے۔ جیسا کہ درمختار میں اس کا بیان ہے''۔ (نآدیٰ رضویہج ۹ نصف آخر' ص۱۳۰) جماع کے وقت قبلہ کی طرف ہے رخ پھیرنے کیلئے غالبًا اس لئے کہا گیا ہے

THE THE SECTION OF THE COST OF کے قبلہ کی تنظیم ہرمسلمان برضروری ہے۔اس کی طرف رخ کرکے بندہ اپنے پروردگار کی عبادت کرتا ہے اور قبلہ کی طرف تھو کئے پیشاب یا خانہ کرنے اور برہنداس کی طرف رخ کرنے کی مخت ممانعت آئی ہے۔ ایک مدیث یاک میں ہے کہ نی کریم مطفقاتی نے ارشاد فرمایا:۔ ان احد كم اذاقام في صلاته فانه يناجي ربه او ان ربه بينه ويين (بخاري ج ا باب ٢٤٢ مديث ٣٩٣) القبلة ترجمه جب بنده نماز پڑھتا ہے تو وہ اپنے رب سے مناجات کر رہا ہوتا ہے یا اس کا پروردگاراس کےاور قبلہ کے درمیان ہوتا ہے۔ (لیعنی قبلہ کی جانب اللہ تعالیٰ کی رحمت زیادہ ہوتی ہے) اب چونکہ جماع کے وقت مرد دعورت برہنگی کی حالت میں ہوتے ہیں تو بھلا اس حالت میں قبلہ کی طرف رخ کیے کیا جاسکتا ہے۔ لہذا او بامبا شرت کے وقت قبلہ كاطرف جانب دخ كرنے سے منع فرمايا كيا۔ برہنہ صحبت کرنامنع ہے مباشرت کے دوران مرد اور عورت کوئی جا در وغیرہ اوڑھ لیں ٔ جانوروں کی طرح برہنے مجت نہ کریں۔ حضورا كرم مطفئة لين ارشاد فرمات بير_ '' جبتم میں سے کوئی اپنی بیوی ہے جماع کرے تو پر دہ کر لئے ہے پر دہ ہوگا تو فرشتے حیا کی وجہ سے باہرنکل جائیں گے اور شیطان آ جائے گا۔ اب کوئی بچہ ہوا تو شیطان کی اس میں شرکت ہوگی''۔ (غنية الطالبين باب٥) امام ابلسنّت اعلیٰ حضرت امام احمد رضاخان بریلوی <u>محطی</u>جیه فرماتے ہی*ں کہ*

JELIAT TO THE TEN (ISILUIC ''معبت کے وقت اگر کپڑ ااوڑھے ہے بدن چھیا ہوا ہے تو پچھ ترج نہیں اگر بر مند ب توایک تو بر منه محبت کرناخود مکروه ب- حدیث میں بر رسول الله مطفی ایک نصيت كروقت م دوغورت كوكير ااور ولينه كاحكم ديا اورفر مايا ولا يتسجه دان تعد والعدر يعن كده كي طرح بربندنه و"ر (قاوي رضوييه وانفف اول ص١١٠) اعلیٰ حضرت وطن ایک دوسرےمقام پرارشادفر ماتے ہیں۔ '' پر ہندرہ کرصحبت کرنے سے اولا د کے بےشرم وحیا ہونے کا خطرہ ہے''۔ (قادى رضوبەج أنصف اول ص٢٦) سوچے انسان کی ذرای لا پروائی کہاں تک نقصان کا سبب بن جاتی ہے۔ غالبًا زمانے میں جوشرم وحیا کا جنازہ لکتا جارہا ہے اس کی سینکٹروں وجوہات میں سے ي بھی ایک وجدری ہے کدمباشرت برہنہ ہوکر کی گی اور سیاٹرنسل میں آیا ' نتیجہ سیکشرم وحیا کوموجود اسل نے زندہ در کور کردیا۔ دوران جماع شرم گاه د يكھنے كاوبال مسئله میال بوی کامحبت کے وقت ایک دوسرے کی شرم گاہ کومس کرنا بے شک حائزے بلکہ نیک نیت سے ہوتو مستحب وثواب ہے۔ (فآوى رضوييج ۵ ص ا ۵۷ اورج ۹ ص ۲۷) مسئله مرداني بوي كے برعضوكو چوسكا باورعورت بھي اين شو بر كے برعضوكو چھوعتی ہے خواہ شہوت ہے ہویا بلاشہوت۔ یہاں تک کہ ہرایک دوسرے کی شرم گاہ کو چھوبھی سکتے ہیں مگر بغیر ضرورت کے شرم گاہ کاد کیمنا اور چھوٹا خلاف اولی و مروہ ہے۔ (فآوي عالمكيريج ۵ ص ٢٣٤ بهارشر يعت ج٢ م٢٢ ص ٥٧) دوران محبت مرداورعورت ایک دوسرے کی شرم گاہ کی طرف نہیں دیکھنا جا ہے۔

Marfat.com

اس کے بہت سے نقصانات ہیں۔

The fight to the state of the the the ام المومنين حضرت عا ئشەصدىقە ناڭھافر ماتى بىپ كە · · حضورا کرم منطق کی کا وصال ہو گیا لیکن نہ بھی آپ نے میراستر دیکھا اور نہ میں نے آپ مطفی آیا کا سر دیکھا''۔ (این ماجهج اکیاب۲۱۲ صدیث ۱۹۹۱) بسند ضعيف ابن ماجه اور خطيب سے روايت ہے كه رسول الله مضافقاتي كاطريقه بیتھا کہ آپ اپ سرمبارک کو چھیا لیتے تھے اورائی آ واز کو پہت کر لیتے اور پوی ہے فرماتے تم سکون اختیار کرو۔ (الانصاح في احاديث الزكاح ابن حجر) حضرت این عدی ذانتیو محضرت عبدالله بن عباس ونانها سے روایت کرتے ہیں كه حفرت عباس بنالنيز نے ارشادفر ماما: ''تم میں سے کوئی جب اپنی بیوی سے مباشرت کرے تو اس کی فرج (شرم گاہ) کوندد کیمے کدال سے آ تکھوں کی بینا فی ختم ہوجاتی ہے'۔ (حاشیر مندامام اعظم) اعلى حضرت امام احمد رضاخان ومططيعيه نقل فرمات بين كه '' جماع کے وقت شرم گا در کیھنے سے حدیث میں ممانعت فرمائی اور فرمایا: فاقد يورث العمه ليحي وه اندهے ہونے كاسب بے علماءكرام نے فرماياك ''اس سے اندھے ہونے کا سبب یاوہ اولا داندھی ہوگی جواس جماع سے پیدا ہوئی۔ یامعاذ اللہ! دل کا ندھا ہوتا ہے کہ پیسب سے بدتر ہے''۔ (فتآويٰ رضوبهج ۵ ص ۵۷۰) '' قانون شریعت''میں ہے۔ ''(دوران صحبت) عورت کی شرم گاہ کی طرف نظر نہ کرے کیونکہ اس سے نسیان (بھولنے کی بیاری) پیدا ہوتی ہے اور نظر بھی کمزور ہوتی ہے"۔ (قانون شریعت ۲۶)

بيتان چومنا

مباشرت کے دفت عورت کے پہتان چوشنے یا چوسنے میں کوئی حرج نہیں۔ کیمن خیال رہے کہ دودھ حلق میں نہ جائے اگر حلق میں دودھ آگیا تو فورا تھوک دئے جان یو چھر کردودھ پینا ناجا نز دحرام ہے۔

ام المسنّت اعلى حضرت امام احمد رضا خال وطنطير " فنّا ويُل رضويه " مين نقل فرمات بين كه

'' صحبت کے وقت اپنی بیوی کے بیتان مند میں لینا جائز ہے بلکہ اچھی نیت سے ہوتو ثواب کی امید ہے جیسا کہ ہمارے امام امام اعظم البوصنیفہ ڈوائٹوز نے میاں بیوی کا ایک دوسرے کی شرم گاہ کومس کرنے کے بارے میں فرمایا۔''ارجو الھا بوجران علیہ " بیتی میں امید کرتا ہوں کہ وہ دونوں اس پراجر (ٹواب) دیئے جا کیں گے۔ ہاں اگر عورت دورہ والی ہوتو ایسا چوسنا نہ چاہیے جس سے دودہ حاتی میں چلا جائے اور اگر منہ میں آ جائے اور حاتی میں نہ جانے دی توحرج نہیں کہ عورت کا دودہ حرام ہے بھی نہیں۔ البتدروزے میں اس خاص صورت سے پر بیز کرنا جا ہیے''۔

(فآوي رضوية ج انصف آخراص ٢٦)

ایک غلط ہمی کاازالہ

کچھ لوگوں میں میظافہی ہے کہ دوران جماع اگر عورت کا دودھ مرد کے ننہ میں چلا گیا تو عورت مرد پر حرام ہو جاتی ہے اور خود بخو د طلاق واقع ہو جاتی ہے۔ یہ بات غلط ہے اس کی شریعت میں کوئی اصل نہیں۔

فقد کی مشہور کتاب ' در مختار' میں ہے۔

"مردنے اپن عورت کی جھاتی جوی تو نکاح میں کوئی خرالی نہ آنی جا ہےدودھ

2006 (191) 2006 (191) 100 (191) 100 (191) 100 (191) 100 (191) 100 (191) 100 (191) 100 (191) 100 (191) منه میں آگیا ہو بلکے حلق سے اتر گیا ہوتب بھی نکاح ندٹوٹے گا۔لیکن حلق میں جان بوجھ کرلیں جائز نہیں۔ (در مخارُ بحواله قانون شریعت ج ۴ م ۵۲) ای طرح بہارشر بعت میں صدر الشریعہ براشہ نے بھی نقل فرمایا ہے غرض کہ عوام كابيه خيال محض غلط ہے۔(داللہ تعالی اعلم ثم رسول اعلم) جماع کے دوران گفتگو کرنامنع ہے جماع کے دوران بات چیت نہ کرے خاموش رہے۔ ا مام اہلسنّت اعلیٰ حضرت وطنطیحہ ارشادفر ماتے ہیں۔ ''مباشرت کے دوران بات چیت کرنا کروہ ہے' بلکہ بجے کے گو نکے یا تو تلے (فَأَوَىٰ رَضُوبِينَ ٩ نصف اولُ ص٢٧) دوران مباشرت کسی اور کاخیال آناحرام ہے صحبت کے دوران مرد کسی دوسری عورت کا اور عورت کسی دوسرے مرد کا خیال نہ لائے۔ یعنی ایسا نہ ہو کہ مرد جماع تو اپنی بیوی سے کرے اور تصور کرے کہ فلاں عورت سے جماع کر رہا ہوں۔ای طرح عورت کی اور مرد کا تصور کرے تو بیخت حضور برِنورسيرناغوث اعظم يشخ عبدالقادر جيلاني والثيرًا عِي مشهور تصنيف "غذية الطالبين مين نقل فرمات بين_ ''مہاشرت کے دوران مردانی ہوی کے علاوہ کی دوسری عورت کا خیال لائے تو سخت گناہ ہے اور ایک طرح کا چھوٹی قتم کا زناہے''۔ (غنية الطالبين ازحضورغوث اعظم فالليز)

TERCIAL TRANSPORTER (1812 USA

مباشرت کے بعدیانی ندیئے

اس سے قبل بیان کیا جاچکا ہے کہ مباشرت کے بعدجہم کا درجہ حرارت بڑھ جاتا ہے۔ اس لئے اس وقت بیاس بھی شدت سے محسوں ہوتی ہے۔ لیکن خبر دار مباشرت کے فوراً بعد پانی ہرگزنہ ہے۔

حكيمول نےلکھاہے كه

''صحبت کے فوراُ بعد پانی نہیں بینا جا ہے کیونکہ اس سے دمہ (سائس) کی بیاری ہونے کا خطرہ ہے''۔

دوباره صحبت کرنا هوتو؟

ایک رات میں مباشرت کے بعدای رات میں دوسری مرتبہ محبت کا ارادہ ہوتو مرداور عورت دونوں وضو کرلیں کہ بیر قائدے مند ہے ٔ اورا گر صحبت نہ بھی کرنا ہوتو وضو کر کے سوجا کیں۔

حضرت عمر ابن خطاب وحضرت ابوسعید خدری بزانتها سے روایت ہے کہ نبی کریم مضرف نے ارشاد فرمایا:

اذاتي احدكم اهله ثمر از ادان يعود فليتوضأ بينهما وضوء-

(ترندي جا صديث ۱۳۳ اين باجه ج ا صديث ۲۲۹)

ترجمہ جبتم میں کوئی اپنی بیوی ہے ایک مرتبہ صحبت کے بعد دوبارہ صحبت کا ارادہ کرے تواسے دضوکرنا جاہیے۔

حفرت امام ترندی پولٹیے فرماتے ہیں۔

حدیث ابی سعید حدیث حسن صحیح وهو قول عمر ابن خطاب وقال به غیر واحد من اهل العلم ... (7، تان ۱۵)

TERECIAN TO THE SERVICE YOU حفرت ابوسعید خدر کی افزائلو کی ریبات می کا مید کار می این خطاب ر مالٹیو کا یہی قول ہے اور متعدد علاء ای کے قائل ہیں۔ امام غزالی مخطیعیے فرماتے ہیں۔ ''ایک بارصحبت کر چکے'اور دوبارہ کاارادہ ہوتو چاہیے کہاپنابدن دحوڈ الے (وضو كرلے) اور اگر ناياك آدى كوئى چيز كھانا جا ہے قوچا ہيے كه پہلے وضوكر لے چر كھائے

اورسونے کا ارادہ ہوتو بھی وضو کر کے سوئے۔ حالانکہ (وضو کرنے کے بیعد بھی) نایاک ای رے گا (جب تک عنسل نہ کرلے) لیکن سنت کبی ہے'۔ (کیمیائے سعادت)

وضوكر كے سوئے

میاشرت کے بعد سونے کا ارادہ ہوتو مرد ادرعورت دونوں پہلے اپنے مقام مخصوص کودھولیں اوروضو کرلیں پھراس کے بعد سوجا کیں ۔

ام المومنين حضرت عا ئشه صديقته وتاليجا فرماتي بين _

كأن النبى ينضي الاادادان يدام وهو جنب غسل فرجه وتوضأ للصلوق (بخاري ج ا ٔ حديث ۲۸۱ تر ندي ج ۱ مديث ۱۱۲)

حضور نی کریم مطیقی خالت جنابت (مباشرت کے بعد) سونے کا ارادہ فرماتے توانی شرم گاہ کودھوکر نماز جبیاد ضوکر لیتے تھے۔ (پھرآپ سوجاتے)

بیاری میں مباشرت

عورت اگر کسی د کھا پریشانی یا بیاری میں مبتلا ہوتو اس کی صحت کا خیال کئے بغیر ہرگز مباشرت نہ کرے۔ ویسے انسانیت کا تقاضا بھی یہی ہے کہ دکھی یا بیار انسان کو تکلیف نیدی جائے بلکہاہے آ رام اور سکون فراہم کرے۔ ام المومنین حضرت امسلمی و کاشیا ہے مروی ہے کہ فرماتی ہیں۔



'' حضورا کرم منطقاتیم کی سی اہلیہ کی اگر آ تکھیں دکھر ہی ہوئی کو تصورا کر منطقاتیم ان سے مباشرت ندفرہاتے' جب تک وہ تندرست ندہوجا تیں''۔

فائده

'' بخار کی حالت میں مباشرت نہ کرے کہ بدن میں حرارت بس جاتی ہے اور پھیم وں کے خراب ہونے کا قومی اندیشہ ہے''۔

صحبت محض مزه كيلئے ندہو

حضرت مولی علی مشکل کشاوخاتین انبی ' وصایا'' میں اور حضرت امام غزالی محطشیاے ابنی کتاب' ' کیمیائے سعادت'' میں فرماتے ہیں۔

پی ، بب یہ سیارے کو نیت صرف مزہ لینے یا شہوت کی آگ بجھانے '' جب بھی مہاشرت کرے تو نیت صرف مزہ لینے یا شہوت کی آگ بجھانے کی ندہؤ بلکہ نیت بیدر کھے کہ زنا ہے بچوں گا اور اولا دصالح و نیک سیرت پیدا ہوگا۔ اگراس نیت سے مہاشرت کرے گا تو ثواب یائے گا''۔

(وصایا شریف کیمیائے سعادت)

حضرت عمرفاروق اعظم زان فن فرماتے ہیں۔ '' میں نکاح صرف اس لئے کرتا ہوں کہ صالح اولا دحاصل کروں''۔ (حیاء العلوم ۲۶)

زیادہ صحبت نقصان دہ ہے

مسئله بوی ننگ میں ایک مرتب محبت کرنا تضا واجب ہاور علم یہ ہے کہ

TERESTON SERVICE YOU عورت ہے صحبت بھی بھی کرتار ہاس کیلئے کوئی حدمقر زمیں گرا تنا تو ہو کہ عورت کی نظراوروں کی طرف ندا ٹھے اورا تنازیا دہ بھی جائز نہیں کہ عورت کونقصان پہنچے۔ (قانون شریعت ۲۰) حدے زیادہ مباشرت کرنے سے مرد اور عورت دونوں کیلئے نقصان ہے۔ بالخصوص زیادہ محبت سے مرد کی محت پر زیادہ اثر پڑتا ہے۔ صحت کی کمزوری پھر طرح طرح کی بیار یوں کا باعث بنتی ہے۔ا کٹر شہوت پرست مورتوں کے شوہر مسلسل مباشرت کی وجہ سے اپنی صحت کھو بیٹھتے ہیں اور صحت کی کمزوری کی وجہ سے جب وہ مورت کی پہلے کی طرح خواہش کی تکیل نہیں کر یاتے اور عورت کو جب عادت کے مطابق تعلی مہیں ہو پاتی ہے تو وہ پھر پڑوں اور باہروہ چیز علاق کرنے کی کوشش کرتی ہے اور پھر ایک نئی برانی کا جنم ہوتا ہے۔اس لئے ضروری ہے کہ قذرت کی اس انمول چیز (صحت وقوت) کا استعال بے در دی سے نہ کیا جائے۔

حكايت

علیموں نے لکھا ہے کہ زیادہ سے زیادہ ہفتہ میں دومرتبہ مباثرت کی جائے۔
علیم بقراط جوا یک بہت بڑا تھیم تھا اور حضرت علین فلیٹا سے ساڑھے چارسوسال پہلے
گزرا ہے۔ اس سے کسی نے پوچھا۔ "مباشرت ہفتہ میں گئتی مرتبہ کرنی چاہے" ؟ اس
نے جواب دیا۔ "صرف ایک مرتبہ" پوچھے والے نے چھر پوچھا۔" ایک مرتبہ کیوں اس سے زیادہ کیوں نہیں ؟ "بقراط نے جھا کر جواب دیا۔" تہماری زندگی ہے تم جانو
جھسے کیا لوچھتے ہو' ! گویا پیاشارہ تھا کہ زیادہ صحبت کرو گے تو کر در ہوجاؤگے اور پھر
نیارہوجاؤگے اور زندگی خطرہ میں پڑھتی ہے۔
نیارہوجاؤگے مرازی نے اپنی کتاب میں کھا ہے کہ

Marfat.com

''زیاده محبت موثوں کو دیلا اور دیلوں کومردہ' جوانوں کو بوڑ ھا اور پوڑھوں کو

حضرت على المرتضى خالفيهٔ كا فرمان

حفرت فقید ابوللیث سمرفتدی مختصلید روایت کرتے ہیں کہ حضرت مولی علی کرم اللہ و جبہ الکریم نے ارشاد فرمایا:

'' دجو خص اس بات کاخواہش مند ہوکہ اس کی صحت اچھی ہوا ورزیادہ دنوں تک قائم رہے تواسے چاہیے کہ وہ کم کھایا کرےاور عورت سے کم مباشرت کیا کرے''۔ (بیتان العارفین)

آج کل اس فیشن اور نزگائی کے دور میں جذبات بہت جلد بے قابو ہو جاتے بین اس لئے دھیان رکھیں کہ اگر ہیوی کی خواہش ہوتو اٹکار بھی نہ کرے و رنہ ذہن بھنگنے کا اند دشہ ہے۔

ہفتہ میں کتنی مرتبہ قربت کرے

ججة الاسلام حضرت امام محمد غزالی مجلطیجه اپنی مشهور زمانه تصنیف 'احیاء العلوم'' میں فرماتے ہیں۔

''مرد چاردنوں میں ایک بارعورت سے جماع کرسکتا ہے نیزعورت کی ضرورت پورا کرنے اور اس کی پر ہیزگاری کے اعتبار سے اس حد سے کم و بیش بھی مباشرت کرسکتا ہے 'کیونکہ عورت کو پاک وامن رکھنا مرد پر واجب ہے''۔ (احیاء العلوم ۲۰)

تنبير

کچھلوگ شادی کے بعد شروع شروع میں عورت پر اپنی مردائگی و توت کا رعب ڈالنے کیلئے دواؤں کا یا کسی اسپرے یا مچرتیل وغیرہ کا استعمال کرتے ہیں۔ جس سے عورت اور وہ خوب لطف اندوز ہوتے ہیں لیکن بعد میں اس کا الثااثر ہوتا TERESTON TO THE SERVICE OF THE SERVI ہے' مردوعورت اس چیز کے عادی ہوجاتے ہیں۔ پھر بعد میں اگر مردوہ اسپرے یا د دا استعال نه کرے تو عورت کوتسلی نہیں ہوتی اور وہ اپنی خواہش کی پخمیل کیلئے مرد کو اس کا استعال کرنے پر مجبور کرتی ہے۔ دواؤں کے مسلسل استعال سے مرد کی صحت یراثر پڑنے لگتا ہے اور وہ دواؤں کا عادی بن کرجلد ہی طرح طرح کی بیار یوں میں مبتلا ہوجا تا ہے۔مرداگر بیددوا کیں استعال نہ کرے تو عورت کو پہلے کی طرح اطبینان نہیں ہوتا جس کی وہ عادی ہوچکی ہے۔ چنانچدایسی حالت میں عورت کے بدچلن ہونے کا خطرہ ہے۔ بعض حکماء نے لکھا ہے کہ 'الی حالت میں عورت کے دیاغی مریض ہونے کا بھی خطرہ ہے'۔ لہذا قوت مردانہ کو بڑھانے اوراسے برقر ارر کھنے کیلیے مصنوعی دواؤں اسپرے' تیل وغیرہ کی بجائے طاقت ورغذائل کا استعال کرے۔غذا کے ذریعے برهائی موئی طاقت ختم نہیں موتی اور نہ ہی اس سے کسی قتم کا کوئی نقصان موتا ہے۔ (طاقت بخش غذاؤل كابيان انشاء الله آ كي آئے گا)



مباشرت کے اوقات

شریعت اسلامی میں مباشرت کیلئے کوئی خاص وقت نہیں بتایا گیا ہے۔ شریعت میں (علاوہ نماز کے اوقات کے) دن ورات کے ہر حصہ میں صحبت کرنا جائز ہے کیکن بزرگوں نے پچھ ایسے اوقات بتائے ہیں جن میں صحبت کرنا صحت کیلئے فائدے مندے۔

رسول الله طلطي عليه كاعمل

حضرت امام محدغر الی بیطنیده "احیاءالعلوم" بیس ام المومنین حضرت عا کشه صدیقه وفاهها سے روایت ہے کہ فرماتی ہیں۔

''رسول کریم منطقاتیا آرات کے آخری حصد میں (تقریباً ۲ بیجے سے لے کرفجر کی اذان سے پہلے) جب وتر کی نماز پڑھ چکے ہوتے تو اگر آپ کواپی کسی بیوی کی حاجت ہوتی توان سے مباشرت فرماتے''۔ (احیاءالعلوم)

حاجت ہوی اوان سے مباسرت ترمائے۔ حدیثوں میں ہے کہ سرکار دوعالم منظے آیا عشاء کی نماز پڑھتے اور صرف عشاء کی وتر نہیں پڑھتے' پھر آپ کچھ مھنٹے آ رام فرماتے اور پھراٹھ بیٹھتے اور تہجد کی نماز پڑھتے اور پھر نشل نمازیں ادا فرماتے اور آخر میں عشاء کی وتر پڑھتے' اس کے بعدا گر آپ کواپی کسی بیوی کی حاجت ہوتی تو ان سے مباشرت فرماتے یا اگر حاجت نہ ہوتی

TERE (TOTAL DESCRIPTION OF THE PROPERTY OF THE تو آ پ آ رام فرماتے یہاں تک کہ حضرت بلال ڈاٹٹو نماز فجر کیلئے اذان کے وقت آپکواطلاع دیتے۔ ال مديث كے تحت امام غزال مُطلقيٰ فرماتے ہيں۔ ''رات کے پہلے حصر (تقریباً ۹ بجے سے ۱۲ بجے کے درمیان) میں محبت کرنا مرده ہے کہ محبت کے بعد پوری رات نایا کی کی حالت میں سونا پڑے گا''۔ (احياءالعلوم ٢٧) مباثرت كيلئے بہترونت حضرت امام فقيه ابولليث ومنظيمه الى كتاب "بستان العارفين" مين نقل فرمات ''مبائمرت کیلئے سب ہے بہتر وقت رات کا آخری حصہ ہے (ایعنی تقریباً رات ا بجے سے اسجے کے درمیان) کیونکہ رات کے پہلے تھے میں پیٹ غذا سے جمرا ہوتا ہے اور بھرے پیٹ مباشرت کرنے سے صحت کو نقصان سے جب کہ رات کے آخری حصہ بیں صحبت کرنے سے فائدے ہیں۔(جیسے آ دمی دن بھر کا تھاکا ہوا ہوتا ہے' اوررات کے پہلے حصہ میں اس کی نیند ہوجاتی ہے جس سے اس کی دن بھر کی تھاوٹ دور ہوجاتی ہے۔اس کے علاوہ دوسراایک بیجی فائدہ ہے کہ) رات کے آخری حصہ تك كهانا الحجى طرح بهضم بوجاتا ہے"۔ (بستان العارفين) اطباء كي تحقيق اطباء کی تحقیق کے مطابق پید مجرا ہونے کی حالت میں مباشرت نہیں کرنا چاہیے کہاس سے اولا دکند ذہن پیدا ہوتی ہے۔ ناچیز راقم الحروف نے ایک غیر سلم ڈاکٹر کی کتاب میں بیلکھادیکھا کہ '' پیٹ بھراہونے کی حالت میں اگر مباشرت کی جائے تو انزال جلد ہوتا ہے۔

THE FOOT THE SEA (1612 USE) معدہ کرور اماضمہ کی قوت کرور ہوجاتی ہے اور چگر برورم اور شوگر وغیرہ کے امراض ہو جاتے ہیں''۔ يةمام باتس عكمت كرمطابق بين -شرع من مباشرت كيلي كونى خاص وقت متعین نہیں کہ ای متعین وقت بر کی جائے اور دیگر اوقات میں کرنا نا جائزیا گناہ ہو! شریعت کے مطابق ہر وقت صحبت کی اجازت ہے۔حضورِ اکرم مطابق کم ازاواح مطبرات سے دن اور رات کے دیگر وقتوں میں مباشرت کرنا ثابت ہے۔ ہاں! کچھ دنوں کی فضیلت احادیث میں وارد ہے جیسا کہ ج_ة الاسلام سيدناا مام محمرغز الى مجلطيلير نقل فرمات مين كه ' دبعض علاء نے شب جعداورون جعدکومباشرت کرنامتحب کہا ہے''۔ (احیاءالعلوم ۳۶) (والله تعالی اعلم وثم رسول الله اعلم)

کن را توں میں مباشرت سنع ہے

امیر المونین حضرت علی حضرت ابو ہریرہ ٔ اور حضرت امیر معاویہ افخانلہ ہے روایت ہے کہ

''(ہرمینے کی) جاندرات' اور جاند کی پندر ہویں شب' اور جاند کے مہینے کی آ خری شب ٔ مباشرت کرنا مکروہ ہے کہ ان راتوں میں جماع کے وقت شیطان موجود (كيميائے سعادت)

یں بیے کہان راتوں میں مباشرت جائز ہے لیکن احتیاط ای میں ہے کہ مباشرت کرنے سے ان راتوں میں پر بیز کرے۔(والله تعالی اعلم)

اذان ونماز کے اوقات میں بھی مباشرت نہیں کرنا جا ہے۔

بزرگان دین فرماتے ہیں۔

''اذان ونماز کے دنت مہاشرت کرنے سے اولا دیافرمان مذہب سے بے كانه بيدا بوتى بين ـ (والله تعالى اعلم وثم رسول الله اعلم)



ماورمضان مين مباشرت

الله رب العزت ارشاد فرما تا ہے۔ اُچِلَّ لَکُمْد لَیْلَةَ الْجِسْمِ الرَّفَثُ الِّی نِسَآنِکُمْد ۔ (سورۃ البقرہ ۱۸۷) روزوں کی راتوں میں آئی عورتوں کے پاس جانا تہارے لئے طال ہوا۔ (کنز الا کمان)

شمان نزول سے بہلے مسلمان جب عشاء کی نماز پڑھ لیت تو ان پر کھانا بینا اور عورتیں کے نزول سے بہلے مسلمان جب عشاء کی نماز پڑھ لیت تو ان پر کھانا بینا اور عورتیں حرام ہو جاتی تھیں حتی کہ دوسرے دن شام کوروزہ افطار کرتے حضرت عمر بڑائین نے عشاء کی نماز کے بعدا پی زوجہ سے حقوق زوجیت اوا کے اور حضرت مربی تیس زوائین عشاء کی نماز کے جب آپ مغرب کی نماز پڑھ چکے تھے آپ نے افطار کا کھانا نہیں کھایا تھا آپ بیدار نہ ہوئے حتی کہ درسول اللہ عظام آئی عشاء کی نماز پڑھ چکے تھے۔ کھایا تھا آپ بیدار نہ ہوئے حتی کہ درسول اللہ عظام تین عشاء کی نماز پڑھ چکے تھے۔ آپ اس وقت اشے اور کھانا کھایا اور پانی پیاضح حضور نی کریم مظام آئے کے پاس حاضر ہوئے اور حمارا واقعہ عرض کیا اس پر اللہ تعالی نے بیہ آپ کریم مظام آئی اور شام ہوئے اور حمارا واقعہ عرض کیا اس پر اللہ تعالی نے بیہ آپ کے بات خرائی اور شام کے بعد نجر کے طلوع ہونے تک کھانے پینے اور جماع کرنے کی اجازت فرمائی۔

THE THE SEE (LILLY) ابوداؤداور بيق نے اپني سنن ميں حضرت ابن عباس والفيز سے روايت كيا ہے كەرسول الله ﷺ كَنْ مَانْد مِيْنَ جَبِ لُوكَ عَشَاء كَى نَمَازْ يَرْ صَالِيتَ تَصْعَوْ ان يُركِهَا مَا پینا اور حقوق زوجیت ادا کرنا حرام ہوجاتا تھا اور وہ آئندہ رات تک روزہ رکھتے تھے۔ پس ایک مخص نے اپنی بوی سے خیانت کی اور اپنی بیوی سے مجامعت کردی جب کدوه عشاء کی نماز بڑھ چکا تھا اوراس نے افطار نہیں کیا تھا اللہ تعالی نے باتی لوگوں کو آسانی ' رخصت اورمنفعت دینے کا ارادہ فرمایا توبیآیت کریمہ نازل فرما کررخصت عطا فرما (تغيير درمنثورمترجم جاص ٥١٥) دى اورآ سانى كردى -اہممسائل ماہ رمضان کے مہینے میں رات کو حجت کر سکتے ہیں۔ نایا کی کی حالت میں اگر سحری کی تو جائز ہے اور روز و بھی ہوجا تا ہے۔ کیکن نایاک رہنا سخت گناہ ہے۔ مسئله روزے کی حالت میں مرداور عورت نے مباشرت کی توروزہ ٹوٹ گیا۔مرد نےعورت کا بوسہ لیا' یا حچھوا یا گلے لگایا ادر انزال ہوگیا نو روز ہ ٹوٹ گیا اورعورت کو کپڑے کے اوپر سے چھوا اور کپڑا اتنا موٹا ہے کہ بدن کی گرمی محسوں نہیں ہوتی تو وہ روزه نه لو ٹاگر چیمردکوانزال ہوگیا ہواورا گرعورت نے مردکو چھوااورمردکوانزال ہوگیا (بهارشر بعت جائح ۵) توروزه ندكما_ مسئله روزے کی حالت میں مرداور عورت نے مباشرت کی توروزہ ٹوٹ کیا۔مرد نے عورت کا پوسہ لیا یا حیموا گلے لگایا اور انزال ہوگیا تو روز ہ ٹوٹ گیا اورعورت کو کیڑے کےاویرے چھوااور کیڑاا تناموٹاہے کہ بدن کی گری محسوں نہیں ہوتی تو روز ہ نہ ٹو ٹا اگر چیمر دکوانزال ہوگیا ہواورا گرعورت نے مر دکو چھوا اور مر دکو انزال ہوگیا تو

Marfat.com

مسئله سمی نے مردکو یا عورت کوروزے کی حالت میں مجبور کیا کہ جماع کرے

(بهارشر بعت جائح ۵)

TERE TO THE TEREST (BILLIST) اورقل کردینے یاعضو کاٹ ڈالنے کی یا کسی اور طرح کے جانی نقصان پہنچانے کی دھمکی دى اورروزه داركوبه يقين ب كما گريش اس كاكها نه ما نو سگا تو جو كهتا به كرگز رسے كا لہٰذااس نے جماع کیا تو روزہ ٹوٹ گیا' لیکن کفارہ لازم نہ ہوا' صرف قضاروزہ رکھنا (بهارشر بعت جائح ۵) هستله حورت نے مردکو براع کرنے پر مجبود کیا تو مرد اورعورت کارزہ ٹوٹ گیا' کین عورت پر کفاره داجب ہے مرد پرنہیں بلکہ وہ صرف قضار وز ہ رکھے گا۔ (بمارثر بعت جائح ۵) هسٹله جان بوجھ کرمرد نے روزے کی حالت میں عورت سے جماع کیا جاہے ا نزال ہویا نہ ہو(یعنی منی نکلے یا نہ نکلے) روز ہ ٹوٹ گیااور کفارہ بھی لازم ہوگیا۔ (بهارشر بعت ج امح ۵) کفاره کفاره بیکه ایک غلام آزاد کرے (اور موجوده دور میں بیدیاک و مندی نہیں دنیا کے کئی بھی ملک میں ممکن نہیں) دوسری صورت ہیہ ہے کہ مسلسل ساٹھ روزے رکھیں اگر ہے بھی نہ ہو سکے تو پھر ساٹھ مسکینوں (غریبوں محتاجوں) کو پہیٹ بھر کر دونوں وقتوں کا کھانا کھلائے اور روزے رکھنے کی صورت میں اگر چے میں ایک ون کا بھی روزہ چھوٹ گیا تواب پھرے ساٹھ روزے رکھنے ہوں گے۔ پہلے رکھے ہوئے روز دں کو گٹانبیں جائے گا۔مثلاً انسٹھ رکھ جکا تھا اور ساٹھواں نہیں رکھ سکا تو پھر ہے روزے رکھیں۔ پہلے کے انٹھ برکار گئے ۔لیکن اگر تورت کوروزے رکھنے کے دوران حیض شروع ہوجائے تو روزے رکھنا چھوڑ دے پھرچین سے یاک ہوجانے کے بعد یجے ہوئے روزے پورے کرلے لینی حیض سے پہلے کے روزے اور حیض کے بعد کے روزے دونوں ملا کر ساٹھ ہو جانے سے کقارہ ادا ہو جائے گا اگر کفارہ ادا نہ کیا تو سخت گنهگار ہوگا اور بروزمحشر سخت عذاب میں ہوگا۔ (بهارشربعت جائح۵)



حیض(ماہواری) کابیان

الله رب العزت ارشاد فرماتا ہے۔ وَیَهُ مِنْکُوْنِکَ عَنِ الْمَرِمِیْضِ قُلُ هُو اَذَیِّ۔ (سورۃ البقرۃ ۲۲۲) ترجمہ اور (اے محبوب) تم سے پوچھتے ہیں چش کا حکم تم فرماؤوہ نا پاکی ہے۔ (کنزالا بمان)

حيض كالغوى اورا صطلاحى كالمعنى

علامدراغب اصفهاني مِن الشياية لكصة بي-

جو خون رخم ہے وقت مخصوص میں وصف مخصوص کے ساتھ خارج ہواس کو حیض کہتے ہیں ۔

علامه ابن عابدين شامي عطشي لكھتے ہيں۔

لغت میں چیف کامعنی کیا ہے؟ سیلان (بہنا) جب کوئی وادی بہنے گلی تو کہتے ہیں اوقات مخصوص میں خون بہنے کی وجہ ہے اس خون کوچیف کہتے ہیں اور اصطلاح شرع میں چیف اس صفت شرع یہ کو کہتے ہیں جوان کا موں کے کرنے ہے مانع ہوجن کمیلئے چیف ہے پاک ہونا شرط ہے مثلاً نماز پڑھنا ' قر آ ن مجید چیونا' روز ہ رکھنا' مجد میں داخل ہونا' اور ممل زوجیت کرنا۔

TERESTIPO TENESTE SER SENESTE SON

حيض كاسب

حيضَ كأسبب بيه ہے كەحفرت ﴿ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ عَلَيْهِ مَنوعٌ كھاليا تھا تو اللَّه تعالى ان كو حیض میں مبتلا کر دیا۔ امام بخاری <u>عماضیا</u> نے حضرت عا کشہ صدیقہ وفانعہا سے روایت كياب كه نبي كريم مضي كلي في في كم تعلق فرما يا الله تعالى في حضرت آدم مَلْيلها كي بیٹیوں پراس کومقدر کردیا ہے۔ (تفيرتبيان القرآن جاص ٢٨٧) بالغه عورت کے بدن میں فطرۃ ضرورت سے کچھ زیادہ خون پیدا ہوتا ہے کہ حمل کی حالت میں وہ خون بچے کی غذا میں کام آتا ہے اور بچے کے دودھ پینے کے ز مانے میں وہی خون دودھ بن جاتا ہے اگر ایسانہ ہوتو حمل اور دودھ پلانے کے زمانے میں عورت کی جان پر بن جائے کی وجہ ہے کہ حمل اور ابتدائے شیر خوار کی میں خون

نہیں آتا۔ جس زمانہ میں حمل نہ ہوا در ند دورھ پلانا اگر وہ خون بدن سے نہ لکے توقعم فتم کی بیار پال ہوجا ئیں۔

بالغدار کی کے آگے کے مقام سے جوخون عادت کے مطابق لکا ہے اسے

حیض (ماہواری) کہتے ہیں۔لڑکی کوجس عمرے میہ خون آنا شروع ہوجائے شرقی رو

سے وہ اس ونت سے بالغ سمجی جائے گی۔

مسئله حیف کی مذت کم سے کم تین دن اور تین راتیں ہے مینی پورے بہتر گھنے۔ ایک منٹ بھی اگر کم ہےتو حیض نہیں اور زیادہ سے زیادہ دس دن اور دس راتیں ہیں۔

(بمارشر بعتجا 'ح۲' قالون شریعتج۱)

هسٹله بیضروری نہیں کہ مدت میں ہرونت خون جاری رہے بلکہ اگر پچھ پچھ وفت

آئے جب بھی چیش ہے۔ (بهارشر بعت جائح۲)

مسئله عض میں جوخون آتا ہاں کے چھرنگ ہیں۔ کالا ال مرا پیلا گدلا

(کیچڑ کے رنگ جیسا)اورمٹیلا (مٹی کے رنگ جیسا)ان رنگوں میں ہے کی بھی رنگ

المركز ا

(بهارشر بیت جا ٔ ۲۷ ٔ قانون شر بیت جا)

مسئله حیض اور نفاس (نفاس کا بیان آ گے تفصیل ہے آئے گا) کی حالت میں قرآن کریم چھوٹا' و کیچکریا زبانی پڑھٹا' نماز پڑھٹا' دیٹی کتابوں کوچھوٹا' بیسب حرام

ہے۔ کیکن درود شریف کلمہ شریف وغیرہ پڑھنے میں کوئی حرج نہیں۔

(بهارشر بعت ج ا ۲۶)

مسئله حالت چین میں عورت کونماز معاف ہے اور اس کی قضا بھی نہیں کینی پاک ہونے کے بعد چھٹی ہوئی نمازیں پڑھنا بھی نہیں ہے۔ رمضان شریف کے روزے حالت چین میں ندر کھے کین چین سے فراغت کے بعد جینے روزے چھوٹے تتے وہ سے قضار کھنے ہول گے۔

(نقاد کھنے ہول گے۔

(نقاد کھنے ہول گے۔



حالت حیض میں مباشرت کرنا حرام ہے

الله رب العزت ارشاد فرما تا ہے۔

فَاعْتَزِلُوا النِّسَاءَ فِي الْمَحِيْضِ وَلَا تَقْرَبُوهُنَّ حَتَّى يَطْهُرُنَ فَإِذَا تَطَهَّرُنَ فَأْتُوهُنَّ مِنْ حَيْثُ أَمَر كُمُّ الله

تک پا ک ندہوں چرجب پا ک ہوجا یں بوان کے پاس جاؤجہاں سے مہیں اللہ نے حکم دیا۔

شان نزول

امام احمد عند بن حميد دارمی مسلم ايوداؤ در ندی نسائی ابن ماجه ايوليعلی ابن الممند را بين ابی حاتم الخواس (الناسخ ميس) ابن حبان اور پيماتی نے سنن ميس حضرت انس بنائين سے روایت کيا کہ يہودی عور شی حائفہ ہو تیں تو وہ آئيس گھرے نکال ديت اور گھرول ميں ندان کے ساتھ گھاتے اور ندائش کھر ہے ۔ رسول اللہ مشاہلی ہے اس مسلم کے بارے ميں يو چھا گيا تو اللہ تعالی نے بيد ذکورہ آ بت کر بر مازل فرمائی ۔ پس رسول اللہ مشاہلی ہے نے فرمایاان کے ساتھ گھرول ميں رہو۔ اس کے ساتھ سوائے جماع رسول اللہ مشاہلی ہے ماہد معاملہ میں مرمعاملہ میں مرمعاملہ میں مرمعاملہ میں سے ساتھ کوری وی کو یہ بات پیٹی تو کہتے گئے ہے مشحص ہر معاملہ میں

LEICON DE LEICON DE

حصرت ابو ہریرہ فرائٹیز سے روایت ہے کہ رسول اللہ مٹے کہ آئی نے ارشاد فرمایا جس شخص نے حائضہ عورت سے جماع کیایا کسی عورت کی سرین (وہر) میں دخول کیایا کسی شخص نے کا بن کے قول کی تصدیق کی تو اس (سیدنا) محمد (مٹے کیے آپ کہ نازل شدہ وین کے ساتھ تفرکیا۔ (جائع ترندی کتاب الطہارة جا)

جب عورت حائضہ (حیض کی حالت میں) ہوتو اس سے جماع کرنا سخت گناہ کبیرہ نا جائز وسخت حرام ہے۔ اس بات کا خیال ہمیشہ رکھیں کہ جب بھی صحبت کا ارادہ ہوتو پہلے عورت سے دریا فت کرلئے اور عورت پر لازم ہے کہ اگروہ حائضہ ہوتو مرکواں بات ہے آگاہ کردے اور مباشرت سے بازر کھے۔

حضرت علامه طحطاوی عِلطها یہ کے فتو کی میں ہے کہ

''عورت پرواجب ہے کہ اگروہ حائضہ ہوتو اپنی حالت سے شو ہر کو واقف کر دے تا کہ شو ہرمباشرت نہ کرے ورنہ عورت بخت گنہگار ہوگی''۔

اکشر مردشادی تعبید کی بہلی رات بے مبری کامظاہرہ کرتے ہیں اور باوجوداس کے کہ عورت حائضہ ہوتی ہے جماع کر بیٹھتے ہیں۔ یادر کھئے! اگر عورت حائضہ ہوتو

The ring of the state of the st اس ہے کی بھی طرح مباشرت کرنا جائز نہیں جا ہے شادی کی پہلی ہی رات کیوں نہ ہو۔اس لئے مرد کی ذمدداری ہے کہوہ شادی کی پہلی ہی رات سے اپنی بیوی کوان مائل سے آگاہ کرے۔ عورت کوطہارت کےمسائل سیکھنا فرض ہیں حفرت امام محمرغز الى عمل الشاد فرماتے ہیں۔ ''علم دین جونما زطبیارت وغیره بیس کام آتا ہے عورت کو سکھانے اگر ند سکھائے گا تو عورت کو پاہر جا کرعالم دین ہے یو چھنا داجب اور فرض ہے۔اگر شوہرنے سکھا دیا ہے تو اس کی ہے اجازت باہر جانا اور کسی سے پوچھنا عورت کو درست نہیں اگر دین سکھانے کی تصور کرے گا تو خود کنهگار ہوگا کہتی تعالیٰ نے ارشاد فرمایا' دووا آنڈسگھر وَأَهْلِيْكُمْ نَاراً 'أَاے ایمان والوں اپنی جانوں اور اپنے گھر والوں کو جہنم کی آگ ہے (كيميائے سعادت)

حالت جیش میں عورت سے محبت کرنا سخت حرام ہے جو کہ نص سے ثابت ہے۔ اللہ عزوجل اور اس کے رسول منظ میں آئے ایسے شخص سے بیزاری کا اظہار فرمایا ہے جو حاکضہ عورت سے وطی کرتا ہے۔

دين محمدي مطفي المينانية سي التعلق مخض

حضرت ابد بریره زانین سے روایت ہے کہ ٹی کریم مشکقاتی نے ارشاوقر مایا:
من اتبی کاهنا فصد قد است امراته حائضا اواتبی امراة فقد بری مما
انزال علی محمد مشکری است کی است کی ایس کی ایا پی حائضہ کورت سے محبت کی وہ اس
ترجمہ جوکا بن (جادوگر) کے پاس گیا یا اپنی حائضہ کورت سے محبت کی وہ اس
چیز سے لاتعلق ہوگیا جو تجمد مشکری تی برنازل ہوئی ہے (ایسی اس نے اللہ کی کہ برتر آن

(RIRIKE)

مالت حيض مين زوجيت اداكرنے كا كفاره

امام ابوداؤ دُ اور حاکم نے حضرت این عباس دُنْ تُنْ سے روایت کیا ہے فرماتے بیں جب مردعورت سے خون کی حالت میں حقوق زوجیت ادا کرے تو ایک دینار صدقہ کرے اور جب خون ختم ہوجائے تو نصف دینارصد قد کرے۔

امام ترفدی نے حضرت ابن عباس ذبی تنظیم سے کدرسول الله مطفیمینی کے درسول الله مطفیمینی کے درسول الله مطفیمینی کے نے فرمایا جب خون سرخ آر ہا ہواوروطی کرے توالیک دینا رصد قد کرے اور جب خون زر د ہوتو نصف دینار صدقد کرے۔

امام طبرانی حضرت ابن عباس زُناتُند سے روایت کرتے ہیں کہ بارگاہ نبوی مشخطَقِیّم میں ایک شخص حاضر ہوا اور عرض کی یارسول الله مشخطِقیّم میں نے اپنی بیوی سے حقوق زوجیت اوا کئے ہیں جبکہ وہ حائضہ تھی تو رسول الله مشخطیّم آنے اسے ایک غلام آزاد کرنے کا تھم دیااس وقت غلام کی قیت ایک دینارتھی۔ (تغیر درمنٹو رمترجم جم جام ۲۵۳۷)





حيض مين مباشرت كے نقصانات

امام ابوالعباس السراج بمشید نے مند میں حضرت ابو ہریرہ وہنائین کیا کہ رسول اللہ مشیقی آنے فرمایا جوائی ہوی کے پاس حالت چیف میں آتا ہے پھراس کا پچہ جذام کے مریض میں جتلا پیدا ہوتو وہ اپنے آپ کوئی ملامت کرے۔

۹ (تغیر در منثور مترجم ج اص ۲۹۸) حکیموں نے لکھاہے کہ مورت سے حیف کی حالت میں مباشرت کرنے سے مردا درعورت کو جذام (کوڑھ) کی بیاری ہو جاتی ہے ادر پچھ حکماء کا کہنا ہے کہ حیف کی

حالت میں صحبت کیااورا گرحمل گھبر گیا تو اولا دناقص (ادھوری) یا پھر جذا می پیدا ہوگی۔ (۱-۱ مالعلم جزیر)

، (احیاءالعلوم ۲۷) حالت حیض میں صحبت کرنے سے عورت کو سخت نقصان ہے کیونکہ عورت کی

رے رہے کا تارگندہ خون خارج ہوتا رہتا ہے جس کی وجہ سے وہ مقام انتہائی نرم و نازک ہوجا تا ہے اوراگراب ایسی حالت میں جماع کیا گیا تو اس مقام میں رگڑ کی وجہ

ے دہاں زخم بن جاتا ہے اور پھر مزید مید کر زخم میں گری کی وجہ سے پیپ بھر جاتا ہے۔ اور بعد میں مختلف بھاریاں پیدا ہونے لگتی ہیں۔

اطباء کےمطابق حالت حیض میں مباشرت کرنے سے سوزش رحم سوزاک و

حر شادی کے احکام کے سی اس کی دو کار کاری کی اختلاط آ تفک وغیرہ جیسے امراض لاحق ہوجاتے ہیں۔اس لئے حالت حیض میں جنسی اختلاط مفرصحت ہے۔

مسئله عورت چین کی حالت میں ہے اور مردکو شہوت کا زور ہے اور ڈریہ ہے کہ کہیں زنا میں نہین جاؤں۔ آلے ایک حالت میں عورت کے پیٹ پراپنے آلے کو کس کر کے انزال کرسکتا ہے۔ جو جائز ہے کئین ران پرنا جائز ہے کہ حالت چین میں ناف کے نیچے سے گھٹے تک اپنی عورت کے بدن سے فائدہ حاصل نہیں کرسکتا۔

یاور ہے بیمسکلہ ایسے خصص کیلئے ہے جسے زنا ہوجانے کا غالب مگمان ہوتو وہ اس طرح سے فراغت حاصل کرسکتا ہے کیکن مبر کرنا اوران دنوں مباشرت سے پر ہیز کرنا ہی افضل ہے۔ (بہارشریت جا '۲۶)

حالت حیض میں عورت تمام کام کرسکتی ہے

پچھلوگ جورت کو حالت جیش بیں ایسانا پاک اور اچھوت بچھ لیتے ہیں کہ اس کے ہاتھ کا کھانا' اس کے ہاتھ کا مجھوا پانی' وغیرہ کھانے پینے سے اعتراض کرتے ہیں۔
یہاں تک کہ اس کے ساتھ بیٹھنا بھی چھوڑ دیتے ہیں۔ (جیسا کہ پہلے بیان ہوا ہے کہ حاکشہ عورت سے یہودی نفرت کرتے تھے) بیعام خیال ہے کہ جس کرہ میں حاکشہ عورت ہوتی کہ وقتی کہ اور اگر ایسے مواقع پر کسی بزرگ کی فاتح آ جائے تو اس گھر میں فاتحہ ہیں ہوتی' یا اگر فاتحہ دی بھی جائے تو یہ خیال رکھا جاتا ہے کہ ایسی عورت کا ہاتھ بھی ان چیزوں کو نہیں لگنا چاہیے جو فاتحہ کیلئے رکھی جائی ہیں۔غرض کے حاکشہ عورت کے متحلق کی طرح کی جابلانہ باتیں آج قوم مسلم میں دیکھی جائتی ہیں۔ یہ سب بغو وضفول و جہالت ہیں۔ یا در کھئے حاکشہ عورت فاتحہ کا کھانا پاکائتی ہے۔ اس میں کوئی قباحت نہیں۔ یا میں کوئی قباحت نہیں۔ یا میں گوئی قباحت نہیں۔ یا میں گوئی قباحت نہیں۔ یا میں گوئی قباحت نہیں۔ اس فاتحہ نہیں دائتی کہ اس میں قرآن کر یم کی سورتیں پڑھی میں۔

TORE TIN THE TOTAL OF TENEUR YOU ایسے لوگ جو حالت حیض میں عورت کوا چھوت سجھتے ہیں ان کے متعلق ثنم اوہ اعلیٰ حفرت حضور مفتی اعظم ہند مجر شطیجہ اپنے فتو کی میں ارشاد فر ماتے ہیں۔ ''جولوگ ایبا کرتے ہیں وہ ناجائز و گناہ کا کام کرتے ہیں اور مشرکین یہور اور بچوں کی رسم مردود کی پیروی کرتے ہیں۔حالت حیض میں صرف محبت ناجا ئز ہے بس اس سے پر ہیز ضروری ہے۔مشر کین ویہوداور مجوس کی طرح حیض والی عورت کو سینگن (مہتر) سے بھی بدر سمجھنا بہت تا پاک خیال نراظلم عظیم وبال ہے بیان کی (فآويٰ مصطفويه ج٣ ص١٣) حفرت!م المومنين حفرت عا ئشەصديقه وتالفحاارشادفرماتي ہيں _ " حضورا كرم م النيكة إن في محمد في ما ياكن الله المتحديد عا كشر المتحديد عا كرم المتحديد عا كرم المتحديد المتحد مصلی اٹھا کر دؤ'۔ میں نے عرض کیا۔'' میں حیض سے ہوں''۔ فرمایا۔'' تمہارا حیض تہارے ہاتھ میں نہیں''۔ (صححمسلمج استثاب الحيض) حالت حیض میں بوس و کنار جا ئز ہے حالت حیض میں محبت کرنا بہت بڑا گناہ ہے ٔ حرام دنا جا نزیمے لیکن عورت کا بوسد لے سکتے ہیں۔ خبردار بات بوں و کنارتک ہی رہے اس سے آ گے مباشرت تک نہ پہنچ جائے۔ای طرح ایک ہی بلیث میں ساتھ کھانے پینے یہاں تک کہ حاکصہ عورت کا جوٹھا کھانے پینے میں کوئی حرج نہیں ۔غرض کہ عورت سے ویبا ہی سلوک ر کھے جیساعام دنوں میں رہتا ہے۔ (مخض ترندی ج۱) حالت حیض میں میاں بیوی کا اکٹھے کھانا جائز ہے ام المومنين حفرت عا ئشەصدىقە بۇڭلىجاارشادفرماتى بىي كە ''زمانہ حیض میں' میں یانی ہیتی پھر حضورا کرم مضطیقیا کودے دیتی تو جس جگہ

THE THE SEE OF (KIZUIL YO میرے لی لگے ہوتے حضور مشکونے وہیں دہن مبارک رکھ کریتے اور حالت حیض میں' میں بڑی ہے گوشت منہ ہے تو ڑ کر کھاتی چرحضور مطیحاتیا ہے کو دے دیتی تو حضور مِصْعَلَيْنِ ايناد بمن شريف اس جكه يرر كھتے جہاں ميرامندلگا تھا''۔ (میچمسلمجاسکابالجیش) مسئله حالت حيض من عورت كرساته شوجركا سونا جائز باورا كرساته سوني میں شہوت کا غلبہ اوراپنے آپ کو قابو میں ندر کھنے کا شبہ ہوتو ساتھ نہ سوئے۔ اورا گرخود یراعتادویکایقین ہوتو ساتھ سونا گناہ نبیں ہے۔ (بهارشر بعیت ج ا ٔ ۲۷) حیف کے بعد صحبت کب جائز ہے حضرت سیدنا امام اعظم ابوصنیفه رفاتشهٔ کے نزدیک جب عورت کوحیض کا خون دں دنوں کے بعد آنا بند ہوجائے توغسل ہے پہلے بھی مباشرت کرنا جائز ہے لیکن بہتر رے کہ فورت عسل کر کے اس کے بعد ہی مباشرت کی جائے۔ حضرت سالم بن عبدالله اورحضرت سليمان بن ياسر وظلجا سے حيض والي عورت کے بارے میں یو جھا گیا کہ ''کمیااس کاشو ہراہے یاک دیکھے توغسل سے پہلے صحبت کرسکتا ہے یانہیں''؟ دونوں نے جواب دیا۔ "نہ کرے یہاں تک کہ وہ عسل کرلے"۔ (مؤطاامام الكج أياب٢٦ صيث٩٠) مسئله دس دن ہے كم ميں خون آنا بند ہوگيا ہو جب تك عورت عسل نه كرے صحبت حا ترنہیں ۔ (بهارشر بعت ج ا ۲۶) مسئله عادت كدن بور برف ي بملي الاحض كاخون آ نابند بوكيا تواكر جد عورت عنسل کر لےصحبت جا تزنہیں ۔ مثلاً کسی عورت کو چیش کی عادت چار دن و چار

Marfat.com

رات تھی اوراس مرتبہ آیا تین دن اور تین رات تو جارزن و چاررات جب تک پورے

Regist (1812 USE) نەبوھا ئىں صحبت ھائزنېيى _ (بهارشر بعت ج ا ۲۲) حیض سے یاک ہونے کا طریقتہ مسئله عورت کو جب حیض بند ہوجائے تواسے شمل کرنا فرض ہے۔ (قانون شریعت ج۱) حیض سے فراغت کے فوراً بعد غشل کرنا ضروری ہے۔ بلاکسی عذر شرعی کے عسل میں تاخیر کرنا سخت حرام ہے۔ ام المومنین حضرت عا ئشرصد يقه وظافها سے روايت ہے كه ان امراة سألت النبي الشُّورَيِّ عن غسله من الحيض فأمرها كيف تغتسل قال خذى فرصة من مسك فتطهري بها قالت كيف اتطهر بها؟ قال تطهري بهد قالت كيف؟ قال سبحان الله تطهري فاجتذبتها الى فقلت تتبعى بها اثر الدمر (بخاري ج ا باب ۲۱۵ مديث ۳۰۵) ترجمہ ایک عورت نے رسول اکرم منطقی ہے چین کے منسل کے بارے میں يو جها-آب في اس بتايا- "يول خسل كرك" - اور پعرفر مايا" مشك مين بسابواروكي

كالجاما لے اوراس سے طہارت حاصل كر''۔وہ عورت مجھ نہ كى اورعرض كيا۔ "كس طرح سے طہارت کرول'؟ فرمایا۔ ' میجان اللہ! اس سے طہارت کرو' (حضرت عائشه صديقة وظاهي فرماتي جين) " مين ن اسعورت كواين طرف تعينج ليااوراس بتايا كراسے خون كے مقام پر پھرے"۔

فائده

اس زمانے میں مشک ملنا دشوار ہے اس لئے اس کی جگہ گلاب یانی عطروغیرہ میں بساہوا بھایا لے۔ ای مدیث کے تحت امام احمد رضا خال بر بلوی م الله اول رضویه " من

ای حدیث کے تحت امام احمد رضا خال بریلوی و منطقیلی ''فواوی رضویہ'' میں ۔ نقل فرماتے ہیں۔

''زن (عورت) حائضہ کومتحب ہے کہ بعد فراغ حیض جب عسل کرے ایک برانے کیڑے ہے فرح داخل کے اندر سے خون کا اثر صاف کرلے''۔

ر فراوئ رضویه ج ا^ن کماب الطهارت باب الوضوء ص۵۴)

آ کے مزید" روالحتار فاویٰ شامی اور فاویٰ تارخانیہ وغیرہ کے حوالے سے

فرماتے ہیں۔ ''منسل میں عورت کومتحب ہے کہ فرج داخل کے اندرانگل ڈال کر دھولے

س کیں کورت کو سخب ہے کہ سرع وا ک سے اندروا کی وان سرو ہاں واجب نہیں بغیراس کے بھی عنسل امر جائے گا''۔

وا جب جمیس بغیراس کے بھی مسل اگر جائے گا''۔ (فاور کی مناز کی مناز کی رضور ہے ان کیا سالطہارت یاب الوضوء م ۵۵)

اس حدیث ہے معلوم ہوا کہ حیض جب بند ہو جائے تو عورت جب عنسل کرنے بیٹھے تو پہلے روئی (کپاس) کوعطر وغیرہ کی خوشبو میں بسالے پھراسے خون کےمقام پراچھی طرح پھیرے تا کہ وہاں کی گندگی اچھی طرح سے صاف ہوجائے 'پھر اس کے بعد عنسل کرے۔ (عنسل کا طریقہ ہم آ گے تفصیل سے بیان کریں گے)

0....0....**0**



لواطت وبال

کھ کم عقل جاہل ٔ حالت حیض میں عورت سے اس کے ڈبر (پیچھے کے مقام) میں مباشرت کر بیٹھتے ہیں اور دین وو نیا دونوں اپنے ہاتھوں بر باد کر ڈالتے ہیں۔ ہوش میں آ ہے کہ یکوئی معمولی ساگناہ نہیں ہے بلکہ شریعت میں مخت حرامحرام اور گناہ کہیرہ ہے۔ اور کچھ حذیثوں میں تو اسے گفرتک بتایا گیا ہے۔ (اللّٰہ کی بناہ)

لواطت حرام ہے

حفرت الوذر وثائفة بروايت بكرسول الله مطفعة في ارشاد فرمايا: ايتان النسآء نحو البحاش حرامه برام (مندام مظم باب ١٢٩)

ترجمہ پیچھے کے مقام میں عورت سے دلی کرنا حرام ہے۔

لواطت كفرى

حضرت ابوم بره فناتفت سے روایت ہے حضورا کرم مضَّ تَقِیّاً نے ارشاد فرمایا:

من اتى شيئاً من التساء اولرجال في ادبارهن فقد كفر ــ

(نمانی این باجرا ایوداؤدج ۳ باب ۲۰۳۰ حدیث ۵۰۷) آرجمه جس نے عورت یا مرد سے اس کے پیچھے کے مقام میں صحبت کی اس نے رحمت سےمحروم

صحاح سته (لیتنی احادیث کی چیمتند کتابوں بخاری مسلم تر ندی ابوداؤ د نسائی

ا بن ماجه) من ب كدر ول الله مضائلة في ارشاد فرمايا: لا يفظر الله يوم القيامة الى رجل اتى امراة في دبرها-

ى رېس مىيى سرت مى مېرت -(بخارى مسلم ترندى ابوداؤ دنسانى ابن ماجه)

ترجمہ اللہ تعالیٰ قیامت کے دن ایسے خص کی طرف نظر نہیں فرمائے گاجس نے اپنی عورت کے پیچھے کے مقام میں صحبت کی۔

المد و الشخطة المان المان المان المان المنافقة المان المنافقة المان المنافقة المان ا

حضرت ابور بره و فالني سروايت بحضورا كرم مطيَّعَ يَلِم في ارشاد فرمايا:

ملعون من اتي امراة في دبرها-(ابوداؤدج٣٠ باب٢٣١ مديث٣٩٥)

ترجمه أرميس جماع كرف والاملعون ب_

امام نسائی نے حضرت ابو ہر پرہ و ڈاٹٹنا سے روایت کیا ہے کہ نبی کریم منظر کیا ہے۔ فرمایا اللہ سے حیاء کر وجیسے حیاء کرنے کا حق ہےا پنی عورتوں سے دہر میں وطی نہ کرو۔

الم عبدالرزاق عبد بن حميد نسائي اور بيبي شعب مين طاوس مختصيه سے

۔ روایت کرتے ہیں کہ حضرت ابن عباس بڑائٹو سے پوچھا گیا جو بیوی کی و ہر میں وطی کرتا ہےتو حضرت ابن عباس بڑائٹو نے فر مایا چھن مجھ سے کفر کے تعلق پوچھتا ہے۔

امام بیقی شعب الایمان میں بسند ضعیف حضرت ابی بن کعب زمانیو سے روایت کیا ہے کہ فرماتے ہیں کہ مچھ چڑیں قرب قیامت کے وقت اس امت میں پائی جائیں گیا ان میں ایک ہیہ ہے کہ مردا چی بیوی یا لونڈی کی دبر میں لواطت کریں گے یہ ان

TO SECTION OF THE SEC چیز وں میں سے ہے جن کواللہ تعالیٰ اور اس کے رسول میشنے آیا نے حرام کیا ہے اور اس یراللہ تعالیٰ اس کا رسول م<u>طنیکو</u>ی تخت ناراض ہوتے ہیں ایک بیر کہ عورت عورت سے ولمی کرے گی اور رہی بھی اللہ اور اس کے رسول اللہ منتظ کیج نے ترام قرار دیا ہے۔ان لوگوں کی نماز ہی نہیں جب تک کہ اس عمل پر قائم رہیں حتیٰ کہ اللہ تعالیٰ کی ہارگاہ میں غالص توبه نەكرلىس_ حضرت ابوذ ر زنائنۂ فرماتے ہیں میں نے حضرت ابی بن کعب زنائنڈ سے یو جھا توبنصوح كياچيز بي انهول في فرمايا بيل في اس كے متعلق رسول الله منظ كيّم سے پوچھاتھا تو آپ نے فرمایا تھا تو بے نسوح ہیہ ہے کہ جب بچھ سے خلطی ہو جائے تو گناہ پر شرمندہ ہواورا پنی ندامت کے ساتھ اپنی بُر ائی کوچھوڑتے ہوئے اللہ تعالیٰ ہے استغفار کرے پھر بھی اس گناہ کی طرف نہلوئے۔ (تغییر درمنثور مترجم ج اس ۱۸۳) جمة الاسلام سيدنا امام محمد غز الى <u>محلطي</u>يه نقل فرمات بس كه ''عورت کے دہر میں جماع درست نہیں اس لئے کداس کا حرام ہونا ایبا ہی ہے جیسے حالت حیض میں جماع حرام ہے۔علاوہ ازیں دہر میں جماع ہے عورت کو اذیت پہنچتی ہے چنانچہ اس کا جرام و نا جائز ہونا بہنبت جیش کی حرمت سے زیادہ سخت (احیاءالعلوم ج۲) اگر ہم غور کریں تو معلوم ہوگا کہ شروع ہے بھی بیدکام نہایت ہی گندہ مکروہ نالبنديده ب- ہرمزاج سليم اورطيع متنقم اس سے خود بہخود گھن كھاتى ہاوراس كوايك کریہہ بدمزہ کام جانتی ہے۔علماء کرام نے عورت سے اس کی دہر میں وطی کرنے سے ہونے والے جونقصانات پرتفصیلی تھرہ کیا ہے۔ان میں سے صرف چندایک یہاں بغرض فائدہ بیان کئے جاتے ہیں۔جس ہے معلوم ہوگا کہ یغل کس قدر قبیج ہے۔ بی غلاظت و گندگی کے خارج ہونے کا مقام ہے۔ وطی کی لذت ولطف

TELLOS TO THE SER (BILLIST YOU ا ندوزی کواس گندگی وغلاظت کی جگہ ہے کیاعلاقہ! بلکہ ایسے موقعہ برتو انسان لطافت و یا کیزگی کامتلاشی ہوتا ہے۔ دوسراید کہ وطی عورت کا مردیر ایک حق ہے اور وہ حق اس شکل میں تباہ ہوتا ید کو قدرت نے اس مقام کواس برئے بیہودہ فعل کیلئے نہیں بنایا ہے تو گویا اس فعل کاار تکاب قدرت کے بنائے ہوئے اصول سے بغاوت ہے۔ بہ کہ مرد کیلئے وطی کی بیشکل نہایت ہی مصرصحت ہے کیونکہ عورت کی فرج میں جذبیت (کینیخے) کی تا ثیر ہوتی ہے جو مادہ منوبیکوذکر سے بورا جذب کر لیتی ہے جب کہ باخانے کے مقام میں اخراج (چیکنے) کی قوت ہے جذب کی نہیں البذامنی کا کچھ حصه مردی منی کے رائے میں ہی رہ جاتا ہے جو بعد میں گئی بیار یوں کا باعث بنآ ہے۔ ید کہاس صورت میں رگوں برخلاف فطری زور بڑتا ہے جورگوں کیلئے مضر ہے۔اس طرح کے دیگر سینکڑ وں معائب ہیں۔لبذاانہیں نقائص کے پیش نظر شریعت

في تخت المناعى احكام ساس فعل بدكا انسدادكيا-



استحاضه كابيان

وہ خون جو عورت کے آگے کے مقام سے نکلے اور حیض و نفاس کا نہ ہو وہ استاضه ب-استافه كاخون بارى كى دجهة تاب-مسئله حیض کی مدت زیادہ سے زیادہ دس دن اور دس را تیں ہیں اور کم ہے کم تین دن اور تین را نیس ہیں۔اگرخون یدس دن دس رات سے پچھ زیادہ آیا۔ یا۔ تین دن ٹین رات سے کچھ بھی کم آیا تؤ وہ خون حیض کا نہیں استحاضہ ہے۔اگر کی عورت کو پہلی مرتبہ حیض آیا ہے تو دس دن رات حیض ہے اور بعد کا استحاضہ ہے اور اگر پہلے اسے حیض آ چکے ہیں اور عادت دس دن دس رات سے کم کی تھی تو عادت سے جتنا زیادہ آیا وہ استحاضہ ہے۔ اسنے یول سجھے کہ کسی عورت کو یا کچ ون یا کچ رات کی عادت تقی (لینی اسے ہمیشہ حیض یا نجے دن ورات آتا پھر بند ہوجا تاتھا)لیکن اگر بارہ دن آیا تو یا نج دن درات (جو عادت کے تھے) حیض کے ہیں باتی سات دن و سات را تیں اسخاضہ کے ہیں اور اگر حالت مقرر نہ تھی بلکہ چیف بھی چارون بھی یا خچ دن ادر بھی چیدن وغیرہ آتا تھا تو مچھلی مرتبہ جینے دن آیا اپنے دن قیض کے منتجھے جا کیں گے اور ہاتی استحاضہ کے۔ (بہارٹر بعت نائی ۲۴ قانون ٹر بعت نا) هسئله استحاضہ میں نماز معاف نہیں (بلکہ نماز کا چھوڑ نا گناہ ہے) نہ ہی رمضان

شریف کے دوزے معاف ہیں اور اس حالت ہیں گورت سے وطی بھی حرام نہیں۔
شریف کے دوزے معاف ہیں اور اس حالت ہیں گورت سے وطی بھی حرام نہیں۔
مسئلہ اگر استحاضہ کا خون اس قدر آیا ہو کہ اتی مہلت نہیں لمتی کہ وضو کے فرض
نماز اواکر سکے تو ایک وضو سے اس ایک وقت ہیں جتنی نمازیں چاہے پڑھے خون
آنے سے بھی اس پورے وقت کے اغروضو نہ جائے گا۔ اگر کپڑا او غیرہ رکھ کرنماز
پڑھنے تک خون روک سکتی ہے تو وضو کر کے نماز پڑھے۔
(قانون شریعت کا)

طہارت کا بیان

اللّذرب العزب المراح ارشادفرما تا ہے۔ اِنَّ اللّٰهُ يُحِبُّ التَّوَابِيْنَ وَيُحِبُّ الْمُتَطَهِّرِيْنَ۔ (سورة البقر ٢٢٢٥) ترجمہ بیجک اللّٰہ پند کرتا ہے بہت تو بہرنے والوں کواور پسند کرتا ہے تھروں کو (کنزالا یمان)

> الطھور شطر الدیمان۔ لیٹی پاکیزگی آ دھاایمان ہے۔ اور فرماتے ہیں ہمارے ہیارے آ قائضے کی آ ہمی الدین علی العظافقہ لیٹی دین کی نبیاد پاکیزگی پرہے۔

حضورا كرم مطفي ارشاد فرمات بن-

(کیمیائے سعادت)

غسل كب فرض موتا ہے؟

عنسل پانچ چیزوں سے فرض ہوتا ہے۔ لینی ان پانچ چیزوں میں سے کوئی ایک بھی صورت پائی جائے توعشل فرض ہے۔ اب ہم آپ کو ہرایک کے بارے میں قدر تفصیل سے بتاتے ہیں۔

TORE THAT TO THE SERVICE OF THE LEVEL OF

منی نکلنے سے

مردنے تورت کو جھوایا دیکھایا صرف عورت کے تصورے ہی مزے کے ساتھ منی اپنے مقام سے نکلی تو عنسل فرض ہو گیا۔ چاہے سوتے میں ہویا جا گئے میں۔ ای طرح عورت نے مرد کو جھوایا دیکھایا اس کا خیال لائی اور لذت کے ساتھ منی نکلی تو عورت پر بھی عنسل فرض ہو گیا۔ ان تمام ہا تو ل کا حاصل بیہے کہ اگر مزے کے ساتھ منی اپنے مقام سے نکلے چاہے عورت سے ہویا مردسے تو عنسل فرض ہوجا تا ہے۔

احتلام ہے

لین سوتے میں منی کا نکلنا جے نائث فال بھی کہتے ہیں اس ہے بھی عشل فرض ہوجا تا ہے۔ بیم دادر عورت دونوں کو ہوتا ہے۔ چنانچہ حدیث پاک میں ہے۔

کوخواب میں دیکھیے تو اس کیلئے بھی عشل ضروری ہے''؟ رسول کریم منظ کرتے نے ارشاد فرمایا۔''ہاں!اگروہ تری (گیلاپن) دیکھی توعشل کرنے''۔

(بخاری ج۱ ٔ مدیث ۲۵۵ تر ندی ج۱ ٔ مدیث ۱۱۳)

هسٹلہ روزے کی حالت میں تھا اور احتلام ہوگیا تو روزہ نہ ٹوٹا اور نہ ہی روزے میں کوئی خرابی آئی لیکن عشل فرض ہوگیا۔ (بہارٹر بیت و قانون شریعت و کتب کثیرہ)

مبا ٹرت کرنے سے

مردنے عورت سے ہماع کیا اور اپنے آلے کو عورت کے آگے کے مقام یا پیچھے کے مقام میں حشفہ تک داخل کیا جائے شہوت کے ساتھ ہویا بغیر شہوت انزال ہویا نہ ہو (صرف مرد کا اپنے ذکر کوعورت کی فرج میں حشفہ تک داخل کردینے سے ہی) وا شادی کے اظام کے اطلام کی اور میں اور کا اور کا

حیض کے بعد

عورت كويض كاخون آناجب بند موجائة واسك بعدا عسل كرنافرض ب-

نفاس کے بعد

عورت کو بچہ جنے کے بعد جوخون فرج ہے آتا ہے اسے نفاس کہتے ہیں اس خون کے بند ہو جانے کے بعد عورت کوشس کرنا فرض ہے۔ یہ جوشہور ہے کہ عورت بچہ جننے کے چالیس دن بعد پاک ہوتی ہے۔ غلط ہے۔ (اس کی تفصیل اور نفاس کا مفصل بیان آ گے آئے گا) (قانون شریعت جا)

(قانون مریت کا)

ان پانچ چیزوں سے خسل فرض ہوجا تا ہے۔اب اس کے علاوہ چنداور ضروری
مسائل ہیں جن کا ہر سلمان کو جاننا اور یا در کھنا ضروری ہے۔

منى

<u>ن</u> منی وہ ہے جو شہوت کے ساتھ ثکتی ہے۔

ندي

_____ ندی وہ ہے جو بغیر مزہ کے ایسے ہی عضوء تناسل پر چپ چپاسا مادہ لکتا ہے۔ کھو پرے کے تیل کی طرح کا مادہ بھی قبض ہے بھی ہاضمہ کی ٹرابی ہے بھی لکتا ہے۔ م

ودي

گاڑھے پیشاب کو کہتے ہیں جوغالبًاد کیمنے میں گاڑھے دودھی طرح کا مادہ ہوتا ہے۔منی نکلنے سے عسل فرض ہوتا ہے۔ جب کہ غدی درودی کے نکلنے سے عسل فرض نہیں ہوتا لیکن دضوٹوٹ جا تا ہے۔

PLECTIFO TO THE SERVICE OF THE LEVEL OF هسٹله اگر منی اتنی تیلی بڑگئ کہ پیشاب کے ساتھ یاویسے ہی پچھ قطرے بغیر شہوت (بغیر مزے) کے نکل جا ئیں تو عنسل فرض نہ ہوالیکن وضو ہوتو وضوٹوٹ گیا۔ (قانون شریعت ج۱) بیاری سے منی نکلنا س نے بو جھ اٹھایا یا او نیجائی سے بیٹیے گرا' یا بیاری کی دجہ سے بغیر کسی مزے كے منى نكل گئى تو عنسل فرض نه ہوا البته وضولو ك گيا۔ (قانون شریعت ج۱) پیشاب کےساتھ منی نکلنا ا گر کسی نے پیشاب کیا اور منی نکلی تو دیکھا جائے کہ اس وقت عضوء تناسل میں تناؤ تھایا نہیں اگر تناؤ تھا تو عنسل فرض ہو گیا اورا گر تناؤنہ تھااور بغیر کسی مزے کے پییٹا ب کے ساتھ منی نکل گئی تھی او عنسل فرض نہ ہوا۔ ﴿ فَأُو كُلُ عَالْمَكِيرِ كَ بَهِ ارشر بعت وكتب كثير و) ئس يرغسل فرض ہوا؟

مردادر عورت ایک بستر پرسوئے کیکن مباشرت ندگی صبح بیدار ہونے کے بعد بستر پرمنی کے دونوں میں سے سے بستر پرمنی کے دونوں میں سے سے احتلام ہوا ہے تو اب اس دھے کودیکھیں اگر وہ دھبہ لمباسفیدرنگ کا اور گندہ ساہتو مرد پرشسل فرض ہوا (یعنی مرد کواحتلام ہوا ہے) اورا گروہ دھبہ گول پتلا اور پیلے رنگ کا ہے تو عورت پرشسل فرض ہوا۔ (واللہ اعلی) ہے تو عورت پرشسل فرض ہوا۔ (واللہ اعلی)

مسئلہ مرد دعورت ایک بستر پرسوئے بیداری کے بعد بستر پرمنی کا نشان پایا گیا اور ان میں سے کی کواحتلام یا دنیمیں تو احتیاط بیہے کہ دونوں عشل کریں۔ یہی سی ہے۔

(بهارشر بعت ج اُح۲)

THE THE THE THE CHILLIST YOU

مباشرت کے بعد منی نکلنا

سمی عورت نے اپنے شو ہر سے مہاشرت کی۔ مہاشرت کے بعد شسل کیا۔ پھر اس کی شرم گاہ سے اس کے شوہر کی منی تکلی تو اس پر شسل واجب نہ ہوگا لیکن وضوجا تا رہےگا۔ (بہارشریعت جا ۲۰۲۰)

ناياك كيليحكون ي بالتين حرام بين

جس کونہانے کی ضرورت ہواس کو مجد بیں جانا کعبہ کا طواف کرنا قرآن کریم کو چھوٹا ہے دیکھے یا زبانی پڑھنا یا کسی آیت کا لکھنا 'یا ایس اگوٹھی بہننا یا چھوٹا جس پرقرآن کی کوئی آیت یا عدد یا حروف مقطعات لکھے ہوئے ہوئو بی کتابیں جیسے حدیث تقییراور فقہ وغیرہ کی کتابیں جیسے ہو یا رومال و کپڑے بیں لپٹا ہوتو اس پر ہاتھ لگانے بیس حرام ہے اگر قرآن کریم جزوان بیس ہو یا رومال و کپڑے بیس لپٹا ہوتو اس پر ہاتھ لگانے بیس حرج نہیں ۔ اگر قرآن کی کوئی آیت قرآن کی نیت سے نہ پڑھی صرف تیمرک کیلئے بھم اللہ المحمد للہ یا سورۃ فاتحہ یا آیت قرآن کی کوئی آیت پڑھی تو کھھ ترج نہیں ۔ ای طرح درووشر نیف اور کلمہ شریف بھی بڑھ کے تھیں۔ (تانون شریف بھی

ناياك كاحجوثا

نا پاک مرد وعورت کا اور حیض ونفاس والی عورت کا جو ٹھا پاک ہے۔اس طرح ان کا پیینہ یا تھوک کسی کپڑے یا جسم ہے لگ جائے تو نا پاک نہیں ہوگا۔

(بخاری ج۱ مص۱۹۳ قانون شریعت ج۱)

ناياك كانماز پڙھنا

رات میں محبت کی ہوتو نماز فجر سے پہلے اور اگر دن میں محبت کی ہوتو اگلی نماز

سے پہلے عمل کر لیں تا کہ نماز قضائیہ و جائے اور زیادہ وقت تک تا پا کی کی حالت میں رہنا نہ پڑے کہ ناپاک فیض سے رحمت کے فرشتے دور رہتے ہیں۔ عمل کی حاجت ہواور وقت تک ہا پاک فیض سے رحمت کے فرشتے دور رہتے ہیں۔ عمل کی حاجت ہا اور نماز قضا ہوجائے گا اور نماز قضا ہوجائے گا اور نماز قضا ہوجائے گا اور نماز قضا ہوجائے گی ایسی حالت میں تیم کرکے گھر بربی نماز پڑھے کا پھر اس کے بعد عمل کرکے ای ایک حالت میں تیم کرکے گھر بربی نماز پڑھے کا بی خاتی تو اب ملے گا)
کرے ای نماز کودوبارہ پڑھے۔ (اس طرح سے ادا نماز پڑھنے کا بی تو اب ملے گا)

جس گھر میں نا پاک ہو

اکثر مرداور عورتیں شرم وحیا ہے خسل نہیں کرتے اور ناپا کی کی حالت میں کئی
کئی دن گزار دیتے ہیں۔ ہد بہت ہی ہوئی نحست کی بات اور جاہلا ند طریقہ ہے۔
حدیث پاک میں ہے جس گھر میں ناپاک مردیا عورت ہواس گھر میں رحمت کے فرشتے
نہیں آتے اس گھر میں نحوست و بے برکتی آجاتی ہے۔کاروبارورزق سے برکت دور
ہوجاتی ہے اور مفلمی غربت مخک دئی کا بسیرا ہوجاتا ہے۔

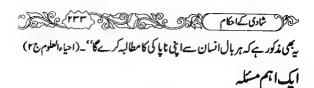
عسل سے پہلے بال کا ٹنا

عشل کرنے سے پہلے ناپا کی کی حالت میں زیر ناف بال بغل کے بال سر کے بال ناک کے بال اور ناخن وغیرہ نہ کا ٹیس کہ یہ کروہ ہے اور اس سے سخت بری لاعلاج نیار یوں کے ہوجانے کا بھی خطرہ ہے۔

(كيميائے سعادت بهارشر بعت ج ۲ ر ١١٦)

احیاءالعلوم میں ہے کہ

''ٹاپاک حالت میں زیرناف بال ٹاخن سرکے بال وغیرہ کا ٹامنع ہے کیونکہ آخرت میں تمام اجزاءاس کے پاس واپس آئیں گے قوٹا پاک اجزاء کا ملنا چھانہیں۔



اعلی حضرت امام احمد رضاخال و بطنیجه " فتادی رضویه" بین نقل فرماتے ہیں کہ
" بدھ کے دن ناخن کتر وانے سے حدیث بین منح کیا گیا ہے۔حضور مطنع کیا گیا ہے۔حضور مطنع کیا گیا ہے۔حضور مطنع کیا گیا ہے۔ حضور مطنع کیا ارشاد فرماتے ہیں۔ "بدھ کے دن ناخن نہ کتر ایا کرد کہ اس سے کوڑھ ہونے کا خطرہ ہے"۔ (کوڑھ ایک خطرناک بیاری ہے جس میں جسم پرسفید داغ پڑجاتے ہیں)
ہے"۔ (کوڑھ ایک خطرناک بیاری ہے جس میں جسم پرسفید داغ پڑجاتے ہیں)
(فادی رضورے کا نف دارل ص سے س





نجاستول کے پاک کرنے کاطریقہ

عنسل سے پہلے کپڑوں کو پاک کرنا ضروری ہے۔ وہ کپڑا جس پر نجاست (گندگی) گلی ہواس پر پہلے صاف پانی بہا کرخوب انجھی طرح ملیں پھر کپڑے کواچھی طرح نچوڑ لیں۔ پھر دوسرا صاف پانی لیں اور کپڑے پر بہائیں پھر صابن یا سرف سے انچھی طرح دھوئے پھراس کپڑے کو نچوڑ لیں۔اب تیسری مرتبہ صاف نیا پانی لے کر کپڑے پر بہائیں اور پھر نچوڑ لیں۔اب آپ کا کپڑا اشری روسے پاک ہوگیا۔ لین مرتبہ نیا پانی لینا اور تین مرتبہ انچی طرح کپڑے پر بہانا اور پھراچھی طرح نچوڑ لین ضروری ہے۔

مسئله نجاست اگریتی ہے تو کیڑا تین مرتبدد حونے اور تین بارا پھی طرح نچوڑنے
سے پاک ہوگا۔ کیڑے کو اچھی طرح نچوڑنے کا مطلب یہ ہے کہ ہر بارا پی پوری
تو ت سے اس طرح نچوڑا تو کیڑا شریعت کے مطابق پاک نہیں سجھا جائے گا۔
کر کے اچھی طرح نہیں نچوڑا تو کیڑا شریعت کے مطابق پاک نہیں سجھا جائے گا۔
مسئله کپڑے کو تین مرتبد دحوکر ہر بارخوب نچوڑلیا ہے کہ اب نچورنے سے پانی
مسئله کپڑے گئیں جراس کو لٹکا دیا اور اس سے پانی نچکا تو یہ پانی پاک ہے۔
مسئله اگر ایک شخص نے ناپاک کپڑے دحوکر اچھی طرح نچوڑلیا، مگر ایک دومرا
مسئله اگر ایک شخص نے ناپاک کپڑے دحوکر اچھی طرح نچوڑلیا، مگر ایک دومرا

حال شادی کے احکام کی کھی گھٹے پاک ہے اور اس دوسرے طاقتور شخص اور کیک سکتی تھیں تو وہ کپڑ اپہلے والے شخص کیلئے پاک ہے اور اس دوسرے طاقتور شخص

کیلئے ناپاک ہے' کیونکہ دوسرافخض پہلے محف سے طاقت میں زیادہ ہے آگر بیز خود دھوتا اور نچوڑ تا تو دہ کپڑااس کیلئے اور پہلے محف کیلئے بھی پاک ہوتا۔

اس مسلّہ ہے معلوم ہوا کہ مردکوائیے ناپاک کیڑے خودیمی دھونے جاہیے۔

ہوی سے نہ دھلوائے کو یک عام طور پر عورت کی طاقت مرد کی طاقت سے کم ہوتی ہے اگر مردخود نچوڑ نے تو ایک دو بوندیں کپڑے اور نکال سکتا ہے اس لئے مرد کے حق میں کیڑے نایاک ہی ہوں گے لیکن کسی کی ہوں اسے نیادہ طاقتور ہواور اس نے

ریادہ طاقتورہاں کے ہاتھوں دھلے کیڑے پہننے میں کوئی حرج نہیں۔ -

ہاتھ دونوں پاک ہوگئے۔

هسٹله الی چزیں جنہیں نچوڑ آئیس جاسکنا عصرونی کا گدا وری چٹائی کارپیٹ شطر نجی و فیرہ تو آئیس پاک کرنے کا طریقہ یہ ہے کدان پر پہلے اتنا پائی بہائے کہ وہ شطر نجی و فیرہ تو آئیس پاک کرنے کا طریقہ یہ ہے کدان پر پہلے اتنا پائی بہائے کہ وہ اسے اس وقت تک چھوڑ دیئے جب تک کہ پائی گدے چٹائی وغیرہ سے ٹیکنا بند نہ و جات اسے اس وقت تک چھوڑ دیئے جب تک کہ پائی گدے چٹائی وغیرہ سے ٹیکنا بند نہ و جات کے بھر دوسری مرتبہ پائی بہائے چرچھوڑ دے جب پائی کو بوندیں ٹیکنا بند ہو جات کی تابد ہو گدائی جات کی بہائے اور سو کھنے کیلئے چھوڑ دے اب وہ گدائی چٹائی پاک ہوگئی۔ تین مرتبہ نیا پائی اس چزیر بہانا اور ہر مرتبہ پائی ٹیکنے تک انتظار کرتا ضروری ہے۔

(ادکام ٹریعت تا تا تون ٹریعت تا تون ٹریعت تا تا تون ٹریعت تا تا تون ٹریعت تا تا

THE THE SERVICE YOU

عسل كابيان

اللدرب العزت ارشادفرما تاہے۔ وان كنتم جنبا فاطف ول (سورة ما ندو۲) ترجمه أورا كرتمهين نهاني كاحاجت بهوتو غوب تقرب بولو (کنزالایمان) ام المومين خفرت عا كشر صد يقد والهواس روايت ب كدرسول الله مضاعيا نے ارشادفر مایا کہ "جب مردمباشرت كے بعد مسل كرتا ہے توبدن كے جس بال يرسے يانى گزرتا ہے اس کے ہر بال کے بدلے اس کی ایک فیک کسی جاتی ہے۔ ایک گناہ کم کر دیا جاتا ہے اور ایک درجہ او نچا کر دیا جاتا ہے اور الله تعالی اس بندے پر فخر فرماتا ہے اور فرشتوں سے فرماتا ہے کہ ''میرے اس بندے کی طرف دیکھو کہ اس سر درات میں عنسل جنابت کیلیج اٹھا ہے اسے میرے پروردگار ہونے کا یقین ہےتم کواہ ہو جاؤ کہ میں نے اسے بخش دیا''۔ (غنية الطالبين باب٥) عسل میں نتن فرض ہیں۔ان میں سے اگر کوئی ایک بھی فرض چھوٹ کیا تو چاہے سمندر میں بھی نہالیں تو بھی عشل نہ ہوگا اور اسلامی شریعت کے مطابق ناپاک

Marfat.com

ہی رہے گاغسل کے تین فرض یہ ہیں۔

JERTINE JERT TRITOR JE

غراره كرنا

منہ کھر کر غرارہ کرنا۔ اس طرح کہ حلق کا آخری حصہ وانتوں کی کھڑکیاں'
موڑے وغیرہ سب سے پانی بہہ جائے۔ وانتوں میں اگر کوئی چیز انکی ہوئی ہوتو اسے
نکالنا ضروری ہے اگر وہاں پانی ندلگا تو عشل نہ ہوگا۔ اگر روزہ ہوتو غرارہ نہ کرے
مرف کلی کرے کہ اگر غلطی ہے پانی حلق کے نیچے چلا گیا تو روزہ ٹوٹ جائے گا۔
مسئللہ کوئی فیض پان کھا وغیرہ کھا تا ہے اور چونا و کھا وانتوں کی جڑوں میں ایسا
جم گیا کہ اس کا چھڑا تا بہت زیادہ نقصان کا سب ہے تو معاف ہے اور اگر بغیر کی
نقصان کے چھڑا سکتا ہے تو چھڑا تا واجب ہے بغیراس کے چھڑا کے عشل نہ ہوگا۔
(فاوئی رضویہ جی سالطہارہ 'یاب النسل)

ناك ميں يانی ڈالنا

ناک کے آخری زم حصہ تک پانی پہنچانا فرض ہے تاک کی گندگی کو انگل سے اچھی طرح سے نکا کے گندگی کو انگل سے اچھی طرح سے نکا لئے پانی ان اس کی ہٹری تک لگنا چا ہے اور ناک میں پانی محسوس ہونے گئے۔

تمام بدن پریانی بہانا

تمام بدن پر پائی بہانا کہ بال برابر بھی بدن کا کوئی حصد سوکھا ندر ہے بغل ا ناف کان کے سوراخ وغیرہ تک پائی بہانا ضروری ہے۔

(بمارشر بعتج ا مح ۲ قانون شریعتج ۱)

عسل كرنے كاطريقه

عسل میں نیت کرنا سنت ہے اگر نہ بھی کی تب بھی غسل ہوجائے گا عسل کی

TORESTON TO THE TOTAL OF THE COST OF THE C نیت بیہ کے '' میں یاک ہونے اور نماز کے جائز ہونے کے واسطے خسل کرر ہاہوں ریا کررہی ہوں۔

نیت کے بعد پہلے دونوں ہاتھ گوں (کلائی) سمیت تین مرتبہ اچھی طرح دھوئے' پھرشرم گاہ اور اس کے اطراف کے حصوں کو دھوئے جا ہے دہاں گندگی لگی ہویا نہ لگی ہو۔ پھر بدن ہر جہاں جہاں گندگی ہوان جگہوں کو دھوئے۔اس کے بعد غرارہ کرے کہ یانی حلق کے آخری جھے دانتوں کی کھینڈوں مسوڑوں وغیرہ میں بہہ جائے' کوئی چیز دانتوں میں انکی ہوتو لکڑی وغیرہ سےاسے نکال لے پھر ماک میں یانی ڈالےاس طرح کہ پیشانی ہے لے کرٹھوڑی تک اورایک کان ہے دوسرے کان کی لو تک کچرتین مرتبه کہنیو ل سمیت ہاتھوں پر پانی بہائے پھر سر کامسے کرے جس طرح وضومیں کرتے ہیں۔اس کے بعد جدن پرتیل کی طرح یانی ملیں۔ پھرتین مرتبہ سر پر یانی ڈالیں پھر تین مرتبہ سید ھے موغات پراور تین مرتبہ باکیں موغات پرلوٹے یا مگ وغیرہ سے پانی ڈالےاورجسم کو ملتے بھی جائیں اس طرح کہ بدن کا کوئی حصہ سوکھا نہ رہے۔سرکے بالوں کی جڑوں بغل میں شرم گاہ اور اس کے آس پاس کے حصوں پر سب جگه پانی پہنٹی جائے۔ای طرح عورت اپنے کان کی بالیٰ ناک کی تھنی وغیرہ کو گھرا تھما کروہاں پانی پہنچائے۔مرکی جڑوں تک پانی ضرور پہنچے۔اب اسلامی شریعت کے مطابق آپ یاک ہوگئے۔آپ کاغشل صیح ہوگیا'اس کے بعد صابن وغیرہ جو بھی جا ئزچیز لگا نا مود ہ لگا سکتے ہیں۔آخر میں پیردھوکرا لگ ہو جا ئیں۔

(فآدي رضويه ٢٠ ص ١٨ بهارشر بعت ج ا ح٢ ص ١٨)

مسئله نہانے کے پانی میں بے وضو محض کا ہاتھ اُنگل ٹاخن یا بدن کا کوئی اور حصہ یانی میں بےدھوئے چلا گیا تووہ یانی عسل اوروضو کے لائق ندر ہا۔ای طرح جس شخص پڑشل فرض ہاس کے جم کا کوئی بھی حصہ بدوھوئے پانی سے چھوگیا تو وہ پانی خسل کے لائق نہیں۔اس لئے ٹاکے وغیرہ کا پانی جس میں گھر کے کی لوگوں کے ہاتھ بغیر

ای طرح غشل کرتے وقت بھی بیا حتیاط رکھیں کہ ڈپاک بدن سے پالی کے چھنے ٹینکی میں موجود پانی جس سے غشل کر دہا ہے اس میں جانے نہ پاکسی۔

(قانون شریعت ج۱)

مسئلہ ایسا حوش یا تالاب جو کم ہے کم دس ہاتھ لمبا' دس ہاتھ چوڑا (لیعنی کم از کم 10×10 کا) ہوتو اس کے پانی میں اگر ہاتھ یا نجاست چلے گئ تو وہ پانی نا پاک نہیں ہوگا' جب تک کہ اس کا رنگ یا مزہ یا اس کی بونہ بدل جائے۔اس ہے شسل اور وضو و جائز ہے۔ ہاں اگر نجاست اتنی چلے گئی کہ رنگ یا مزہ یا بو بدل گئی تو اس پانی سے وضو و شسل نہ ہوگا۔

مسئلہ منسل کرتے وقت قبلہ کی طرف رخ کر کے نہانا منع ہے۔ شسل خانے میں کہ سے مسئلہ منسل کرتے وقت قبلہ کی طرف رخ کر کے نہانا منع ہے۔ شسل خانے میں کہ سے سیالہ میں کہ سیالہ سیالہ کا سیالہ کا میں کہ سیالہ کی سیالہ کی طرف رخ کر کے نہانا منع ہے۔ شسل خانے میں کی سیالہ کی سیالہ کی سیالہ کا میں کی سیالہ کی سیالہ

مستعد المستعد المراد و المستعد المراد و المراد

هستله کی دار الله به این وقت فلمی گیت گاتے بین اور پیچوتو معاذ الله بے خیالی میں نعت وغیرہ کنگانے لگتے ہیں۔ یادر کھتے اوّل تو گانا گانا ہی جائز نبین پھرنہاتے وقت

TERESTOR SELECTION OF THE PROPERTY OF THE PROP

چاہے شل خانے میں نہار ہا ہویا اور کسی جگہ گیت 'گانا سخت نا جائز ہے۔ای طرح عسل كرتے وقت نعت شريف وغيره پڙهنا بھي سخت نا جا ئزوگناه ہے۔

مسئله کھ لوگ میڈی پہن کر سڑکوں کے کنارے سرکاری تل میں نہاتے ہیں ہے جائز نہیں۔ بلکہ پخت ناجائز وحرام وگناہ ہے۔ کیونکہ مردکومرد سے بھی گھننے سے ناف

تک کا حصہ چھیا نا فرض ہے۔ (قانون شریعت ج۱)

هسئله کچھ لوگ نایاک جیڈی یا کیڑا پہنے ہوئے بی عشل کرتے ہیں اور یہ بھتے ہیں كه نهانے ميں سب پچھ پاك ہوجائے گا يہ بيوتو في ہے۔اس سے تو گذگی پھيل كر پورے بدن کو نایاک کردیتی ہے اور دیسے بھی اس طریقے سے جڈی یاک نہیں تھی جائے گ' کیونکہ نایاک کپڑے کو تین باردھونا'اور ہر باراچھی طرح نچوڑ نا ضروری ہے (جس كابيان يمل كرر چكام) اس لئے يمل ماياك حدى يا كرد كوا تارليس ياك جڈی یا کیڑائی ہاندھ کرعشل کرے <u>ہ</u>

ناخن یالش ہونے برعسل نہ ہوگا

ا کثر عورتیں اپنے ہاتھ پاؤل کے ناخنوں پر اور پچھ مرد بھی اپنے ہاتھوں کے ناخنوں پر پاکش لگاتے ہیں۔ناخن پاکش میں اسپریٹ (شراب) ہوتا ہے جو کہ شریعت میں حرام ہے۔ مرزوں کیلیے تو بہت ہی زیادہ بخت حرام و گناہ ہے کہ بیر گورتوں سے مشابہت پیدا کرنا ہے۔ ناخنوں پر پالش ہونے کی وجہ سے عسل اور وضو کرتے وقت یا فی ناخوں پر نہیں لگتا بلکہ پالش پر لگ کر پھل جاتا ہے اور سرے سے بی عشل نہیں ہوتا۔ جب عسل ہی نہ ہوا تو تا یاک ہی رہااور تا یا کی کی حالت میں نماز پڑھی تو نماز نہ ہوگی اور جان بوجھ کرنا پاک رہنا سخت گناہ ہے۔اللہ نہ کرے اس حالت میں موت آ گئی تو اس کا دبال الگ اور نایا کی میں اکثر شریر جنات کا اثر ہوجا تا ہے۔اس لئے عورتوں کوچاہیے کہ ناخن پالش نہ لگا ئیں۔

THE THIS THE SEA (BIZUSE) SO

میاں بیوی کے حقوق

الله رب العزت ارشاد فرما تا ہے۔ (سورة البقره ۱۸۷) وي لياس لكم وانتم لياس لهن-(كنزالايمان) ترجمه وهتمهارى لباس بين اورتم ان كے لباس-ان قرآ فی الفاظ میں اپنی عورتوں کے ساتھ میل جول کی مہلت کا سبب بیان کیا میا ہے اوران کے ساتھ میل جول رکھ کراورا کھٹے رہ کرنج جانا بہت مشکل ہے۔ (سوال) عورت مرد کا اورم دعورت کالباس کیوں؟ (جواب کا ہے دونوں بوقت نیند بر ہنہ ہو کر ادر گلے لگ کرسوتے ہیں۔ ج٢) بوقت جماع ايك دوسر برمشمل مونے كى وجهدے۔ جس) یاس لئے کرایک دوسرے کا حال چھیاتے ہیں۔ ج ۲) یا ں لئے کہایک دوسرے کوغلط کاری سے بچاتے ہیں اور ایسی خرابوں سے ایک دوسرے کو محفوظ رکھتے ہیں جن کا صدوران سے نامناسب ہے۔ ے a) آیت کا مطلب سے ہے کہتم اپنی عورتوں کا سکون ہواور وہ تمہاراسکون ہیں اور بیجی مشاہدہ ہے کہ جتنا مردعورت کوآ پس میں سکون ملتا ہے ایک کسی اور شے سے انہیں سکون نصیب نہیں ہوتا بشرطیکہ ان کی آپس میں محبت اوراجیما سلوک ہوور نہ بناہ

شادي كاحكام (تفييرروح البيان سورة البقرة ١٨٧)

بخدا.

فائده

اس آیت کریمه میں اللہ تعالی نے کیا ہی خوب بہترین مثال کے ذریعے میاں

یوی کے ایک دوسرے پرحقوق کے متعلق اپنے بندوں کو سمجھایا ہے۔ لباس جہم کے عیوب کو چھیا تا ہے ای طرح بیوی اپنے شوہر کے عیوب کو اور شو ہرائی بیوی کے عیوب کو چھیانے والے بنیں۔ایک مہذب انسان بغیرلباس کے نہیں رہ سکتا ای طرح تدن یا فتہ مرد یا عورت بغیر نکاح کے نہیں رہ سکتے۔لباس کے میلے ہونے پر دھویا جاتا ہے ای طرح شوہراور بیوی غم و پریشانی کے موقع پر ایک دوسرے کا تعمل سہارا بنیں اورغموں کو دھو ڈالیس لیاس میں اگر کوئی معمولی سا داغ لگ بھی جائے تولیاس پھیکا نہیں جاتا بلکہ سے دھوکر صاف کرلیا جاتا ہے۔ای طرح میاں بیوی ایک دوسر سے کی چھوٹی موثی غلطیوں کومعاف کریں اور غلطیوں کے داغ کو معافیٰ کے یانی ہے دھوکرصاف کرلیں۔

5.....Q......



شوہر کے حقوق

بیوی کافرض ہے کہ اپنے شوہر کی عزت کا خیال رکھے اور اس کے اوب واحترام ہے کی قتم کی کوتا ہی نہ برتے اور زبان سے الی کوئی بات نہ نکالے جوشو ہر کی شان کے خلاف ہو۔

ام الموشین حفزت عائشہ صدیقه اور حفزت ابو جریرہ وٹی تھا سے روایت ہے کہ رسول الله مشج کی تارشاد فرمایا:

لو كنت امراحدان يسجل لاحدالامرت المراة ان تسجل لاوجها (ترقى جائباب ۸۸ عديث ۱۵۸۵) ترجمه اگر ميس كى كوكسى كيلئے مجده كا تكم ديتا تو عورتوں كو تكم ديتا كه اپنے شو ہركو مجده

فائده

اس حدیث شریف ہے دوبا تیں معلوم ہوئی۔ ایک تو بید کہ خدا کے سواکس کیلئے سجدہ کرنا جا ئزنہیں اور دوسری بات بیہ معلوم ہوئی کہ شوہر کا درجدا تنا بلند ہے کہ تخلوق میں اگر کسی کیلئے سجدہ کرنا جائز ہوتا تو عورت کو تکم دیا جاتا کہ وہ اپنے شوم کو تجدہ کرے۔

TERESTER SELECTION OF THE PROPERTY OF THE PROP

ایک دوسرے کے حقوق کی رعایت

علامہ اسلیل حتی بیلطیخیہ فرماتے ہیں زوجیت کے مقاصد ناکمل رہتے ہیں جب تک کہ ہر دونوں ایک دوسرے کے حقوق کی رعایت نہ کریں اور ہر دونوں کو خیال رہے کہ ہم نے ایک دوسرے کے احوال کی اصلاح کرنی ہے مثلاً (۱) طلب النسل (۲) تربیت اولا د (۳) ہر دونوں کے معاشرہ کی اصلاح کا خیال (۴) گھر کی تفاظت ۵) گھر کی چیزوں کی انچھی تدبیر بنانا (۲) ایک دومرے کے معاملات بجھداری ہے سلجھاناای طرح وہ جملہ امور جونثر عامتحن اور عادت کے موافق ہیں۔

(تغييرروح البيان سورة بقرة ٢٢٨)

بہترین عورت کی پہیان

ایک فخص نے صورا کرم مطبقی اسے دریافت کیا کہ

''بہترین عورت کی بچیان کیا ہے''؟حضور مطبح کیا نے ارشاد فرمایا

''التی تطیعه اذا امو _ لیخی جو گورت اینے شو ہر کی عزت و فرمانبر دار کی کرے''۔

(نىائىچىئىسىسەس)

عورت کا فرخن ہے کہاسے شوہر کی خدمت سے سی قتم کی کوتا ہی نہ برتے بلکہ

زندگی کے ہرموڑ پرنہایت ہی خندہ پیشانی سے شو ہر کی خدمت کر کے اپنی وفاداری کا

عملی ثبوت دے۔ یہاں تک کہ اگر شو ہرا پئی مورت کو کسی ایسے کا م کا تھم دے جواس کو

بے کا رونضول محسوں ہوتب بھی عورت کا فرض ہے کہ شو ہر کے حکم کی تغیل کرے۔ ام المومنین حضرت میمونه زلالعها سے روایت ہے کہ حضور اقدس مطفاتین نے

ارشادفر مایا که

''میری امت میں سب سے بہتر وہ تورتیں ہیں جواپئے شو ہر کے ساتھ اچھا

سلوک کرتی ہیں۔ایی عورت کوا سے ایک ہزار شہیدوں کا اواب ملتا ہے جو خدا کی راہ ملک کے جو خدا کی راہ میں مرکز میں میں مرکز میں میں مرکز میں میں مرکز میں ہے جو خدا کی راہ میں میں مرکز میں ہے ہم کوروں پر ایک فضیلت رکھتی ہے جیسے جھے (لیمی حضور مرکز کی کام پر فضیلت حاصل ہے'۔

فضیلت رکھتی ہے جیسے جھے (لیمی حضور مرکز کی کام پر فضیلت حاصل ہے'۔

(فنیة الطالیس باب ۵)

رسول الله طلفي عَلَيْمُ كاعورتوں سے خطاب

حضور نی کریم مضطَقِع نے فرمایا اے عورتوں کی جماعت اللہ سے ڈرتی رہواور اپ خاوندوں کی رضاجوئی کرو۔ اگر عورت کو معلوم ہوتا کہ اس کے خاوند کا کیا حق ہے تووہ (خدمت کے انتظار میں) کھڑی رہتی جب تک کدوہ صح اور شام کے کھانے سے فارغ ندموجائے۔
(طبر ان المجم الکبیر برقم ۳۳۳)

امام عبدالرزان بزاراورطبرانی نے حضرت ابن عباس دولت سوروایت نقل کی ہور ہو ہوں کے دولت میں برد ہوں کے دولت استفاقی ہوں ہے کہ ایک عورت حضور نبی کریم مستفیقی ہی کہ کہ کا کندہ میں ماضر ہوئی عرض کی یارسول اللہ مستفیقی ہیں آپ کی خدمت میں عورتوں کی نمائندہ بن کرحاضر ہوئی ہوں۔ جہاد اللہ مستفیقی ہیں آپ میں آپ ہوں ہوئی ہوں۔ جہاد اللہ تعالی نے مردوں پرفرض کیا ہے آگر دہ کی کوئل کریں تو آئیس او آب ملتا ہے۔ اگر انہیں قبل کیا جائے تو تب بھی دہ زندہ ہوتے ہیں اللہ تعالی کے ہاں آئیس رزق دیا جاتا ہے۔ ہم عورتیں ان کی خدمت میں گئی، ہتی ہیں ہمارا کیاا جراور حق ہے؟ نبی کریم مستفیقی ہے۔ ہم عورتیں ان کی خدمت میں گئی، ہتی ہیں ہمارا کیاا جراور حق ہے؟ نبی کریم مستفیقی ہے۔ نبی کریم مستفیق ہوں کے دیا کہ خاوند کی ابنا عت اور اس کا حق اس کو پہنچا تا اس کو پرنجا تا کہ کو کردوں کو پرند کی کو کردوں کو کردوں کے کہنگر کی کردوں کو کردوں کو کردوں کی کو کردوں کے کردوں کردوں کی کردوں کو کردوں کی کردوں کو کردوں کو کردوں کی کردوں کی کردوں کی کردوں کو کردوں کردوں کردوں کردوں کردوں کی کردوں کردوں کردوں کی کردوں کردوں

رسول الله ملطيقاتي كى بيني كونفيحت

الم يهي والسلم في عضرت زيد بن البت والله الما يهي وايت كيا بك ني كريم

PECTY TO THE SERVE (BILLISH)

مِشْغُلَقِيَّا نِے اپنی صاحبز ادی سے فرمایا پیٹک میں نفرت کرتا ہوں کہ عورت اینے خاوند کی شکایت کرنے والی ہو۔امام بیریق نے حضرت حسن سے روایت کیا ہے کہ بی کریم مُنْظِيَاتِيَا نِهِ حَفرت عَثَانِ مُنْاتُنُهُ كَي يَوِي سِيغِر ما يا السِيمِي كَلَى مِردَى كُونَى بيوي نہيں جو خاوند کی خواہش کو پورانہ کرنے اور خاوند کے منہ پراس کی ندمت کرے اگر چہ خاوند اسے تھم دے کہ وہ جبل اسود سے جبل احمر کی طرف منتقل ہویا جبل احمر سے جبل اسود کی طرف منتقل ہوا پنے خاوند کی رضاحیا ہا کرو۔ (تغییر درمنثور مترجم ج ۲۰ ۲۳۲)

خاوندكي اطاعت يروالدكي مغفرت

امام عکیم ترندی نوادرالاصول میں حضرت انس زائٹیز سے روایت نقل کی ہے کہ ا یک شخص جہاد کیلئے گیا اس نے اپنی بیوی ہے کہاتم نیچے نہاتر نا اس عورت کا والدینچے ر بهنا تها أس كاوالد بيار بو كيا_اس عور من في رسول الله مطيعة لم كلرف پيغام بهيجا_ آ پ کو بتائے اورمشورہ لے۔حضور منطقاتیا نے اس عورت کو پیغام بھیجا اللہ سے ڈرو اوراپنے خاوند کی اطاعت کرو پھراس کا باپ فوت ہو گیااس نے رسول اللہ مطبّع ہیں آ خرد سين اورمشوره كيلئے پيام بھيجاتب بھي رسول الله منظيمين نے اى تتم كاپيام بھيجا۔ ر سول الله مِنْ يَعْتِيَا اللهِ يَسْعُ مِنْ اللهِ عَلَى اللهِ عَلَى اللهِ عَلَى اللهِ اللهِ عَلَيْهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ عَلَيْهِ اللهِ الله کہ اللہ تعالیٰ نے تیری خاوند کی اطاعت کی مجہ سے تیرے باپ کو بخش ویا۔ (نوادرالاصول)

یوم قیا مت نماز کے بعد خاوند کے متعلق سوال

حضرت کعب رخالفیهٔ فرماتے ہیں۔

" قیامت کے روز عورت سے پہلے نماز کے متعلق یو چھا جائے گا اور پھراس کے بعد خاوند کے حقوق کے متعلق سوال ہوگا''۔ (حنبيهالغافلين)

المرك العام المحالا المحالا

عورت کی دعا کی قبولیت کب؟

حضرت سیدنا امام حسن زائشیز روایت کرتے ہیں که رسول اکرم مطفی قیم نے

ارشادفر مایا:

" کوئی عورت اینے خاوند کے گھرہے بھاگ نطیقو اس کی نماز قبول نہیں ہوتی اورعورت جب نماز پڑھے گرایئے خاوند کیلئے دعا نہ کرے تواسکی دعا مردود ہوتی ہے''۔ (تنبيهالغافلين)

شوہر کی ناشکری کفرہے

حضرت ابوسعيد زائش سے رویت ہے کہ حضور مشکر آیا نے ارشاد فر مایا:

(بخاري ج ا ا با ا ا مديث ٢٨) كغران العشير كفر دون كفر فيه شوہر کی ناشکری کرنا ایک طرح کا کفر ہے اور ایک کفر دوسرے سے کم ہمہ"

جہنم میں سب سے زیادہ عورتیں

حضرت عبدالله بن عباس وفاتنه سے روایت ہے که رسول الله ملت وات ہے ارشا دفر مایا که

د مجھے دوز خ دکھائی گئی میں نے وہاں عورتوں کوزیادہ پایا وجدیہ ہے کہ وہ کش كرتى بين' _محابيرام فكأنذم نے عرض كيا۔ "كيا وہ اللہ كے ساتھ كفر كرتى "ين' ارشاد فرمایا دونہیں! وہ شوہر کی ناشکری کرتی ہیں (جوکہ ایک طرح کا کفر ہے) اور احسان نہیں مانتین اگر تو تھی عورت ہے عمر بھراحسان اور نیکی کاسلوک کریے لیکن ایک بات بھی خلاف طبیعت ہوجائے تو حجٹ کہددے گی میں نے تجھے سے بھی آ رام اور (بخارى ج ا'ياب ۲۱ ٔ مديث ۲۸) سکون نہی یایا''۔

THE THE SECTION OF TH

نظررحمت سيمحروم عورت

حدیث میں ہے رسول اللہ مشکر آئے ارشاد فرمایا اللہ تعالی اس عورت پر نظر رحمت نہیں فرما تا جواپنے شوہر کاشکر ادائہیں کرتی حالانکہ وہ اپنے شوہر سے بے نیاز بھی نہیں۔ نہیں۔

شرک کے بعد بڑا گناہ

حفزت عمر نظائفۂ سے دوایت ہے کہ حضورا کرم منتی آئے ارشاد فر مایا: '' کیاتم کوئیس معلوم کہ عورت کیلئے شرک کے بعد سب سے بیزا گناہ شوہر کی '' ''

نافر مانی ہے'۔ البنداعور تو آب کو چاہیے کہ اپنے شوہر کی تافر مانی اور ناشکری نہ کر ہے' ورنہ پھرجہنم کے عذاب کیلئے تیار ہے۔عورت اگر ٹیرچاہتی ہے کہ شوہر کو اپنا گرویدہ بنائے رکھے تو اس کی خدمت میں کوتا ہی نہ کرے اس کی پر خلوص خدمتوں کو دیکھ کر شوہر خود ہی اس کا گرویدہ ہوجائے گا۔

خدااور فرشتول كى لعنت

حضرت الوجريره فرالتي سروايت بكرسول مقبول مطيعية في ارشادفر مايا: " مشوجرا پني بيوى كوجس وقت بستر پر بلائه اوروه آف سے الكار كر دے تو اس مورت برغدا كے فرشتے صبح تك لعنت كرتے دہتے ہيں" ۔

(يخاري جس وريث ١٤٨ مسلم ج١)

ایک روایت میں ہے کہ

'' جب شو ہرا پی حاجت کیلئے ہوی کو بلائے تو ہوی اگر روٹی پکار ہی ہوتو اس کو لازم ہے کہ سب کام چھوڑ کرشو ہرکے پاس حاضر ہوجائے''۔ (ترندی ج) مدیث ۱۱۵۹)



حضرت ابو مريره وفائلو سے روايت بے كدرسول الله طفي والم في فرمايا:

حق الزوج على المرأة ان لا تمنعه وان كانت على قتب-

(ابوطیای بحوالهالانصاح فی احادیث النکاح)

ترجمہ عورت پرخاوند کا بیرت ہے کہ وہ اس کو ندرو کے اگر چیدوہ کجاوے کے پالا ن برجھی کیوں ندہو۔

طیالی میں اس مدیث کے بعد بیالفاظ بھی ہیں

اورخاوند کے گھرے اس کی اجازت کے بغیر کی کو پکھیند کے آگراس نے پکھ
دیا تو خاوند کو تو اب ہوگا اوراس کو گناہ ہوگا اور بیاس کی اجازت کے بغیر نفلی روزہ بھی نہ
ریما گراس نے اپیا کیا اس کو گناہ ہوگا تو اب نہیں ملے گا اوراس کے گھر ہے بھی اس
کی اجازت کے بغیر نہ نکلے اگر اس نے اپیا کیا تو اس پرعذاب اور رحمت کے فرشتے
لمنت کریں مجتم کہ واپس لوٹ آئے عرض کیا گیا اگر چہ خاوند ظالم ہو؟ فر مایا اگر چہ
ظالم ہو۔

خاوند کا ھکوہ کرنے والی

حضرت امسلمه وظلحها سے روایت ہے کدرسول الله مطبط آیا نے فرمایا کہ

اني لا بغض المرأة تخرج من بيتها تجرديلها تشكو زوجها

(رواه طبرانی)

ترجمہ میں اس عورت کونا پیند کرتا ہوں جوا پے گھرے لکے اورا پی چا در کو تھییٹ رہی ہواورا ہے خاوند کا شکوہ کررہی ہو۔

مرد کی کمرتو ڑنے والی بیوی

حضرت فضاله بن عبيد زالته سروايت ب كه ني كريم مطيع الآي في ارشاد فرمايا

The root of the contraction of t كەنتىن غورتىل مصيبتول مىل سے يىل چھرآپ مىشائىجانے نے اس غورت كا بھى ذكركيا كە جب اس کے پاس ہوتو وہ مجھے اذبت دے اور جب تو اس سے غائب ہوتو تیری خانت کرے_ ابک اور روایت میں ہے۔ تین کر کے منے تو ڑنے والی چیزوں سے پناہ مانگو پھرآپ مطاق آیا نے بُری عورت کوشار کیا (جومردکو) بڑھایے سے پہلے پہلے بوڑھا کردیتی ہے(یعنی غموں اور ہریثانیوں میں مبتلا کر ہے) شو ہر کاحق ادانہیں ہوسکتا ام المومنين حفزت عا كشهضد يقه وفاشحا سے مروى ہے كہ '' حضورا كزم مِشْنِطَةِ إِنَّ كَي حَدِمت مِن اليك جوان عورت حاضر ہوئي اورعرض كيا-' يارسول الله مَطْعَلَقِيمَ إلى جوان عورت مول مجھے نكاح كيليے پيغام آتے ہيں مگر میں شادی کو پُر سجھتی ہوں۔ آپ جھے بتائیے بیوی پر شو ہر کے کیا حقوق ہیں؟''نی كريم مِنْ اللَّهِ فَيْ ارشاد فرمايا_''اگر شو مركى چوفى سے ايوى تك پيپ بواور وہ اسے زبان سے جائے تو بھی شوہر کاحق ادانہیں کریائے گی''۔اس مورت نے عرض کیا۔ میں بھلائی ہے''۔ (تنبيه الغافلين مكاشفة القلوب بإب٩٥)

افسوں آج کل کی زیادہ ترعور تیں اپنے شوہروں کو کر ابھلا کہتی اور گالیاں دیتی بیں ۔ پچھ بے باک بے شرم عور تیں اپنے شوہروں کو مارنے سے بھی ٹمیں چو کی اور پچھ عیاش برچلن عور تیں اپنے پیار شوہر کو گھر پر چھوڈ کر دوسرے مردوں کے ساتھ رنگ رلیاں منانے میں مست رہتی ہیں۔ خدارا الی عور تیں ہوش میں آئیں اپنے شوہر کے مرتبے کو پیچانیں اور اس

TELLOS TO THE TOTAL STATE OF THE TOTAL STATE OF THE TENERS OF THE TENERS

د نیا میں تھوڑی کامتی رنگ رلیوں اور تھوڑے سے جھوٹے مزے کی خاطر ہمیشہ ہمیشہ رہنے والی آخرت کی زندگی کو تباہ و ہر باد نہ کریں۔

جنتى عورت

ام بیمق نے حضرت این عباس زباتی سردایت کرتے ہیں کہ نبی کریم میں تعلق الم بیمق نے حضرت این عباس زباتی سے داراے میں نہ بتاؤں (عرض کیا گیا ضرور)
فرمایا (ا) نبی جنت میں ہوں گے (۲) صدیق جنت میں ہوں گے (۳) شہید جنت میں ہوں گے (۳) شہید جنت میں ہوں گے (۳) شہید جنت میں ہوگا (۵) ایسافخص جواللہ تعالیٰ کی رضا کی خاطر شہر کی ایسا طرف رہنے والے ہوائی سے ملاقات کوجائے وہ بھی جنت میں ہوگا (۱) تہاری ایک طرف رہنے میں ہوں گی جو خاوند سے مجت کرنے والی ہوں جب خاونداس پر نارض ہوت نہ ہوت کی یہاں تک کہ تو راضی ہوجائے۔ (محب الایمان ج ہیں اس دقت نہ سووں گی یہاں تک کہ تو راضی ہوجائے۔ (محب الایمان ج ہیں اس دقت نہ ام امر این ابن شید عالم اور بیمق نے حضرت ام سلمہ وٹاٹھیا سے روایت نقل کی ہے جبکہ حاکم نے اسے صحیح قرار دیا ہے کہ رسول اللہ میں تھا ہو این اور این عورت کی ہے۔ کہ کہ حاکم نے اسے صحیح قرار دیا ہے کہ رسول اللہ میں واضی ہوجائے گی۔ کہ جبکہ حاکم نے اسے صحیح قرار دیا ہے کہ رسول اللہ میں واضی ہوجائے گی۔ کہ جبکہ حاکم نے اسے میں واضی ہوتو وہ جنت میں داخل ہوجائے گی۔ (متدرک حاکم ج ہی برقم ۱۲۳۸)

ا مام احمد أين جريرا ورتيبيق في حضرت الوامامه ذائشتن سے روايت كيا ہے كہ ايک عورت حضور منظم اللہ اس كے ساتھ تھا۔ رسول عورت حضور منظم آلئے نے فرمایا حمل اٹھا فی والمیاں نیچ جننے والمیاں رحم کرنے والمیاں اگر وہ نہ ہوجو بیا ہے خاوندوں کے ساتھ کرتی ہیں تو ان میں ہے نماز پڑھنے والمیاں جنت میں داخل ہوجا نمیں۔

(تفیر درمنورج ۲۲ م

The ror The section of the section o

تيراخاوند جنت بھی اور جہنم بھی

ابن سعد ابن الى شير به حاكم اور بيهي في حضرت حسين بن محسن بر مطيخ كواسطه

سے روایت نقل کی ہے کہ جھے میری چھوٹی نے بتایا کہ میں رسول اللہ مطابقات کی بارگاہ میں ایک کام کیلئے آئی۔ آپ نے فرمایا اے حورت تیرا خاوند ہے؟ میں نے عرض کی

یں ایک کام سینے ایں۔ آپ نے فرمایا اے حورت تیرا خاد ند ہے؟ میں نے عرض کی ہاں۔ فرمایا تیرااس کے ساتھ کیا سلوک ہے؟ میں نے عرض کی میں اس کی ضرورت پوری کرنے میں کوئی کر نہیں چھوڑتی مگروہ جو کرنے سے عاجز ہوں۔ فرمایا خیال رکھنا کہ وہ تیری جنت اور جہنم ہے۔

(متدرك ماكمج ٢ برقم ٢٧١)

عورت كاجهاد

حضور نی کریم مطفقی اے فرمایا کہ

جهاد المرأة حسن البتعل (تغيرروح البران مورة بقره ٢٢٨)

ترجمه عورت كاجهاديه بكروه ايخ خاوند كے حقوق ميں چو بند ہو۔

بیوی کوتا بعدار بنانے کاعمل

0...0...0



بیوی کے حقوق

جس طرح بیوی پر لازم ہے کہ شوہر کے حقوق ادا کرے ای طرح شوہر پر بھی فرض ہے کہ بیوی کے حقوق ادا کرنے میں کی قتم کی کوتا ہی نہ کرے۔ اللہ رب العزت ارشاد فرما تا ہے۔ و عَاشِد و هِنَ بِالْمُعِدُو فِيهِ (سورة النہ اوا) ترجمہ اوران سے (عور توں سے) اچھا برتا و کرو۔ (گزالا یمان)

شوہر پر بیوی کی جوذ مدداریاں عائد ہیں ان سب بیں ایک بردی ذ مدداری ہیہ مجھ ہے کہ وہ بیوی کامہرادا کرے۔

حضور منطقين نے ارشادفر مايا:

" نكاح كى شرط لينى مهرادا كرنے كاسب سے زيادہ خيال ركھؤ"۔

(بخاری ج۳'باب۱۸' مدیث ۱۳۷)

یوی کا مہر شو ہر کے ذمدادا کرنا واجب اور ضروری ہے اگر اس کے ادا کرنے میں کوتا ہی ہوگی تو قیامت کے روز سخت گرفت اور سزا ہوگی ۔ شو ہر کا اپنی بیوی کوستانا، گالیاں دینا اور اس پرظلم وزیادتی کر تا پوترین گناہ ہے۔

رسول الله مصليكاتي في ارشاد فرمايا:

عورتول کے متعلق رسول اللہ ملطنظ قلیم کی مردوں کونفیحت

حضرت جابر بنائفو سے روایت ہے کدرسول الله مضاعی تے ارشاد فرمایا:

ايما امرأة سالت زوجها اطلاق من غيرباس نعليها حرام رائحة الجنة اوميكم بالنساء خيرا فانهن او عوان عنل كو

(ابوداؤد كتاب المناسك ابن ملجه برقم ٣٠٨٣)

ترجمہ جوعورت بغیر کی تکلیف کے اپنے خادند سے طلاق کا مطالبہ کرتی ہے اس پر جنت کی خوشبوحرام ہے۔ میں مردوں کوعورتوں سے خیرخواہی کا حکم دیتا ہوں کیونکہ سے

تمہارے پاس مددگار کے طور پر ہوتی ہیں۔ امام مسلم نے حضرت جابر پخاتیو سے جمۃ الوداع کے متعلق ایک طویل حدیث

میان کی کہاس میں ہے کہ عورتوں کے متعلق اللہ سے ڈرو کے کوئکہ تم نے ان کواللہ کی میان کی کہاس میں ہے کہ عورتوں کے متعلق اللہ سے ڈرو کے کوئکہ تم نے ان کواللہ کی امانت ہیں اس لئے امانت کے طور پر حاصل کیا ہے (یعنی ہویاں تبہارے یاس اللہ کی امانت ہیں اس لئے

ا است سے سور پرھا کی ایا ہے و ۔ فی ہویاں مہارے پاس القدق امانت ہیں اس نے ان پرظلم اور زیادتی نہ کرنا) *

عورتوں کی لغزشیں نہ ڈھونڈ و

حضرت جابر بڑائنئز سے روایت ہے کہ رسول اللہ منطقیکی آپنے عورتوں کی خوامخواہ لغزشیں اور کوتا ہیاں ڈھونڈنے سے منع فر مایا ہے۔

. (الطمر اني بحوالهالا فصاح في احاديث النكاح)

عورتول پرشک نه کرو

حضرت جابر بن عليك وفالله سے روایت ہے كدرسول الله مضافقيا في ارشاد

فرمايا:



غيرة يبغضها الله وهي غيرة الرجل على اهله من غير ريبه (ايوداوديقم ٢٥٣٣ما الخيلء)

ر جمہ وہ غیرت جواللہ کوئیں بھاتی اس آ دمی کی غیرت ہے جو بغیر کسی شک کے یوی پرشک کرتا ہے۔

فائده

آج کل بیروباءعام ہے کہ معمولی باتوں پرعورت پرشک کیا جاتا ہے اوراس کا نتیجہ بیہ ہوتا ہے یا بیر خود کشی کر لیتی ہے بیٹیہ بیوں طلاق کا مطالبہ کرتی یا شیکے چلی جاتی ہے یا چھرخود کشی کر دیا بعد میں خود چند ماہ قبل اخبار میں آیا کہ مرد سے ستائی عورت نے پہلے بچوں کو ذرج کر دیا بعد میں خود این زندگی کا خاتمہ کر دیا۔

بیوی ہے حسن سلوک کرو

حضرت انس بن ما لک بڑائنؤ ہے روایت ہے کہ حضور منظ کو آئے ہے ارشاد فر مایا:
'' وہ فخص کامل ایمان والا ہے جوا پٹی بیوی کے ساتھ حسن سلوک میں اچھا ہے
اور میں تم سب میں اپٹی بیویوں کے ساتھ سب سے بہتر سلوک کرنے والا ہوں''۔

(تر ذری ج انہا ہے 2014 عدیدے 1811 عبر الفافلین)

خيركم خيركم لاهله وانا خيركم لاهلي-

(ترندي ج اين اجه مديث ٢٠١٧)

ترجمہ من میں وہ بہتر ہے جواپی بیوی کے ساتھ بہتر ہے اور میں اپنی بیویوں کے ساتھ تم سب سے بہتر ہوں۔

TERE TOT THE TENE OF (LEIL UIL) TO شو ہر کو جا ہے کہ اپنی بیوی کے ساتھ خوش مزاتی نرمی اور مہر یانی ہے پیش آئے اوراینے پیارے نی کے فرمان پڑمل کرے۔ موجودہ دوریس دیکھا بہ جا رہا ہے کہ مردحفرات با ہرتو چو ہا بنے پھرتے ہیں کیکن گھر آتے ہی شیر کی طرح دھاڑنا شروع کر دیتے ہیں اور بے وجہ بیوی پر رعب جھاڑتے رہتے ہیں۔ بیوی سے ہمیشہ مجبت کاسلوک رکھے۔ ہاں اگروہ نا فر مانی کرے ياجا ئزحكم نه مانے تواس پر نارافعگی كااظہار كرسكتے ہیں _ عورت كامرديرحق حضرت معاویہ بن جیرہ ذبالٹو سے روایت ہے کدرسول اللہ مطبیع کی خدمت یں عرض کیا عمیا یارسول اللہ مطبط کا تجارت کا مرد پر کیا حق ہے۔ فر مایا جب خود کھائے تو اس کو بھی کھلائے اور جب خود سیٹے تو اس کو بھی بہنائے اوراس کے چیرے کا عیب نہ نکالے اور زیادہ نہ پیٹے اور گھرنے با ہر قطع تعلق نہ کرے۔ فائده

آج کل تو عورتوں کے حقوق کا خیال نہیں رکھا جاتا اور اس کوطرح طرح کے طعنه دیئے جاتے ہیں بھی بدصورتی کا طعنہ بھی غربی کا طعنہ وغیرہ یہاں تک جانوروں کی طرح مارا جاتا ہے اور مجھی مجھی عورتوں کوتل بھی کر دیا جاتا ہے جبیبا کہ ٹی وی اور اخبارات میں اکٹر خبریں آتی ہیں۔

عورت کے خاوندیریا کچ حقوق

امام ابواللیث سمر قندگی مختصلیہ فرماتے ہیں کہ خاوند پر عورت کے پاپچ قتم کے حقوق لازم ہیں۔ يدكه كحرس بابرال كے كام كاح سنوار سے اور اسے كھرس بابر نہ جانے

TO THE THE TENT OF THE TOP

دے ند کہ وہ عورت ہے جس کا بلاوجہ لکانا گناہ اور بے مروتی ہے۔

۲) بیک نماز ٔ روزه وغیره احکام کے متعلق بقدر ضرورت مسائل اسے کھائے اور اسے گھرے باہر نہ جانے دے۔

میں پکھلایاجائےگا۔ ۴) ہے کہ اس برکوئی ظلم نہ کرے کہ دواس کے یاس امانت ہے۔

۵) یہ کہ دوہ اگراس پر پچھزیادتی بھی کر بیٹھے تو محض اس کی ہمدردی میں اسے

برداشت کرے کہ کہیں اس سے بڑھ کرکوئی بات نہ کر بیٹھے۔ (عبیالفافلین)

اور یہ بات بھی خاوند کے اخلاقی فرائض میں شامل ہے کہ اگر عورت بیار ہو جائے تو اس کی تیار داری میں ہر گر کوئی کوتا ہی نہ کرے بلکہ اپنی دلداری و دلجوئی اور بھاگ دوڑ ہے عورت کے دل پر نقش بھا دے کہ میرے شوہر کو جھے سے بے حد عجب ہے۔ اس کا نتیجہ میہ وگا کہ عورت شوہر کے اس احسان کو یا در کھے گی اور وہ شوہر کی خدمت گذاری میں اپنی جان اڑا دے گی۔ خدمت گذاری میں اپنی جان اڑا دے گی۔

بیوی کی بدمزاجی پرصبروجل

اگر ہوی کے کسی قول فعل بدگوئی بداخلاقی سخت مزاجی زبان درازی وغیرہ سے شو ہرکو بھی بھی اذیت اور تکلیف پہنچ جائے تو شو ہر کو چاہیے کہ صبر وقمل اور برداشت سے کام لے کیونکہ مورتوں کا میڑھا پن ایک فطری چیز ہے۔

حضرت ابو ہریرہ وٹائٹیزے روایت ہے کے حضور مطبع کاتیا نے ارشا دفر مایا کہ

استوصوا بالنساء خيرا قان المرأة خلقت من ضلع وان اعوج ما في الفلع اعلاه فان ذهيت تقيمه كسرته وان تركته لم يزل الموج فاستوصوا بالنسام

پہلی کا اوپر والاحصہ زیادہ ٹیڑھا ہوتا ہے لیں اگر اسے سیدھا کرتا چا ہوتو تو ڑ دو گے اور اگر (اپنے حال پر) چھوڑ دو گے تو ہمیشہ ٹیڑھار ہے گا کہل عورتوں سے اچھاسلوک کرو۔

فائده

میاں بیوی کی از دوا جی زندگی کا جب آغاز ہوتا ہے تو بیوی بعض اوقات گریلو نشیب و فراز کو بچھ نہیں پاتی اور بیوی کی بعض با تیں مرد کو نا گوار محسوں ہوتی ہیں لیکن جوں جوں وقت گذرتا ہے بچھدار عورتیں اپنی عادتوں کو خاوند کے مطابق تبدیل کر لیتی ہیں جس سے گھر کا نظام پرسکون ہوجا تا ہے اگر الیا نہ ہوتو مرد کو عورتوں کی عادتوں پر مسلسل صرکرنا چا ہے تا کہ اللہ تعالی کوئی بہتر صورت پیدا کروے۔

جنتی حوروں کی بددعا

خاوندکوستانا زبان درازی کرنا کئی عورتوں کا وطیرہ بن چکا ہے مگریٹہیں سوچتی اس طرح سے گھریلوحالات خراب ہوجاتے ہیں اور جس کا زیادہ اثر بچوں پر پڑتا ہے اس لئے عورت کی اس بات کوحضور نہی کریم مشفیکی آنے ناپند کیا ہے۔

حضرت معاذبن جبل والنيز سے روایت ہے کدرسول الله منظور تے ارشاد

فرمایا جب کوئی عورت اپنے خاوند کو تکلیف پہنچاتی ہے تو حوروں میں سے اس کی بیوی کہتی ہے اسے تکلیف شدد سے اللہ تھے ہلاک کرے کیونکہ یہ تیرے پاس چندروز کیلئے ہے عنقریب یہ تھے چھوڑ کر ہمارے پاس آجائے گا۔ (ابن ماہیہ)

بیوی کی بدمزاجی پرصبر کااجر

حضرت میمونه و ناتیجاے روایت ہے کہ حضور نبی کریم منتی کی آنے فرمایا کہ میری امت کے مردول میں سے سب سے زیادہ افضل وہ مرد ہے جوا پنی بیوی کے ساتھ اچھا سلوک کرتا ہے اور اے دین قیمین کرتا ہے اور خوف دلاتا ہے اور کورت سے دکھاور اؤیت ملنے پر مبر کرتا ہے جو خض عورت کے دکھ پیچانے پر مبر کرے گا تو اللہ تعالیٰ کی بارگاہ میں اسے یوم آخرت نمازی کا مرتبہ عطام وگا۔ (میاں بیوی سے حقوق)

عورت اپن زبان درازی سے بچے

حضور نی کریم مضطیح نے ایک زبان درازعورت کوزبان درازی ترک کرنے کی یوری ترغیب دی۔

حضرت ابو ہر یہ و فاتنو سے دوایت ہے کہ ایک شخص بارگاہ نبوی ہیں عرض گذار ہوا یارسول اللہ مطبق قال عورت کا بہت نمازیں پڑھنے دوزے رکھنے اور خیرات کرنے کا جہ چاہے گروہ اپنی زبان سے اپنے ہمسائے کو تکلیف دیتی ہے۔ آپ نے فرمایا کہ وہ جہنی ہے عرض کیا فلال عورت کم روزے دکھئے کم صدقد کرے اور کم نمازیں پڑھنے ہیں مشہور ہے وہ پنیر کے فکڑے خیرات کرتی ہے لیکن زبان سے اپنے ہمسائے کو تکلیف نہیں دیتی آپ نے فرمایا وہ جنتی ہے۔

واحمہ بیس دیتی آپ نے فرمایا وہ جنتی ہے۔

جب ہمسائے وتکلیف دیتے اور زبان درازی کرنے پرتمام اعمال غارت ہوگئے جب ہمسائے وتکلیف دیتے اور زبان درازی کرنے پرتمام اعمال غارت ہوگئے

جب بمسامیکو تکلیف دیے اور زبان درازی کرنے پرتمام اعمال غار تو جو بیوی مردکوئر ابھلا کہے گی اور زبان درازی کرے تو اس کا حشر کیا ہوگا۔

حكايت

سکتے ہیں ایک شخص حضرت عمر زبائٹن کے پاس اپنی بیوی کی شکایت لے کرحاضر ہوا۔ دروازے پر پہنچا تھا تو اندر سے حضرت عمر زبائٹن کی بیوی حضرت ام کلثوم زبائٹھا کی کچھ تیز کلامی محسوس ہوئی تو اپنے دل میں بیسوچ کراوشنے لگا کہ میس تو اپنی بیوی کی شکایت لے کرآیا تھا اور یہاں تو خود ہی وہی قصہ ہے۔ حضرت عمر زبائٹنڈ نے اے واپس بلاکر بوچھا تو کہنے لگا میں بیارادہ لے کرآیا تھا کہ اپنی بیوی کا شکوہ آپ سے کروں مگر

TERCETTO TO THE SECOND OF THE آپ کے گھر کامعاملہ معلوم ہوا تو ہیں واپس جار ہاہوں۔

حفرت عمر نٹائٹو نے فرمایا میرے ذمداس کے پچھتقوق ہیں جس کی دجہ ہے میں درگذر کرتا ہوں ایک توبید کہ وہ میرے اور جہنم کے درمیان آ ڈے کہ اس کی وجہ ہے میرا دل حرام سے بچار ہتا ہے دوسرا ہیر کہ میں باہر چلا جاتا ہوں تو وہ میرے مال و متاع کی رکھوالی کرتی ہے تیسرا ہید کہ وہ میرے کپڑے دھوتی ہے۔ چوتھا یہ کہ وہ میری اولاد کی پرورش اور تربیت کرتی ہے یا نچویں بیا کہ وہ میرا کھانا ایکاتی ہے بیان کروہ فخض کہنے لگا پیسب فوائدتو مجھے بھی حاصل ہیں لہٰذا جس طرح آپ اپنی بیوی ہے درگذر

کرتے ہیں تواب میں بھی ایسا ہی کروں گا۔

حكايت

جب شیخ بوعلی سینا ' حضرت ا بوالحن خرقانی وطنطیعہ کی شہرت سے متاثر ہو کر بغرض ملاقات خرقان میں آپ کے گھر پہنچ اور آپ کی بیوی سے پوچھا کہ شخ کہاں ہیں تو بوی نے جواب دیاتم ایک زندیق اور کا ذب کوشخ کہتے ہو مجھے معلوم نہیں کہ شخ کہاں ہیں البتہ میرے شوہرتو جنگل سے لکڑیاں لانے گئے ہیں۔ بین کریٹنخ ہوعلی سینا کوخیال آیا کہ جنب آپ کی بیوی ہی اس نتم کی گتاخی کرتی ہے تو نہ معلوم آپ کا مرتبه کیا ہے کو میں نے تو آپ کی تعریف کی ہے لیکن ایبامحسوں ہوتا ہے کہ آپ بہت ادنیٰ درجہ کے عام انسان ہیں۔ جب یوعلی سینا آپ کی جبتو میں جنگل کی جانب روانہ ہوئے تو دیکھا کہ آپ شیر کی کمر پرلکڑیاں لادے ہوئے تشریف لا رہے ہیں۔ یہ معاملہ د کی کرشیخ بوعلی سینا کو بہت جیرت ہوئی اور قدم بوس ہوکر عرض کیا کہ اللہ تعالیٰ نے تو آپ کوالیا بلندمقام عطا فرمایا ہے اور آپ کی بیوی آپ کے متعلق بہت یُری باتیں كتى بين آخراس كى وجد كيا ہے؟ آپ نے جواب ديا كداگر ميں الى بكرى كا بوجھ برداشت نەكرسكول تۇ پھرىيىشىر مىرابو جەكىيےا تھاسكتا ہے۔ THE PAINT TO THE SEC (KIZUIT)

(تذكرة الاولياءمترجم ١٤٣ مطبوعة قادري رضوي كتب خاندلا مور)

بیوی کو مجھانے کا طریقہ

سیدناغوث اعظم مُولِمُونُ "غذیة الطالبین" میں اور امام محدغز الی مِراضید " کیمیائے سعادت" میں فرماتے ہیں۔

''اگر بیوی شوہر کی اطاعت نہ کرنے قوشوہر نری و محبت سے مجھا بجھا کراپئی اطاعت کہ دولے آگراس کے بعد بھی نہ مانے توشوہر غصہ کرے اورائے ڈانٹ ڈپٹ کر سمجھائے۔ اگر بھر بھی نہ مانے تو سونے کے وقت اس کی طرف پیٹھ کر کے سوئے۔ اگر اس پر بھی نہ مانے تو پھر تین را تیں اس سے الگ سوئے۔ اگر ان تمام باتوں سے بھی نہ مانے اورا پٹی ہٹ دھری پراڑی رہے تواسے مارے گرمنہ پر نہ مارے اور نہ بی اسٹے نزور سے مارے کہ رخی ہوجائے۔ اگر ان سب سے بھی فائدہ نہ ہوتو پھر ایک مہینے تک ناراض رہے۔ (پھر بھی پچھ بات نہ ہے تواب ایک طلاق دے)

(غنية الطالبين باب٥ كيميائ سعادت)

اگر کسی مخفس کی دو بیویاں یا اس سے زیادہ ہوں تو سب کے ساتھ برابری کا سلوک رکھے کھانے پینے اڑھنے کپڑے وغیرہ۔سب میں انساف سے کام لے ہر بیوی کے پاس برابر برابر دوت گزارے ادراس کیلئے ان کی باری مقرر کر لے۔

حضرت ابو مرمره وفاضح سروايت م كدرسول الله مطفي وقي في ارشاد فرمايا:

اذا كانت عندالرجل امراتان فلم يعدل بينهما جاء يوم القيمة اقط (ترفري المدت ١٤٢٤ الاين بين ااحاء العلوم ٢)

ترجمہ جب کس کے نکاح میں دو ہویاں ہواور وہ ایک ہی کی طرف مائل ہوتو وہ

قیامت کےدن جبآئے گا تواس کا آ دھادھر گراہواہوگا۔

Q....Q....Q

JERCHAL SECTION OF LRICAIL DE

بيوى كانان نفقه

کھانے پینے اور پہننے میں برابری

حکیم بن معادیہ سے روایت ہے کہ رسول اللہ منتیکا آبا نے ارشاد فر مایا کہ ایک فخض نے حضور نبی کریم منتیکا آبا سے دریافت کیا بیوی کاحق خاوند پر کیا ہے۔ آپ منتیکا آنے فرمایا جیسا تو کھائے ویسا سے کھلائے جیسا خود پہنے دیسا اسے پہنائے اور اس کے منہ پر نہ مارے اوراس کوئم انہ کہا در گھر علاوہ تنہا نہ چھوڑے۔ (ابن ماہہ)

فائده

اس حدیث سےمعلوم ہوتا ہے کہجس حیثیت کا کھانا خودمر دکھائے اور جس

حیات کالباس خود پہنے اور جیسی رہائش میں وہ خود رہتا ہواس طرح کا بیوی کیلئے بھی دیثیت کالباس خود پہنے اور جیسی رہائش میں وہ خود رہتا ہواس طرح کا بیوی کیلئے بھی از ظام کرے اور خرچ کرنے میں تجوی نہ کرے اور صدے زیادہ بھی نہ بڑھے کیونکہ

فنول فرجی اسراف میں شائل ہے بلک اعتدال کے طریقہ برچلنا جا ہے۔

بیوی کے خرچہ میں فراخی کا اجر

حضور نی کریم منطق آنے ارشاد فرمایا جو خص اپنی یوی کے نفقہ میں فراخی کرتا ہاللہ تعالی اس کو قیامت کے دن غنی کردےگا اور جنت میں حضرت ابراہیم مَلَیْطِ کی رفاقت عطافر مائےگا۔
(بخاری)

فائده

ام غزالی عطیلی فرماتے ہیں کہ بیوی بچوں کا فکر کرنا اوران کے راحت وآرام کیلیے جدوجبد کرنا راہ خدامیں جہاد کرنے کے برابر ہے۔ حلال رزق کیلیے کوشش کرنا اوردین کی طرف رہنمائی کرنا ہرشو ہر برفرض ہے۔ (احیاء العلوم ۲۰)

حضرت ابو ہریرہ ڈٹائٹو سے روایت ہے کدرسول اللہ مطفظ آئے نے ارشاد فرمایا کہایک دیناروہ ہے جستم اللہ کی آراؤ کی خرج بڑرتے ہو۔ ایک دیناروہ ہے جس کوتم غلام پرخرج کرتے ہو۔ ایک دینا دوہ ہے جس کوتم مسکین پرصدقہ کرتے ہواور ایک دیناروہ ہے جس کوتم اپنے بیوی پچل پرٹرج کرتے ہوان میں سب سے زیادہ اجراس دینار پر سلے گا۔ جس کوتم اپنے الل پرخرج کرتے ہوا

ای طرح ایک اور حدیث پاک میں فرماتے ہیں آقا میں اللہ ہے کہ وحتی اپنے بیوی بچوں پرخرج کرےگالیں وہ صدقہ ہے اللہ کے ہاں اے اس کا اجر ملے گا یقیناوہ



خاوند کے مال سے کھانے کاحق

بقد رضرورت خاوند کے مال سے عورت کیلئے کھالینا جائز ہے اس سلسلہ میں

ابک مدیث ہے۔

حفرت عا نَشْرَصد يقد وْتَاشْجَابِيان كرتَّى بين كدرسول الله مِشْيَاتَيْرَا كَي خدمت مين حضرت ابوسفیان کی بیوی ہندہ آئی اور کہنے گئے ابوسفیان تنجوں آ دمی ہے اگر میں ان کے مال سے پچھرقم لے کر (یعنی انہیں بتائے بغیر بچوں پر فرج کروں تو کوئی حرج تو نہیں؟ آپ مطبع کی خامایا گر ضرورت کے مطابق مال نے کرخرچ کر لوتو کوئی حرج نہیں ہے۔

(بخاری)

بخل كاندمث.

مال کے ہوتے ہوئے بیوی کیلئے خرچ کرنے میں بخل کرنااچھانہیں حضورا کرم مطفی نے اس کی خدمت کی ہے۔

ردایت ہے کدایک مرتبہ بارگاہ نبوی مطابقات میں ایک عورت آئی اورعوض کی

يار سول الله مطنعَة تتم بمراشو هر مجھے ہے بہت کِل کرتا ہے جتی کہ آٹا گوند ھنے تک کو برتن نہیں ديتااوريس كوني كسب اور منرجهي نبيس جانتي جس سيما پناخرج الحالول - بيرس كررسول الله

فرشتوں کی دعا

حضرت ابو ہریرہ فٹائند سے روایت ہے کہ حضور نبی کریم مضافی آ نے فرمایا:

ما من يومريهج العبادنيه الامكان نيز دان نيقول احدهما اللهم اعط منفقا خلقا ويقول الاخر اللهم اعط ممسكا تلفأ (بخاری مسلم)

ر بردوز ہوت می دوفر شے اتر تے ہیں ان میں سے ایک کہتا ہے اے اللہ

ترجمہ ہرروز پونت مجمج دوفر شختے اترتے ہیں ان میں سے ایک کہتا ہے اے اللہ خرچ کرنے والے کوفتم البدل عطا فرما۔ دوسرا کہتا ہے اے اللہ روکنے والے کا مال ضائع فرما۔

نفقه کی مقدار (مسائل)

حصرت امام قرطبی عملت فرماتے ہیں عورت کا جونفقہ مرد کے ذمہ ہے وہ صرف تین چیزیں ہیں (۱) طعام (۲) قیام گاہ (۳) لباس۔اس سے زائد جو پھی شوہرا پی بیوی کو دیتا ہے یااس برخرج کرتا ہے وہ ہدردی اوراحیان ہے۔

بعض علاء کرام فرماتے ہیں کہ نفقہ کی مقدار دونوں کی معاشی حالت پرتی ہے اگر دونوں مل معاشی حالت پرتی ہے اگر دونوں مال دار ہیں تو نفقہ ال داروں کی طرح ہوگا اورا گر دونوں خریب ہیں تو نفقہ غریبانہ ہوگا اورا گریوی غریبانہ حیثیت کے کواپی حالت کے مطابق خرچہ دے اگر غریب ہے تو پھر اپنی غریبانہ حیثیت کے مطابق خرچہ دے اگر غریب ہے تو پھر اپنی غریبانہ حیثیت کے مطابق خرچہ دے۔

اگرمیاں ہوی میں نفقہ کے متعلق اختلاف ہوجائے ہوی زیادہ خرج کا مطالبہ کرتی ہوا دوخرج کا مطالبہ کرتی ہواورخاوند دیا الل نہ ہوتو خاوند کی بات معتبر تصور ہوگی اگر خاوند مال دار ہو کی خرج کرنے میں بخیل ہوجس سے ہوی کی ضروریات پوری نہ ہوتی ہوں تو عورت محمر کیا تا خرج کر سکتی ہے جواس کی ذاتی کفالت کیلئے ضروری ہو۔

امام ابو بوسف وعطیجے سے لوگوں نے پوچھا کہ سال بھر میں عورت کیلئے کتی دفعہ کر ابنا کردینالازم ہے۔ امام ابو بوسف عطیتے نے فرمایا کہ غریب کیلئے تین دفعہ اورامیرکیلئے جارمرتبداور سے ہیں ہے کہ جب بوسیدہ ہوجائے اور بنائے اور کپڑ اورمیانی درجہ کا ہونہ بی بہت زیادہ عمدہ اور نہ بہت ہاریک اور نہ بہت موٹا۔ (فآوئ عالمکیری)

THE THE SEE THE CHILLIST

مردکے ذمہ اخراجات کیوں؟

امام ابن مندرو ابن البي حاتم اور بيه في في شعب الايمان مين حضرت ابن عباس ر فالله سے روایت نقل کی ہے کہ مورت کو مردسے پیدا کیا گیا اس کی ضرورت بھی مردول میں رکھ دی گئی ہے۔ پس عورتوں کا خیال رکھو۔ مردکوز مین سے پیدا کیا گیا ہے اس کی ضرورت زمین میں رکھ دی گئی ہے۔ (تفيردرمنثورمترجم ج٢ص ٣٢٠)



بیوی کے غلام

اس زمانے میں اکثر دیکھا جارہا ہے کہ مردا پٹی بیوی سے اپنی اطاعت نہیں کرواتا بلکہ اس کی اطاعت نہیں کرواتا بلکہ اس کی اطاعت کرتا ہے۔ پچھ مرد بیوی کی غلامی کرتا پٹی شان بچھتے ہیں اور اپنی اس غلامی کا تذکرہ بھی وہ بڑے پر جوش انداز شرا پے دوستوں میں کرتے ہوئے نظر آتے ہیں۔ پچھ تواس قدرا پٹی بیوی سے خوف زدہ در ہتے ہیں کہ اگر وہ ججتم عام میں انہیں ڈانٹ بھی دے تو سر جھکائے سننے میں ہی وہ اپنی عافیت بجھتے ہیں۔ رب تیارک وتعالی ارشاد فرماتا ہے۔ اگر جال قدامون علی البیساء (سورۃ النہ اس سامہ الرّجمہ مردافسر ہے ورتوں پر۔ (کنزالایمان)

بدبخت

رسول الله مطفعة قيل ارشاد فرمات جين -

تعس عبدالزوجقد لینی بوی کاغلام بد بخت ہے۔ (کیمیائے سعادت) امام غزالی مخطی فرماتے ہیں۔

''بزرگول نے فرمایا ہے عورتوں ہے مشورہ کرولیکن عمل اس کے خلاف کرو''۔ (لیعنی ضرودی نہیں کہ عورت کے ہرمشورے رعمل کیا جائے) (کیمیائے سعادت)

جور نادی کا مطبع جہنی ہے۔ بیوی کا مطبع جہنی ہے

امام خزالی بھل ہے" احیاءالعلوم" میں نقل فرماتے ہیں کہ

" حضرت حسن بقری مسطیع فرماتے ہیں جو خض اپنی بدی کا مطبع بنارے کہ

ده جوچاہے دی کرے تو اللہ تعالی اسے دوزخ میں اوندھا گرادے گا''۔

(احياءالعلوم ٢٥)

صدافسوں! آج کل لوگ عورت کے بہکاوے میں آخر خلاف شریعت کام تک کر لیتے ہیں کچھ تو عورت کے اس قدرغلام بن جاتے ہیں کہ یوی کے کہنے پراپنے

مال باپ تک کوچھوڑ دیتے ہیں لیکن بیوی کی غلامی نہیں چھوڑ سکتے۔اگر گھر میں کسی معالم میں نظامی معالم کا معالم

معالمے میں نتازع ہو جائے تو بیوی کو سمجھانے کی بجائے الٹا اپنے ہی ماں باپ کو جھڑکتے ہیں اور اپنی آخرت کی بر بادی کا سامان اپنے ہاتھوں اکٹھا کرتے ہیں۔ یاد

ر کھئے! بھلے بی بیوی تاراض ہوجائے لیکن ماں باپ تاراض شہونے پائیں۔ بیوی تو

زندگی میں سینظووں مل سکتی ہیں لیکن ماں باپ دوبار وہبیں مل سکتے _

عورتول كى تابعدار مين تبايى دارتطنى ندردايت كياب

وار ن مدروايت ليائي -لايزال الرجال بخير ما لع يطيعوا النساء

لایزال الرجال ہخیر مالعہ یطیعوا النساء (ابولیم صلیۃ الاولیاءج9) ترجمہ مرداس وقت تک خیریں رہیں گے جب تک عورتوں کی تابعداری نہیں _____

کریں گے۔

والدين كااحر ام كرو

حضرت ابوامامہ ڈٹائنڈ سے روایت ہے کہ حضور مطنے کو آپ نے ارشا دفر مایا:

هماجنتك ونارك (اين بليزج ٢ إب ٢٢١ مديث ١٣٥١)

TENTON TO

ترجمه مال باب تیری جنت بھی ہیں اور دوزخ بھی۔

اس حدیث کا مطلب میہ ہے کہ تو اسپنے والدین کی فرما نبرواری کرے گا تو جنت میں جائے گا اور نا فرمانی کرے گا تو دوزخ میں جا کرمزا پائے گا۔

اورمزيدفرماتيس مارك بيارك مية والي قافظ والم

'' خداشرک اور کفر کے علاوہ جس گناہ کو چاہے بخش دے گا مگر ماں باپ کی نافر مانی کونییں بخشے گا۔ بلکہ موت سے پہلے دنیا میں بھی سزادے گا''۔(بیبی شریف) لہذامال باپ کی فرما نبردار کوہی ہمیشہ اہمیت دے۔ عورت کا بھی فرض ہے کہ وہ

مہداہ ل باپ ل مراہ ہر اردوں ہیں۔ ہیت دے۔ ورت ہیں سے ادوں اپ ساس سرکواپنے ماں باپ کی طرح ہی سمجھاوران سے حسن سلوک کرے ساتھ ہی مرد پر بھی ذمہ داری ہے کہ وہ اپنی بیوی سے اپنے ماں باپ کی اطاعت کروائے۔

والدين سے محبت حج وعمرہ كا ثواب

حضرت عبدالله ابن عباس فن الله سے روایت ہے کدرسول الله مصفی آیا نے ارشاد فرمایا:

ما من ولد باینظر الی والدید نظرة رحمة الا کتب الله له بکل نظرة حجة میرودة (این مکلو قریم است ۱۳۵۵) حجة میرودة و برا میرودة و برا ارائ کا این مال باپی طرف مجت کی نظر سے دیکھتا ہے تو الله تعالی اس کیلئے برنظر کے بدلے ایک فی مقبول کا او اب لکستا ہے صحابہ کرام نے عرض کیا ایول الله میروزان سوجی کا تو اب میرا دیکھیے تو کیا اس کوروزان سوجی کا تو اب ملم است سرکا دیا ہے تو کیا اس کوروزان سوجی کا تو اب ملم است سرکا دیا ہے تو کیا تا درا اور استاد فرا بالے بال ایکٹر سرکا دیا ہے تو کیا تا کو استاد فرا بالے بال ایکٹر میرا ہے اس کو یہ استاد کیا ہے کی میرا ہے اس کو یہ استاد کیا ہے کی میرا ہے اس کو یہ استاد کیا ہے کی میرا ہے اس کو یہ استاد کیا ہے کی میرا ہے ہے اس کو یہ استاد کیا ہے کی میرا ہے کیا ہے کیا ہے کیا ہے کی میرا ہے کیا ہے کی میرا ہے کیا ہے کیا ہے کیا ہے کی میرا ہے کیا ہے کی میرا ہے کیا ہے کیا ہے کیا ہے کیا ہے کیا ہے کی میرا ہے کیا ہ



The fire of the grant of the year

بى ايف فلمول كے نقصانات

ہمارا اور آپ کا مشاہرہ ہے کہ آج کل بعض لوگ سیس کی معلومات کیلئے بلیو
قلمیں ویکھتے ہیں۔ بالخصوص نو جوان لڑک۔ کچھ بیوقوف شب زفاف کے روز اپنی
ہیوی کو خاص طور پر بلیوفلمیں وکھاتے ہیں تا کہ عورت بھی جس طرح فلم میں وکھایا گیا
ہے اسی طرح ان سے بیش آئے۔ اور میہ خورت بھی ہروہ کام اور طریقہ اپنانے کی کوشش
کرتے ہیں جوفلم میں ہوتا ہے۔ چا ہے اس میں گفتی ہی تکلیف و پریشانی کیوں نہ ہو۔
آپ کو معلوم ہونا چا ہیے کسی بھی مشکل سے مشکل کام کوفلمایا جانا الگ بات ہے اور اس
کوشیقت میں کرلینا اور بات ہے۔ بلیوفلمیں تو سراسر آئھوں کی عیاش اور دھوکے
کے سوا کچھ نہیں۔ آخ تقریباً ہر مسلمان میہ جان ہے کہ اسلام میں میہ سب حرام و گناہ
ہے۔ لیکن پرواہ کے ہے۔

فلموں میں دیکھ کراس کی باتوں کو سیکھ کرعمل کرنا ایابی ہے جیسے کی فلم میں ہیرو کوموٹر سائنگل اس طرح چلاتے ہوئے دکھایا جائے کہ ہیروسر کوں سے ہوتے ہوئے موٹر سائنگل اچھال اچھال کرلوگوں کی بلڈنگوں اور مکانوں کی چھت پر چلار ہا ہے۔ بھی اس بلڈنگ پر تو بھی اس بلڈنگ پر۔ اس منظر کوکسی ہوتو ف نے ویکھا اور اس طرح کرنے کیلئے اس نے موٹر سائنگل اپنے گھر کی چھت پر کھڑی کرے شروع کی اور کی دبا حرات ادی کے افکام کی کے ساتھ چھوڑ دیا۔ ایسے بیوتو ف مخص کا جو حال ہوگا وہی حال اس کھنے ہوگا وہی حال اس کھنے کہ اس کھنے کے ساتھ چھوڑ دیا۔ ایسے بیوتو ف مخص کا ہوتا ہے جو بلیوفلمیں دیکھا اور اس پرعمل کرتا ہے۔ ایسا مخض غیرت اور مردا گئی کی اور نجی چھت سے بے حیائی اور نامردی کے ایسے گڑھے میں گرتا ہے جس سے نطاز ندگی بحر مشکل ہوتا ہے۔

بدنگائ اوربے پردگ کا وبال

آج کل نوجوانوں میں طرح طرح کی بُرائیاں جنم لے چکی ہیں۔جس کی سب سے بڑی وجہ دین کی تعلیم سے دوری ہے۔ اس کے علاوہ فلمیں دیکھنے کا فیشن کخش ناول وگندی تضاویر سے پرمیگزینیں پڑھنے کا عام چلن اور بالخصوص عورتوں اور کنواری لڑکیوں کا بے بردہ فیشن کر کے سڑکوں برکھلے عام گھومنا۔ جیسی برائیاں ہیں۔

آج کے موڈرن نو جوان غیر عورتوں کو دیکھنے چھونے اور چھیڑ چھاڑ کرنے جیسے گناہوں کو گناہ ہی نہیں سیحتے بلکہ اسے فیشن اور موڈرن گچر کا نام دے کر معمولی بات سیحتے ہیں گویا وہ آتکھوں کے ذریعے بات سیحتے ہیں گویا وہ آتکھوں کے ذریعے اپنا مادہ منوبیائر کی کے پیٹ میں ہی ڈال دیں گے۔موجودہ دور کی اکثر فیشن پرست لڑکیاں بھی کسی طرح لڑکوں سے کم نہیں۔وہ لڑکوں کو ایسا گھورتی ہیں گویا وہ آتکھوں آتکھوں بی سے حاملہ ہونا چا ہتی ہیں۔ کچھٹو جوان تو پیشہ ورعورتوں کے پاس جانے گھر بھی کوئی شرم دحیاء تک محسول نہیں کرتے بلکہ اسے مردانگی کا شہوت سیحتے ہیں۔اور جوشن سیسب نہیں کرتا وہ ان عمیاشوں کی نظر میں بیوتو ف بردل نامرداور نہ جانے کیا ہے جو جوا تا ہے۔

فرمان خداوندي

دیکھوہمارارب تارک وتعالیٰ ارشادفر ما تا ہے۔

THE SEAL LANGUIT وَلَا تَقْرَبُوا الْغُواحِشَ مَاظَهُرَ مِنْهَا وَمَا بَطَنْ _ (سورة انعام ۱۵۲) اوربے حیائیوں کے پاس نہ جاؤجوان میں کھلی ہیں اور جوچھی _ (كنزالايمان) اورارشادفرما تاہے بروردگارعالم عزوجل_ قُلْ لِلْمُومِنِينَ يَغَضُوا مِنْ أَبْصَادِهِمْ وَيَحْفَظُوا وُودْجَهُمْ ذَلِكَ أَرْكَى لُهُ مُ إِنَّ اللَّهَ عَبِيرٌ بِمَا يَصْنَعُونَ وَقُلْ لِّلْمُؤْمِنْتِ يَغْضُضَنَ مِنْ أَبْصَارِهِنّ لِدِيْنَ زِيَّنَتُهُنَّ إِلَّا مَا ظَهَرَمِنْهَا وَلَيضْرِبْنَ بِخُمُرِهِنَّ عَلَى جُمُوْبِهِنَّ وَلاَ يُبْدِينَ زِينَتُهِنَّ إِلَّا لِبُعُوْلِتِهِنَّ _ مُسلمان مردوں کو تھم دواپنی نگاہیں جبھے نیچی رکھیں اوراپی شرم گاہوں کی حفاظت کریں۔ بیان کیلئے بہت تھرا ہے'۔ بیٹک اللہ کوان کے کاموں کی خبر ہے' اور

مسلمان عورتوں کو تکم دوا پنی تگاہیں کچھ ٹیٹی رکھیں اور پارسائی کی حفاظت کریں اوراپنا بناؤ ندد کھا ئیں مگر جتنا خود ہی طاہر ہے اور ڈو پے اپنے گریبانوں پر ڈالےرہیں اور اپناسنگار طاہر نہ کریں مگراپئے شوہروں پر۔
(کٹرالایمان)

اس آیت کریمہ الله رب العزت نے صاف صاف تھم دیا ہے کہ مردا پی نگاہیں پنجی رکھیں لینی بدزگاہی سے بچیں اورا پی شرم گاہوں کی حفاظت کریں لیمی زنا

لا ئیں چیں ریں۔ میں بدنوا میں سے پیس اوران پی سرم کا ہوں میں تعاظمت کریں۔ می زیا کی طرف نہ جا کیں۔ اس طرح اللہ تعالیٰ عورتوں کو بھی تھم فرماتا ہے کہ وہ اپنی نگامیں ٹیجی رکھیں' اپنا بناؤ سنگارا ہے شوہر کیلئے ہی کرے غیر مردوں کیلئے نہیں اور سینے وسر پر

ڈویٹے ڈالےرہیں۔

کیکن آج معاملہ ہی الٹا نظر آ رہاہے اکثر عورتیں گھر میں تو گندی پیٹھی رہتی ہیں کیکن جب با ہر لکانا ہوتا ہے تو خوب بن سنور کر نگتی ہیں گویا گندی ان کے اپنے شوہر کیلئے اور سنگار صفائی غیر مردوں کیلئے۔

TELLIZITY OF THE LEILUID YOU

عورت كاايخ خاوند كيلتے بناؤ سنگار كرنا اجرعظيم ہے

حدیث پاک میں سرکار دوعالم منظر آنے عورتوں کو گھر میں پاک وصاف اور سنگار کر کے رہنے کا تھ دیا تا کہ ان کے شوہرا نبی سے رغبت رکھے اور غیرعورتوں کی طرف نہ جائے۔

اعلیٰ حفرت امام احمد رضا خال بریلوی <u>مختص</u>له اپنی تصنیف' محرفان شریعت'' میں نقل فرماتے ہیں۔

(عرفان شريعت ج أمسكه 2 م 19 م)

اسلام نے عورتوں کو سجنے سنورنے ہے بھی منع نہیں کیا بلکہ سجنے سنورنے ' سنگار کرنے کا تھم دیا ہے۔ یہاں تک کہ کٹوار کی لڑکیوں کوزیورولیاس سے آراستہ رکھنا TERETIFICATION OF THE PROPERTY اسامة جارية نكسوته وحليته حتى لفقه

(امام احمرُ ابن ماجهُ بحواله عرفان شريعت ج ا مسئله 2 ع ١٩)

غرض کہ اسلام عورتوں کے فیشن یا سنگار کے خلاف نہیں بلکہ وہ بے بردگی و بیودگی کے خلاف ہے۔اے میری بیاری بہنوں!یا در کھواسلام تہیں فیشن کرنے سیخے

سنورنے سے نہیں رو کتا بلکہ وہ صرف اور صرف بیرچا ہتا ہے کہ اگرتم شادی شدہ ہوتو ا پے شو ہر کیلئے سنگار کرو کہ ان ہی کاتم پر حق ہے نہ کہ غیر مردوں کیلئے۔اسلام تمہاری

ہی عزت وآ بروکی حفاظت وفلاح کیلئے تم سے صرف بیمطالبہ کرتا ہے کہ تم مگر پر ہی تظهري رمونسر كول بإزارول باغول ميل تحيلول اورسينما گھروں ميں اٹھلاتی بل کھاتی پھر کراپیخ حسن کونمائش کا ذریعہ نہ بناؤ۔ ،

عورت زینت کے اعضاء کئی پر ظاہر نہ کرے

امام ابواللیث بھر شکیے نے فرمایا کہ مورتوں پر لازم ہے کہ وہ اپنی زینت کے اعضاءکسی پرظاہر نہ ہونے دے وہ اعضاء یہ ہیں (۱) سینہ (۲) پنڈلی (۳) بازو (۴) سر(۵)سینداس کئے کدوہ ہار پہننے کا مقام ہاور پنڈلی یازیب کا اور بازوکٹکن کا اور سرتاج کا۔ (تغييرروح البيان سورة نوراس)

عورت جب باہر نکلتی ہے تو شیطان جما نکتا ہے

سنوہ ارے پیارے رحمت والے آقا عظیمی آپیار شاوفر ماتے ہیں۔

المراة عورة فاذا خرجت استشهرفها الشيطان

(ترندی ج ا کیاب ۴۹۷ صدیث ۱۱۷۳)

ترجمه عورت عودت بيعني چمپاني جيز ب جب وه با برنكل بي تواس شيطان

THE STATE OF THE SECTION OF

حھا نگ کردیکھتاہے۔

فائده

بدنگای میں مر داور عورتیں دونوں قصور داریں اور گناہ میں برابر کے حق دار۔ م داس طرح کہ وہ ان سے بدنگاہی کرتے ہیں' انہیں چھٹرتے ہیں اورعورتیں اس طرح كدوه بروه مركول بر كط عام ثقتي بين تاكيمر دانبين ديكهين _

بے بردہ عورتوں براللہ کی لعنت

مدنی سرکار مطبّعیّن ارشادفرماتے ہیں۔

(مفکلوة 'ج۲' جديث ۲۹۹۱)

لعن الله الناظر والمنظور اليد ترجمه هجس غیرعورت کوجان بو جھ کردیکھا جائے ادر جوعورت اپنے کوجان بوجھ کر غيرم دوں کودکھائے'اس مرداورعورت پراللہ کی لعنت۔

لوگوں کودکھانے کیلئے بناؤ سنگھار کرنے کا وہال

حضرت ميمونه بنت سعد وذاللي اروايت كرتى جي كدرسول الله نے ارشا دفر مايا:

مثل الرفلة في الزينة في غير اهلها كمثل ظلمة يوم القيمة لانورلها-

(ترندي ج أباب ١٩١١ عديث ١١٢١)

ایے شوہر کے سواد دمرل کیلئے زینت کے ساتھ دامن گھٹنتے ہوئے اتراکر چلنے والی عورت قیامت کے اندھیروں کی طرح ہے جس میں کوئی روشنی نہیں۔

حضرت ابوموی اشعری والله سے روایت ہے کہ حضور مطیقات نے ارشادفر مایا:

ايما امراة استعطرت فمرت على قوم ليجد وامن ريحها فهي زانية

(ترفذي ج٢ باب٢٠ صديث ١٨٩ من ٢٨١ ابوداؤدج ٢٠ باب٢ ١٢ صديث ١٧١ من ٢١٠٠ نسائي ج٣ كتاب الزنيص ٣٩٨)

شر شادی کے انظام کی کھی ہے گئی ہے تا کہ انہیں خوشبو کی کو اور ترجمہ بنب کوئی عورت خوشبو لگا کر لوگوں میں لگلتی ہے تا کہ انہیں خوشبو پہنچ تو وہ عورت زانیہ (زنا کرنے والی بیشرور) ہے۔

. غیرمرد کے ساتھ تیسر اشیطان

فرماتے ہیں مارے بیارے آقا مطاقیۃ

لايجلون رجل بأمراة الاكان فالثهما الشيطان

(ترخدی ج ا باب ۹۴ کے حدیث اسال)

ترجمہ جب غیرمرداورغیرعورت تنہائی میں کی جگدا یک ساتھ ہوتے ہیں تو ان میں تیسراشیطان ہوتا ہے۔

حفرت جابر فالنفز سروايت بي كمني كريم مطاع أن فرمايا:

لاتلجو على المفهبات فان الشيطان يجرى من احد كم مجرى (تذى ع) باب 49كمديث ١١٢١)

ترجمه جن عورتوں کے خاوئد موجود نہ ہوں ان کے پاس نہ جاؤ کیوں کہ شیطان

تبداری رگول میں خون کی طرح ڈورتا ہے۔ تبداری رگول میں خون کی طرح ڈورتا ہے۔

د يورموت ہے

حضرت عقبد بن عامر رفائق سروايت بكدرنى تاجدارسيد عالم مطيعية

نے ارشاد فرمایا:

اياكم والدخول على النساء فقال رجل يارسول الله افرايت الحمو؟ قال الحمه المدت.

(بخاری ۳۰ مدیث ۲۱۷ تر ندی ج ا^م مدیث ۱۱۷۱ مشکلو ۳ مت^{۱۲} مدیث ۲۹۲۸)

ترجمه "جناغيرعورت كے پاس جانے سے برميز كرؤ" ايك محالى نے عرض كيا۔

المرابط المرا

"پارسول الله طیخ آد بور کے بارے یس کیاارشاد ہے"؟ فرمایا۔" دیورتو موت ہے"۔

اب آپ خود بی اعدازہ لگا ہے جب دیور کے سامنے بھی گی بھا بھی کو آنے سے ممانعت کی گئی اور حتی کہ اے موت کے مثل بتایا گیا تو پھر بتا ہے دوستوں کی بیویوں کومنہ بولی بھا بھی بنا کران سے بنی غداق کرنا شادی بیاہ بیں اور دیگر تقاریب بین غیر مردوں کا عورتوں کے سامنے آنا اور عورتوں کا غیر محرم مردوں کے سامنے بے جاب آنا بات چیت کرنا اور یکی نیس بلکہ انہیں چھوٹا ان سے بنی غداق کرنا کس قدر خطرناک ہوگا۔ تجربہ شاہر ہے کہ کچھلوگوں نے دوستوں کی بیویوں کو بھا بھی۔ بھا بھی کہ کریارااورموقع ملنے پر پھر بھا بھی ہے بھا بھی

للبندا مردوں پرضروری ہے کہ وہ اپنی عورتوں کو پردہ کروا کیں اوراپنے دوستوں کے سامنے بھی بے ججاب آنے سے منع کریں اوراسی طرح ماں باپ کے بھی فر مہداری ہے کہ وہ اپنی جوان کنواری لڑکیوں کو پردہ کروائیں اور بلاضرورت بازاروں' تفریح گاہوں اور سینما پالوں میں جانے سے روکیس۔

نابیناسے پردہ کا حکم

حضرت ام سلمه وظافعنا فرماتی ہیں۔

"أيك دن ايك بايما صحابي سركاردوعالم مطيئة آن كى بارگاه ميس طفي كيليئ تشريف لائ الدين الدي

(الدواؤدج٣ ٔ حديث الكرّر ندى ج٢ مديث ٢٨)

اب ذرااندازہ لگاہے جب نابیتا ہے بھی سرکاردوعالم منظ کرتے نے اپنی از واخ مطہرات جن کے بارے بیل قرآن کریم کا اعلان ہے کہ ٹی کی بیویاں تمام مسلمانوں

TORELYZA TORONOMICA (BIZUIT)

کی مائیں ہیں ان سے بھی پردہ کروایا تو کیا آج کی ان عورتوں کو پردہ کرنا ضروری نہ ہوگا؟ یقیناً ضروری ہوگا! اور اگر عورتیں اس کیلئے تیار نہیں تو جہم کے شدید نا قائل برداشت عذاب کیلئے ضرور تیار ہیں۔

مرد ورت کوچیت پر نہ جانے دے

فرماتے ہیں کہ''مردا پی عورت کو گھر کی جھت اور دروازے پر جانے نہ دے تا کہ دہ غیر مردوں کو اور غیر مرداسے نہ دیکھیں' کیونکہ پُرائیوں کی ابتدا گھر کی کھڑ کی و دروازے سے شروع ہوتی ہے' عورت کو کھڑ کی دروازے سے مردوں کا تما شاد کھنے کی اجازت نہ دے کہ تمام آفتیں آئی سے پیدا ہوتی ہے گھر میں بیٹھے بیٹھے ٹہیں پیدا

ہوتیں۔ ایک قدیم شاعرنے کہا ہے کہ ''تمام برائیوں کی شروعات نظر سے ہوتی ہے۔ چھوٹی می چنگاری سے زبردست آگ بھڑک اٹھتی ہے۔ پہلے نظر پھرمسکراہٹ پھر سلام پھر کاام وعد و محر طاقات ۔ اور بھرای لئے ای لئر اسلام نویں ۔ کاغیر میں ماں مربکا

سلام پھر کلام وعدہ پھر ملاقات اور پھرای لئے اسلام نے عورت کا غیر مرد پراور مرد کا غیرعورت پر نگاہ ڈالمنا بھی حرام تھہرایا کیونکہ آئیسیں دل کی چابی ہیں اور نظر دل کے تا لے کو کھولنے والی زناکی قاصدے۔

اچا نک نظر پڑنے پر پھیرلو

76(129) 180 (1612(11) 180)

دوسری نظر کی گرفت ہے

حضرت على بْنَالْمُدُنْ نِي رسول الله طَيْحَاقِيْمُ ہے عرض كيا۔ " يارسول الله مَشْحَاقِيْمُ! ! بعض اوقات غيرعورت براجيا مَك نظر يرُجاتى ہے"؟

قال ياعلى لا تتبع النظرة النظرة فأن لك الا ولى وليست لك الاخرة (﴿ تَمْنَى ٢ مُديث ٢٤٩ ابوداوُدج ٢ مديث ٢٨٩)

ترجمہ ارشاد فرمایا۔''اے علی! بہلی نظر جواجا تک پڑجائے اس کی بوچھنہیں کیکن ایک نظر کے بعدد وسری نظر نہ ڈالو کیونکہ دوسری نظر کی بوچھا در گرفت ہے''۔

آتکھوں کا زنا

رسول الله منطقة في أف ارشاد فرمايا:

العینان توتیان (کشف انجو بس ۱۸۸۵ از حضور داتا سخ بخش وطیعی) ترجمه (جب ایک غیر مرد اور غیر عورت ایک دوسرے کود کیھتے ہیں تو) دونوں کی۔ آگھیں زنا کرتی ہیں۔

فرمات مين مدنى آقا مطفقية

''مرد کاغیرعورتوں کواورعورت کاغیر مردوں کا دیکھنا آنکھوں کا زنا ہے۔ پیروں سے اس کی طرف چلنا پیروں کا زنا ہے 'کا ٹوں سے اس کی بات سننا کا ٹوں کا زنا ہے' زبان سے اس کے ساتھ یا تیس کرنا زبان کا زنا ہے' دل میس ناجائز ملاپ کی تمنا کرنا ، ل کا زنا ہے' ہاتھوں سے اسے چھونا ہاتھوں کا زنا ہے''۔

(ايودادُوج ٢٠ بإب١٢١ صريث ٣٨٥)

بدنگانی کی سزا

حضرت سيدنا ابن عباس ذلتني فرمات بين كه ايك فخص حضور نبي كريم ملطفاقية

TERE M. TO THE SERVICE YOU کی خدمت میں حاضر ہوا کہ اس کا خون بہدر ہاتھا تو حضور اکرم مِشْتِکَوَیْم نے اس سے دریافت فرمایا تھے کیا ہوا؟ اس نے عرض کی میرے یاس ایک عورت گذری تو میں نے اس کی طرف دیکھا اور میری نگا ہیں مسلسل اس کا پیچیا کرتی رہیں کہ اچا تک میرے سامنے دیوار آگئی جس نے مجھے ذخی کر دیا اور میرا میرالیہ حال کر دیا جسے آپ ملاحظہ فرما رہے ہیں تو نبی کریم مضافقاً نے فرمایا اللہ عزوجل جب کمی بندے سے بھلائی کا ارادہ فرما تا ہے تواسے دنیا میں ہی سزادے دیتا ہے۔ (بح الدموع مترجم ص٨٢مطبوعه مكتبة المديندلا مور) آ نکھشیطان کا تیرہے كاشفى نے لكھا كەذخيرة الملوك ميں ہے كه انسان كے جم ميں شيطان كاسب سے بڑا تیرانسان کی آ نکھ ہے اس لینے دوسرے حواس اپنے اپنے مقام پرساکن ہیں انہیں جب تک شے منہیں تی اس وقت تک حرکت میں نہیں آتے بخلاف آ کھے کہ بیدورونزدیک ہرطرح سے انسان کو کام دیتی ہے اور ای کے ذریعہ سے ہی انسان بہت ی غلطیوں کا شکار ہوجا تا ہے۔ ایں ہمہ آفت کہ بہ تن می رسد ديده فروپوش چو در نثوی تیم بلارا ترجمہ یہ جملیآ فات جوانسان کو پیچی ہیں ای آ کھو پیشکن ہے ہی پیچی ہیں آ کھ

Marfat.com

(تغييرروح البيان سورة نوراس)

ایسے چھپا کے رکھ جیسے صدف میں موتی چھپا ہوتا ہے تاکہ بلیات کا نشانہ ہو۔

THE THIS TO SEE THIS YOU

بدنگابی سے بیخے کامل

سركاردوجهال مصكية في ارشادفر مايا-

''جب مرد کے سامنے کوئی اجنبی عورت آئی ہے تو شیطان کی صورت میں آئی ہے جب تم میں سے کوئی کی اجنبی عورت کو دیکھے اور وہ اے اچھی معلوم ہوتو چاہیے کہ اپنی بیوی ہے مہاثرت کرلے (تا کہ گناہ سے فئی جائے) تمہاری بیوی کے پاس بھی وہی چیز موجود ہے '۔ (اگر کوئی کنوارہ ہوتو وہ روزہ رکھلے کہ روزہ گنا ہوں کورو کے والا اور شہوت کومٹانے والا ہے)

(ترزى جائياب ۷۸۵ مديث ۱۱۸۷

مسئله کچیورتیں این مردول کے سامنے منہار (چوڑیاں بیچنے والوں) کے ہاتھ ے چوڑیاں پہنتی ہیں میرام رحرام حرام ہے۔ ہاتھ دکھانا وغیرہ مردکوحرام ہے۔ اس کے ہاتھ میں ہاتھ دینا حرام ہے۔ جومردا پی عورتوں کے ساتھ اسے جائز رکھتے میں دیوث (لیعی بغیرت بشرم) میں۔ (قادی رضویہ ۹ نصف تر عرص ۲۰۸) مسئله خورت اگرکس نامحرم کے ماسے اس طرح آئے کہ اس کے بال اور مگلے اورگرون یا پیشهٔ پیٹ یا کلائی کا کوئی حصدظام ہو یا لباس ایسا باریک موکدان چیزوں ے كوئى اس ميں سے چكے تويد بالا جماع حرام بــاورايى وضع ولباس كى عادى عورتیں فاسقات ہیں۔اوران کے شوہراگراس پر راضی ہوں اور طافت ہونے کے باوجودعورت کواس ہے منع نہ کریں تو دیوث (بے غیرت ٔ بےشرم) ہیں اورالیوں کا ا ما بنانا گناہ ہے۔اگرتمام بدن مرسے پاؤں تک موٹے کیڑے میں خوب چھیا ہوا ہو صرف منہ کی کھلی ہوئی ہے جس میں کوئی حصہ کان کا یا ٹھوڑی کے نیچے کا یا پیشانی کے بال كا ظاہر مبين تواب فتوى اس سے بھى ممانعت ير ہے اور عورت كاايسار مناشو ہركى رضا سے ہوتو اس کے چھے بھی نماز پڑھنے سے پر بیز ضروری ہے کہ فتنہ کوختم کرنا

المرابعة كواجبات ميس المراجب

(عرفان ثريعت ج٢ ص٢ ازاعلي حفزت والنير)

آج کل مرد حصرات خود اپنی بیوی کو بازاروں ٔ باغوں ٔ سینما ہالوں اور دیگر

مقامات پر لے جاتے ہیں اور غیر مردوں کے سامنے نمائش کا ذریعہ بناتے ہیں۔ پچھ لوگ بازاروں وسینما ہالوں میں تو عورت کونہیں لے جاتے لیکن بزرگان دین کی

مزارات پر لے جاتے ہیں۔ان مورتوں کے ایسے مقدی مقامات پر آنے کی وجہ سے میں اور کمال یہ ہے کہ مورتیں مقامات بھی خرافات و بیبودگی کے اڈے بیٹے چارہے ہیں اور کمال یہ ہے کہ مورتیں

سیستان کی راوی وزیروں سے اور ہے جو رہے ہیں اور میں تیا ہا دور میں تو اب سمجھ کر مزاروں پر حاضر ہوتی ہے۔ ہمارے شہرنا گپور میں تو با قاعدہ حضور سیدنا شہنشاہ ہفت اقلیم سرکارتاج الاولیاء برانسیلی (اورای طرح ہمارے ملک یا کستان میں

سہنتاہ ہفت الیم سرکارتان الاولیاء وسطے (اورای حرب ہمارے ملک پا کتان میں بھی مزارات اولیاء پرسب سے زیادہ مورتوں کی تعداد ہوتی ہے) کے عرس پاک کے

موقع پر بہت بڑامیلالگتاہے جس میں دوروراز ہوگٹر کت کرتے ہیں۔اس میلے کااگر باغورمعائنہ کمیا جائے تو آپ کواس میں مردوں سے زیادہ محورتیں نظر آئیں گی۔

یقینا مردول کا بزرگول کے مزارات پر حاضر ہوتا خوش عقید گی کی علامت ہے

اور بزرگان دین کی زیارت کرنا باعث ثواب ہے۔ کیکن عورتوں کا مزارات اولیاء پر

جانا نا جائز وگناہ ہے ۔ لہذا مناسب ہے کہ پیمال اس تعلق سے بھی چند باتیں بیان کر دی جائیں۔اللہ کرے کہاسے پڑھ کر ہمارے نی مسلمان بھائی اور ہمارے مسلم بہنیں

ری بی ای است رہے رہ بے ہوا روہ رہ اس میں بیا سنجیدگی سے فور کریں اور اس ریمل کر کے گنا ہوں سے بچیں۔

قبروں کی زیارت عورتوں کیلئے جا ئزنہیں

رسول الله مططحة قيل ارشاد فرمات جيں_

لعن الله زوارات القبور

(امام احمدُ ابن ماجهُ تر غدى نسائى ٔ حاكم ٔ فمّا و كا افريقة م ٨١ وغيره)

TELLINE TO TELLISE TO

به الله کالعنت ان عورتوں پر جوقبروں کی زیارت کریں۔ ''فقاویٰ کفائیشعی''''فقاد کی تا تار خانیۂ' وغیرہ میں ہیں۔

سئل القاضى عن جواز خروج النساء الى مقابر؟ قال لا ليسال عن الجواز والفساد في مثل هذا وانما ليسال عن مقدار مايلحتها من اللعن فيه واعلم انها كلمه قصدت الخروج كانت في لعنة الله وملئكة واذا خرجت تحفها الشياطين من كل جانب واذا اتت القبور يلعنها روح الميت واذا رجعت كانت في لعنه الله-

ترجمہ ''امام قاضی عیاض پر نظیم سے سوال ہوا کہ عورتوں کا مزارات پر جانا جائز ہے بائز ہیں؟ فرمایا''ایی باتوں میں جائز نہیں پوچھتے بلکہ سے پوچھوکہ اس میں عورت پر کتی لعنت پڑتی ہے۔ خبردار! جب عورت جانے کا ارادہ کرتی ہے اللہ اور فرشتے اس پر لعنت کرتے ہیں اور جب گھر سے چلتی ہے سب طرف سے شیطان اسے گھر لیتے ہیں اور جب قبرتک چیتی ہے صاحب مزار کی روح اس پر لعنت کرتی ہے اور جب والیس آتی ہے تو اللہ کی لعنت میں ہوتی ہے'۔

(كفائية على " تا تارخانيه بحواله ـ فمآوكي افريقه ص ٨٢)

اعلیٰ حضرت ع الشیابہ فرماتے ہیں۔

''عورتوں کیلئے سوائے رسول اعظم مظاریجاتے سے سزار مبارک کے کسی بزرگ کی قبر کی زیارت کرنا جائز نہیں''۔ (نادی افریقہ ۲۰۸۰)

اسی طرح کسی جلیے وجلوں میں یا پھروعظ وَتقریریس بھی عورتوں کو جا نامنع ہے۔ چتا خچہاس متعلق بھی اعلیٰ حضرت امام احمد رضا خاں فاصل پریلوی وُطِنظیجہ بہت ساری کتابوں کے حوالوں نے نقل فرماتے ہیں۔

'' کتب معتمدہ میں ہے۔ائمہ دین نے جماعت وجمعہ وعیدین تو بہت دور وعظ

TERE TAIT TO THE SERVICE OF THE COST OF کی حاضری سے بھی مطلقاً منع فرمادیا اگر چه بردهیا ہؤاگر چه رات ہو۔حضرت فاروق اعظم زائٹو نے عورتوں کو مسجد میں آنے ہر یا بندی لگا دی۔ اور حصرت عبداللہ ابن عمر و فالله تو جوعورتين محديس آتى اسے ككرياں ماركر با بر ذكالتے _اورامام ابراہيم عمال الله جوامام اعظم ابوصنیفہ مخطیعی کے استاد کے استاد ہیں اپنی عورتوں کومجد میں نہ جانے (جمل النورني نمي النساء عن زيارة القبورص١٥ 'ازاعلي حصرت براشه) جلسول اورتقر برول میں عورتوں کوشر کت کی دعوت دینے والے اس سے سبق حاصل کریں اور سوچیں کہ جب نماز جیسی اہم فرض عبادت کیلئے عورتوں کومجد میں آنے سے روکا گیا تو تقریر کیلئے بھلا کیسے اجازت ہوسکتی ہے۔ ورتوں کو تعلیم وتربیت کیلے ہمیں مجی وہی راہ اختیار کرنی ہوگی جو ہمارے الکے بزرگوں نے اختیار کی تھی۔ انبيں ان كے شو ہر مال باب يا ديكر نيك عارم ديني معلومات اور شرعى احكام بهم پينجا كيں ، کچھ لوگ اپنی اڑکیوں کو الی تعلیم دیں کہ وہ دوسری اڑکیوں اور خواتین کو پردے اور احکام شریعت کی پابندی کے ساتھ بحسن خوبی دینی احکام بتا کیں اور سکھا کیں۔ (حاشية جمل النور في نبي التساء عن زيارة القورم ١٥) اس مسلم كا تفصيل كافي طويل ب جياس مخفر كتاب مين بيان كريانا ممكن نہیں۔ ویسے بھی نیمضمون کافی طویل ہو چکا ہے۔ للذا مزید معلومات کیلئے امام المِسنَّت اعلىٰ حفرت وعِطْهِ كي تصانيف "جمل النور في نبي النساء عن زيارة القور" اور ''مروج النجالخردج النسآء'' كامطالعه فرما ئيں جو كه عام كتب خانوں يرستياب ہيں۔ اےاللہ ہمیں اور ہماری مسلم خواتین کوشرم وحیا عطا فرما اور بے حیائی و گناہوں ہے نفرت دیر ہیز کرنے کی تو فیق عطافر ما۔ آمین



6....6....

JEST (AVO) SECTION DES

زنا کی تباه کاریاں

فرمان خدادندي

الله رب العزت ارشاد فرما تا ہے۔

و کرکتگر ہوا الزّلی اِنّه کان فاحِشة وَسَاءَ سَبِیلًا۔ (سورۃ بناسرائیل۳۳)

ترجمہ اور بدکاری کے پاس نہ جاؤبیگ وہ بے حیا کی ہے اور بہت ہی ہری راہ۔
اورارشاو فرما تا ہے رب تپارک و تعالیٰ
و کالّیایْن هُدْ لِفُرُوجِهِدْ لِحَفِظُون ۔ (سورۃ معاری۴۲)

ترجمہ اور (مومن) وہ جوابی شرم کا ہوں کی تفاظت کرتے ہیں۔ (کنزالایمان)

ایک مردایک الی عورت سے مباشرت کرے جس کا وہ ما لک نہیں (لینی اس
سے نکاح نہیں ہوا) اے زنا کہتے ہیں۔ چاہے مرداورعورت دنوں راضی ہوں۔ اس
طرح پیشرور بازاری عورتوں اورطوائوں کے ساتھ مباشرت کو بھی زنا ہی کہا جائے گا۔
اور سیجھتے ہیں ہوکی گناہ نہیں اس لئے کے وہ کافرہ ہیں۔ یہ خت جہالت ہے کافرہ
اور سیجھتے ہیں ہوکی گناہ نہیں اس لئے کے وہ کافرہ ہیں۔ یہ خت جہالت ہے کافرہ
مسئللہ کافرہ عورت سے زنا بھی حرام ہے چاہے وہ راضی ہی کیوں نہ ہو۔ کافرہ کے

TEREMAN THE SERVICE YOU

ساتھ زنا کے جائز ہونے کا قائل ہوتو کفرہے۔ورنہ باطل ومردود بہر حال ہے۔

(فتاويٰ رضويهج ۵ ص ۹۸۰)

ای طرح کٹر دہائی دیو ہندی مودودی نیچری رافضی وغیرہ جینے بھی دین ہے پھرے ہوئے فرقے ہیں ان کی لڑ کی ہے ٹکاح کیا تو ٹکاح ہی نہیں ہوگا بلکہ محض زنا

کہلائے گا جب تک کراڑ کی عقائد باطلہ ہے تچی تو بہ نہ کرلیں۔ تچی تو بہ کا بیہ مطلب ہے کہ تی سچے العقیدہ ہوجائے اور اہلسنّت و جماعت کے علاوہ جس قدر بھی فرقہ باطلہ

ہیں انہیں مرتد کا فرول سے مانیں جا ہے فرقہ باطلہ میں اس کا اپنا باپ بھائی ہی کیوں نہ شامل ہوانہیں بھی کا فرومر تد جائے اوران کے کفر پر شک بھی نہ کریں اور نہان ہے

میل ملاقات ریکھے یقیناً زنا گناء عظیم اور بهت بوی بلا ہے۔ بیانسان کی دنیاو آخرت کو تباہ و برباد

کردیتاہے۔

سب سے بڑا گناہ

رسول الله مطفي في في ارشاد فرمايا:

ما ذنب بعد الشرك اعظم عندالله من نطفة وضعها رجل في رحم

لابحل له۔

ترجمہ شرک کے بعداللہ کے نزدیک اس گناہ ہے بڑا کوئی گناہ نبیں کہ ایک شخص کسی الیم عورت ہے صحبت کرے جواس کی بیوی نہیں۔

زانی ایمان سے محروم

اور فرماتے ہیں مدنی تاجدار مارے پیارے آقا مطابقات

اذا زنى العبد خرج منه الايمان فكان فوق راسه كالضلة

THE TRANSPORT OF THE PROPERTY OF THE PROPERTY

(مكاففة القلوب باب٢٢)

ترجمہ جب کوئی مرداور عورت زنا کرتے ہیں تو ایمان ان کے سینے سے نکل کرسر پر سائے کی طرح تفہر جاتا ہے۔

حفرت عکرمدنے حفرت عبدالله ابن عباس (فَكَالْتُهُم) سے بوجھا۔

''ایمان کس طرح نکل جاتا ہے''؟ حضرت ابن عباس بنائفذ نے اپنے ایک ہاتھ کی انگلیاں دوسرے ہاتھ کی انگلیوں میں ڈالیس اور پھر نکال لیس اور فرمایا۔'' دیکھو اس طرح''۔ (بخاری جسون مدیث ۱۲ افعد الملمعات شرح سکلؤ قرج ۱۱)

مومن زنانہیں کرسکتا

حضرت ابو ہریرہ وحضرت ابن عباس نظافیا سے روایت ہے کہ سر کا راقدس مشے کوئیا نے ارشاد فرمایا:

لايزني الزاني حين يزني وهو مومن-

(بخاري ج٣ بإب ٩٢٨ مديث١٤١٣)

رجمه مومن ہوتے ہوئے تو کوئی زنا کر بی نہیں سکتا۔

حضرت امام محمر غزالی مختلطینه روایت کرتے ہیں۔

''جس نے کی غیرشادی شدہ عورت کا بوسہ لیا اس نے کو یاستر کنواری لڑکیوں سے زنا کیا۔اور جس نے کسی کنواری لڑکی سے زنا کیا تو کو یا اس نے ستر ہزار شادی

سے رہا گیا۔ اور ب س سے می خواری کرمی سے رہا گیا تو کویا آئ نے ستر ہزار حاد کی شدہ مورتوں سے زنا کیا''۔

دنیاوآ خرت برباد

فقیهد حفزت امام ابوللیث سمر قندی اور جهة الاسلام حفزت امام محد غزالی مططیخ نقل کرتے ہیں کہ

TERESTAND TO THE SERVICE OF THE LUIC ''بعض صحابہ کرام سے مردی ہے کہ زنا سے بچواس میں چھ صیبتیں ہیں جن میں سے تین کا تعلق و نیا سے اور تین کا آخرت سے ہے۔ و نیا کی مصبتیں یہ ہیں کہ زندگی مختفر ہوجاتی ہے۔ (1 دنیامیں رزق کم ہوجا تاہے۔ (٢ چرہ سے رونق ختم ہوجاتی ہے۔ (٣ آ خرت کی مصبتیں یہ ہیں۔ آ خرت میں خدا کی نارا^ضگی _ب (1 ٱخرت ميں تخت يو چھ تا چھ۔ (1 جہنم میں جائے گا اور تخت عذاب۔ (حمیدالغافلین مکافقة القلوب ہا۔۲۲) (٣ آ گ کالباس حضرت موی مَلِیٰ الله عنه الله عزوجل سے زنا کرنے والے کی سزا کے بارے میں یو چھا' تو رب تیارک و تعالیٰ نے ارشاد فر مایا۔ 'اے حضرت موی مَلَیٰظا اِز نا کرنے والے کو یس آگ کی زرہ (آگ کا لباس) پہناؤں گا جوابیاوز ٹی ہے کہ اگر بہت بدے پہاڑ پر ر کھ دیا جائے تو ذہ بھی ریز ہ ریز ہ ہوجائے''۔ (مكافقة القلوب باب٣٢ م ١٧٨) الله تبارك وتعالیٰ ارشا دفر ما تاہے۔ وَمَنْ يَنْعَلُ ذَلِكَ يَلْقَ أَثَامِدُ (سورة فرقان ۲۸) فائده ا ٹام کے متعلق علاء کرام نے کہاہے کہ وہ جہنم کا ایک غارہے جب اس کا منہ

المرادي الماري الماري المرادي المرادي

(مكاشفة القلوب باس٢٢ ص ١٦٤)

زانی پرلعنت برستی ہے

رسول الله مطاع الله منظامة المراياك

ان السموات السبع الدضين السبع والجبال القلن الشيخ الزائى وان فروج الزداة ليودى اهل العارفتين ويحهل (بزار بحوالد بهار شريت نا م م وجها ترجم ساتون آسان اورساتون نيش اور پهاژنا كار پرلعنت بهج بين اور قيامت كدون زناكار مردو ورت كي شرم گاه ساس قدر بد بو آتى موگى كرچنم مين جلند والون كوم كاست تكيف ينجى گو

بیتمام سرائیں تو آخرت میں طے گی لیکن زنا کرنے والے پرشریعت نے دنیا میں بھی سرزامقرر کی ہے۔اسلامی حکومت ہوتو بادشاہ وقت یا پھر قاضی شرع پرضرور ک ہے کہ ذائی پر جرم ثابت ہوجائے پرشریعت کے حکم کے تحت سزادے۔حدیث پاک میں ہے کہ اگر کسی کو دنیا میں سزانہ ل کی تو آخرت میں اس کو سخت عذاب دیا جائے گا اور دنیا میں سزایا لی تو پھر اللہ جا ہے تواسے معاف فر مادے۔

د نیامیں سزا

الله عز وجل اوراس كے رسول مطبقاتیم نے زنا كار مرووعورت كوسر ا كاحكم ديا اور اس پر رسول اللہ مطبقاتیم نے عمل بھی كروايا۔

الله رب العزت ارشاد فرماتا ہے۔

الزَّالِيَّةُ وَالزَّالِيِّ فَاجْلِدُوا كُلَّ وَاحِدٍ مِّنْهُمَا مِانَةَ جَلْدَةَ وَّلَا تَأْخُذُ كُمْ بِهِمَا رَأَفَةٌ فِي يِيْنِ اللهِ إِنْ كُنْتُمْ تُوْمِنُونَ بِالله وَالْيَوْمِ الْلْخِر وَلْمِشْهَلُ عَذَابَهُمَا ترجمہ جو مورت بدکار ہواور جوم دلو ان میں ہرا یک کوسوکوڑے لگا وَاور تہمیں ان پر ترس نیر آئے اللہ کے دین میں اگرتم ایمان لائے اللہ اور پچھلے دن پر اور چاہیے کہ ان کو سزا کے وفت مسلمانوں کا ایک گروہ حاضر ہو۔ (کنزالا یمان)

زانی کوسنگسار کیاجائے

رسول الله منطقة آرشاد فرمات ہیں۔

للمحصن رجمة في فضاحتي يموت وليغر المحصن جلدة ماثة

(بخاري ج "باب ۲۹۸ مديد ۱۷۱۵)

ترجمہ ناکرنے والے شادی شدہ ہوں تو کھے میدان میں سنگ ارکیا جائے (لیمیٰ پھروں سے مارکر جان سے ختم کردیا جائے) اور اور زناکار غیر شادی شدہ ہوں تو سو

٭ روں کے وقع سر حیات کے سروید جانے) اور اور زنا کار جیر تناوی سندہ ہوں کو سو کوڑے مارے جائیں۔

حفرت فعمی بنالٹیؤ نے حضرت علی بزائٹیز سے روایت کی ہے کہ

حين رجم المراة يوم الجمعه وقال قدر جمتها بسنة رسول الله ﷺ _

(بخاری ج۳'باب۹۲۹' مدیث ۱۲۱۲)

ترجمہ حضرت علی خاتین نے جعہ کے روز ایک زانی عورت کوسٹگسار کیا تو فر مایا کہ میں نا میں اور ایک اور خاتین کا در

میں نے اے رسول اللہ مطبقہ آتھ کی سنت کے مطابق سکار کیا ہے۔

ہیں جس سے اٹکار کی کوئی گنجائش نہیں۔ •

افسوس صد افسوس کہ ہمارے ملک پاکستان میں یہود و نصاری کے ایجنٹ مردود صدر پرویز مشرف نے حدود آرڈینس کوٹتم کرکے بذریعہ اسمبلی وسینٹ زنا

LAI MANGUIT DE LEIZUIT DE

باالرضا كوجائز قرارديا ہے۔ (استغفراللہ)

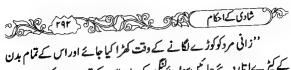
زنا کے گواہان کی شرعی حیثیت

زناکا جُوت باشرع نمازی پر بیزگار متی جوندگوئی گناه کبیره کرتے ہوں ند
کی گناه صغیره پراصرارر کھتے ہوں ندکوئی بات خلاف مروت چپچھورے بن کی کرتے
ہوں اور نہ بی بازاروں میں کھاتے پیتے اور سرکوں پر پیشاب کرتے ہوں ایسے چار
مردوں کی گواہیوں سے زنا ثابت ہوتا ہے یاز ناکر نے والے کے چار مرتبدا قرار کر لینے
سے پچر بھی امام بار بارسوال کرے گا اور دریا فت کرے گا کہ تیری زنا سے مراد کیا ہے؟
کہاں کیا؟ کس ہے کیا؟ کب کیا؟ اگران سب کو بیان کر دیا تو زنا ثابت ہوگا ور نہیں
اور گواہوں کو کھل کرصاف صاف با پناچشم دید معائنہ بیان کرنا ہوگا کہ ہم نے مرد کا بدن
عورت کے بدن کے اندر خاص اس طرح دیکھا چسے سرمددانی میں سلائی اگران با توں
میں سے کوئی بھی بات کم ہوگی مشل چارگواہوں سے کم ہو یاان میں کا ایک اعلی درجہ کا نہ
ہو یا مرد تین ہواور خور تیں دی ہیں ہی کیوں نہ ہوں ان سب صور توں میں سیگواہیاں
مہیں مانی جا نمیں گی۔ اگر چہاس تم کی صودو سوگواہیاں گز ریں ہرگز زنا کا ثبوت نہ ہوگا
اور ایسی تہمت لگانے والے خود ہی سرا یا نمیں گے اور انہیں بطور سرا ای ای کوڑ ب

(فآويٰ رضويهج ۵ ص ۹۷۴ تفيرخزائن العرفان پ۲۴ سوره نورکی۴ آیت کی تغییر)

بوقت سزاا حتياط

اعلىٰ حضرت امام احمد رضا خال عُراتشيد '' فنّاويٰ رضو بهُ' ميں اور حضرت صدر الا فاضل علامه تيم الدين مراد آبادي عِراتشيد اپني مشهور زمانه قر آن کريم کی تفسير'' خز ائن العرفان في تفسير القرآن' ميں نقل فرماتے ہيں۔



کے کیڑے اتاردیئے جائیں سوائے لگی کے۔اوراس کے تمام بدن پر کوڑے لگائے جائیں سوائے چیرہ اور شرم گاہ کے۔اور عورت کو کوڑے لگانے کے وقت کھڑا نہ کیا جائے نہاس کے کپڑے اتارے جائیں اگر پوشین یاروئی دار کپڑے پہنے ہوتو اتار لئے جائیں۔

ہندوستان میں چونکہ اسلامی حکومت نہیں اس لئے یہاں اسلامی سز انہیں دی جاسکتی۔ زناحق اللہ کے علاوہ حقق ق العباد بھی ہے۔ البذااللہ تعالیٰ سے تو ہدواستغفار کے علاوہ جس سے بیکام کیا ہے اس کے قریجی رشتے داروں کے معاف کے بغیر عذاب سے رہائی ٹہیں ال سکتی۔

زانی اعلانیه معافی مانگے

اعلی حفرت امام احمد رضاخاں بیلشینے کی ملفوظات میں ہے۔

'' زنا میں عورت کاحق ہوتا ہے جب کہاس سے جرازنا کیا جائے اوراس کے باپ بھائی شوہر جس جس کواس خبر سے تکلیف پہنچے گی ان سب کاحق ہے۔علاء کرام نے کہا کرصاف صاف لفظوں میں اُن سے معافی مائے کہ میں نے بیکام کیا ہے معافیٰ

عابتا مون'۔ (الملغوظ عسام مسم)

ظاہر ہے ان سب سے معافی مانگا آسان کا منیں۔جس سے بیکام کیا اس سے اور اس کے قریبی رشتے داروں کے معاف کئے بغیر بیر گناہ معاف نہ ہوگا اور بندوں کے معاف کر دینے کے بعد بھی اب بیاللہ تعالیٰ کے ذمہ کرم پر ہے کہ وہ گناہ کو معاف فرما دے اور عذاب جہنم سے نجات بخشے ۔ اللہ تعالیٰ ہماری زنا جیسے ضبیث گناہ سے تفاظمت فرما ہے۔ (آجن)



پیشه ورغورتیں (طوائفیں)

ا کشر نو جوان اپنی جوانی پر قاپوئیس رکھ پاتے ہیں اگر ان کی جلدے جلد شاد ک نہ ہوتو وہ اپنی ہوں کومٹانے کیلئے باز اری مورتوں کا سہارا لیتے ہیں پچھوٹر شادی کے بعد مجمی اپنی بیوی کے ہوتے ہوئے پیشہ ورمورتوں کے پاس جانائیس چھوڑتے۔

یہ بازاری عورتیں وہ ہیں جنہوں نے شرم وحیا کے نقاب کواٹھ ایا اور بے غیرتی و بے شرمی کے لباس کو پہنا ہے۔ یقیناوہ انسانی سوسائٹی کیلئے وہ خطرناک کیڑے ہیں جو پلیگ اور چیش کے کیڑوں سے زیادہ انسانیت کیلئے بھیا تک ہیں۔

اگرآپ ایک پلیٹ میں طرح کرے کھانے کئے میٹے کو دے تیز تیکے سب ملا کررکھ دیں تو وہ کچھ وٹوں بعد مرٹ سے بد ہو پیدا ہوگئ کیڑے پڑ جا ئیں گے۔ بد ہو پیدا ہوگئ کیڑے پڑ جا ئیں گے۔ بد ہو پیدا ہوگئ کیڑے پڑ جا ئیں گے۔ بس یہ باذاری عورتیں بھی ای پلیٹ کے طرح ہیں 'یدہ ہی ہاتھ پڑ چکے ہیں اور دکھی پلیٹ ہے جس میں الگ الگ مزاج والے انسانوں کے ہاتھ پڑ چکے ہیں اور عثلف فتم کے مادوں نے ایک جگہ ل کراہے اس قدر مراد یا اور ایے باریک باریک کیروں کو پیدا کردیا ہے جود کھے میں نہیں آتے ۔ تم قررااس کے پاس گے اور انہوں کے تہمیں ڈیک مارا۔ دیکھوان کے بوڈر ٹاپ چک پرنہ بہلنا' بالوں کی بناوٹ اور کپڑوں کی سجاوٹ پرنہ رجھنا۔ یہ ایسا سانپ ہے جس کا کاٹا سانس بھی نہیں لیتا۔ اب ان

THE TOTAL SECTION OF THE TENT OF THE TENT

طوائفوں کی وجہ سے یا زنا کرنے سے پاک و ہند میں ایذ زبہت جلدی ہے چھیل رہا ہےاس لئے ان سے بچو کیونکہ ایک وقت کی ذرائ لذت پراپٹی عمر مجرکی دولت' آ رام و راحت اورصحت وتنذری کو نہ تھو بیٹھنا۔

فرمان خداوندی

ستقربے ستھروں کیلئے۔

دیکھو!بغورسنو ہمارارب عز وجل کیاار شادفر ما تا ہے۔

قُلُ لِلْمُوْونِيْنَ يَفُضُّواْ مِنْ الْبَصَارِهِمْ وَيَحْفَظُوْ وُوْدَجَهُمْ ذَلِكَ اَذْكَى لَهُمْ اللهُ عَبِيْنَ بِهَا يَصْنَعُونَ (سورة نور٣) لَهُمْ إِنَّ اللهُ عَبِيْنَ بِهَا يَصْنَعُونَ (سورة نور٣) ترجمه (الْحَجُوبِ) مسلمان مردول وَحَم دوا بِيْ نُكَامِيں ﴿ مَهِ يَبْعَى رَهِيسِ اورا بِيْ شَرَم كَامُوں كَى الله بَى لُوان كَامُوں كَى كَامُوں كَى الله بَى لُوان كَامُوں كَى

(كنزالايمان)

(کنزالایمان)

ے۔ اورسنو!ہماراربعز وجل فرما تاہے۔

اس آیت کی تفییر میں علاء کرام ارشاد فرماتے ہیں کہ

''بدکار اور گندی عورتین' گندے اور بدکار مردوں کے ہی لائق ہیں۔ای طرح بدکار مردای قابل ہے کہ ان کا تعلق ان جیسی ہی گندی اور بدکار عورتوں سے ہو۔ جب کہ پاک تقرمے نیک مرد تقری اور نیک عورتوں کے لائق ہیں اور نیک عورت کا رشتہ نیک مرد سے ہی کیا جاسکتا ہے۔

زانی اورشرابی ایمان مصمحروم

مارے بیارے منی آقا سے استاد فرماتے ہیں۔

من زنى أو شرب الخمر نزع الله منه الايمان كما يخلع الانسان القميص من راء سعد (حاكم بحوالة قادكي رضويرج ١٠ص ٢٦)

ترجمہ جس نے زنا کیایا شراب فی اللہ تعالیٰ اس میں سے ایمان کوایے نکالیّا ہے۔ جیے انسان سرسے اپنا کر تہ نکال لیتا ہے۔

اس حدیث پاک کو پڑھ کروہ لوگ دل سے سوچیں جو پیشہ ورعورتوں کے پاس جاتے ہیں اور زنا جیسے خبیث گناہ کا ارتکاب ہیں۔ تنجب ہے کوئی مسلمان ہو کر زنا کرے۔خداراالیے لوگ اب بھی ہوش میں آ جا ئیں ورنہ پھرائییں موت ہی ہوش میں لائے گی لیکن یا در ہے اس وقت کا ہوش کی بھی کا م کا نہ ہوگا اس وقت ہوش بھی آیا تو کیا!

بخشش سے محروم عورت

مدنی تاجدار بیارے آقاط الطبی ارشاد فرماتے ہیں۔

ان الله يدنو من خلقة يغفر لمن استغفر الالبغي بفرجها-

ترجمہ اللہ تعالیٰ اپنے بندوں ہے قریب ہے اور کوئی مغفرت مائکے اسے بخشا ہے' کیکن اس عورت کونہیں بخشا جواپی شرم گاہ کا ناجائز استعمال کرتی ہے۔

حضرت امام غزالی مختصفیه روایت کرتے ہیں کہ

"البليس كوبزار بدكارمردول سالك بدكار تورت زياده پيند بوتى بـ"-

(مكاففة القلوب باب٢٢)

ہم اس سے پہلے بھی مید بیان کر بھے کہ پیشہ ورعورتوں سے بھی مباشر ت زنا ہی کہلائے گا حالانکہ پیشہ درعورتیں اس کام کے روپے لیتی ہیں اور اس کام پر وہ راضی

شادی کے احکام کی ساتھ کی ہوتی ہے گئی ہے مجمی ہوتی ہے لیکن فریقین کی باہم رضا بھی اس کام کوزنا سے متنیٰ ندکر پائے گئی ۔ زنا سے متعلق بہت ساری احادیث ہم اس سے پہلے '' زنا'' کے باب میں بیان کر بھے ہیں حق پند کیلئے ای قدر کانی وٹنانی ۔

بدكاركونيك بنانے كيلي عمل

اگر کمی عورت کا مرد بدچلن ہوا وردوسری عورت کے ساتھ حرام کاری کرتا ہویا حرام کاری کرتا ہویا حرام کاری کرتا ہویا حرام کاری کرتا ہویا حرام کاری کرنے پر بھند ہوتو الی عورت رات کواپنے بد کارشو ہر سے محبت سے قبل باوضو گیارہ ہار 'آلسوکسی ''پڑسے اول وآخر میں ایک مرتبد درود شریف پڑسے کورشو ہر سے مباشرت کرے۔ (جب بھی اس عورت کا شوہراس سے محبت کرتا چاہتو الی عورت محبت کرتا چاہتے گا۔ ای عورت محبت کرتا چاہتے گا۔ ای طرح المرک شخص کی عورت برجیل ہویا یہ کاری کرتی ہوتو وہ بھی ای طرح بیشل طرح المرک شخص کی عورت برجیل ہویا بدکاری کرتی ہوتو وہ بھی ای طرح بیشل مرح بیشل مرح المرک شخص کی عورت نیک و پر بیم گار بن جائے گا۔ (دفا نف رضویہ ۱۹۳۹)

لواطت بااغلام بازى كے نقصانات

کچے بربخت و نیا میں ایسے بھی ہیں جوجنسی تعلقات میں حرام وطال میں تمیز نہیں کرتے ایسے لوگ در ندہ صفت انسان ہیں۔ جولوگ کس کم عمر لڑک یا مردسے یا پھر ججڑے سے منہ کالا کرتے ہیں انہیں اسلامی شریعت میں ''لوطی'' کہا جاتا ہے۔عام طور پرلوگ انہیں اپنی آسان زبان میں گن شس کہتے ہیں۔

فعل بدكى ابتداء

حضرت اما م کلیمی محرفتی ہے روایت ہے کہ

''سب سے پہلے میکا م (یعنی مرد کا مرد سے مباشرت کرنا) شیطان مردود نے

کیا۔ وہ قوم لوط میں ایک خوبصورت لڑکے کی شکل میں آیا اور لوگوں کواپی طرف ماکل

کیا اور انہیں گمراہ کر سے محبت کروائی۔ یہاں تک کرقوم لوط کی بیعادت بن گئ اب وہ
عور توں سے مباشرت کرنے کی بجائے خوبصورت مردوں سے ہی فعل حرام کرنے
گئے جو بھی مسافران کی بہتی میں آتا وہ اسے نہ چھوڑتے اور اپنی ہوئی کا شکار بنا لیتے۔
حضرت لوط علین ان نے تو تو م کو بہت مجھا یا اور ان فعل بدے منع کیا 'انہیں عذاب اللی سے ڈرایا لیکن قوم نہ مائی حتی کے حضرت لوط علین اللہ دے اللہ دب العزت سے عذاب کی دعالی کا ور تو م یہ پھروں کا عذاب نازل ہوا 'پھروں کی بارش ہونے گئی۔ ہر پھر پر تو م

اٹھارہ شیطان

ٹوبصورت کڑ کے کے ساتھ اٹھارہ شیطان ہوتے ہیں''۔ (مکاففۃ القلوب ہاب۲۲) اعلیٰ حضرت بڑکشیایہ '' فماونی رضویہ'' میں نقل فرماتے ہیں ۔

حكايت

حفزت شُخ فريدالدين عطار مِرضي اپن شهره آفاق تصنيف" تذكرة الاولياء" رروارية كريسترون

یں روایت کرتے ہیں کہ '' حضرت اک براشنے کے انتقال کے بعد کی نے آپ کوخواب میں ویکھا

کرآ پ کا چبره آ دھا کالا پر گیا۔ آپ سے جب اس کا سبب پوچھا گیا تو فرمایا۔ '' آیک مرتبددورطالب علمی میں' میں نے ایک خوبصورت لڑکے کوغور سے دیکھا تھا چنا نچہ جب مرنے کے بعد مجھے جنت کی طرف لے جایا جارہا تھا تو جہنم کی طرف سے گزارا گیا

تبھی ایک سانپ نے میرے چیرہ پر کا ٹااور کہا گہا۔ بس بدایک نظر دیکھنے کی ہی سزا ہے اورا گربھی تو اس لڑ کے کوزیادہ توجہ ہے دیکھتا تو میں تجھے اور تکلیف پینچا تا''۔

(تذكرة الاولياء)

جمة الاسلام سيدناامام محمرغزالي فيطنطينه فرمات بير-

''روایت ہے جس نے شہوت کے ساتھ کسی لڑ کے کو چو ما تو وہ یا نچ سوسال (مكاهفة القلوب بإب٢٢) دوزخ کی آگ میں جلے گا"۔

قدرت نے انسان کے بدن کے ہرحصہ میں ایک خاص کام کی قدرت رکھی

ہے۔ چنانچانسان کے پاخانے کے مقام میں اندرے باہر پھینکنے کی قوت رکھی گئے ہے' عضلات اس مقام برنگہبانی کیلئے ہروقت تیار رہتے ہیں کہ کوئی باہر کی چیز اندر نہ جانے پائے کیکن جب خلاف فطرت اس مقام سے محبت کی جاتی ہے تو وہ نازک حصہ جوزم اور بار کیے جھلی اور چھوٹی چھوٹی رگول سے بنا ہے خلاف فطرت بھی سمٹنے اور کھی پھیل جانے سے زخی ہوجاتا ہے رکیس حیکے لگتی ہیں اور بار بار کی بیراگر زخم پیدا کردیت ہے اورانسان مختلف قتم کے امراض میں مبتلا ہو جا تا ہے۔ای طرح وہ فخص جوایئے عضو تناسل کومرد کے پیچیے کے مقام میں داخل کرتا ہے اس کے عضو مخصوص کی نسیس اس سخت مقام میں بار بارواخل ہونے کی وجہ *ہے کمز ورہوج*اتی ہیں'نسیں اور کیس ڈھیلی *ی*ڑ جاتی ہیں پٹھے ڈھیلے ہوجاتے ہیں اور نالی میں زخم پڑ کر پیشاب میں جلن' وہاں کی جملی میں خراش پیدا ہوتی ہے۔ *کسرت کے ساتھ*ا سخواہش کے بورا کرنے کی دجہ سے لگا تار

منی کے بہنے کی بیاری ہوجاتی ہے۔آ تھوں میں گڑھے چرہ پر بےروفتی دل ود ماغ کمزور ہوجاتے ہیں۔ابیاانسان پھرعورت کومنہ دکھانے کے لاکق نہیں رہتا۔

حکیموں کا اس بات برا تفاق ہے کہ جومردایک پارلواطت کر لے اس کوجلد

انزال ہوجانے کی بیاری ہوہی جاتی ہے۔

لوطی شخص کی شرعی سز ا

الشخف كم متعلق شريعت اسلامي كافيصله ب كداس دنيا مين زنده ربخ كا کوئی حی نہیں اس مرد کا مرجانا ہی معاشرہ کیلئے بہتر ہے۔ چنانچے حدیث پاک میں ہے۔ TERESTON SEIZUR YOU سركاردوعالم وفطيكة في ارشادفرماياك ارجمو الاعلى والاسفل ارجموا جميا يعني الذي عمل قوم الوط (ترندی جا حدیث ۱۳۸۷ این ماجد ۲ مدیث ۳۳۳)

ترجمه مسجومرد کمی مرد نے محبت کرے ان دونوں کو اپنے پھر مارد کہ وہ مرجا کیں' اويرادر ينج دالے دونوں کو مارڈ الو_

حفرت عكرمه زناتيخ نے حفرت عباس زناتيخ سے روایت کیا که رسول الله مضطفاتی نے فرمایا کہ

وجد تموة تعمل عمل قومر لوط فاقتلوا الفاعل والمفعول بمر

(الوداؤرج٣ ٔ حديث ١٠٥٠)

ترجمہ جن کوتم پاؤ کہ اس نے دومرے مردے محبت کی ہے قائیں قل کردؤ کرنے والےاور کروائے وألے دونوں کونل محروب

حفرت ابن شہاب بڑائٹۂ ہے ایسے مرد کے بارے میں یو چھا گیا جومرو ہے صحیت کر ہے۔

فقال ابن شهاب رضى الله عنه الرجم احصن اولم يحصن-

(مؤ لماامام ما لک ج۲٬ کتاب الاحدود ٔ حدیث ۱۱)

ترجمه فرمایا اسے مشکرار کیا جائے۔ (یعنی پھروں سے مار مار کر کل کرویا جائے) جا ہے شادی شدہ ہو یا غیرشادی شدہ۔

ایک مدیث یاک میں بیجی آیا ہے کہ

''ایسے قعل کرنے والوں کوایک اونچے پہاڑ پر لے جا کر دھکیل کر ہلاک کروو' اگر چ جائیں تو پھر دھکیلؤیہاں تک کہ دہ مرجائیں۔

حضرت مولیٰ علی ڈٹائٹوئے نے تو اس ضبیث کام کے کرنے والوں کو آل کرویے پر

بورب والے اسے عیب نہیں سمجھتے

اس دور میں امریکہ اور انگلینڈ وغیرہ جوسائنس کی ترتی پراپنے آپ کوسب سے زیادہ معزز اور تہذیب و تدن میں اعلی جھتے ہیں ان کے یہاں آج اس کام کے کرنے والے زیادہ پائے جارہے ہیں۔ کمال یہ ہے کہ وہ اسے کوئی عیب یا گناہ نہیں سجھتے جس کے نتیجہ میں اللہ تعالی نے ایڈز نام کی خطرناک لاعلاج بلا نازل کر دی ہے۔ ویصفے میں یہ بھی آیا ہے کہ اس کام کے کرنے والوں کو پھی میں یہ بھی آیا ہے کہ اس کام کے کرنے والوں کو پھی میں یہ بورل کی آگ ہوجاتی ہوں کی آگ

حضرت عبدالله ابن عمر ذی شخه نے روایت کیا ہے کدرسول الله منتظ کا تھا ہے ارشاد فرمایا کہ

''ایسے لوگ جومرد سے مباشرت کریں یا کروائیں ان کی طرف دیکھنا'ان سے بات کرنا'اوران کے پاس بیٹھنا حرام ہے''۔ (مکافقة القلوب باب۲۲)

فائده

اس حدیث ہے وہ لوگ عبرت حاصل کریں جو بازاروں اور دکانوں میں پیجووں ہے بنی مٰذاق کرتے ہیں۔

فيجرول برلعنت

حضرت عکرمہ زیالتو کا بیان ہے کہ حضرت ابن عباس زیالتو نے فرمایا کہ '' نی کریم مطفظ آیا نے آپجووں پرلعنت فرمائی اور فرمایا انہیں این کھروں میں

المركز الكاركاء المكاركة المكا داخل نہ ہونے دؤانہیں گھروں سے نکال دؤ'۔ ایک دوسری روایت میں ہے کہ "مركاردوعالم مِشْنَوَيْمْ نِهِ يَجِرُول كُوشِمِتْ نَكالَ ديااور فرمايا كه '' بیجوول کوایخ کستی ہے باہر نکال دؤ' (کہ کہیں ان کی وجہ سے اللہ تعالیٰ تم پر بھی عذاب نازل نہ کردیے) (بخاري ج ۲ باب ۹۸۱ مديث ۱۷۳۳) صدافسوں کچھاوگ شادی بیاہ سیج کی پیدائش یا کسی اورخوشی کے موقع پر ہیجووں کواینے گھر بلانا اوران سے بیہودہ گانے وقش باتیں سننااپی شان سیحتے ہیں اس سے ان کے سینے فخر وغرور سے چوڑے ہوجاتے ہیں۔شادیوں میں جب یہ ہیجوے آئے لگیس گےتو ظاہر ہے پھراولا دہیجزانہ ہوگی تو کیا ہوگی۔ آخرى ضرورى بات بیجووں سے مباشرت کرنے والے کوایڈز کی بیاری کا ہونا بیٹنی ہے اور پھر جلد سے جلد تکلیف دوموت ہی اس کا انجام۔



جانورول سےمباشرت کے نقصانات

قدرت نے انسان کوجس قدر تو تیں عطافر مائی ہیں ان ہیں سے ہرایک کا طریق استعال بھی بتادیا گیا۔ آج دعویٰ کیا جارہا ہے کہ عالم انسانیت ترتی کی منزلوں کو طے کرتے ہوئے معراج کمال پر پہنی چکی ہے۔ دماغ کی قہم وفراست فلسفہ ومعقول کی موشکافیوں اور علوم مادید میں کیمسٹری وغیرہ کی نت نئی تحقیقات کی شکل میں ترتی کرتے ہوئے نئی ٹی پا تیں سوچنے اور جدید سے حج طریقہ نکالنے میں کامیابی کے زید پر فائز ہوتی جاتی ویری طرف خواہش نفسانی میں بیری انسان اس قدر زوال کی طرف بوھتا جارہا ہے کہ اے د کی کی لیہ وہی قہم وفراست سے کی طرف بوھتا جارہا ہے کہ اے د کی کی کرجرت ہوتی ہے کہ کیا بیووی قہم وفراست سے کی طرف بوھتا جارہا ہے کہ اے د کی کی کرجرت ہوتی ہے کہ کیا بیووی قہم وفراست سے کی طرف بوھتا خارہا ہے کہ اے د کی کی کرجرت ہوتی ہے کہ کیا بیووی قہم وفراست ہے۔

کیا آپ نے جانوروں ہے بھی بڑھ کرحیوان دیکھے ہیں؟ ہیرہ واگ ہیں۔ جنہوں نے شرم وحیا کے قانون کی ہرز نجیر کوتو ٹراہے۔ انہیں کہ نہیں ملتا تو جانوروں کو بھی اپنی ہوس کا شکار بناتے ہیں اور بیٹجوت فراہم کرتے ہیں کہ ہم و کیھنے میں تو و یسے انسان بی نظرآتے ہیں لیکن ہوس اور درندگی کے معالمے میں جانوروں ہے بھی بڑھ کر ہیں۔ گویا عاشرم نی خوف خدا ہے بھی نہیں وہ بھی نہیں حضرت عبداللہ ابن عماس بڑا تھا ہے دوایت ہے کہ حضور مطابق آنے ارشاوفر مایا TORESTON TO THE STATE OF SELECTION OF THE SELECTION OF TH من أتى بهيمة فأقتلوه اقتلوها معم

'' جَوْحُف جانور سے محبت کرے اسے اور اس جانور دونوں کو آل کر دو'' ۔

حضرت ابن عباس بنالٹیڈ سے پوچھا گیا کہ

"جانورنے بھلاکیابگاڑاہے؟" أنهول نے ارشادفر مایا_" اس كاسببة ميس نے رسول

الند مطيخة يستنبس سنامكر حضور مطيئة آنيابي كيا بلكاس جانوركا كوشت تك كهانا لبند (ترفدك الماحديث ١٨٨٥ أبدا ورجه عديث ١٠٥٥ ألان ماجري احديث ٢٣٣١) نەفرماما"_

فائده

اگر ہم اس حدیث برغور کریں تو اس میں چند حکمتیں نظر آتی ہیں۔

غالبًا حضور نی کریم مطیّعَ آیا نے جانور کوتل کرنے کا حکم اس دجہ سے دیا ہو کہ جب بھی کوئی اے دیکھے گا تو گناہ کا منظر یاد آئے گا۔ دوسری حکمت اس میں یہ ہو کہ

امت کو بیتعلیم دینامقصود ہے کہ بیکام کس قد رقبیج ہے کہ اس کے کرنے والے کوقل کیا

جائے اور جس سے بیکام کیا گیا اس میں کس قدر برائی آ گئی کداہے بھی قل کرویا جائے۔(والله تعالی اعلم فم رسول الله اعلم)

ابھی حال ہی میں جدید تحقیق نے اس بات کو پائے ثبوت تک پہنچادیا ہے کہ جو مردیا عورت جانورے اپنی خواہش پوری کرتے ہیں انہیں بہت جلد ایڈز کی تا قابل

تردید بیاری ہوجاتی ہے۔ یا در ہے ایڈز کا دوسرانام موت ہے۔

مسئله مسمَّل نابالغ فخف نے بکری کائے بھینس (یا اور کس جانور) کے ساتھ مباشرت کی تواہے ڈانٹ ڈپٹ کرختی ہے تبھیا یا جائے اور اگر بالغ نے ایسا کام کیا تو

اسے اسلامی سزادی جائے گی'جس کا اختیار اسلامی بادشاہ کو ہے۔وہ جانور ذرج کرکے د فن کردیا جائے اور گوشت وکھال جلادئات پالا نہ جائے جبیبا کہ درمخار میں ہے۔

(در مخار بحواله فآوی رضوییه ۵ م ۹۸۳)

عورت کاعورت سے ملاپ

رسول الله مصفي لي نف ارشا وفر ما يا كه

لاينظر الرجل الى عورة الرجل ولا المراة الى عورة المراة ولا يفضى الرجل الى الرجل فى ثوب المولة فى ثوب (مكاوة 57 مديث ٢٩٢١) واحد (مكاوة 57 مديث ٢٩٢١) ترجم كوئى مردكى نامحم عورت كى طرف اوركوئى عورت كى نامحم مردك طرف د وكي المردوس مردك ما تصاورا يك عورت دوسرى عورت كرماتها ايك كير الوثرة مكرن ليث -

قربان جائے اس طبیب امت نی رحمت مضطحیّناً کے جنہوں نے عورت کو عورت کے ساتھ ایک بستر پر ایک چا دراوڑ ھے آرام کرنے سے منع فرمادیا۔ مردوں میں جس طرح اس حرکت ہے قوم لوط کے ناپاکٹل کا خطرہ عورتوں میں بھی اس فتند کا ڈراور جونقصان دنیاوی دینی مردوں کی اس ناپاک حرکت سے پیدا ہوتے ہیں وہی عورتوں کی شرارت وخیاشت ہوں گے۔

ملاپ كانقصان

ا الليال ياكوني چزمرف او بري ركز اورغير معمولي حركت جمم كى

THE FIT THE SERVICE OF THE CUST OF حالت کو ہرصورت میں تباہ کرنے والی ہے اور عمر مجر کیلئے زندگی بریکار بنانے والی ہے۔ بیر کت زم و نازک جھلی میں خراش پیدا کر کے ورم لائے گی اس ورم کی وجہ ہے بار بار خواہش پیدا ہوگی۔ بار بارکی اس حرکت سے مادہ نکلتے نکلتے پتلا ہوگا اور د ماغ کی نسوں پراڑ پہنچ کر گھبراہٹ بے چینی ویا گل پن کے آٹار پیدا ہوں گے۔دوسری طرف اپنا خون اس اندازے بہانے کی وجہ سے دل کمزور ہوگا ہے ہوٹی کے دورے پڑیں گے اور جب یہ پتلا مادہ ہروفت تھوڑا تھوڑار سے رہے اس مخصوص مقام کو گندہ بنا کر سرائے گا'اس میں زہر ملے کیڑے پیدا ہوں گے زخم بھی پیدا ہوجائے تو کچے تعب نہیں پیشاب میں جلن اس کی خاص علامت ہے آخر کارمعدہ ' جگر' گردہ سب کے کام خراب کرے گا' آ تھول میں گڑھے چہرہ پر بےروفق ہروقت کمریں درد بدن کا کمزور ہونا' ذراہے کام سے سر چکرانا' ول گھرانا' بات بات بیں جڑج اپن اور پھران سب کے بعد تپ دق پرائے بخار کی لاعلاج بیاری میں گرفتاری ہوکرموت کا شکار ہونا ہے اور پھرموت کے بعد بھی سکون نہیں جہنم کاعذاب باقی۔

آپس کا زنا

شایدالی عورتوں نے بین خیال کررکھا ہے کہ بیکوئی گناہ نہیں۔یا ہے بھی تو معمولی سا!سنو۔سنو۔اللہ کے رسول منطق تیج آئیا ارشاد فرماتے ہیں۔

السحاق بين النساء زنا بينهن-

ترجمہ عورتوں کا آپس میں شہوت کے ساتھ ملناان کا آپس کا زنا ہے۔

ديكهو! سنو! باغور سے سنو۔ ہمارے پيارے رحمت والے آ قا مشكر آيا ارشاد

فرماتے ہیں۔

لاتزوج المراة المرلة ولاتزوج المرلة نفسها فانه الزانية التي تزوج

تقسهد

ر شادی کا مکام کی کرے نہ عورت اپنے ہاتھوں اپ آپ کو ترجمہ نہ عورت اپنے ہاتھوں اپ آپ کو

ر بہتہ میں روٹ میروٹ کے اور اسٹ کا مصطوفات کی ہے۔ خراب کرے جو عورت اپنے ہاتھوں اپنے آپ کو خراب کرتی ہے۔ وہ بھی یقینا زانیہ (زنا کرنے والی) ہے۔

اس گناہ کیلئے دنیا کا کوئی بدترین عذاب بھی کافی نہیں ہوسکتا اس کیلئے جہنم کے وہ دھکتے ہوئے انگارے اور دوزخ کے وہ ڈراونے زہر یلے سانپ اور پچھو ہی سزا ہو سکتے ہیں جن کی تکلیف نا قابل برداشت اورانتہائی اذبت پہنچانے والی ہے۔



اینے ہاتھوں اپنی بربادی

یدانسانی عادت و فطرت کا تقاضا ہے کہ وہ اپنے کمال کا اظہار کرنا چاہتا ہے
یکی جذبہ اس خاص دولت ومخصوص قوت کے پیدا ہونے اور کمال کی صورت اختیار
کرنے کے بعداس کے اظہار کی طرف ہائل کرتا ہے۔اورخواہ تو اودل میں میں سوداساتا
ہے کہ اس دولت کو صرف کرنے کی طذت اٹھائے۔ بعض اوقات میدلذت اٹھائے کا
جذب انسان کواس قدر مجبور کردیتا ہے بلکہ ایسا ازخود رفتہ بنادیتا ہے کہ اگر اس حالت کو
جنون سے تعبیر کیا جائے تو بے جانہ ہوگا۔

"الشباب سعبة من البعنون" جوانی دیوانی کے اس و بی مقولے کے مطابق آج کا ہماں او جوان اپنی جوانی دیوائی کی اس بلند چوٹی پر لے جا چکا ہے کہ جہاں چہنچنے کے بعد شہوت اور ہوں کے سوااے کچھ دکھائی نہیں دیتا' اور پھر جب وہ اس چوٹی سے پھسل کر گرتا ہے تو اس کی مٹے شدہ مردائلی کی لاش کو شنا خت کر پانا بھی مشکل ہوجاتا ہے۔

محركه سينما

بتاہیۓ اس دور میں جس قدر برائیاں پھیل رہی ہیں اس کی سب سے بوی وجہ کیا ہے؟ تی ہاں! فلمیں _ آج مسلمانو ں کا تقریباً ہرمکان ایک سینما گھر بن چکا ہے۔ جب ایک پچہ ہوش کی مزل کو چھوتا ہے تو وہ اپنے گھریش ٹی وی کے ذریعے وہ سب پچھود کھیا اور جان لیتا ہے جواس عمر ہیں نہیں جانا جا ہے۔ جب ہوش سنجا لتے ہی وہ فلموں میں ایک مرد اور عورت کے بیچ کے خاص تعلقات کو دیکھتا ہے تو اس میں بھی فلموں میں ایک مرد اور عورت کے بیچ کے خاص تعلقات کو دیکھتا ہے تو اس میں بھی فطری طور پر وہی سب پھھ کرنے کی خواہش پیدا ہونے لگتی ہے۔ پھر بیخواہش ترتی کر عمر کے ساتھ ساتھ من یہ بیوبھتی جاتی ہے اور وہ خود کو عمر سے پہلے ہی جوان بیھنے لگتا ہے مصیبت کہ اسکول کائی بازاروں اور سڑکوں پرجم کی نمائش کرتی جوان لڑکیاں اس کے جذبہ شہوت کو جنون کی صدیک پہنچانے میں آگ پر پٹرول کا کام کرتی جیں ۔ لیکن جب وہ اس نشائی خواہش کو پورا کرنے کیلئے اسباب نہیں پاتا کا کام کرتی جیں ۔ کیا سباب نہیں پاتا کا کام کرتی جی وہ تنہا ہوتا ہے تو بیضی خواہش مواہش کو تو سال کرتا ہے۔ اگر لڑ کے اسکولوں کا لجوں میں بیت الخلاء میں جا کر بیا الک کرمز وہ حاصل کرتا ہے۔ اکر لڑ کے اسکولوں کا لجوں میں بیت الخلاء میں جا کر بیا الک کرمز وہ حاصل کرتا ہے۔ اکر لڑ کے اسکولوں کا لجوں میں بیت الخلاء میں جا کر بیا سب کرتے ہیں ایک بارکا میکل کھر بھر جیکھی وہ تنہا ہوتا ہے تیں ہا تھوں اپنی قوت (منی) کو سب کرتے ہیں ایک بارکا میکل کھر کہی میٹ کی عادت بن جاتا ہے۔

انمول خزانہ کوایے ہاتھوں سے بربادنہ کرو

ہاتھوں کے اس نرم و نازک حصہ (عضو تناسل) کی ہمیشہ کی یہ چھیٹر چھاڑ
اے کرور بناد تی ہے۔وہ ہاریک باریک رگیں اور پٹھ بھی اس تی کو برداشت نہیں
کر سکتے چاہے کیسی بی چکنا ہٹ کیوں نہ استعال میں لائی جائے۔اس سے سب
سے پہلے جونقصان ہوتا ہے وہ عضو تناسل کا جڑ ہے کم ور اور لاغر ہوتا ہے۔اس کے
علاوہ جہاں جہاں رکیں اور پٹھے زیادہ دب جاتے ہیں وہ حصہ ٹیڑ ھا ہوجا تا ہے۔ان
کے دینے سے خون کا آ تا کم ہوگا۔ رکیں پھیل نہیں کیس گی تی جاتی رہے گا۔ جم
دُھیلا اور بے حد لاغر ہوجائے گا اپنے ہاتھوں کے اس کرتوت کے سب ایسا محف
عورت کے قابل نہیں رہتا۔اگر کوئی شریف النف عزت پندلڑ کی ایسے محض

TERESTIC TENESTICS (1612 UNE) نکاح میں دے دی جائے تو عمر مجرا پی قسمت کوروئے گی اور میر کم ظرف اس کو منہ د کھانے کے قابل نہ ہوگا۔اول تو اس ہے مل ہی نہیں سکتا کہ جب بھی عورت سے ملنا جا ہے گا پہلے ہی سب کچھ باہر گرادے گا اور اگر کسی ترکیب سے مل بھی جائے تو مادہ میں اولاد پیدا کرنے والے ابڑاء پہلے ہی اس حرکت سے ختم ہو چکے۔اس لئے اب الیے شخص کواولا دیے بھی مایوں ہونا پڑتا ہے۔ یا در کھئے! بیروہ فیمتی نزانہ ہے جوخون سے بنا اورخون بھی وہ جوتمام بدن کے غذا پہنیانے کے بعد بیا۔ بس اگراس منی کے خزانے کواس تیزی کے ساتھ برباد کیا گیا تو دل کمزور ہوگا۔دل پرتمام شین کا دارو مدار ہے جہم کوخون پہنچا یعنی بیعادت اس حد كو كَيْتَى كَهُ وَن بِنْ بِهِي سْرِيايا هَا كَهُ نَظِينَ كِي نُوبِتَ آكُي اَوْ جَكُرُكا كَامْ فِرابِ ووا ابك تخفيقي ريوزك ایک زبردست تجر به کارڈا کٹرنے اپی مختیق میں اس طرح لکھاہے کہ ''ایک ہزارتپ دق کے مریضوں کودیکھنے کے بعد ثابت ہوا کہ ایک موچھیا ی مریض عورتوں سے زیادہ صحبت کرنے کی وجہ سے اس مرض میں مبتلا ہیں اور چار سو چودہ صرف این باتھوں اپنی توت کو برباد کرنے کی وجہ سے۔اور باتی مریضوں کی یماری کی وجد دوسری تھی۔ ہم نے ایک سوچومیں یا گلوں کا معائد کیا ان کے معائد كرنے سے معلوم ہوا كدان ميں سے چوبيں صرف اين باتھوں اپني قوت كو برباد كرنے كى دوبر سے ياكل موئ ميں اور باقى ايك سوياكل دوسرى وجو ہات سے "_ (بحواله جوانی کی حفاظت م ۲۷ 'از حضرت مولا نا شاه مجمد عبدالعلیم برانشهِ) انسانی دولت کا بیانمول خزانه اگرانسانی جیم کےصندوق میں چند دنوں تک ا مانت رہے اور دوبارہ خون میں جذب ہو کرخون کوقوت دینے والا صحت کو درست اور

Marfat.com

بدن کومضبوط بنانے والا' رعب اورحسن و جمال کو بردھانے والا اور قوت باہ میں جار

JERO LEIZUSE JO

چانداگانے والا ثابت ہوگا۔ د ماغ کی تیزی ترقی پائے گی یا دداشت تیز ہوگی آتھوں میں سرخی ڈورئے ہمت بلند حوصلہ کی سربلندی اس دولت میں اضافہ کی علامت ہوگی۔

بعضاطباء كي تحقيق

بعض عكيمول نے كہا ہے كہ

جے حدے زیادہ دیلا کم وروحیشیا نشکل وصورت کا پاؤجس کی آنکھوں میں گڑھے پڑگئے ہوں آنکھوں کی پتلیاں پھیل گئی ہوں ٔ حدے زیادہ شرمیلا ہو تنہائی پند کرتا ہواس کے بارے میں یقین کرلوکہاس نے اپنے ہاتھوں اپناخون بہایا ہے''۔

بعض معتراطباء كتحقيق كےمطابق

''سومرتباپی ہوی ہے مجامعت کرنے پرجتنی کمزوری آتی ہے آتی ایک مرتبہ
اپنے ہاتھوں سے اپنی قوت برباد کرنے میں کمزوری آتی ہے''۔(واللہ تعالیٰ اعلم)
آج لوگوں ہے جہب کریہ برائی کررہے ہو مانا کہ تبہاری اس فتج حزکت کو
سی نے نہیں دیکھا لیکن بیتو سوچو کہ ظاہر و باطن کا جائے والا پروردگار تبہارے
اس کرقوت کود کیور ہا ہے۔ اس سے بھلاکس طرح سے اور کہاں چھپ سکتے ہو۔ اللہ
تعالیٰ نے زنا کو حرام کیا' اس کی سر اجائی کہ بہ سراد نیا میں دی جائے تو آخرت کے

عذاب سے فئے جائے کیکن اپنے ہاتھوں اس انموں نزانہ کو ہر باد کرنا ایسا سخت گناہ مظہرایا کہ دنیا کی کوئی سزاایسے جرم کیلئے کافی نہیں ہوسکتی جہنم کا دروناک عذاب ہی

اس کا متبادل ہوسکتا ہے۔ ملعون شخص

۔ اللہ کے بیارے صبیب ہمارے آقاد مولی منطق آج ارشاد فرماتے ہیں۔ ناکع الید ملعون۔ ترجمہ ہاتھ کے ذریعے اپنی قوت (منی) کو نکالنے والا لمعون (اللہ کی طرف سے ترجمہ ہاتھ کے ذریعے اپنی قوت (منی) کو نکالنے والا المعون (اللہ کی طرف سے پیٹکار اہوا) ہے۔
اگر خدانخو استہ کوئی نصیب کا دیمن اس بری عادت کا شکار ہو چکا ہے قو اس ہمارا در دمندانہ مشورہ ہے کہ خدارا کسی اشتہاری دواؤں کی طرف نہ جائے ۔ پہلے سپے دل سے قوبہ کرے اور پھر کسی ایٹھے تجربہ کار تعلیم یا فقہ کیم میا ڈاکٹر کے پاس جا سے اور جب تک وہ کے با قاعدہ پورے پر ہیز بین کے ساتھ اس کے علاج برگمل کیجے امید ہے کہ چھر ہم بی بی ہوجائے۔



طاقت بخش غذا ئين

ا حادیث مبارکہ میں الی بہت ی چیزوں کے بارے میں بتایا گیا ہے جن کے کھانے سے جسمانی قوت میں اضافہ ہوتا ہے۔ جسم ہمیشہ صحت منداور چست رہتا ہاور خاص کرمردوں کی قوت باہ میں ترتی ہوتی ہے۔

شہد کے فوائد

ام المومنين حضرت عا كشه صديقه وتاليحا بروايت بك

كان النبي صلى الله تعالى عليه وسلم يحب الحلواء والعسل-(يخاري ٣٠ مدين٢٢)

ر جمه رسول ا کرم منظوری از اور شد بهت بسند تعا۔

رسول اكرم م المنظرة عند ارشاد فرمايا:

د شهدے بر هركوئي دوائيس' _ (ليمني مريماري كيلے شهد بهترين علاج ب)

فائده

شہد کے بیٹار فائدے ہیں شہد میں ہزار دن قتم کے پھولوں کا رس ہوتا ہے اگر پوری دنیا کے تمام حکماء وڈ اکٹر ال کربھی ایسارس تیار کرنا چاہیں تو بھی لا <u>کھ کوشش</u> کرلیس TORE (FIF TO THE SEE OF 1812 610) وه الی چز تیار نبیں کر سکتے۔ بیاللہ رب العزت کا اپنے حبیب مطفی کی کے صدقے میں خاص کرم ہے کہ وہ چھوٹی چھوٹی کھیوں سےایئے بندوں کیلئے ایسی بہترین اور نفع بخش چز تیار کروا تا ہے۔ دود هاور تھی حضرت عبدالله بن عباس وناها سے روایت ہے کہ · ' حضورا قدس مضائقياً کو پينے کی چيزوں ميں سب سے زياده دودھ پندتھا'' حفزت عا ئشرصديقه وُكَانْجانے ارشادفر مايا۔ · · حضور اکرم مِضْعَ اللَّهِ مَحْجُورُ مَلَمِينُ د بِي ملا کر کھاتے تھے اور بیر آپ کو بہت يىندىقا"_ فائده نتيول چيزيں برابر برابر ملا كركھا ئميں _مثلاً آ دھا يا دَمَكُصنُ آ دھا يا دُدى أَ دھا یا د تھجوران نتیوں کوملا کرحلوہ سابنالیں۔ رسول الله مطفيَّةَ إِنَّهُ (اكثر) تحجور كو كمن كساته كھايا كرتے تھے۔ حضرت عبدالله بن جعفر براها اسي مشائل تر خدى "ميں ہے۔ كأن النبى مُشْعَقِيمٌ يأكل التناء بالوطب (شَاكُ رَنْدَى أباب ماجاء صفته فاكهته رسول الله عَنْ الله عَنْ الله عَنْ الله عَنْ الله عَنْ الله عَن حضور مطفِیَقِیّا تر تھجور کے ساتھ خربوزہ ملاکر تناول فرماتے تھے۔ كدوشر يف . حضرت انس بنالله فرمات ہیں۔ ''رسول الله مطيّعَةَ لِمَا لَهُ مِنْ فَرَمَاتِ عَصْدِ جَبِ آبِ كَلِيمَ كَمَا مَا لا ياجا تا يا آپ

زيتون كاتيل

حضرت عمر فاروق بنالليز فرماتے ہیں۔

قال رسول الله ﷺ كلوا الزيت وادهنوا به فانه من شجرة مباركة

(المُ الله كر فرى باب ماجاء صفته ادام رسول الله)

ترجمہ رسول اللہ مضطر نے ارشاد فر مایا زینون کا تیل کھایا کردادر بدن پرجمی لگایا کرد کیونکہ دہ مبارک درخت سے لکتا ہے۔

حضورا کرم مطبّعاً آیا ارشاد فرماتے ہیں۔

''مسوراورزیتون صالحین کی غذاہے۔مسورے دل نرم اور بدن ہلکا رہتا ہے اور شہوت اعتدال پر رہتی ہے۔

حضرت امام محمرغز الى بملطيطيه فرماتے ہیں۔

''چار چیزیں قوت باہ کو بڑھاتی ہیں۔(۱) چیزیوں کا گوست (۲) اتری کھل (ایک قسم کی جڑی بوٹی جے بونانی میں اتری کھل اور ایوروید میں تری کھل کہتے ہیں) (۳) پستہ کھانا (۴) اور ترہ تیزک (ایک قسم کی بونانی جڑی بوٹی) (احیاء العلوم)

رسول الله مصطرية في ارشادفر مايا:

ان اطيب اللحم الظهر-

(يَمَاكُل ترمَد كِي باب ماجاء في صفته ادامر رسول الله)

ترجمه تمام گوشت میں پشت (پیٹے) کا گوشت سب سے بہتر ہوتا ہے۔



گائے کا گوشت

کی کھوگ گائے کے گوشت کو بہت کر استحصتہ ہیں جبکہ اللہ تعالیٰ نے اسے حلال فرمایا اوراس میں برکت عطافر مائی اسے جہالت کے سوااور کیا کہا جاسکتا ہے کہ جس چز کواللہ تعالیٰ حلال فرمائے اسے بندہ ناجائز اور براستجھے۔اگر کی شخص کوکوئی چیز پشدندہ ہو تو وہ اسے نہ کھائے کیکن اسلام کی کو سیاجازت نہیں دیتا کہ وہ صرف اپنے نا پشدہ ہونے کی وجہ سے اسے براجانے اور جولوگ کھاتے ہیں انہیں حقارت کی نظر سے دیجھے۔ اللہ رب العزت ارشاد فرما تا ہے۔

يَأَيُّهَا الَّذِيْنَ امَنُوا لَاتُحَرِّمُوا طَيِّباتِ مَا اَحَلَّ اللَّهُ لَكُمْ وَلَا تَعْتَدُوا إِنَّ (مورة المائد)

ترجمه اے ایمان والوحرام ند مجراؤو و متحری چزیں کداللہ نے تمہارے لئے حلال کیس اور حدسے نہ بردھو کی پیشک حدسے بڑھنے والے اللہ کو تا پہند ہیں۔ (کزالا بمان)

اعلی حضرت امام احمد رضاخان بم الشیخید ارشاد فرماتے ہیں۔

''گائے کا گوشت بیشک حلال ہے اور نہا یت غریب پرورا اور پکھی چیزوں میں تو بحرے دبکری کے گوشت سے زیادہ فائدہ بخش ہے۔ بہت سے گوشت کے شوقین اسے پسند کرتے ہیں اور اس کی قربانی کا اسے پسند کرتے ہیں اور اس کی قربانی کا خاص قر آن عظیم میں ارشاد ہے اور خود حضور اقدس مطابح آنے اس کی قربانی بالخصوص شعائر اسلام اور مطہرات کی طرف سے فربائی۔ ہندوستان میں اس کی قربانی بالخصوص شعائر اسلام اور اس کی قربانی باتی رکھنا واجب ہے''۔ (الملقوظ عن اسمام) کا فوظ سے الی حضور برائے۔

فاكده

گائے کی قربانی مندوستان میں شعائر اسلام (اسلام کی نشانی) اور اس کا باقی

CALL TO THE SEA (BILLIE YO ر کھناوا جب اس لئے ہے کہ یہاں کے کافرگائے کی بوجا کرتے ہیں اے اپنامعبود مانتے ہں اور اسلام ہر باطل معبودوں کوختم کرنے آیا ہے۔ اعلى حضرت وططيع الى ايك دوسرى تصنيف"احكام شريعت" من ارشاد فرماتے ہیں۔ "مشرکوں کی خوشنودی کیلئے گائے کی قربانی بند کرنا حرام ۔حرام ۔سخت حرام ہے اور جو بند کرے گاجہم کے عذاب کا شدید ستی ہوگا اور روز قیامت مشرکوں کے (احکام شریعت ج۲ ص ۱۳۹) ساتھ ایک ری میں باندھاجائے گا''۔ گائے کا کوشت طال ضرور ہے اوراس کے فائدے بھی بہت ہے لیکن اس کے استعال میں اعتدال برتے کیونکہ کسی مجی شے کا کثرت سے استعال بجائے فائدے کے نقصان کاسبب بن جاتا ہے۔ امیرالمونین حضرت مولی علی بناشد سے مروی ہے کہ ان چروں کا استعال جمیشدائی غذاؤں میں رکھیں کدان کے کھانے سے بہت سے فائدے ہیں۔ یہ چیزیں قوت باہ میں اضافہ کرتی ہیں۔ یہاں ہرایک کے فائدے بیان کرنامکن نہیں البذاصرف ان کے نام بی لکھنے پراکتفا کیاجا تا ہے۔ كيبون تل مونك بعلى مونك چنا بخشخش _ 211 پياز البن آلؤاروي ميندي شلج كدولوك كاج شكرقد سبزي یکی چیزیں مرفی کا گوشت مرفی کے اندے بطخ کے انڈے تازہ چھلیٰ بمرے اورگائے کا گوشت' ہائے' کلیجی' دود ھادی کھیں۔ آم أنكورانار كيلاسيب امرود خربوزه تربوز_ کھل محجور پستهٔ بادام کمهانا مشمش آخروث کھویرا' چلغوز ہ زینون۔ ميويئے

عادل کاری می راف الا کاری الا

طافت كم كرنے والى غذائيں

کئی ایکی چیزیں ہیں جن کا استعمال قوت باہ میں کی کا باعث ہوتا ہے۔الہذا

قوت باه کو ہمیشہ قائم رکھنے کیلئے ان چیز وں کا استعال نہ کرے اور اگر کبھی کرنا ہی پر

جائے تو بہت کم استعال کرے کہ ان چیزوں کے استعال سے مرد میں کروری پیدا موتى باورانزال جلد موجاتا ب-المئ كفاآم ليموياآم كااجار چنن آم كالماني

اور دیگر کھنے پھل ٔ زیادہ جائے 'کافی' بیڑی سگریٹ' گوٹکھا دغیرہ۔ان تمام چیز دں کا

زیاده استعال کرنا مرد کی قوت باه کیلیے نقصان ده ہے اور خاص کر شراب افیون اور مروه چز جونشہ پیدا کرے اس کا استعال تو قوت باہ کے حق میں زہر قاتل ہے۔



مردانه بياريال اوران كاعلاج

موجودہ دور میں بدکاری اور عیاثی بہت زیادہ بڑھ چکل ہے۔ جس کی اہم وجہ قلمیں عورتوں کا بے بردہ گھومنا 'نو جوان لڑے' لڑکیوں کا گندے میگزین اور نادل پڑھنا 'اسکولوں اور کالجوں میں لڑکے لڑکیوں کا ایک ساتھ رہنا وغیرہ جیسی چڑیں ہیں۔
ان بدکار یوں اور عیاشیوں کا نتیجہ یہ ہے کہ اکثر مردا در عور تیں خطر ناک جنسی بیاریوں میں بھینے ہوئے ہیں۔ اس لئے اول تو ایسی حرکتیں بی نہیں کرنا چاہے۔ جس سے خطر ناک بیاری ہونے کا خطرہ ہوا در اگر آپ یہ غلطی کر چے ہیں تو پہلے بچ جس سے خطر ناک بیاری ہونے کا خطرہ ہوا در اگر آپ یہ غلطی کر کے ہیں تو پہلے بچ دل سے تو ہہ کے اور کی اشتہاری اور سڑک چھاپ نیم حکیم خطرہ جان کے پاس جاکر اپنی بھی حکیم خطرہ جان کے پاس جاکر اپنی بھی جس سے خطر تا کر در باد کرنے کی بجائے کی اچھے پڑھے لکھے تابل ڈاکٹر یا حکیم سے علاج کروائیں۔

ہم یہاں کچھ مردانہ اور زنانہ بیار یوں کے بارے میں اوران کے علاج کے معلق تحریر کردہے ہیں۔ ان بیار یوں کے علاج کے معلق تحریر کردہے ہیں۔ ان بیار یوں کے علاج کیلئے ویسے بزرگان وین اور حکیموں نے کی طرح کے نیخے اور دوائیاں بیان کی ہیں لیکن آج سب سے بڑی دشواری سیے کہاں نیخوں اور دواؤں ہیں جن اشیاء کا استعمال کیا جاتا ہے ان ہیں سے بچھ تو ملتی ہی منہیں اور پچھل بھی جا ئیں تو عمو آوہ اصلی نہیں ہوتیں۔ البذا ہم یہاں پچھا ہے ہی شنج

THE CONTROL OF THE COST OF THE میان کررہے ہیں جن میں استعال ہونے والی چیزیں آپ کو آسانی سے ل جا کیں گی اور آپ اے اپنے گھر میں خود تیار بھی کر سکتے ہیں۔اس کے علاوہ ساتھ ہی ہم کچھ وظائف اورتعویذات بھی لکھ رہے ہیں جو بزرگان دین سے ثابت ہیں کیونکہ ملیمی علاج کے ساتھ ساتھ رحمانی علاج بھی ضروری ہے۔ (نوٹ تعویذات کی تعالم ہے یا پھر کسی تن سجح العقیدہ ما ہرخص ہے ہی زعفران ہے لکھوائے جائیں) تامردي تجھ لوگ این الركين ميں خلطيوں و برى شكت كى دجه سے اپني طاقت كنوا دیتے ہیں جس کے نتیج میں مردانہ قوب سے ہاتھ دعو میٹھتے ہیں اور پھرشرم کی وجہ سے ا پنا حال کی سے بتا بھی نہیں یا تھے۔شادی ہونے یا شادی کی بات چلنے کے وقت ا پے لوگوں کی پریشانی اور بڑھ جاتی ہے۔اگر مرد میں قوت باہ کم ہواور عورت میں زیادہ ہوتو الی حالت میں عورت مطمئن نہیں ہویاتی اوراس ناکمل جماع ہے جس میں مرد کوجلد انزال ہوجاتا ہےاور عورت کو انزال نہیں ہویا تا عورت کونا گوار معلوم ہوتا ہے اور وہ اجھانی بیارنی جے ہسٹریا کہتے ہیں اورجس میں جم کے پٹھے کمزور ہو جاتے ہیں اس مرض میں جتلا ہو جاتی ہے۔ جماع سے بر بنبتی اور شو ہر سے نفرت کرنے گتی ہے۔ زیادہ مباشرت ہے بھی نامردی کی صورت پیدا ہوجاتی ہے۔الی حالت میں مردكوعلاج كىطرف دهيان دينا جائي ليكن جم كهر كجدية بين كداشتهاري مكيمون ڈ اکٹروں یا سرٹک چھاپ دوانیجنے والوں سے بھول کر بھی علاج نہ کروائے بیلوگ جس قتم کی دوائیں بناتے ہیں ان میں اکثر افیون' دحتورا' بھنگ سکھیا وغیرہ جیسی چیزوں کی آمیزش ہوتی ہے جس سے فورا فائدہ ہوجاتا ہے لیکن بعد میں شدید نقصانات ہوتے

شادی کے افکام کے افکام کے سی اور ان کا ہیشہ بار بار کا استعمال جلد قبر کے گڑھے تک پنچادیتا ہے۔ اس لئے حضور اکرم میں تی اور بزرگان دین کی ہدا تیوں سے فائدہ حاصل کرنا چا ہے اور دواؤں کی بجائے فذاؤں سے کروری دور کرنا چا ہے۔ اب ہم نامردی کی شکایت کو دور کرنے بیائے مذاؤں سے کروری دور کرنا چا ہے۔ اب ہم نامردی کی شکایت کو دور کرنے بیائے مذاؤں سے کہ وی کروری دور کرنا چا ہے۔ اب ہم نامردی کی شکایت کو دور کرنا جا ہے۔ اب ہم نامردی کی شکایت کو دور کرنا جا ہے۔

کیلئے چند ننے بیان کردہے ہیں۔ رسول اللہ مضائرہ نے ارشادفر مایا:

ر رہ ہدھے ہے۔ معاربی ''بدن ہے زیرناف بالوں کو جلد دور کرنا قوت باہ میں اضافہ کرتا ہے''۔ مسئلہ ناف کے نیچے کے بال دور کرناست ہے اور بہتریہ ہے کہ ہفتہ میں جعد کے

دن دورکریں۔ پندرہویں روز کرنا بھی جائز ہے۔اور چالیس دنوں سے زیادہ گزارنا محروہ و پخت منع ہے۔ (قالون شریعت ج ۲ م ۲۱۱)

نسخهجات

1) ماش کی دال (اڑو کی دال) ایک پاؤ کسی کاخی یا چینی کے برتن ہیں ڈال کر
اس ہیں سفید پیاز کارس اتنا ڈالیس کہ دال رس ہیں اچھی طرح بھیگ جائے۔ ایک دن
رات اس کو بھیگا رہنے دیں۔ پھر جب وہ سو کھ جائے تو پھر پیاز کا رس پہلے کی طرح
دال میں پورے بھیگنے تک ڈالیس پھر ایک دن رات پہلے کی طرح سو کھنے کیلئے رکھ
دیں۔ اس طرح بیمل کل سات بار کریں بعنی سات مرتبہ بیاز کا رس ڈالیس اور ایک
دن رات تک دال بھیگنے اور سو کھنے دیں۔ اب دال کو باریک پیس کی اس اور ہر روز پچیس
کرام بید بیسی ہوئی دال لیس پھر اس میں پچیس گرام اصلی تھی ، پچیس گرام شکر ملا کر ہر
دوزم کو بھا تک لیس اور اس پر پاؤ بھر دود دھ پی لیس۔ بیدوا چالیس دنوں تک کھا کیس
دوراس عرصے ہیں ورت سے جماع نہ کریں۔

2) پیاز کارس ایک پاؤ اوراصلی شهد ایک پاؤ دونوں کو طاکر آگ پر پکائے اور جب پیاز کارس مو کھ کرصرف شہد باتی رہ جائے تو ہوتل میں مجرلیں میں گرام سے لے

کرتیں گرام یانی یا بیا کے کہ ماتھ فی لیا کریں۔

3) کھجوراور بھنے ہوئے چنے ووٹوں کو ہم وزن لے کرچیں لیں اور پھر چھان کراس میں تھوڑ اسا پیاز کا رس ملا ئیں پھرلڈو بنا ئیں اور منج وشام ایک ایک لڈو کھالیا

کریں۔(اگراس میں بادام ملانا جا ہئیں تو ملاحکتہ ہیں) کریں۔(اگراس میں بادام ملانا جا ہئیں تو ملاحکتہ ہیں)

ک) ملکر گرم دودھ میں شہد طاکر پیتے رہنے سے قوت باہ میں اضافہ ہوتا ہے۔

(نہارمنداستعال کریں)

5) چنے کی دال ایک پاؤ لے کر آ دھا پاؤگائے کے دودھ میں ملا کراچھی طرح پکائیں۔ جب سارادودھ سو کھ کر دال میں ساجائے تو اسے سل پر باریک پیس لیس پھر پاؤئجراصلی تھی میں تھوڑا سابھون کر پاؤئجرشکر ملا دیں۔اس حلوے کوروز اندایک

چھٹا نگ (۵۰ گرام) من ناشتے میں لیجیز مراح کے است میں ایجیز

6) تھیموں نے بیاز کے استعال کوقوت باہ کے اضافہ کیلیے مفید بتایا ہے لیکن اس کا استعال اتنا ہی کرنا چاہیے جتنا ہضم ہو سکے حدسے زیادہ استعال بھی نقصان دہ

ا ۱۵۰ منعال انتا می کرما چاہیے جمعات م ہو سکے حدسے زیادہ استعال جی لقصان دہ ہے۔ ۔

رحمانى علاج

1) اگرکونی فض کی وجہ سے نامردی کا شکار ہو چکا ہوتواسے چاہیے کہ ہرروز بعد

نماز فجرسورة ابراہيم (قرآن كريم ميں تير ہويں پارے ميں ہے) كى تلاوت كرے

اورسورة ابراہیم کے اس نقش کوتعویذ بنا کراپنے پاس رکھے۔سورة کانقش سے ہے۔

| اسمورة ابراہیم کے اس نقش کوتعویذ بنا کراپنے پاس رکھے۔سورة کانقش سے ہے۔

| 1 | PG711 | YO'N | Ail.A. | צחחור |
|---|-------|--------|---------|---------|
| | Panir | אורירא | יומיווי | AGNIF |
| | 41009 | HIPHY | מפיוור | TIPOT |
| | רמיור | ACOUL | 41m2+ | ורייוור |

2) اگر کی فخض پر جاد و کردیا گیا ہوا وروہ جادو کے باعث مورت پر قادر نہ ہو سکے تو وہ کچھ بانس کی کٹڑیاں لے کر انہیں جلائے کچر جوڑ والا بسولا (برھیوں کا وہ اوز ارجس سے تھوڑی تھوڑی کٹڑی چھیلتے ہیں) لے اور اس آگ میں گرم کرے یہاں تک کہ وہ مرخ ہوجائے پھرآگ سے اسے نکال کر اس پر پیشا ب کردے بیٹل کرنے کے بعد بیری کے سات سے چیں کریانی میں گھول لے وہ یانی پخھرتو ہی لے باتی یانی سے خسل

کرے۔ یہ بہت مجرب عمل ہے۔ان شاءاللہ اس عمل کے کرنے سے جاد و کا اثر ختم ہو

سرعت انزال

کرمردانگی لوٹ آئے گی۔

سرعت انزال اس حالت کو کہتے ہیں کہ جب مرد جماع کا ارادہ کرے یا مباشرت شروع کرے اورا سے جلد ہی انزال ہوجائے۔ مباشرت کے دفت انزال کم از کم دومنٹ کے بعد ہونا چاہیے۔ اگر ڈیڑھ منٹ میں ہی انزال ہوجائے تو سمجھ لینا چاہیے کہ سرعت انزال کا مرض ہے۔ اگر مرد کو سرعت انزال کی شکایت ہوجائے تو ایسی صورت میں عورت کی آلئی نہیں ہو پاتی ہے کیونکہ عموماً اتی جلدی عورت کو انزال نہیں ہو باتی ہے کیونکہ عموماً اتی جلدی عورت کو انزال میں ہوتا اور بیحالت عورت کیلئے تکلیف دہ ہوتی ہے اور اس سے ایک بڑا نقصان سے بھی ہے کہ استقرار حمل نہیں ہوتا۔

جب بیمرض بڑھ جاتا ہے تو کی خوبھورت عورت کود کیفنے سے یا کی کا صرف خیال آ جانے سے یا گوعضو تناسل کے کسی زم وناؤک کپڑے سے چھوجانے سے بھی انزال ہو جاتا ہے۔ اس مرض کے ہونے کی گئی وجوہات ہیں۔ جیسے جبت (اپنہ ہاتھوں اپنی منی نکالنے کی بری عادت) ہمیشہ گندے و بیہودہ خیالات ذہمن میں رکھنا۔ عریا نی فلمیں دیکھنا۔ کسی وجہ سے منی کا پتلا ہونا وغیرہ جیسی وجوہات ہیں۔ اس بیاری

The friend of the the the the کے ہونے کی ایک سب سے بڑی وجدزیادہ محبت کرنا بھی ہے۔اس مرض کودور کرنے

كيليح تيزارم چيزول كے كھانے سے پر بيز كنا ماسياى طرح كندى باتوں فلموں اور گندے ناول پڑھنے سے بچنا جا ہیے۔

نسخهعات

یا کی عدد محجوری لین یا کی عدد میشی ایجھے تم کے بادام لیس کدد کے کی میٹھے چە ماشە(ایک ماشە∧رتی کا موتا ہےاس حساب ۴۸رتی چیلیس) ناریل دوتوله (یعنی ۲۰ گرام)۔ چاروں کو ملا کر انچھی طرح باریک پیں لیں پھر ایک سیرگائے کے دود ھ میں اچھی طرح یکار کر شنڈا کرلیں' روزانہ میں کوناشتہ میں کھا کیں۔

ا نڈے اور گوشت کا استعال بھی ایسے مریضوں کیلیے فائدے مند ہوتا ہے۔ ایے مریف تھی مکھن ملائی کا استعال کھانے میں زیادہ سے زیادہ کرتے رہیں۔ مج

ہلکی می ورزش (کسرت) ضرور کریں۔ وہ نسخہ جوہم نے نامرد کی والے باب میں نسخ فمبر ۵ میں لکھا ہے اس کا استعال

مجمى سرعت انزال كے مريض كيلئے فائدہ مند ثابت ہوگا۔

زیادہ دیررات تک جا گئے ندر ہنااور صبح جلدی اٹھنا بھی سرعت انزال کے مریضوں کیلئے فائدہ مندہے۔

رحمانى علاج

ہم یہاں سرعت انزال کے مرض کے چھٹکارے کیلئے ایک نقش تحریر کررہے میں اسے زعفران سے لکھ کر تمریس باندھ لیں۔خدانے جایاتو مجر پورطاقت پیداہوگی اورکیسی بتی شہوت پرست مورت کیوں نہ ہومرد کے مقابل اسے فکست ہوگی انزال دیر میں ہوگا اور ساتھ ہی قوت باہ میں اضافہ ہوگا نقش یہ ہے۔



احتلام

CCA

چنداحتياطيس

ایسےلوگ جن کواحتلام زیادہ ہوتا ہوانہیں ان مدانتوں پڑمل کرنا جا ہیے۔ان شاءاللدزیادہ احتلام کی بریشانی ختم ہوجائے گی۔

- الله مريض كوجا ہے كه پيشاب كركاوروضو بنا كرسوئ اور صبح جلدا تھ جائے۔
- دانی کروٹ سونے سے احتلام کم ہوتا ہے وائی کروٹ سونا تمارے پیارے
 - آ قاط فَقَالَةُ فَي بيارى سنت بحى ہے۔
 - ا دات کا کھانا سونے سے تین جار گھٹٹے پہلے ہی اور ذرا کم ہی کھائے۔
 - الله سوتے وقت زیادہ کرم دودھ نہیے۔ شنڈایا بلکا کرم ہے۔
 - الله سونے سے پہلے کوئی اچھی کا دیم معلومات والی کتاب کامطالعہ کرے۔



🕸 💎 کھٹی' تیز' چٹنی'زیادہ گوشت وغیرہ نہ کھایا کرے۔

انڈروبریا چڈی پہن کرنہ ہوئے۔

كسخ

*

____ سوکھا دھنیا ایک تولو (۱۰ گرم) تھوڑ اگرم کرکے رات کو ایک گلاس پانی میں بھگو کر رکھیں ۔ شبح کو چھان کر دوتو لہ (۲۰ گرام)ممری (گاڑھی شکر) سے پیٹھا کر کے پیچے۔

رحماتى علاح

جس فخص کواحلام زیادہ ہوتا ہوتو اسے جاہیے کہ سوتے وقت اپنے دل پر شہادت کی انگل سے لکھ لیا کرے۔ بیاعہ مد خاروق اعظمہ ۔ان شاءاللہ احتلام سے من سر سر نقش ہے کہ

محفوظ رہے گا اور پی تشریخ کے بیان کے میں ڈالے نقش ہے۔ بعق اُباب کر صدیق ہوتی عمر فاروق

بحق ابابكر صديق بحق عمر فاروق يگريزوشيطان لعين ازهببت عثمن نيامدپيش من به هيبت على شير خدا

(مثمع شبستان رضاج ا'ص ۲۷)

جريان

ماری موجودہ نسل میں یہ بیاری بہت زیادہ پائی جاری ہے۔اس بیاری میں باخانہ یا پیشاب سے پہلے یا اس کے بعد پیشاب کی تلی ہے دوری گلتی ہے یا پیشاب کے بعد بھی بھی سفیدرنگ کا دھوگا سابھی نکل ہے۔ اس بیاری میں مریض کو کمر میں درز گھٹنوں میں تکلیف اور آ تھوں کے سامنے اند جیرا چھاجا تا ہے یا چرچکر آتے میں درز گھٹنوں میں تکلیف اور آ تھوں کے سامنے اند جیرا چھاجا تا ہے یا چرچکر آتے ہیں اور کر وری دن بدن بردتی رہتی ہے۔ بھوک نہیں گلتی اور پچھ کھایا جائے تو ہفتم نہیں ہوتا اور کتی کھایا جائے تو ہفتم نہیں ہوتا اور کتی تھی ہی ہجر بین غذا کھائی جائے تو بدن کوئیں گلتی۔ اس بیاری کے ہونے کی ہہت

ی و بوہا ہے ہو تی ہیں۔ میں میں سے پھاس سرس میں میں میں میر میں ہوں۔ شہوت کا زیادہ ہونا نی مباشرت زیادہ کرنا ہی ہمیشہ بخار زیادہ رہنا نی ہروقت دل و دماغ میں صحبت کی باتیں بیٹھائے رکھنا یا اس کے بارے میں سوچتے رہنا کی قبض ہونا نی اپنے ہاتھوں اپنی میں نکالنا نی ہیجوں سے براکام کرنا۔ (دغیرہ۔وغیرہ)

نسخه حات

1) مستم مورانی (ویسی) مرغی کا ایک انڈ اپھوڑ کر کسی برتن بیس لیس پھرانڈ کی پیلک (زردی) وسفیدی دونوں کے برابرگا ہر کا رس لیس۔پھراس بیس اتی ہی مقدار بیس شہداور سنگھی ڈالیس۔اب سب کو طاکر ہلکی آنچ پر پکا کر طوہ سابنالیس۔اس طرح اکیس دنوں تک طوہ بنا کر کھاتے رہیں ۔کھٹی چیزیں دبئ اجازا کی اور چھلی وغیرہ کے استعمال سے پوری طرح پر ہیز کریں اور شادی شدہ ہوتو اس دوران ہوئی سے جامعت ندکریں۔

2) برگد (بوہڑ) کا دودھ (برگد کے جھاڑ کی ٹہنی تو ڑنے پر جورس لکتا ہے) جار ماشۂ بتا شے میں یاشکر میں ڈال کرروز انڈنٹے کو کھالیا کریں۔

سوزاك

یہ بیاری زیادہ تر نو جوانوں میں بری سنگت و بری عادتوں کی وجہ ہے ہوتی ہے ہیہ بڑی خطرناک بیاری ہےاس کی وجہ ہے نو جوانوں کی صحت دھیر سے دھیر سے گفتہ جاتی ہے ان میں کمزوری آ جاتی ہے۔ اس بیاری کی نشانی ہے کہ پیشاب کی نالی میں سوجن یا درم آ جاتی ہے اور چیشاب کی نالی کے اندر گھاؤ (زخم) ہوجاتے ہیں اور ان زخموں سے پیپ نکلتا رہتا ہے اور جب بھی پیشاب کیا جائے تو اس وقت پیشاب میں سخت جلن ہوتی ہے۔

تسخهجات

1) سفيدرال باره گرام شكر باره گرام لين دونوں كوپيں كر چورن بناليں۔دو

المراع المراح ا

2) كرفر عدون كاملى (جدر كت بين) سائه كرام لين نيم كى تازه

پتوں کا رس بارہ گرام لیس ان دونوں کوا یک سواسی لیٹریانی میں بھگو کر رات بھر رکھیں۔ صبح کو چھان لیس اور تھوڑ اسااور نیم کارس ملا کرمنے کو بی لیس_

صح کو چھان لیں اور تھوڑ اسااور نیم کارس لما کرمیج کو پی لیں _ 3) مبلدی اور سوکھا آ ملہ دونوں کومیس گرام لیں _ دونوں کو باریک پیس کر پوڈر بنا

ک میں چردوگرام ہیں پوڈر پانی کے ساتھ دن میں دوبار استعمال کریں۔ لیں چھردوگرام ہیں پوڈر پانی کے ساتھ دن میں دوبار استعمال کریں۔

پیشاب کی جلن

پیشاب کے بعد طبارت ندکرنے یا عجامعت کے بعد شرم گاہ کے ندر ہونے کی وجہ سے پیشاب میں جلن ہوتی ہے۔ زیادہ گرم کھانوں کے استعال سے بھی پیشاب میں جلن کی شکایت پیدا ہوتی ہے۔ اس بیاری کے مریض کو پیشاب جلدی نہیں ہوتا

سن کی سام میں ہیں ہوں ہے گاری کی اور اور ان کا لیف ہے آتا ہے۔ بلکہ تھوڑ انحوڑ اجلن کے ساتھ آتا ہے اور بڑی تکلیف ہے آتا ہے۔ •

لسخهجات

سفید صندل کا براده (پوڈر) چیگرام لین دھنیا چیگرام سوکھا آ ملہ چیگرام استعمال کا براده (پوڈر) چیگرام استیوں چیز دل کو پیمان کر استیوں کی استیوں کی بین میں دات بحر بینگوکر دکھیں ۔ میں کو چیمان کر اس یائی بین شکر ملاکر شربت بنالیس اور میں دو بیرکوئی لیا کریں ۔

کی ہیں۔ 2) کھیڑے کے نئے چیگرام' کٹڑی کے نئے چیگرام' دونوں کوایک مومیس ملی لیٹر پانی میں اچھی طرح ابال کرچھان لیں ادراس پانی کو شنڈا کر کے شیح کو پی لیا کریں۔

3) ایک انڈے کی سفیدی لیں۔ پلک (زردی) الگ کرلیں۔ اس سفیدی کو

اچھی طرح چھینٹ لیں اورا یک پیالی ملکے گرم دودھ میں ملا کرمنے کو پی لیا کریں۔





زنانهامراض اوران كاعلاج

عورتوں میں بھی برے طرح کی جنسی بیاریاں ہوتی ہیں۔ہم یہاں چند بیاریاں اوران کے علاج کے متعلق ککھ دہے ہیں۔

سيلان الرحم (ليكوريا)

سیردی خطرناک بیاری ہے جو محورتوں کے بدن کو کا ننے کی طرح کردیتی ہے

اس بیاری میں مورت کی شرم گاہ سے چیپانڈ ہے کی سفیدی یا ناک سے نظنے والی رطوبت

جیسا پائی لکتا رہتا ہے اس پائی کے ساتھ بدن کی ساری طاقت ختم ہونے گئی ہے۔ بھی

مجھی میہ بد بودار پائی اتن تیزی سے اور زیادہ مقدار میں آتا ہے کہ کپڑے تک بھیگ

جاتے ہیں اور پائی مخنوں تک بہتارہتا ہے۔ اس بیاری میں جتلا عورت زیادہ پریشان

رہنے گئی ہے۔ کمر میں در در جسم کے اعتصاء کھنچ کھنچ سے لگتے ہیں۔ مزاح میں چڑج ا

بن اور غصہ بردھ جاتا ہے گھراہ نے زیادہ ہوتی ہے۔ کھانا ہضم نہیں ہوتا۔ پیشاب بار

بار آتا ہے دل کی دھر کن بڑھ جاتی ہے۔ اس مرض میں جتلا عورتیں کھانے میں چاول نے

نسخدجات

1) کچهمقداری بول کی پیلی سکھا کر باریک پوڈر بنالیں۔دوگرام من میں اور

TERESTON TENEVIOLE YEAR (1612 USE) YES دوگرام دو پہر میں یانی کے ساتھ لیں۔ تمیں گرم املی کے بیجوں کا گودہ لیں اور اسے بھون کر پیس لیں 'یہ چورن ایک گرام لے کریانی کے ساتھ دن میں تین مرتبہ پیس۔ نوٹ جس عورت کوتبض کی شکایت ہوتو وہ نسخہ نمبر (۱) کا ہی استعال کرے نسخہ نمبر (۲) کااستعال نہ کرے کہ قبض بڑھ سکتا ہے۔ حيض کي زياد تي اس بیاری میں عورت کو چف بڑے بے ڈھنگے بن ہے آتا ہے اور کثر ت ہے آ تارہتا ہے۔اس سے بدن کمزور ہوجا تا ہے ٔ ٹاڑی تیز چلتی ہے پیاس بڑھ جاتی ہے ٔ چرہ پیلا موجاتا ہے قبض رہنے لگتا ہے بھوک نہیں لگئ یاؤں پر ورم آ جاتا ہے اور بھی تم چکر بھی آتے ہیں۔ یہاں تک مکہ بھی عورت نڈھال ہو کر بے جان ی ہو جاتی بئيد بارى جماع كى كثرت سے پيدا موتى ہے اور بار بارحمل ضائع مونے سے بھى یہ بیاری ہوجاتی ہے۔ نسخهجات انارکی چھال (چھکے) ہائیس گرام لیں۔ پھراسے دوسو پچاس ملی لیٹر پانی میں ا تاابالیس که یانی سو که کرآ دهاره جائے۔اس یانی کوروز انت بی لی کریں۔ کچیں گرام ملتانی مٹی آ دھالیٹریانی میں دو گھنٹے تک بھگوئے رکھیں پھراسے چھان لیں۔روز انہا یک سوپچیس ملی لیٹر چار بارپئیں۔ رحماني علاج جس عورت کوچف کا خون کثرت ہے آتا ہواور بار بار آتا ہوتو بنقش زعفران

Marfat.com

سے لکھ کر عورت اپنی کمر پر با ندھیں فقش ہے۔

THE CENTURE OF THE CURE OF

| Ğ | É | Ġ | Ć |
|----|----|----|----|
| 19 | 19 | 19 | 19 |
| 9 | 9 | 9 | 9 |
| ۷ | 4 | 4 | ۷ |

(شمع شبستان رضاج ۲ م ۳۲۳)

حيض كابند هوجانا

عورت کو ہر مہینے پابندی ہے جوگندہ خون آتا ہے وہ مقررہ وقتوں پر آتا ہے۔
اگر عورت حاملہ ہوتو بیخوں آٹا بند ہوجاتا ہے جوقد رتی طور پر ہوتا ہے۔ بنج کے دودھ
پلانے کے دنوں میں اور زیادہ عمر ہوجائے کے بعد بھی چین کا خون بند ہوجاتا ہے۔ اس
صورت میں کوئی فکر کی ہات نہیں ۔ نہ ہی اس وقت کی علاج کی ضرورت لیکن بغیر حمل
کے ہی خون آٹا بند ہوجا ہے تو یہ بیماری ہے۔جس کا فوراً علاج کرانا چا ہیے۔ اس مرض
کی پہچان میہ ہے کہ مراکم راور پیروں میں درور ہتا ہے اور مزاج میں چڑ چڑا پن وغیرہ۔

نسخہ

سوئے کے بچ تین گرام مولی کے بچ تین گرام کا جرکے بچ تین گرام میشی کے بچ تین گرام _ان سب کودوسو پچاس ملی لیشر پائی میں اتنا ابالیس کہ پانی ادھارہ جائے کھر چھان لیس اوردن میں دوباراس پائی کو پئیں _

رحمانی علاح

یہاں ہم ایک نقش لکھ رہے ہیں جے موم جامہ کرکے عورت کی بائیں ران پر باندھے۔ان شاءاللہ حیض حسب معمول جاری ہوجائے گائقش ہیہے۔



(مقمع شبستان دضاج ۴ ص۳۳)

حیض در دسے آتا

پچھ مورتوں کو چیش آنے سے پہلے کولہوں اور رانوں میں سخت درد ہوتا ہے اللہ میں مقدار میں آتا کہ میں مقدار میں آتا کہ میں مقدار میں آتا

ہاوردرد کے ساتھ آتا ہے۔

نسخ المنتخد

ہینگ پاٹچ سوملی گرام' گڑ چیرگرام لیں' ہینگ میں گڑ ملا لیں اور حیض کے دنوں میں پاٹچ سے چیودنوں تک روزانہ شنج کھا ئیں۔

پییثاب میں جلن

اس بیاری میں عورت کو تکلیف کانی ہوتی ہے اور مقام مخصوص میں تھجلی وجلن ہوتی ہے خاص کر بپیثاب کرتے وقت جلن محسوس ہوتی ہے اور ایک طرح کی بے چینی

ے رہتی ہے۔ پیشاب کے بعد طہارت نہ کرنے یا زیادہ گرم کھانوں کے استعال سے بھی پیشاب میں جلن کی شکایت پیدا ہوئی ہے۔ شادی شدہ مورتوں میں پیشاب

ے ں چین ہیں۔ ن کی حقایت پیدا ہوں ہے۔ سردن سدہ توریوں یں پیتاب میں جلن کی شکایت زیادہ تر مجامعت کے بعد شرم گاہ ند دھونے کے سب ہوتی ہے۔

1) نیم کے تازہ ہے ایک سوچیس گرام لیں ، پوں کو ایک لیٹر پانی میں ابال کر چھان لیں ، پھراس پانی میں تین گرام بھونا ہوا سہا کہ لیس اور اسے ملا کرشرم گاہ پر تھلی حال شادل کے اظام کی الکامی کا الکامی کا الکامی الکامی و شام دھو کیں۔ کے مقام کوئی وشام دھو کیں۔

2) کافورتین گرام گلاب کاپانی تجیس لمی لیٹرلین کچرکافورکوپیں کرگلاب کے پانی میں گھول لیں۔ایک صاف کپڑالے کراس میں بھگوئیں اور جلن کی جگہ پر دھیں۔ جتنی پار ضرورت ہواس عمل کودو ہراتے رہیں۔

عزل ياغبار بكااستعال

زیادہ نیچ پیدانہ ہوں اس کیلیے موجودہ دور بیس نرودھ کاپرٹی کالاڈی (کھانے کی کولیاں) وغیرہ استعال میں لائی جارہی ہیں۔

عبدرسالت منطق شیکا بیس سلسله پیدائش کورو کئے یا کم کرنے کیلئے بعض حضرات ` اپنی بائدیوں سے عزل کیا کرتے تھے۔

عزل كياہے؟

عزل اسے کہتے ہیں کہ مباشرت کے دفت جب مرد کو انزال ہونا قریب ہوتو مردا پٹے آ کے کوعورت کی فرج سے نکال کرشی رتم کے باہر خارج کردے۔اس طرح جب مرد کی منی عورت کے رحم میں نہیں کپٹچتی ہے قوصل قر از میں یا تا۔

حدیثوں کےمطالعہ ہے معلوم ہوتا ہے کہ نبی کریم منطقیقیّت کے طاہری زمانے میں بھی بعض صحابہ کرام اولا دکی پیدائش کورو کئے کیلئے عزل کیا کرتے تھے۔ چنانچہاس کا ثبوت احادیث کی مینکٹروں کما بوں سے ملتا ہے۔

حضرت جابر ذالله؛ فر ماتے ہیں۔

كنا تعزل على عهد النبي صلى الله تعالى عليه وسلم والقرآن ينول (بخارى ٣٠ مديث١٩٣ مسلم ج١٠ ص ٣١٥ ترندى ج١٠ مديث١٣٣ ابن اجرج١٠ مديث١٩٩١ مكلوة ج٢ مديد٣٠١ مسلم

TORETTO TO THE SEA (BILLIST YO ترجمه ہم نی کریم طفی تی کے مبارک زمانے میں عزل کیا کرتے تھے۔ حالانکہ قرآن كريم نازل مور بإتھا_ حفرت محدث امام ترندي مخطیجه اس حدیث کے متعلق ارشاد فرماتے ہیں۔ "حديث جابر حديث حسن صحيح" (زندی ج۱) ترجمہ کیعنی حفزت جابر ڈٹائٹر کی بیرحدیث حسن سیح ہے۔ اس حدیث یاک سے معلوم ہوا کہ صحابہ کرام عزل کیا کرتے تھے اور اس ز مانے میں جبکہ قرآن کریم نازل ہور ہاتھالیکن کوئی ایسی آیت نازل نہیں ہوئی جس میں صحابہ کرام کوعز ل ہے منع کر دیا جاتا۔ چنانچہ مشکلوة میں مسلم میں انہی صحابی رسول حضرت جابر ذائتی سے بیروایت بھی مروی ہے کہ۔ فبلغ ذالك النبي مُضَيَّلَيًّ فلم ينهنا (ملم حَا مَكُلُوة جَ٢ صديث ٣٠٢٢) ترجمه عزل كے متعلق حضور مطفق الله كوخر پينې كين آپ نے جميں منع نه فرمايا۔ جِمَّة الاسلام سيدنا امام محمد غزالي ذخائيُّهُ اليِّي مشهور وشهرهُ آ فاق تصنيف ''احياء العلوم' میں ارشاد فرماتے ہیں۔ " صحیح بینے کے عزل حرام نہیں''۔ (احياءالعلوم ج٢ باب٢) حضرت سیدنا امام ما لک ڈٹائٹنز کی''موطا'' میں ہے۔ عن عامر بن سعد ابن ابي وقاص عن ابيه انه کان يعزل_ (مؤطاامام ما لكج ٢٠ كتاب الطلاق باب ٣٣ مديث ٩١) ترجمه محضرت عامر بن سعد بن الي وقاص نے حضرت سعد بن الي وقاص وظافها ہے روایت کیا ہے کہ وہ عزل کیا کرتے تھے۔ ای مؤطاامام مالک میں ہے۔

The from the second of the contractions of the

ابو أيوب الانصاري رضى الله تعالىٰ عنه انه كأن يعزل-

(مؤطاامام ما لك ج ٢٠ كتاب الطلاق باب٣٣ صديث ٩٤)

ای مؤطاامام مالک میں ہے۔حضرت جمید بن قیس کی ڈٹاٹٹنڈ کابیان ہے کہ

سئل ابن عباس رضى الله تعالى عنه عن العزل انا فافعله يعنى انه (مؤطاام مالك ج من كاب الطلاق باب سم مديث ١٠٠)

عن ل کرنے کا مقصد بیہ ہوتا ہے کہ حمل نہ ظہر کے الیدی اولا دی پیدائش کوروکا جاسکے) اس مقصد کے تحت مردا پٹی منی کوعورت کے رقم میں جانے سے روکتا ہے۔ یہی مقصد مزود ھ سے بھی حاصل ہوتا ہے۔ لینی ربر کی تھیلی جومبا شرت کے وقت مرد اپنے عضو پر چڑھالیتا ہے۔ منی اس ربر کی تھیلی میں ہی رہ جاتی ہے رقم عورت میں نہیں

مقدرعاصل ہوتا ہے۔ عزل کے بارے میں شرعی تھ

اس حقیر سرا پاتفقیر نے خاص غبارے کے جواز و عدم جواز کے متعلق علاء المسنّت کا موقف جانے کیلئے بہت ہے موجودہ اکا برعلاء کرام سے ملاقاتیں کیں اور السنّت کا موقف جانے کیلئے بہت ہے موجودہ اکا برعلاء کرام سے ملاقاتیں کیں اور سلسلے میں اور کھی چیش کیا۔ ان سب کا حاصل سیہ ہے کہنا چیز نے نرودھ کے استعمال کے سلسلے میں علاء المسنّت کی مختلف رائے پائیں ' بعض اس کے مباح ہونے کے قائل ہیں اور بعض کروہ ہونے کے قائباس کی وجہ سے کہ فرودھ دور حاضرہ کی نئی ایجاد ہے اور ناچیز کی تاقص معلومات کے مطابق اہمی سے کہ فرودھ دور حاضرہ کی نئی ایجاد ہے اور ناچیز کی تاقص معلومات کے مطابق اہمی سے کہنے بیس ہوئی ہے نہاء

گرام نے ابھی تک کوئی واضح عظم شرع میان کیا ہے اور نہ بی اس متعلق کی معتد عالم المنت کا کوئی فتو کی نظر نواز ہوا۔

فقیرراقم الحروف نے اپنے طور پر جو تحقیق کی اس میں یہ پایا کہ مسلامز ل میں حنیۂ مالکیے، شافعیہ کے درمیان اختلاف ہے۔ حنفیہ اور الکیے آزاد مورت (لیمی بیوی) سے عزل بغیراس کی اجازت کے طروہ جانتے ہیں اور لونڈ کی (اب اس دور میں لونڈ کی کا روائے نہیں) سے بغیر کر اہت کے جائز خیال کرتے ہیں بورشافعیہ بغیر کی کر اہت کے بلا امتیاز جائز قرار دیتے ہیں مگر میر کہ اولا دسے نیچنے کی غرض سے ہوتو اس وقت یہ ان کے بزد کی بھی مگر وہ ہے۔ شافعیہ کی دلیل حضرت جابر زناتھ کی حدیث ہے جو ا

ان سے رویک کی مروہ ہے۔ سیدی وس سرت جابر ہود کی صدیت ہے ہو بخاری میں بایں الفاظ مروی ہے۔ "کیما تعدّل والقرآن یندل" احادیث وفقہ کی متند کمایوں میں "نقل ہے کہ مرال اپنی بیوی کی اجازت کے

احادیث وفقہ می سند کہا ہوں ہیں یہ س ہے لہ عزل اپی بیوی کی اجازت کے بغیر نہیں کرسکتا کہ مکروہ (مکروہ تح بی) ہے۔

ا ہام عبدالرزاق اور بہبی حضرت ابن عباس سے اور امام تر ندی حضرت امام مالک بن انس تشخصین سے روایت لائے ہیں کہ

نهى عن عزل الحرة الا باذنها_

(بیمنی تزندی ج ا باب ۲۷ مدیث ۱۱۳۳ م ۵۸۳)

رجمہ آزادعورت(لینی بیوی) سے بغیراس کی اجازت کے عزل منع ہے۔ امیرالموشین حضرت عمر ڈاٹٹو سے روایت ہے۔

نهى رسول الله في الم الله المنظمة الا بانتها-

(ابن ماجهج الباب ۱۱۸٬ حدیث ۱۹۹۷)

ترجمہ رسول اللہ مطابقاتی نے آزاد عورت (بیوی) سے بغیراس کی اجازت کے

عزل كرنے سے منع فرمایا۔

THE CALL OF THE THE LANG TO

حضرت امام ما لک رہائٹھۂ فرماتے ہیں۔

لا يعزل الرجل المراة الحرة الا بانتها-

(مؤطاام مالك ج الباسم صيف ١٠٠)

ان تمام احادیث سے معلوم ہوا کہ عورت سے جماع سے پہلے عزل کرنے یا غبارے کے استعال کی اجازت ضروری ہے۔ نہ ہب حنفیہ کی بنااس وجنقلی بھی پر ہے کہ جماع دراصل بیوی کا شوہر پر چق ہے اور بظاہر جماع وہ بی مانا جاتا ہے جس میں عزل نہ ہو لاند ااگر اس کے خلاف لیعنی عزل کی صورت مطلوب ہوتو صاحب حق (لیعنی الیمنی میں کے خلاف لیمنی ضروری ہے اور اگر بیوی عزل سے یا موجودہ دور میں فرودھ کے استعال ہے مع کرو ہے تو مجار استعال میں نہیں لاسکتا۔

ابھی آپ یہ پڑھ چکے کہ عزل ناجا ئزئیس کیکن تصویر کا ایک دوسرارخ اور بھی ہے۔وہ یہ کہ سیجی ہے اللہ کے رسول منطق آنے نے عزل سے منع ندفر مایا لیکن اسے آپ نے پہند ندفر مایا اور نہ بی اسے اچھا سمجھا' بلکہ بچوں کی کثرت کو آپ نے پہند فر مایا۔ آ ہے اب ان حدیثوں کودیکھیں جن سے ظاہر ہوتا ہے کہ عزل نا پہندید ڈفعل ہے۔

جوآ نائ كردم

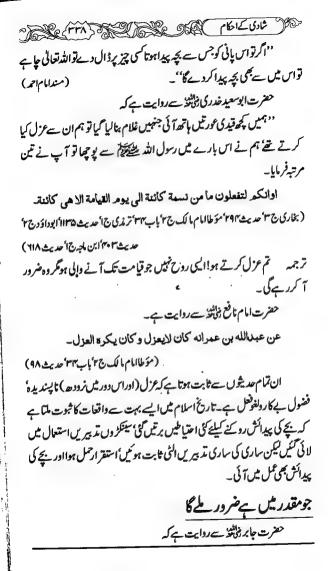
حضرت عبدالله ابن مسعود رُواللهُ السيم عن المستعلق بوجها كياتو آپ نے فرمايا:

ان رسول الله صلى الله تعالى عليه وسلم قال لو ان شها اخذ الله ميثاقه استودع صخرة لخرج- (مندام اعظم باب١٢٧)

ترجمہ رسول اللہ مضائق نے ارشاد فرمایا ' اگر اللہ تعالی نے کی چیز کے ظہور کا عہد کیا و تحقیق ہے کے خام ورکا کردے گی۔

ابو پھر ہیں چھپائی ہے بودہ مرور تھی کر رہے ہیں۔ حصرت امام احمۂ حصرت انس (وٹائن) سے مرفوع حدیث لائے ہیں کہ آپ

نے فرمایا:



TORE FROM THE SERVICE YOU

اس حدیث سے طاہر ہوا کہ اگر مقدر میں بچہ ہوتو انسان پھر کتی ہی تدبیریں
کرے اسے دنیا میں آنے سے نہیں روک سکتا۔ اطباکا کہنا ہے کہ مرد کی نمی کے ایک
قطرے میں لاکھوں بچ پیدا کرنے والے اجزاء (کرم تولید) ہوتے ہیں۔ جب کوئی
مردمباشرت کرتا ہے تو اس کے عضو تناسل سے پچھٹی تچٹی رہ جاتی ہے جس میں سید
کیڑے بھی موجود رہتے ہیں۔ اب اگر دوبار ابغیر زودھ استعمال کئے ہوئے جماع کیا
تو چاہازال نہ ہویا حزل کرلے کین وہ پہلے کے چھے ہوئے پچھ کیڑے ورت کے
رتم میں وافل ہوجاتے ہیں اور اس طرح سے بھی حمل قرار پاجاتا ہے۔ اور انسان کی
ساری تدبیریں یا بیعزل کا طریقہ ناکام ہوکر رہ جاتا ہے۔ البذاتریہ بی ہے کہ عزل یا
خرودھ کا استعمال نہ کرے کہ یکی اولی وافضل ہے۔

مسلم شریف دائن ماجد کی ایک حدیث میں ہے کہرسول اکرم مضافین نے ارشاد

ذالك الواد الخفي_

(مسلم شريف بحواله ملكوّة ج٢ عديث ٣٠٥١) بن ماجيرج المعديث ٢٨٢)

مَه عزل كرناايك چيوني تتم كانيچ كوزنده زيين ش گاژدينا ہے۔

اعلی حضرت امام احمد رضاخال مخطیحه " فآوی رضوبیه میں ارشاد فرماتے ہیں۔

''الی دوا کا استعال جس ہے حمل نہ ہونے پائے اگر کسی شدید شریعت میں قابل قبول ضرورت کے سبب ہوتو حرج نہیں ورنہ تخت بُراونا پہندیدہ ہے''۔

ر خناد کار ضورین ۹ نصف آخر می ۲۹۸)

اطباء كي شخقيق

بعض حكماء نے لكھاہے كه

" حمل ند مخمرے اس کیلئے سب سے زیادہ اچھا اور آسان طریقہ یہ ہے کہ عورت کے فیل کے ایام شروع ہونے سے ایک ہفتہ پہلے اور عورت چیش سے جس

ورت عدد المرون اوے عداید المعتر بنا اور ورت من المعد الله ورت من المحد الله المعد الله المعدد الله المعدد الله المعدد الله المعدد المع

مظہر تا اور بیدون نہایت بی محفوظ ہوتے ہیں کیونکہ ان دنوں میں عورت کی منی میں حیضہ

لینی بچه پیدا کرنے والے انڈے (Voa) جنہیں کہا جاتا ہے وہ نہیں ہوتے جس کی وجہ سے حمل ندکھ ہرنے کے ام کانات بہت زیادہ ہوتے ہیں۔

(والله تعالى اعلم وعلمه جل مجده اتم واحكم)

اولا دے قاتل

یکے کی پیدائش کا سلسلہ بھیشہ کیلئے ختم کرنے کیلئے مرد کانس بندی کرانا اور عورت کا آپریشن کرالیا کا الیا دوا کا استعمال کرنا جس سے بچوں کی پیدائش جمیشہ

THE THE THE TENE OF THE PROPERTY OF THE PROPER

کیلیے بند ہوجائے اسلام میں سخت نا جائز دحرام وسخت گناہ ہے۔

آج کل لوگوں میں بی خیال عام طور پر پایا جارہا ہے کہ زیادہ بچے ہوں گے تو کھانے پینے کی قلت ہوگی خرچے بڑھیں گئر ہے کیلئے جگہ کی کمی ہوگی وغیرہ وغیرہ

افسوں! یہ خیالات صرف کافر ومشرک تو موں کے نہیں بلکہ ان میں جدید الخیال مسلمانوں کی اکثریت بھی شامل ہے۔ یقیناً ایسے خیالات شریعت اسلامی کے خلاف ہیں۔ مسلمانوں کو ایساعقیدہ رکھنا کسی طرح جائز نہیں۔ بھلا انسان کی حیثیت ہی کیا ہے کہ وہ کسی کو کھلائے اور کسی پرورش کرئے چیک حقیق رز آق اور پالنے والا خالق باری تعالیٰ بی ہے۔ کیا آپ نے نہیں دیکھا کہ انسان اپنی ساری تدبیریں کھل کر لیتا

ہے لیکن چندونوں کا قحط (سوکھا) انسان کو بھوک مری پر مجبور کردیتا ہے۔ ای طرح بھی مجھی زیادہ ہارش بھی انسان کے کئے کرائے پر پائی پھیردیتی ہے اور ہاتھ کچھٹیس آتا۔ چنا میں معلوم ہوا کہ حقیقت میں کھلانے اور پرورش کرنے والاصرف اللہ ہے۔

رزق كاؤمه دارالله

رب تبارک وتعالی ارشاد فرما تا ہے۔

وَمَا مِنْ دَابَةٍ فِي الْكَدْضِ إِلَّاعَلَى اللهِ رِنْقُها- (سورة بود٢) ترجمه اورزين ير علي والاكوكي اليانبيس جس كارزق الله كذمه كرم يرشهو-

(کنزالایمان)

اورایک دو سے مقام پررب العزت ارشاد فرماتا ہے۔ وکا تَقْتُلُوا اُوْلَادَکُمْ خَشْیةَ اِمْلاقَ نَحْنُ نَرْزَقُهُمْ وَایَّا کُمْ اِنَّ قَتَلَهُمْ کَانَ خِطَّا کَبِیْدًا۔ ترجمہ اوراین اولاد کوش نہ کرو مفلسی کے ڈرسے ہم آئیں بھی روزی دیں گے اور

رجمہ اورا ی اولا دول نہ کرو کی کے ڈر سے ہم اجبی می روزی دیں ہے اور کر الایمان) شہبیں بھی بیک قبل بوی خطا ہے۔ (کنزالایمان)



حضرت عبدالله بن مسعود و فلي نه فرمايا كه ' ميل نے حضورا كرم مضيّع ليا ہے

عرض کیا۔

يارسول الله اي الذِّنب اعظم؟ قال ان تجعل الله ندا وهو خلقك ثم قال اى؟ قال ان تقتل ولدك خشيته ان يأكل معك

(بخاري ج٣ ياب ٧ ١٥ مديث ٩٣٩)

شریک تشہرائے حالانکہ اس نے تجنے پیدا کیا ہے ' پحرعرض کی پھرکون سا''؟ فرمایا۔'' تو ا بی اولا دکواس ڈریے آل کرے کہ دہ تیرے ساتھ کھائے گی''۔

دیکھا آپ نے اولا دکولل کرنا کتنا بڑا گناہ ہے۔ کاش مسلمان اس حدیث پاک سے عبرت حاصل کریں اورنس بندئی و آپریشن کے ذریعے اس قل میری ہے بچیں -حدیث مبار کہ میں ہے کہ حضورا کرم منطق کیا نے زیادہ بچوں کو پہند فرمایا۔

نی کریم مضطحیّ ارشادفر ماتے ہیں۔

تزوجوا فأنى مكاثريكم الامعر (مندامام اعظم باب ١١٧) ترجمہ نکاح کرد کیونکہ میں بروز قیامت دوسری امتوں کے مقابل تمہارے زیادہ ہونے برفخر کروں گا۔

سيدناامام غزالي مخطيطيه فرمات مين كه حضورا كرم منطقيق نے ارشادفرمايا ''اولا د کی خوشبو جنت کی خوشبو ہے''۔ (مكاشفة القلوب ١٥١٥)

اس بارے میں بہت ساری حدیثیں وارد ہیں عق پسند کیلیے ای قدر کافی و

شافی _اللہ تعالیٰ تو فیق عطا فرمائے _

6....6....



سونوگرافی ماالیس رے

اس دور میں ہر شخص اپنے آپ کور تی یافتہ اور موڈرن کہلوانا زیادہ پند کرتا ہے۔ لیکن کچھوگ اپنی ترکتوں کے اعتبارے آج سے ساڑھے چودہ سوسال پہلے کے عرب کے جاہلوں سے بھی بڑھ کر جائل بلکہ ان سے کچھ معاملوں میں زیادہ بن بڑھے ہوئے نظر آتے ہیں۔ کیونکہ عرب میں حضور نبی کریم مین گھڑتے کے اعلان نبوت سے پہلے زماجہ جاہلیت میں وہاں کے کفار ومشرکین کے یہاں جب کی لڑی کی پیدائش ہوتی تو وہ اسے بہت بُر اجا نے اور زندہ اسے زمین میں گاڑ دیتے تھے اور اگر پیارے کیا کرے تھے۔ بس وہی کام اس دور میں کچھ پڑھے کو میں کی پرورش بڑے لا ڈپیارے کیا کرے تھے۔ بس وہی کام اس دور میں کچھ پڑھے کھے موڈرن کہلانے والے جائل کررہے ہیں۔ کین طریقہ تھوڑ الختلف بیا ہے۔ ہوتا ہے کہ ایکس رے (سوٹوگرائی) کے ذریعے یہ معلوم کر لیتے ہیں کہ عورت کے پیٹ میں لڑکا ہے یالڑی۔ اگر لڑی ہوتو اے ختم کردیا جاتا ہے یعن ممل گرا

سی میں قدر ظالم ہیں وہ مورتیں جوایک نظی ی جان کورنیا میں آ کھ کھولنے سے پہلے ہی موت کی نیندسلا دیتی ہیں۔ان مورتوں پراللہ تعالیٰ کی سینکڑوں لعنتیں جوخود ایک مورت ہوکرا ہے جیسی ایک جنس کوتل کرتی ہیں۔کیا بیز مان جا ہلیت کے کا فروں و The free the good 1812 Usit yo مشرکوں کی پیروی نہیں؟ کیا را ایک صاف کھلا ہواقل نہیں؟ ایک عورتیں یقینا ماں کے رشتے پرایک بدنماداغ ہیں جواپنے پیٹ میں پروان پڑھد ہی اولا دکوصرف اس بات کی سزادیتی ہیں کہ دہ ایک لڑ کی ہے۔ کیاوہ ایک کیے کیلئے بھی بیسوینے کیلئے تیاز نہیں کہ وہ بھی تو پہلے اپنی ماں کے پیٹ میں تھی اگراس کی ماں اسے بھی پیٹ میں ہی ختم کر

دی جس طرح آج وه بری آسانی سے اپنی اولا دکوئل کر رہی ہے تو کیاوہ آج اس دنیا مِل موجود ہوتی ؟

ىتاەوبر باد قاتىل اولا د

اللّٰد نتإرك وتعالىٰ كياارشادفر ما تاہے۔

قُدُّ خُسِرَ الَّذِينَ قَتَلُوا اَوْلَانَهُمْ سَنَهَا بِغَيرِ عِلْمِ۔ (مورة الانعام اسما) ترجمہ بیشک تباہ ہوئے وہ جواپی اولا دکوٹل کرتے ہیں احقانہ جہالت ہے۔

(كنزالايمان)

شب معراح مشامده نبوی ملطحظایم

حضرت عبداللَّدا بن عباس فطُّخ ''الأسراءُ المعراح'' ميس (جو ٱپ كي تصنيف

بتائی جاتی ہے) نقل قرماتے ہیں کہ حضورا کرم مطیح کیا نے ارشاد فرمایا:

''معراج کی شب میں نے جہنم میں درختوں میں لکی ہوئی عورتیں دیکھیں کہ ان پر کھولتا ہوا گرم پانی ڈالا جاتا تو ان کا گوست جھلس جاتا اور ککڑوں میں گریزتا' میں نے یو چھااے جبر نیل ایرکون مورتیں ہیں؟ تو جبرئیل (مَلِيْطِ) نے مجھے بتایا۔ ' یارسول الله منظمَانِ ابده عورتیں ہیں جواپی اولا دکو کھانے پینے اور ان کی پرورش وتربیت کے خوف كى وجەسے دوا ئىس بى كراپى اولا دكومار ڈالتى تقى''_

(الاسراءالمعراج (أردورٌ جمه) ص٢٣)

THE TOTAL SECTION OF THE COURT OF THE COURT

سب سے بڑا گناہ اولا دکوئل کرنا

حضرت عبدالله ابن مسعود زالته روایت کرتے ہیں کہ اللہ کے رسول منظیمیّن ا نے ارشاد فریاما:

ان تجمل لله درا وهو خلقك ثمر ان تقتل ولدك خشيه ان يأكل معك - (بخارىج مَّ إب ٤٧٥ مديث ٩٣٩)

ترجمہ سب سے بوا گناہ یہ ہے کہ اللہ کا کسی کوشر یک تھبرائے پھراس کے بعد کا گناہ یہ ہے کہانی اولا وکو کھانے پینے کے خوف قبل کیاجائے۔

ونیا کی تمام مہذب ہی نہیں غیرمہذب قوموں میں بھی انسان کا آل کرتا'اس کی جان لین شدید جرم قرار دیا جاتا ہے اور جس وقت سے دنیا میں قانون کی بنیا در کھی گئ قاتل کی سرا آتل ہی قرار پائی۔ اس لئے کہ قاتل حقیقت میں سوسائٹ کے ایک فرد کی جان لئے کر عالم انسانیت پرظلم کررہا ہے۔ قل میں جوان' پوڑھاحتیٰ کہ دودن کا بچے سب برابر ۔ قو پھر رحم مادر کے حفوظ کمر سے میں آرام کرنے والا نونہال جوانسانی شکل اختیار کر کے ایک بہترین قابل دماغ لے کرعالم انسانیت کیلئے نفع بخش ہوسکتا ہوائی کو کر کے ایک بہترین قابل دماغ لے کرعالم انسانیت کیلئے نفع بخش ہوسکتا ہوائی کو ان کو کر کے ایک میں ملانے والا اس کو ہر باد کرنے والا اس کو زمر دے کر ہلاک کرنے والا زمین میں دفن یا جنگل اور تاکیوں میں ڈالنے والا کس اصول کے مطابق مجرم اور قاتل نے قرار دیا جاتا ہے۔

يوم قيامت جهنم رسيد

بعض بزرگوں نے روایت بیان کی ہے کہ

''بروز محشر کھھ ایسے مرد اور عور تیں ہوں گی جن کے اعمال اچھے ہو کے لہذا انہیں جنت میں خوثی خوثی جا انہیں جنت میں خوثی خوثی جا انہیں جنت میں خوثی خوثی جا

TERETTI TO THE TENE OF THE CHILL YOU رہے ہو گے تبھی کچھ سر کٹے بچے وہاں پہنچیں گے جن کے صرف دھڑ ہوں گے سر نہ ہوگا۔ان کے دھڑ ول ہے آ واز آئے گی۔"اے اللہ! ہمیں انصاف عطافر ما"۔رب تبارک وتعالیٰ ارشاد فرمائے گا۔' کہوآج انصاف کا بی دن ہے''۔وہ عرض کریں گے۔ ''اے مالک ومولی جنت میں جانے والے ہمارے ماں باپ ہیں اور ہمیں ان ہے تکلیف پنجی ہے''۔وہمردو کورت جیرت ہے کہیں گے۔''متہیں تو ہم جانتے بھی نہیں تم دنیا میں ہماری اولادنہیں تھے''۔ وہ سرکٹے بچے جواب دیں گے۔'' ہاںتم ہمیں پیچان بھی نہیں سکتے کیونکہ تم نے ہمیں دیکھا ہی نہیں ہم وہی ہیں جنہیں تم نے دنیا میں آنے سے پہلے بی مارڈ الاتھا اور حمل گرا کر ہماری بیرحالت کردی '۔اللہ تعالی ارشاد فرمائے گا۔'' کہوتم کیا جاہتے ہو''۔وہ عرض کریں گے۔''اےمولی ہم نے انہیں معاف نه كيا كيا تو انبين جنت مين داخل فيرائع كاجنبول في جمين اس حال كو پنجايا". چنا نچەاللەتبارك وتعالى اس مردومورت كوچېنم ميں داخل فريائے گاادران سر كئے بچوں كو درست فرما كرجنت بين داخل فرماد _ كا_

اس روایت سے وہ فیشن پرست مورتیں تھیجت حاصل کریں جو جان ہو جھ کر حمل گرادیتی ہیں۔ ہاں! ہاں! ابھی تو یہاں ونیا پیس من مانی کرلو لیکن یا در ہے انصاف ضرور ہونا ہے اور الی عدالت میں جہاں نہ کوئی رشوت کام آئے گی اور نہ ہی کسی وکیل کی جرح۔وہ اللہ رب العزت کی عدالت ہے جہاں ناانصافی نہیں ہوتی۔

Q....Q....Q



اولادكابيان

ہم پچھلے اوراق میں یہ بیان کر بچے ہیں کہ حضورا کرم منظی ہی کہ بچوں سے بہت زیادہ مجبت تھی۔ لیکن اس دور میں پکھی مورش بچوں سے کتر اتی ہیں۔ کچھ کم فہم عورتوں کا خیال ہے کہ بچہ بیدا ہونے کے بعد مورت کی خوبصورتی ختم ہوجاتی ہے اور وہ موٹی بحدی ہوجاتی ہے۔ اس لئے وہ بچ کی پیدائش کوٹا لئے رہتی ہے یا پھر صفائی کروا کر حمل ضائع کردیتی ہے۔ اس قتم کی با تیں شیطانی وسوے اور جاہلا نہ خیالات کے سوا کچھ فیمیں۔

حمل کی تکلیف کااجر

ام المومنین حصرت عائشه صدیقه و الله علی سے روایت ہے کدرسول الله مططح اَلَّامَّةِ مِنْ نے ارشاد فرمایا۔

''جوحاملہ (پیدوالی) عورت حمل کی تکلیف کو برداشت کرتی ہے اسے اللّٰہ کی راہ میں جہاد کرنے کا در دہوتا ہے تو ہر راہ میں جہاد کرنے کا در دہوتا ہے تو ہر درے بدلے اسے ایک غلام آزاد کرنے کا تواب دیاجا تا ہے''۔

(غنية الطالبين باب٥)



اولا د جنت کی خوشبو ہے

رسول الله مطيكة إن أرشاد فرمايا:

سوداء ولود احب الى من حسناء عاقر ــ

(مندامام اعظم باب،۱۲ كيميائے سعادت)

ترجمہ جھے کالی مورت پند ہے جو بچے پیدا کریں ایلی خوبصورت مورت سے جو بچے پیدا کریں ایلی خوبصورت مورت سے جو بچے پیدا نہ کریں۔

حفرت سيدنا امام محمر غزالي مخطيطي ارشاد فرمات بين كه حضور اقدس مطيقية

نے ارشاد فرمایا: ''اولا دکی خوشبو جنت کی خوشبو ہے''۔ (مکافعة القلوب)

کویااس مدیث سے بیٹا بت ہوتا ہے کہ جوجان بو جھ کر بغیر کمی شرعی مذرک نیج پیدا کرنے کوئیں۔ یچے پیدا کرنے کوئیب بیجھتے ہیں وہ جعت کی خوشہو سے محروم ہیں۔

اولا دنه ہونے کی وجوہات

<u> کچەلوگول كواد لا دنيس بوتى اس كى بېت كى د جو بات بوسكتى بىل مثلاً</u>

الله تعالیٰ کی مرضی ہی شہو کہ اولا دہو۔

الله رب العزت ارشاد قرما تا ہے۔

أَوْيُرُوِّجُهُمْ ذَكْرَانًا وَإِنَاثًا وَيَجْعَلُ مَنْ يَشَاءُ عَلِيمًا إِنَّهُ عَلِيمَ قَلِيدٍ.

(سورة شوريٰ ۴۹٬۵۰)

ترجمہ اللہ پیدا کرتا ہے جو جائے جے جاہے بیٹیاں عطا فرمائے اور جے چاہے بیٹے دے یا دونوں ملادے بیٹے اور بیٹیاں اور جے چاہے باولا در کھے۔ بیٹک وہ علم وقدرت والا ہے۔

شادی کے احلام میں مطابق کی مطابق کی مطابق کے احلام مطابق کی کا محل کی اور از دارج مطبرات تھیں لیکن آپ کواد لا دصرف

رو ہو یوں ہے ہی ہوئیں ٔ باقی از واج ہے آپ کوکوئی اولا د نہ ہوئی کیونکہ اس میں اللہ تعالیٰ کی حکمت تھی۔ بیٹییں کہ معاذ اللہ ٔ حضور ﷺ کی دوسری از واج میں کوئی نقص تھا یا معاذ اللہ ' نی کریم ﷺ تی کوئی کی تھی جیسا کہ بھش بدرینوں کاعقبیدہ ہے۔

جاليس جنتي مردول كي توت

مفرت امام ابوالفضل قاضی عمیاض اندلسی مخطیجه اپنی سند کے ساتھ حضرت انس مختلیز سے روایت کرتے ہیں۔

'' حضور منظی کی آئی کوقت مردانتیس مردول کے برابرعطا کی گئی تھی اور حضرت امام طاؤس ڈٹلٹٹو سے مروی ہے کہ حضوراکرم منظی کی آئی کو چالیس جنتی نوجوانوں کی طاقت عطافر مائی گئی تھی''۔ (شامر سے کا ابس انصل ۸)

حفرت امام بخاری مخطیعے نے بھی بیر مدیث حفرت انس زبالی سے اپنی سیح میں نقل کی ہے۔

للبذا ٹابت ہوا کہ اولا د سے نواز نے والاحقیقت میں اللہ رب العزت ہی ہے وہ جے چاہے عطا کرتا ہے اور جے چاہے عطائبیں فرما تا اور یقیناً اس کے محروم رکھنے میں بھی سینکٹر وں حکمتیں پوشیدہ ہوتی ہیں حالانکہ بعض اوقات انسان اللہ تعالیٰ کے محروم رکھنے کو بُراجا نتا ہے اور فکوہ کرتا ہے لیکن اس میں کیا حکمتیں پوشیدہ ہیں اسے وہی سب سے بہتر جانتا ہے۔اگر وہ کی کواولا دعطا کرتا چاہے تواسے کوئی نہیں روک سکتا۔

چنا نچے حضرت موئی مُلِیُنگا کا واقعہ اس بات کا شاہد ہے اور اللّٰدا کر کس کو اولا دویتا چاہے تو وہ جب چاہے اور جس عمر میں چاہے عطا فر ما دے۔ جیسا کہ حضرت ابراہیم مُلِینگا وحضرت سارہ وَٹِاٹھیا کا واقعہ اس کی دلیل ہے کہ جب اللّٰہ تعالیٰ نے حضرت ابراہیم مَلِینگا اور حضرت سارہ وَٹاٹھیا کو اولا د (حضرت آخی مَلِینگا) سے نوازہ تو اس وقت حضرت مَلِینگا اور حضرت سارہ وُٹاٹھیا کو اولا د (حضرت آخی مَلِینگا) سے نوازہ تو اس وقت حضرت ر شادی کے اعام کی میں میں میں ہور گائی ہے۔ ایراہیم مالیٹھ کی مرشریف،۱۲مال اور حضرت سارہ نظامیا کی مر ۹۹مال تی۔

بچرنہ ہونے کے اسباب

- 1) بچرند ہونے کی وجہ یہ بھی ہو علق ہے کہ مرد کی منی میں بچہ پیدا کرنے والے اجزاء (کرمہائے تولید) ہی نہ ہوں یا چر کمز ور ہوں۔
 - 2) بھین یا جوانی کی غلطیوں کی وجہ سے نامر د ہو چکا ہو۔
 - 3) عورت کی بچدانی میں اولا دپیدا کرنے والے انڈے (Ova) نہ ہوں۔
 - 4) عورت کی بچیدانی کامنه بند ہو_

غرض کہاں طرح کی گئی وجوہات ہو عتی ہیں جس کی وجہ سے اولاد کی پیدائش میں رکاوٹ ہو عتی ہے۔

بالمجھ كون عورت يامرد؟

اگرمیاں بیوی دونوں صحت مند ہوں تو دوسال کے اندر پہلاحمل قرار پا جاتا ہے۔اکثر گھروں میں جب چار پانچ سال گزرجانے پر بھی عورت حاملہ نہ ہوتو گھر کی پوڑھی عورتیں عورت کو بانچھ تجھے گتی ہیں۔اکثر تعلیم یافتہ عوتیں لیڈی ڈاکٹروں کی طرف دجوع کرتی ہیں۔

استقر ارحمل کیلئے جہاں مورت کا جنسی طور پر صحتند ہونا ضروری ہے۔ دوسری طرف مردک ہادہ تو لید بیس کرموں کا قوی اور مناسب مقدار بیس ہونا بھی لازم ہے۔ مرد کے ایک از ال بیس مادہ تو لید تقریباً پارچ میں۔ مرد کے ایک افزال بیس مادہ تو لید تقریباً پارچ میں بیٹ تا لیکن بیس فیصد سے زائد کی ہو اس بیس بیس فیصد سے زائد کی ہو یہ میں کوئی فرق نہیں پڑتا لیکن بیس فیصد سے زائد کی ہو یہ کا مرد کے مادہ تو لید بیس اس کی کا پہذا اکر کی

یا کا ہاں دوباریا۔ جانج سے چلتا ہے۔ TO THE TOTAL SECTION OF THE PROPERTY OF THE PR

ہزاروں میں ایک دو گورتیں پیدائتی با نجھ ہوتی ہیں ان کو شروع ہے ہی چین برائے نام ایک آ دھ دھبہ کے طور پرتا ہے اور ان کا رحم بھی بس برائے نام ہوتا ہے۔
کوئی بھی عورت ہوا گراسے شروع بی سے چین کا خون ہرماہ اپنے مقررہ ایام پر بغیر کی
تکلیف کے آتا ہے اور کم سے کم تین دن اور زیادہ سے ذیادہ دی دؤوں تک جاری رہتا
ہے تو ایسی عورت کو با نجھ نیس کہا جا سکتا۔ بچہ نہ ہونے کی وجہ اور کوئی دوسری ہو کتی ہے ایسی صورت میں مرد میں بھی کی کے امکانات ہو سکتے ہیں لہذا مرد و عورت کو اپنا کی
ایسی صورت میں مرد میں بھی کی کے امکانات ہو سکتے ہیں لہذا مرد و عورت کو اپنا کی
ایسی حقورت کو اپنا کی ہے۔

اگر چیک آپ کے بعد مردو تورت میں کمی تنم کی کوئی خرابی کا پیتہ نہ چلے تو پھر اے مشیت الٰہی تجھنا چاہیے اوراللہ تعالٰی سے اولا دکیلئے دعا کرتے رہنا چاہیے۔ اسے مشیت الٰہی تعلقا چاہیے اوراللہ تعالٰی سے اولا دکیلئے دعا کرتے رہنا چاہیے۔

اولا دہوگی یا نہیں؟

ا کشر ہے اولا دُ اولا د کی خواہش میں بڑی بڑی رقمیں خرج کر دیتے ہیں' اس
ہے آئی کہ دواؤں پر روپے خرج کئے جا کیں اطمینان ضروری ہے۔ اس کیلئے ہم یہاں
ایک عمل عورت کو چاہیے کہ جعرات کو روزہ رکھے افطار کے وقت اتنا دورہ لے جو
پید بجر پی سکئے بچر سات بار''سورۃ عزل'' پڑھ کر دودھ پر دم کرے۔ (سورۃ مزئل
قرآن کریم کے افتیویں پارے میں ہے) بہتر بیہے کہ خود پڑھے اگر (معاذ اللہ)
پڑھنا نہیں جائتی ہویا سے نہ پڑھ کتی ہوتو کی ٹی عالم یا حافظ سے پڑھوا کردم کروالے'
ہجرای دودھ سے دوزہ افطار کرے۔

اگردود ہے منعم ہوگیا تو ان شاء اللہ اولا دہوگی اور اگر (اللہ نہ کرے) دود ھ منعم نہ ہوا تو پھر مبر کرے ۔ لینی اولا د نہ ہوگی ۔ لیکن مایوں پھر بھی نہ ہو کہ مایوی مسلمان کا کا منہیں ۔ اللہ سے امید لگائے رہے اور نیک اعمال کی کثرت کرتی رہے۔ بیشک اللہ تالی قادر مطلق و براب نیاز م کمکی کل سے داخی ہوکر اولاد کی فوثی عطافر مادے۔

اولا دہونے کیلیے عمل

حفرت مولیٰ علی زاننیز روایت کرتے ہیں کہ

''ایکے فخص رسول خدا منظیکی آئی خدمت میں حاضر ہواا درعرض کیا۔''یارسول اللہ منظیکی آمیرے گھراولا ڈئیس ہوتی''۔ نبی کریم منظیکی نے ارشادفر مایا''تواندے کھایا کر''۔

حکما واطبا کا اتفاق ہے کہ کرمہائے تولید کی تعدادا نڈے کھانے سے بڑھ جاتی ہے'اس صحابی کے مادہ تولید میں کرم تولید کی تعداد کم تھی جوسر کار مدینہ منتظ ہوتی نے بغیر کسی جانچ کے معلوم کرلی ہجان اللہ یہی' توعلم غیب ہے۔

لتعمليات

1) جس عورت کو اولا دنہ ہوتی ہو یا حمل ندر ہتا ہوتو چاہیے کہ وہ سات دن لگا تارروزے رکھے اورافطار کے دفت ایک گلاس پائی لے کر''السم صود' ایس پار پڑھ کر پائی پردم کرنے اورای پائی سے افطار کرے۔ان شاءاللہ سات روز ندگز رنے پائیس کے کہ حمل قرار پاجائے گا اور فرز ندید اہوگا۔ (وظائف رضویر سام)

2) جوکوئی اپنی ہوی ہے جب کرنے سے پہلے''المعتکبد''وں بار پڑھے پھر

اس کے بعد محبت کرے تو اللہ تبارک و تعالیٰ اسے فر زندعنایت فر مائے گا۔

(وظا كف رضوبين٢١٢)

(مقمع شبستان دضاح اص ۳۱)

اجھے تم کا ایک انار لے کراس کے چاد کلڑے کریں ہر کلڑے پر" سورۃ کیلین"

پڑھے اور اس پردم کرتا جائے۔اس کے بعد پھر سمش اور پاؤ بھر بھنے ہوئے چندے

سے کر فاتحد یں اور کشمش اور چنے بچوں میں تقیم کردیں اور اٹار کا ایک نکڑا مرد کھائے اور ایک عورت کھائے۔ اور ایک عورت کھائے۔ شب کومباشرت کریں۔ میں بچے ہوئے دو نکڑے دونوں مردو عورت کھالیں اور عسل کرنے نماز فجر اوا کریں۔ اس عمل سے ان شاء اللہ اولا وضرور ہوگی۔

(مثم شبتان رضائی اس میں کے بھائی کے ایک میں اس میں کے بھائی سے ان شاء اللہ اولا وضرور کھائے۔

ان شاءالله لا كابى بيدا موگا

اگر کسی کو صرف لڑکیاں ہی پیدا ہوں تو اس حالت میں لڑکے کی خواہش اور شدید ہوجاتی ہے پھر پچھلوگ البی حالت میں لڑکے کیلئے روپے پانی کی طرح بہاتے ہیں یہاں تک کہ پچھ کم عقل جادوٹونے اور گذرے علاج سے بھی بازنہیں آتے۔

ہم یہاں چندا پے عملیات تحریر کردہ ہیں جوفائدہ مندوسوفیصد کا میاب ہے'۔ ان شاءاللہ اس سے فائدہ ضرور ہوگا۔ لیکن یا در ہے بیٹمل تب ہی کرے جب لڑکا نہ ہو اور بہت زیادہ لڑکیاں ہوں۔

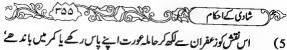
عمليات

1) کچسوتی دھاگے کے سات تار لے پھر ہرتار عورت کی بیشانی کے بال سے پاؤں کی الگلیوں تک تاپ لے اب ساتوں دھاگوں کو ملاکران پر گیارہ مرتبہ ''آیت الکری'' اس طرح پڑھے کہ ہرایک بارایک گرہ (گانٹھ) لگا تا جائے اور دم کرتا جائے' ممیارہ گھان بائد ھنے کہ بعدان دھاگوں کو تورت کی کمر پر بائد ھدے۔ جب تک بچہ پیدانہ ہوجائے ہرگز نہ کھولیں یہاں تک کھسل کے وقت بھی جدانہ کرے۔ جب شل خاہر ہوتو گھر کی پکائی ہوئی سفید چیز پر جیسے بیٹھا حلوہ' پیڑے' برنی و غیرہ پر حضور سید تا غوث اعظم وحضرت خواج غریب نواز اور سید تا اعلیٰ حضرت امام احمد رضا خاں مرتضیخ کی فاتحہ دلاتے اور دور کو حت نقل نماز اوا کرنے' پھر کھڑے ہوکر بغداد شریف کی طرف منہ فاتحہ دلاتے اور دور کو حت نقل نماز اوا کرنے' پھر کھڑے ہوکر بغداد شریف کی طرف منہ

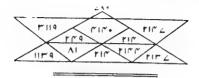
TORE FOR THE SEE (I BIZ UIL) كركے دعاكرے_' ' ياحضورغوث اعظم! مجھے لڑكا ہوا تو حضور (غوث اعظم) كي غلامي میں دے دوں گا اور اس کا نام غلام کمی الدین رکھوں گا''۔ اس کے بعد یقین رکھے کہ لڑ کا بی ہوگا۔ان شاءاللہ جب لڑکا ہوتو وہ دھا گے ماں کی کمر سے کھول کرنے کے گلے میں ڈال دے بیجے کی ہرسالگرہ پرایک روپیرایک ڈیے میں ڈالتے رہیں جب بچے گیارہ سال کا ہوجائے تو ان گیارہ روپیوں کی شیرینی یا اس میں جتنا جا ہے اور روپے ملا کر نیاز دلائے اوران دھا گوں کو کسی محفوظ جگہ دفن کر دے۔ (متمع شبستان رضاح اص۲۲) '' فآوی مش الدین بخاری' میں ہے۔ حضرت ابوشعیب حرافی مخطیعیا نے حضرت امام عطا مخلصٰیے (جوامام اعظم ابوحنیفہ رفائنڈ کے استاد ہیں) سے روایت کیا ہے كن جوچا ہے كداس كى مورت كے حمل بيل لڑكا موتواسے جا ہے كدا پنا ہاتھا ہى مورت کے پیٹ پرد کھ کر کے۔ ان كان ذكراً فقد سميته محمداً اگراڑ کا ہے تو میں نے اس کا نام'' محر'' رکھا۔ جبار کا پیدا ہوجائے تواس کا نام'' جحد' رکھے۔(احکام شریعت جام ۸۳) حضرت مثاه ولى الله محدث ومخطيجه نقل فرمات ميں۔" جوعورت سوائے لز کی کے لڑکا نہ جنتی ہوتو اس کے پیٹ پراس کا شو ہرستر بارانگل ہے گول دائر ہیتائے ہر دائرہ کے ساتھ 'یامتین "کے۔ (القول الجميل ص ١٣٨) جوعورت حاملہ ہواس کے پیٹ برضج کے وقت اس کا شوہر انیس مرتبہ ''السعب دی ''شہادت کی انگلی سے لکھے تو بغضلہ تعالیٰ حمل گرنے کا خوف جا تارہے گا۔ اورجس کا حمل دیرتک رہے لینی نو مینے سے زیادہ گز رجائے تو اس مورت کے پیٹ پر لکھنے سے جلداڑ کا پیدا ہوگا۔

Marfat.com

(وظا نُف رضوبيص٢٢٠)



5) اس مقش کوز عقران سے کلو کر حالمہ فورت اپنے پاس سطے یا مرک بالک سے ان شاءاللہ لاکا پیدا ہوگا۔ فقش میہ ہے۔



حمل کی حفاظت کے عملیات

1) اگر کسی عورت کے مجے حمل گرجاتے ہیں تو کچھ کالی مرچ اور اجوائن لے کر اوراس برستر مرتبہ بیہ آیت کریمہ

ثُمَّ خَلَقْنَا النَّطْفَةَ عَلَقَةً فَخَلَقْنَا الْعَلَقَةَ مُضْفَةً فَخَلَقْنَا الْمُضْفَةَ عَلَقَةً مُضْفَة عِظْمًا فَكَسُوْنَا الْعِظْمَ لَحْمًا ثُمَّ أَنْشَانَهُ خَلَقًا أَخَرَ فَتَبْرِكَ اللهُ أَحْسَنُ

المُخَالِقِينِ (پاره ١٨ سورة مومنون آيت ١٩٠)

پڑھھے پھر''سورۃ کا فرون'' اور''سورۃ مزل''سات باراور' سورۃ الم نشرح'' گیارہ بار پڑھے اب ان کالی مرچوں اوراجوائن پردم کرے۔سات دانے کالی مرج کے اورتھوڑکی اجوائن عورت کو کھلائیں۔ جب تک بچہ پیدانہ ہواس وقت تک ہرروز سے

کے اور تھوڑ کی اجوائن فورت لوطلا کئی۔ جب تک بچیے پیدا نہ ہوا کی وقت تک ہررہ کالی مرچ اورا جوائن کھاتے رہے۔ان شاءاللہ بچیسچے وسالم پیدا ہوگا۔

(شمع شبستان رضاح اص۳۳)

ضَيْقٍ مِّسَا يَهُ كُوُنَ إِنَّ اللَّهُ مَعَ أَلَّذِيْنَ أَتَعُواْ وَالَّذِينَ هُمُّ مُ مُحْسِنُونَ ـ (القول الجميل ١٣٧ مَنْ شبتان رضاج ٢٥٠٥)

پڑھ کردم کرے اس طرح نوگاٹھ باندھے (اس طرح بیآیت کریمہ نوم تبہ پڑھی جائے گی)اس کے بعد قورت کے پیٹ پر بیددھا کہ باندھے۔ بچہ پیدا ہونے

پر ن جائے 0)، ن سے بعد ورت سے پچھ گھنٹوں پہلے مید کھول دئے۔

حمل کے دوران اچھے کام

جب عورت حاملہ ہوتو اسے چاہیے کہ ان دنوں بیہودہ نفنول باتوں' جموٹ غیبت' وغیرہ سے بالخصوص بچے۔ انچھی دین گفتگو کرے۔ کھانے پینے پر زیادہ دھیان دے ایسی غذا کمیں استعال کریں جو طاقت بخش ہوں۔ زیادہ سے زیادہ خوش رہے' نماز کی پابندی کرئے قرآن کریم کی حلاوت زیادہ سے زیادہ کرتی رہے۔ جس قدر ممکن ہوچلتے پھرتے خوب خوب درود شریف کا وردزبان پر جاری ہو۔ ان سب باتوں کانچے پراچھا اثر پڑتا ہے۔

حضور سیدنا غوث اعظم ڈٹائٹو کا واقعہ ہماری اس بات کی روٹن دلیل ہے۔ حضور غوث افسان ہوئی ہوئی دلیل ہے۔ حضور غوث اعظم جب اپنی والدہ ماجدہ کے شکم مبارک میں سے تو وہ گھر کے کاموں کے دوران قرآن کر یم کی آیتیں پڑھتی رہتی تھیں۔ آپ اپنی والدہ ماجدہ کے پیٹ میں ہی من کریاد کرلیا کرتے تھے۔ جب آپ کی والدہ ۱۳ اپارے آپ نے بعد میں ولادت ہوگئی۔ چنا نچہ ۱۳ پاروں کے مادر زاد حافظ تھے باتی ۱۲ پارے آپ نے بعد میں اپنے استاد سے پڑھے۔ بید ہمارے فوٹ پاک ڈٹائٹو کی ایک اوٹی تی کرامت ہے۔ ویسے آتی آپ ایک کرامت کا ظہور ہونا مشکل نظر آتا ہے لیکن اس واقعہ میں ہمارے لئے ویسے سیست ضرور ہے کہ مال کو چاہیے کہ فرما نیر دار نیک سیرت اور ڈین اولا د حاصل کرنے سیست ضرور ہے کہ مال کو چاہیے کہ فرما نیر دار کیک کا اولاد پر بڑوا اگر پڑتا ہے۔

JERCHOZ TRAJENE JERCHOLOGIE JER

حمل کے دوران مباشرت

عورت جب حاملہ ہوتو اس حالت میں جماع کرنے کی شریعت میں ممانعت نہیں بلا کراہت جائز ہے۔لیکن اطباء کے نزدیک جماع نہ کرنا بہتر ہے کہ اس سے یے حمل تھبرنے کا امکان ہے اور پہلے بچے کونقصان ہونے کا اندیشہ ہے۔

المام اعظم الوحنيفه وتأثيثوا بي مند مين حضرت ابن عمر ذائنو سے روايت كرتے

ہیں کہ

نهى رسول الله مُضْلَقِيّاً ان توطاء الحبال حتى يفعن ما في بطونهن-(مندام اعظم إب١٣١)

ترجمہ "درسول اللہ مطاق کیا نے منع فر مایا حالمہ عورتوں سے مباشرت کی جائے جب تک کہوہ پیدا نہ کرلیس اپنے پیٹ کے بچے۔

فائده

اس حدیث میں حالمہ عورتوں سے مراد جہاد میں قیدگی ٹی باندیاں ہیں' کیونکہ
امام عظم ذائین سے دوسر سے طریق سے اور دوایت ہے جس میں' حبالی' کے ساتھ
''من السبی'' کی بھی قید ہے جس سے ٹابت ہوتا ہے کہ اس سے مرادقیدگی ٹی عورتی میں سیتھم اپنی بیوی کیلیے نہیں علاء کرام فرماتے ہیں کہ''وہ عورت جس کا حمل زنا سے
ہواس سے صحبت جا ترخیس لیکن جس کا شو ہرخود (اس کا ذائی ہو) اس کے جماع کرنے میں کوئی جربی نہیں۔

بچہ کی پیدائش کے بعد کیا مباشرت جائز ہے؟

بچہ پیدا ہونے کے بعد جب تک بچہ دودھ پتا ہان دنوں بھی اطباء حضرات عورت سے جماع کرنے سے منع کرتے ہیں۔ان کے نزدیک دودھ پیتے بچے کی PERCENT OF THE SELECTION OF THE SELECTIO

موجودگی میں بوی سے جماع کرنے سے بچے کو نقصان ہے۔ وہ اس طرح کہ بچے کی پیدائش کے بعد اگر عورت سے مباشرت کی جائے تو عورت کا دود ھ تراب ہوجاتا ہے جس کو پینے سے بچے کی صحت پر اثر پڑتا ہے ویے بھی شریعت اسلامی ہمیں ایسی چزیں افتصار کرنے کی ہدایت کرتی ہے جو ہمارے لئے ہی فائدہ مند ہوں اور ان چیزوں سے منع کرتی ہے جس میں ہمارے لئے ہی فقصان ہو۔

حضورا كرم مطنع آية ارشاد فرمات بي-

لاتقتلوا اولادكم سرافو الذي نفسي بيدة ان الغيل ليذرك الغارس على ظهر فرسه حتى يصرعه

(ابوداؤدج ۳ باب ۱۹۸ مدیث ۲۸۳ این ماجرج ۱ باب ۱۳۳ مدیث ۲۰۸۳)

ترجمہ ''پوشیدہ طور پراپی اولا دکوئل نہ کروہم ہےاس ذات کی جس کے قبضے میں میرکی جان ہے دودھ پلانے کے دقت میں بیوی سے محبت کرنا سوار کو گھوڑے کی پیشے

ے گرادیتا ہے۔

تحقیق بیہ کردودھ بلانے کے دوران مورت سے مباشرت جائز ہے۔ اور اس حدیث میں حضورا کرم مضطح آنے بطور تھیجت منع فرمایا ہے آپ کا بیار شادنا جائز یا مانعت کے درجہ میں نہیں۔ کیونکہ اگر عورت کے دودھ بلانے کی وجہ سے مباشرت نا جائز کردی جاتی تو بیمرد کیلئے باعث تکلیف ہوتا۔ کیونکہ عمو با عورت نے کودوسال تک دودھ بلاتی ہے اور مرد کا دوسال اپنے آپ کوعورت سے الگر رکھنا مشکل ہے۔ لہذا شریعت نے اسے نا جائز نہ قرار دیا جیسا کہ ابن باجہ ومشکلو قاشر بف کی دوسری ایک اور حدیث ہے۔

ممانعت نہیں

نی کریم مطیحی ارشاد فرماتے ہیں۔



قد اردت ان انهى عن الغيال فاذ الغارس والروم يغيلون فلا يقتلون مد يقتلون فد يقتلون فد يقتلون فد يقتلون

اولادهم وسمعه-ترجمه میں نے ارادہ کیا تھا کہ دودھ پلانے والی عورت سے جماع کرنے سے منح کردول کیکن اہل فارس وائل روم بھی اس زمانے میں اپنی بیو یوں سے اس حالت میں مباشر سے کرتے ہیں تو ان کی اولا د کوکوئی نقصان نہیں پہنچتا''۔

اب ر ما مبلی مدیث میں فرمان رسول الله مطفی ایم کے

'' دودھ پلانے کے وقت عورت سے مباشرت سوار کو گھوڑے سے گرا دیتا ہے''۔اس سے بینی مراد کی جائے گی کہ دودھ پلانے کے دوران جماع ناجائز تو نہیں لیکن زیادہ نہ کیا جائے کہ بینی بہتر ہے۔(واللہ اعلم)

آ سانی ہے ولادت

جیجی کی ولادت کے وقت عورت کو بہت زیادہ تکلیف ہوتی ہے۔ بھی بھی کی کمزورعورت کواس قدرشد بدورد ہوتا ہے کہ عورت کیلئے نا قابل برواشت ہوجاتا ہے اور بعض اوقات ای تکلیف کے سبب موت واقع ہوجاتی ہے۔ پھی عورتوں کا بچہ آ دھا باہراور آ دھا اندر ہی رہ جاتا ہے بیصورت حال بڑی نازک ہوتی ہے ایے مواقع پر باہمشکل ہوتا ہے اور عورت و بچے دونوں کی بیک کوزندہ صبح وسالم نکالنا ڈاکٹروں کیلئے بڑا مشکل ہوتا ہے اور عورت و بچے دونوں کی جان پرین آتی ہے۔ بعض اوقات عورت کو دردشدت سے ہوتا رہتا ہے کیکن بچہ کی ولادت نہیں ہوتی جے آپریشن کرکے نکالنا پڑتا ہے۔ ہم یہاں چندا سے کملیات نقل کر رہ بیں جن کوکمل میں لانے سے ان شاء اللہ آسانی سے بیک پیدائش ہوگی۔ رہے ہیں جن کوکمل میں لانے سے ان شاء اللہ آسانی سے بیکی پیدائش ہوگی۔

عمليات

جب عورت کو در د شروع موتو "مهر نبوت" اور" تعلین شریف" (حضور

ر ب سان رصان ۱۲) جب عورت کو بچه پیدا ہونے کے وقت زیادہ درد ہمدہ ہواور ولادت میں انتہائی پریشانی ہورہی ہوتو چا ہے کہ یفش زعفران سے کھ کرموم جامہ کر کے عورت کی ران پر بائدھ دیا جائے اور جیسے ہی بچہ پیدا ہو کھول دیا جائے۔انشاء اللہ اس نقش کی برکت سے تکلیف ختم ہوجائے گی۔وہ تش بیسے۔

| ۳۲۲۷۸ | TTZ1 | rrra. |
|-------|-------------|--------|
| mrr29 | 7772 | rrr-20 |
| ۳۲۲۷۳ | ropyai | PYY+24 |

3) جس مورت كونى كى ولادت رورد آنا شروع بوجائ توكى پاك كاغذ ير

وَاللَّهُ مَا فِيهَا وَتَعَلَّتُ وَاؤِنَتُ لِرَبِّهَا وَحُقَّتُ اهِماً الراهِماً اوراس کا غذکو پاک کپڑے میں لپیٹیں اور عورت کی بائیں ران پر باعد ھےان شاءاللہ جلد بچہ پیدا ہوگا۔

یچ کی پیدائش کے بعد کان میں اذان اور کھٹی

جب بچہ پیدا ہوجائے تو اسے پہلے عسل دے پھراس کے بعد نال کائی جائے اور جس قد رجلدی ہوسکے اس کے دا کیں کان میں تجبیر کبی جائے اور جس قد رجلدی ہوسکے اس کے دا کیں کان میں اذان اور با کئیں کان میں تجبیر کبی جائے ، چاہے گھر کا کوئی شخص ہی اذان اور تجبیر کہددے یا کوئی عالم دین یا پھر مجد کا امام کے صدیث شریف میں ہے جوالیا کر بے تو بچہ بچپن کی بیماریوں سے محفوظ رہے گا۔ پھرا پی گود میں بچکولٹا کر کھود یا شہد وغیرہ کوئی بھی شخصی چیز اپنے منہ میں چیا کر یا گھلا

THE PRICE OF THE P

کرانگی ہے اس کے منہ میں تالوہ لگادے کہ وہ چاٹ لے۔ کوشش میر کی جائے کہ بچے کو پہلی تھٹی (سمجبود شہدیا کوئی میٹھی چیز وغیرہ) کوئی نیک شخض اپنے منہ میں چیا کراپٹی زبان سے پہنچائے اور سب سے پہلے جوغذا بچے کے منہ میں پہنچے وہ خرمداور کسی بزرگ کے منہ کالعاب ہوکہ ' تفسیر روح البیان'' میں ہے کہ

'''نے میں پہلی تھٹی دینے والے کا اثر آتا ہے اور اس کے جیسی عاد تیں پیدا ہوتی ہیں''اور بیسنت بھی ہے حدیث مبارکہ میں ہے۔

''محابہُ کرام اپنے بچوں کی پیدائش پر حضور اکرم منظیکیّا کے پاس لاتے تصاور سرکار اپنالعب دہن یا وہن مبارک (بیس لےکر) کوئی چیز بنچ کے منہ میں ڈال دیتے''۔

(حصن حمین ص ۱۹۷ فقاد کی رضویه حق نصف ادل ص ۲۳ اسلامی زندگی ص ۱۱) امام المسنّت امام احمد رضاخال <u>مجلشطی</u> نقل فرماتے ہیں۔

''بچہ پیدا ہوتے بی نہلا دھلا کر مزارات اولیائے کرام پر حاضر کیا جائے۔
اس میں برکت ہے زمانہ اقد سے مطاق ہیں مولود کو خدمت انور میں حاضر لاتے اور
اب مدینہ طیبہ میں روضۂ انور پر لے جاتے ہیں۔امام ابوقیم برانٹینے نے دلاک اللہ وت
میں حضرت عبداللہ بن عباس والی ہے روایت کی حضرت آمنہ والدہ ما جدہ حضور سید
عالم مطاق ہیں۔' جب حضور مطاق نے پیدا ہوئے ایک ابرآیا جس میں گھوڑوں
اور پرندوں کے پرول کی آواز آتی تھی وہ میرے پاس سے حضور مطاق ہے کہ کیا اور
میں نے ایک منادی کو بکارتے سا حلوفوا ہم حمد علی مول النہ میں محمد مطاق ہے کہ مقامات والدت میں لے جاؤ''۔ ہاں اولیاء کرام کی مزارات طیب پر
لے جاکر بچہ کے بال اتار تاکوئی معنی میں رکھتا بلکہ بال گھر پردور کے لے جائیں'۔
لے جاکر بچہ کے بال اتار تاکوئی معنی میں رکھتا بلکہ بال گھر پردور کر کے لے جائیں'۔
(فاونی افریق میں کے ایک کی دور کر کے لے جائیں'۔

CENTURE OF CENTURE OF

ار کی کیلئے ناراضگی کیوں؟

بیٹی کی نرورش پر جنت

حضرت عبدالله ابن عباس وظفها سے روایت ہے کدرسول الله مضافق نے ارشاد

'' جیے لڑکی ہو پھر ؤہ اسے زیدہ دقن نہ کرے نہ اس کو ذکیل سمجھے اور نہ لڑ کے کو اس پراہمیت دیے تو اللہ تعالیٰ اس کو جنت میں واخل کرےگا''۔

(ابوداؤدج٣ بإب٥٨٨ عديث١٤٠٥)

جنت ميں رفاقت رسول ملسِّ عليه

حضرت المس بن ما لك فالنيز سروايت ب كهضور منطقي في في ارشاوفر مايا:

من عال جارتين حتى تبلغا جاء يومر القيامة انا وهو هكذا وضعا

بعد-

ترجمہ جس نے دولڑ کیوں کی پرورش کی یہاں تک کہوہ بالغ ہوگئ تو میں اور وہ تا ہے کہ میں اس میں کا میں سے ایک کہ اور دہ

قیامت کے دوزان طرح ہوں گے پھرآپ نے اپنی دواٹگلیوں کو ملا کر بتایا'' .

بیٹی بہن کی پرورش

ایک دوسری روایت میں ہے کہ نبی کریم مطابق ارشاد فرماتے ہیں۔

رورش المراس الم

سی بخاری و جاس تر قدی فی ایک صدیث میں ہے کہ ''جولوگ اپنی لڑکیوں کی پیار ومحبت سے پرورش کریں گے تو وہ بچیاں ان کیلئے بروزمحشر جہنم ہے آٹر بن جا کیس گی''۔ (بخاری ترفدی جانباب ۱۲۵ صدیث ۱۹۸۰) بر سرحہ

بيٹيوں کورج جج دو

رسول اکرم منطق کی ارشاد فرماتے ہیں کہ '' جب تم اپنے بچوں میں کوئی چیز تقسیم کروتو لڑکیوں سے شروع کرو کیونکہ لڑکوں کے مقابلہ لڑکیاں والدین سے زیادہ محبت کرنے والی ہوتی ہیں''۔ مدال مانٹ والیکٹر کے اور ایسان میں معادم موال کا ڈواکسوں سے محدید

رسول الله منظ کافی کے ان ارشادات سے معلوم ہوا کہ اپنی کڑ کیوں سے محبت کرنا اوران کی اچھی پرورش کر کے شادی کر دینا بڑے ٹو اب کا کام ہے اوررسول پاک منظ مقط سے قرب حاصل کرنے کا ذریعہ ہے۔



THE SER (BILLIST

نفاس كابيان

وہ خون جو عورت کو بیجے کی بیدائش کے بعد آ مے کے مقام سے آتا ہا ہے نفاس کا خون کہتے ہیں۔خون آ نے کی کم سے کم مدت مقرز نہیں۔ آ دھے سے زیادہ بچہ نظنے کے بعد ایک لمح کیلے بھی خون آیا تووہ نفاس ہے۔زیادہ سے زیادہ انفاس کا ز مانہ جالیس دن درات ہے۔ جالیس دن رات کے بعدا گرخون آئے تو وہ نفائ نہیں استحاضه بـ (استحاضه كابيان يهلي كررچكا) (بهارشر بعت ج ا ۲۷)

ایک اہم ضروری مسئلہ

عورتوں میں جو بیمشہور ہے کہ نفاس کا خون آئے یا بند ہوجائے چلہ کرکے (معنی چالیس دنوں کے بعد) ہی نہاتی ہیں اور جب تک نمازیں قضا کرتی ہیں ریخت حرام ہے۔نفاس کی گنتی اس وقت ہے ہوگی جب بچہ آ وھے سے زیادہ نکل آیا۔ بچہ پیدا ہونے کے بعد جس وفت خون بند ہوجائے اگر جا لیس دنوں کے اندر پھرنہ آئے تو ای وقت سے عورت پاک ہوجاتی ہے۔ مثلاً بچہ پیدا ہونے کے بعد صرف ایک منٹ بجرخون آیا پھرنہ آیا تو ای ایک منٹ تک نایا کی تھی پھریاک ہوگئی عشل کر کے نماز پڑھےاور (اگر ماہ رمضان کا مہینہ ہوتو) روزہ بھی رکھے پھرا گر چاکیس دنوں کے اندر خون ندا یا تو بینماز روزے سب سی ہوگئے اورا گرخون آگیا تو نماز روزے پھر چھوڑ

" THE CE TO SHE SEE SEE (IEIZUIL) دے۔اب پورے چالیس دن یا اس ہے کم برجا کر بند ہوا تو بیجے کی پیدائش ہےاس وقت تک سب دن نفاس کے سمجھے جا کیں گے۔ وہ نمازیں جو پڑھیں سب برکار ہو گئیں۔ (لیکن نمازوں کی قضانہیں) اور فرض روزے تھے تو بعد میں قضا رکھے (فآوي رضويهج ونصف آخ ص١٥٣) مسئله اگر کی کوچالیس دن سے زیادہ خون آیا تواگراس کو پہلی باریچہ پیدا ہوا ہے تو جالیس دن نفاس کے اور بعد کے استحاضہ کے ہیں۔ای طرح کسی کو یا زنہیں کہاس ہے پہلے بچہ پیدا ہونے کے کتنے دنوں تک خون آیا تھا تو اس صورت میں جالیس دن رات نفاس کے اور اس کے بعد کے استحاضہ کے جیں۔ اگر کسی عورت کوتیس ون کی عادت تھی (لینی اس سے پہلے نیچ کی پیدائش پرتیس دن ورات خون آیا تھا) کیکن اس بار جالیس دن رات آیا تو تنیس دن نفاس کے سمجھے اور باقی کے دس دن استحاضہ کے ہیں۔ (بهارشر بعت ج ا ٔ ح۲ ٔ ص ۲۵) مسئله بجه بيدا مونے سے يملے جونون آياوه نفاس نبيس استحاضه كا برحمل كرنے ے پہلے پچھنون آیا پچھمل گرنے کے بعد توحمل گرنے سے پہلے کا خون استحاضہ ہاورحمل گرنے کے بعد کا خون نفاس ہے۔لیکن جب کہ بے کا کوئی عضو (جسم کا كوكى حصه) بن چكا موورند يهل والاحيض موسكتا بي نبيس تواستا ضه بـ (بهارشر بعت ج ا م ۴ ص ۴۵) مسئله یالیس دن کے اندر مجی خون آیا مجی نہیں توسب نفاس بی ہے جاہے بندرہ دنوں کا فاصلہ ہوجائے۔ (بهارشر بعت ج ارح ۲ ص ۴۵) **مسئلہ** نفاس کے خون کا رنگ لال 'کالا'ہرا' پیلا'مٹی کے رنگ جییا' گدلا (کیچڑ کے رنگ جیسا) وغیرہ بھی ہوسکتے ہیں۔ (بهارشر بعت ج ام ۴۵) مسئله نفاس والی عورت کونماز پڑھنا' روز ورکھناحرام ہے۔ان دنوں میں نمازیں

معاف ہیں اور ان کی تضا بھی نہیں۔البت فرض روزے تضا اور دنوں میں رکھنا فرض
ہماف ہیں اور ان کی تضا بھی نہیں۔البت فرض روزے تضا اور دنوں میں رکھنا فرض
ہماف ہیں اور ان کی تضا بھی نہیں۔البت فرض روزے تضا اور دنوں میں رکھنا فرض
ہما ہمائی کو توک یا بدن کا کوئی حصہ ہی گئے ہیں سب حرام ہائی کورٹ دینی
ہمانوں کا چھونا بھی حرام ہے۔قرآن کریم کے علاوہ تمام وظا کف دروو شریف کلم
شریف وغیرہ پڑھے میں کوئی حریج نہیں۔
شریف وغیرہ پڑھے میں کوئی حریج نہیں۔
مسئللہ عالت بھی میں جس طرح مباشرت حرام ہائی طرح عالت نفاس میں
بھی مباشرت سخت حرام ۔حرام ۔گناہ کیرہ ہا دورالی عالت میں جماع کو جائز جاننا
مرح عالم عالمت میں ناف سے لے کر گھنے تک حورت کے بدن سے مرد کا اپنے
کی عضو سے چھونا جائز نہیں ناف سے اور اور گھنے سے نیچ چھوٹے یا کی طرح کا
نفع لینے میں کوئی حریج نہیں ۔ یوں ہی نفاس والی عورت کے ساتھ کھانے پینے اور بوں
وکنار میں کوئی حریج نہیں ۔ یوں ہی نفاس والی عورت کے ساتھ کھانے پینے اور بوس

THE THE SECOND (1612 US) PO

بچ کی پیدائش پرجا ئزونا جا ئزرشمیس

بے کی پیدائش کے موقع پرالگ الگ ملکوں میں طرح طرح کی سمیس ہیں گر چندر میں تقریبا کسی قدر تھوڑ ۔ فرق کے ساتھ ہر جگہ یائی جاتی ہیں۔مثلاً لڑکا پیدا ہوتو چھروز تک خوب نوشیاں منائی جاتی ہیں۔خوثی منانے کی شریعت میں ممانعت نہیں لیکن خلاف شرع کا م کرنے سے ضرور بچنا جا ہے۔ پیدائش کے دن لڈویا کوئی مٹھائی تقسیم کرنا مباح ہے مگر براوری کے ڈر سے اورناک کٹنے کے خوف سے مٹھائی تقتیم کرنا بے فائدہ ہے اورا گرسود پر قرض لے کریہ كام كياتو آخرت كاكناه بهي -اس لئے ان رسموں كو بندكرنا بى بہتر بے - بال اگر يج کی عمر میں برکت 'صحت وتندرتی کی غرض سے صدقہ دخیرات کی جائے تومستحب ہے۔ ایک رسم بہ بھی ہے کہ عورت کے میکے والے اپنے واماد کو تحفید میں کیڑے کے جوڑے بیچے کوجھولا اور کچھ نقتری رویے وزیور دیتے ہیں۔اکٹر دیکھا گیا ہے کہ مال دارلوگ بیسبخرج برداشت کر لیتے ہیں لیکن غریب لوگ ان رسموں کو پورا کرنے كيليح سودي قرض تك ليتے ہيں اگر يجے كى ولادت برعورت كے ميكے والے بيسب رسمیں بوری نہ کریں تو ساس ونندوں کے طعنے سنے پڑتے ہیں اور گھر میں خانہ جنگی کا ماحول ہوجاتا ہے۔لبذا مناسب تو بہ ہی ہے کہ ان رسموں کومسلمان چھوڑ دے تا کہ

شادی کا دیا ہے۔ بھی بچاجا سے اور ٹا افاقی کا دروازہ بھی بند ہو جائے۔ ویے بھی یہ دفعول تر چی ہے۔ بھی بند ہو جائے۔ ویے بھی یہ سب رسیس شریعت میں نہ تو فرض ہیں نہ واجب نہ سنت اور نہ بی متحب۔ پھر اس پر اس قدر پا بندی کیوں؟ عام طور پر دیکھا گیا ہے کہ لوگ عقیقہ نہیں کرتے بلکہ اپنی خود ساختہ رسموں کی پابندی بری شستقل مزاجی کے ساتھ کرتے ہیں۔ مثلاً چھٹی کی رسم پھٹی یہ ہے کہ نیچ کی پیدائش کے چھٹے دوزرات کو گورتیں جمع ہو کرمل کرگاتی بیاں پیمی پھرز چہ کو باہر لاکر تارے وکھا کرگاتی ہیں۔ پھر شیٹے چاول تقسیم کئے جاتے ہیں یہ بھی مشہور ہے کہ گورت کا پہلا بچراس کے میکے میں بی ہواور سارا فرج عورت کے ہاں مشہور ہے کہ گورت کا پہلا بچراس کے میکے میں بی ہواور سارا فرج عورت کے ہاں باپ بی برداشت کریں آگر دہ ایسانہ کریں تو سخت بدنا ہی ہوتی ہے۔ چھٹی کرنا اور دیگر اس طرح کی رسمیں جی جو بہوں اس طرح کی رسمیں جی جو بہوں کے عقیقہ کے مقابلہ میں ایکا دی ہیں۔ ا

لڑی ولڑ نے کا عقیقہ کرنا سنٹ ہے اور سنت حصول تو اب کا ذریعہ ہے اور ای
طرح حضور اکرم منتظ کیا ہے ثابت ہے۔ اب اپنی طرف سے اس میں رسمیں داخل
کرنا فضول ہے۔ لہذا بہتر ہے مسلمان ان رسموں کوچھوڑ کر اللہ اور اس کے رسول کی
خوشنودی حاصل کریں۔ اگر بیج کی پیدائش پر میلا وشریف یا وعظ شریف یا فاتح کردی
نبائے تو بہت بہتر ہے۔ اس کے سواتمام خرافاتی رسمیں بندکردینا چاہیے۔

(لخف اسلامی زندگی ازمفتی احمد یارخال نعیی مِرانسید)

عقيقه كابيان

۔ بچہ پیدا ہونے کے بعد اللہ تعالی کے شکر میں جو جانور ذرج کیا جاتا ہے اسے عقیقہ کہتے ہیں۔ عقیقہ کرنا سنت ہے۔ عقیقہ کا سنت طریقہ بیہ ہے کہ بیدائش کے ساتویں روز یا جب بھی حیثیت ساتویں روز یا جب بھی حیثیت ہوکرۓ سنت ادا ہوجائے گی۔ (قانون شریعت ج) ص ۱۴ بہار شریعت دغیرہ)

THE CETTE THE SEAL LEVEL JO لڑے کیلئے دو برے اور لڑکی کیلئے ایک بکری ف^ج کرے لڑکے کیلئے بکر ااور الوى كيليع بكرى ذيح كرنا بهتر ب- اگرالوكالوكى دونون كيليع بكرايا بكرى بهى ذي (قانون شریعت ج۴ ص۱۲۰) کرے تو کوئی حرج نہیں۔ لوے کیلئے دو بکرے نہ ہو تکیں تو ایک بکرے میں بھی عقیقہ کر سکتے ہیں۔ای طرح اگرگائے اسمیس فرج کرے تو لڑ کے کیلئے دو جھے اورلڑ کی کیلئے ایک حصہ ہو۔ عقیقہ کے جانور کیلیے بھی وہی شرطیں ہیں جوقر بانی کے جانور کیلیے ضروری ہیں۔ (قانون شريعت ج امص١٦٠) عقیقہ کے جانور کے تین جھے کئے جا ئیں ایک حصیفر بیوں کوخیرات کردے دومرا حصیر شختے داروں احباب میں تقتیم کرے اور تیسرا حصینو در کھے۔ عقیقہ کا کوشت غریوں فقیروں رشتے داروں دوست واحباب کوشیم کرے ما یکا کردے یا پھردعوت کرے کھلائے سب صور تیں جائز ہیں۔ عقیقه کا گوشت مال باب دادا وادی نانا نانی غرض کے مررشتے دارسب کھا (قانون شریعت ج۱٬ ص۱۲۰) سکتے ہیں۔ عقیقہ کے جانور کی کھال اینے کام میں لئے عربیوں کودے دے یا مدرسہ یا مجد میں کرنے لینی اس کھال کا بھی وہی تھم ہے جو قربانی کی کھال کا تھم ہے۔ (قانونشریعت جاص۱۲۰) بہتر ہے کہ عقیقہ کے جانور کی ہڈیاں توڑی نہ جائیں کہ یہ نیک فال ہے بلکہ جوڑوں سے الگ کر دی جائے اور گوشت وغیرہ کھا کر زمین میں دفن کر دی جا^ئیں ۔ نیک فال کیلیے بڑی نہوڑ تا بہتر ہے اور تو ڑنا بھی جائز ہے۔ (بہار شریعت ۲۵ م۱۹۵) عقیقہ میں بچے کے مرکے بال منڈ وائے اوراس کے بالوں کے وزن کے برابر ما ندی یا (صاحب استطاعت ہوتو) سونایا اس کے برابر قیمت خیرات کرے۔

امام محمر باقر ہوائٹیؤ سے روایت ہے کہ

'' خاتون جنت حضرت فاطمة الزبرا وَكَالنَّجِاسِيِّة بجون كاعقيقه فرماتي تحيين اور

آپ نے حفرت امام حسن حفرت امام حسین حضرت زینب اور حضرت ام کلثوم و کالیہ

کے جب عقیقے فرمائے تو ان کے بال اتروائے اور بالوں کے وزن کے برابر جاندی خیرات فر مائی۔

(مؤطاامام الك ج أكتاب العقيقه حديث ٢٩٠٢)

یا در کھے ! عقیقه فرغل یا داجب نہیں ہے صرف سنت مستجہ ہے۔غریب مخض کو

ہرگز جائز نہیں کہ قرض لے کراور وہ بھی معاذ اللہ سود پر قرض لے کر عقیقہ کرئے قرض

لے کرتو زکو ۃ دینا بھی جائز نہیں عقیقہ زکو ۃ ہے بوھ کرنہیں ۔ (اسلامی زعرگی ص ۱۸)

عقیقہ کے جانورکو ذرج کرتے وقت کی دعا کیں بہت سے مسائل کی چھوٹی چھوٹی کتابوں میں بھی آئی ہے۔لہٰذاوہ ڈعائیں انہیں کتابوں میں دیکھ لی جائے۔

ختنهكابيان

''کڑکول کے ختنہ کرنا سنت ہے اور بیاسلام کی علامت ہے۔حضرت امام

بدرالدين محوديني م الطيعية "عدة القارى شرح بخارى" من ختندكى نسبت فرمات تق" ـ

انه شعائر الدين كالكمة وبه يتميز المسلم من الكافر"

ترجمه بیشک ختنه کلے کی طرح دین اسلام کی نشانیوں میں سے ہے اور مسلم اور کا فر مل اس سے امراز پیدا ہوتا ہے''۔

بخاری ومسلم غرض کہ صحاح ستہ کے علاوہ احادیث کی تقریباً سبھی کما بوں میں

نقل ہے کہ

حضورا كرم مِطْطُقَاتِيمْ نے ارشاد فرمایا۔''حضرت ابراہیم مَلِیٰظ نے اپنی ختنہ كی تو

اس وقت آپ کی عمر شریف ای برس تھی''۔

شادی کے ادکام کی سیست کہ جب بچرسات سال کا ہوجائے اس وقت ختنہ کرا دیا جائے کہ اس عمر میں بچر آسانی سے تکلیف برداشت کر لیتا ہے۔ ختنہ کرانے کی عمر سات سال سے لے کربارہ سال تک ہے۔ ایمنی بارہ برس سے زیادہ دیرلگا المنع ہے اوراگر سات سال سے پہلے ختنہ کردیا جب بھی حرج نہیں۔ ختنہ کرانا باپ کا کام ہے

وہ نہ ہوتو پھروادا' مامول' چاچا' وغیرہ کرائے۔ ختند کرنے سے پہلے نائی کی اجرت طے ہونا ضروری ہے جواس کوختنہ کے بعد دی جائے علاج میں خاض گرانی رکھے۔ تجربہ کارنائی سے ختند کرانا بہتر ہے۔

ختند صرف ای کا نام ہے باتی بید دھوم دھام سے بارات نکالنا 'رشتے داروں
کو بے مقعد کپڑوں کے جوڑے باٹنا 'گانے باجے اور لائیٹنگ وغیرہ سب نضول کام
ہے اور نضول خرچی اسلام میں سخت حرام ہے بیسب مسلمانوں کو کمزور ناک نے پیدا
کرویے ہیں جے کٹنے سے بچانے کیلئے قرض تک لیتے ہیں اور بعد کو پریشانی مول
لعتے ہیں۔

الله تبارك وتعالى ارشاد فرماتا ہے۔

وَلَاتُهُنِّدُ تَهْنِيدٌ آهِنِيدٌ اللَّهُ الْمُهَنِّدِيْنَ كَانُواْ اِلْحُوانَ الشَّمْطِيْنِ ۞ (مورة بن اسرائیل ۲۲)

ترجمہ اورفضول نہاڑا ہیشک اڑانے والے شیطانوں کے بھائی ہیں۔ (کنزالا بران)

كان تاك چفيدنا

لڑ کیوں کے کان ناک چھیدوانے میں کوئی حرج نہیں اس لئے کہ حضور ملئے ہوئے آ کے زمانے ظاہری میں بھی عور تیں کان چھدواتی تھیں اور حضور ملئے ہوئے نے اس سے ممانعت نافرمائی۔ (فاوی رضویہ جانسف آخرص ۱۵ بہار شریعت جا ۲۲ ص ۱۲۱)

TERESTER SERVICE SERVI

کان ناک چھیدنے کی ابتداء

ایک روایت میں ہے کہ

''سب سے پہلے تاک کان حضرت سارہ نے حضرت ہاجرہ وٹا گھا کے چھیدے تھے۔ دونوں ہی حضرت ابرا ہیم مَلاِئلا کی بیویاں تھیں۔ تب ہی سے عورتوں میں کان تاک چھدوانے کارواج چلاآ رہاہے''۔ (معارج اللہ ہ ج) اس ۱۲۲)

کچھلوگ کی منت کے تحت یا کچرفرنگی فیشن کی پیروی میں لڑکوں کے کان چھید دیتے ہیں اور کچھ کی بزرگ کی منت کے تحت لڑکوں کی چوٹی رکھتے ہیں۔ یہ بخت ناجا ئز وحرام ہےاورالیی منت کی شریعت میں کوئی حیثیت نہیں۔

الم المِسنّت اعلى حضرت ومِطْضِيّه " فِقاو كَا فريقة " مِن فرمات ميں _

ر بعض جابل عورتوں میں دستور ہے کہ بچے کے سر پر بعض اولیاء کرام کے تام کی چوٹی رکھتی ہیں اوراس کی پچھ میعاد مقرر کرتی ہیں اس میعاد تک کتنے ہی بار بچے کا سرمنڈ ے وہ چوٹی برقر اررکھتی ہیں پچر میعاد گر ارکر مزار پر لے جا کر بال اتار تی ہیں یہ ضرور محض بے اصل و بدعت ہے۔ (واللہ تعالی اعلم) (فاوی افریقہ میں ۱۸۸۲)

حفاظتی شیکےلگوانا

گھر کی عورتیں اپنے چھوٹے بچوں کو کسی کا لک کا جل یا سرمہ وغیرہ سے دخسار (گال) پر کالا ٹیکا لگاتی ہیں تا کہ کسی کی بری نظر نہ لگے۔ یہ بے اصل نہیں نظر کا لگنا صحے ہے اورا حادیث سے ثابت ہے۔ چنانچہ حدیث پاک میں ہے۔

رسول الله مطفئة إرشاد فرمات بي-

العين حق لو كان شي سابق القدر لسبقته العين-(ترفري ١٩١٢ - ١٣٧ مديث ١٣١٢ مؤطالهام الكري كابرالعين مديث ١٤١٤ لقول الجميل)

ترجمہ نظر کا لگنا حق ہے اگر کوئی چیز تقدیر پر غالب ہوتی ہے تو نظر غالب ہوتی ہے تو نظر غالب ہوتی ہے۔

ہے۔
ایک روایت میں ہے کہ حضرت عثان بی شخو نے ایک خوبصورت بیچ کود یکھا تو فر مایا۔ ''اس کی ٹھوڑی میں کا لائے کا گا دو کہ اس کو نظر نہ گئے'۔ (القول الجمیل)

اس کے علاوہ اور صدیثیں ہیں جن سے ظاہر کہ نظر کا لگنا سیح ہے جن کی تفصیل اس کے علاوہ اور صدیثیں ہیں جن سے ظاہر کہ نظر کا لگنا سیح ہے جن کی تفصیل کی یہاں مزید جاجہ ہیں جی ہین کوئی ۔ (واللہ تعالی اعلم وثم رسول اللہ علم)

دیم کی یہاں مزید جاجہ ہیں گئے گئے کو دیکھے یا مسلمان بھائی کی کوئی چیز اچھی لگی تو سے دعا کرے۔

دیم کی تین اللہ آخس اللہ کا لیٹون اللہ تھی ہی اللہ کا اللہ تعالی ہرکت کرے' اس طرح کے نے اس طرح کے نے اس طرح کے سے نظر نہیں گئے گئے۔

(دوالمحتار بحوالہ بہار شریعت جان کا اس طرح کے نے سے نظر نہیں گئے گئے۔

(دوالمحتار بحوالہ بہار شریعت جان کا اس کوئی سے نظر نہیں گئے گئے۔

(دوالمحتار بحوالہ بہار شریعت جان کا اس کوئی کے سے نظر نہیں گئے گئے۔

(دوالمحتار بحوالہ بہار شریعت جان کا اس کوئی کی کوئی گئے گئے۔





یے کے نام کا نتخاب

پچکی پیدائش کے سات روز بعد بچکانا مرکھاجائے 'بچہ چاہے زندہ پیدا ہو یا مرا ہوا 'پورا بنا ہو یا ادھورا' ہرصورت میں اس کا نام رکھاجائے اور قیامت کے دن اس کا حشر ہوگا۔ (درمختار روالحی را احیاء العلوم نی ۴ مس ۲۰۱ قانون شریعت ج امس ۱۲۵) بزرگان دین فرماتے ہیں۔ ۴

''اپنج بچول کے اجھے نام رکھو کہ اجھے ناموں کا اثر بچوں پر اچھا پڑتا ہے اور برے نام کا برااثر پڑتا ہے''۔

يُر عامول كاثرات

'' فقیرنے بچشم خودایے فتیج (برے) ناموں کا بخت برااڑ پڑتے دیکھا ہے بھلے چنگے سی صورت کو آخر تمریس دین پوٹن ناحق کوٹن ہوتے پایا ہے''۔

(إحكام شريعت جامس٧٧)

(بخارى مسلم ابوداؤ دُنسائي)

رسول الله مطفيكيَّ أرشاد فرمات بين_

تسموا باسماء الانبيام

ترجمہ انبیاء کرام کے ناموں پرنام رکھو۔

LEICON DE LEICUR DE

ا حادیث کریمہ میں خالص''محم'' نام رکھنے کی بہت زیادہ فضیلت آئی ہے۔ ہم یہاں چند حدیثیں بیان کرنے کاشرف حاصل کررہے ہیں۔

محمدنام كى بركتيں

حضورا كرم مطيعات ارشادفرماتے ہيں۔

قال الله تعالى وعزتى وجلالى لاعذبت احد ايسمى باسمك فى التار- (ابرهيم - بحواله ـ اكام ثريعت ١٥٠٥)

حضرت امام ما لک رخالٹنگ فرماتے ہیں۔

ما كان في اهل بيت اسم محمد الاكثرت بركته.

(شرح الموابب بحواله احكام شريعت جامص٨٨)

ترجمه جس گھر والوں میں کوئی محمد نام کا ہوتا ہے اس گھر کی برکت زیادہ ہوتی ہے۔ ابن عساکڑ حافظ حسین بن احمد بن عبداللّٰد بن بکیر رقحیُ لَکٹیم حضرت ابوامامہ رُٹیالٹنڈ سے داوی کے درسول اللہ منظری کی آخیا نے ارشاد فرمایا۔

من ولدله مولود فسماه محددا حبالي وتبركا باسمي كان هو ومولودة في الجنة - (بحواله احكام شريعت م اسم

ترجمہ جے لڑکا پیدا ہواور وہ میری محبت میں اور میرے نام پاک سے تیرک کیلئے اس کا نام محمد رکھے وہ اور اس کالڑکا دونوں جنت میں جائیں گے۔

(بحوالها حكام شريعت ج اعص ٨٠)

طبرانی کبیر میں حضرت عبداللہ بن عباس ڈٹا ہا ہے راوی کہر سول اللہ مستقطیمی ارشاد فرماتے ہیں۔ ارشاد فرماتے ہیں۔

من ولدله ثلثة أولاد فلم يسم احدا منهم محمد فقل جهل-(طرانی بخواله اکام شریعت نا م



ترجمہ جس کے تین بیٹے پیدا ہوں اور وہ ان میں کسی کا نام محمد ندر کھے تو ضرور حال ہے۔

ا بن سعد نے طبقات میں حضرت عثمان عمری فاٹٹو سے مرسلا روایت کرتے ہیں کہ رسول اللہ منظوں کو آنے ارشاوفر ماہا:

ماضر احد كم لو كان من بيته محمد ومحمد ان وثلثة_

(بحوالها حكام شريعت ج اص ٨١)

ترجمہ تم میں کسی کا کیا نقصان ہے اگر اس کے گھر میں ایک مجمد یا دومجمد یا تین مجمد ہوں۔ ہوں۔

اعلی حضرت ع الشیاب اس حدیث کونقل کرنے کے بعد فرماتے ہیں۔

' · فقر غفر الله تعالى لدنے اپنے سب بیٹوں بھیجوں کا عقیقے میں صرف محمد نام

ر کھا۔ پھرنام اقدس کے حفظ آ داب اور باہم تمیز کیلیے عرف جدامقرر کئے۔ بحد للد تعالی فقیر کے یہاں یائے محمد اب بھی موجود ہیں۔ اور یائے سے زائد انقال کر گئے''۔

(بحواله احكام شريعت ج اص٨٢)

ہمیں بھی چاہیے کہا ہے بچوں کے نام صرف' محمہ' رکھیں اور گھریل پہچان اور پکارنے کے لحاظ سے دوسرے نام رکھ دیں۔ لیکن یا درہے وہ پکارنے کے نام بھی اسلامی ڈھنگ کے ہو۔عبداللہ عبدالرحن عبدالکریم' عبدالرحیم وغیرہ نام اور انبیاء کرام وصحابہ کرام کے ناموں برنام رکھناا چھاہے۔

الله کے پیندیدہ نام

حضرت عبداللدائن عمر والله عدوايت بكدرسول منطق آية في ارشا وفر مايا:

احب الاسماء الى الله عبدالله وعبدالرحمن-

(ايودا دُوج٣ ُ باب٨٨ ُ حديث١٥١٣)

JERCETT THE SECTION OF THE COST

ترجمہ اللہ تعالیٰ کوتمام ناموں سے عبداللہ اور عبدالرحمٰن سب سے زیادہ پسند ہے۔ لیکن یادر ہے جن کے نام رحمٰن ستار عفار کریم رحیم وغیرہ ہو جو کہ اللہ کے صفاتی نام ہیں ان سے پہلے عبداگانا ضروری ہے۔ مثلاً عبدالرحمٰن عبدالستار عبدالغفار عبدالكريم عبدالرحيم وغيرہ اگر بغيرعبدا گائے لکا داتو تخت منع ہے۔

بی و مرام بیور اویرو، در مدر بین منطق کے اور ای طرح کسی کو ایسے نام بیاڑ ناسخت منط ہے اور ای طرح کسی کوالیے نام سے رکارہ ماراض ہوجائے۔ رکار نامجی جا ترنہیں جے من کروہ ناراض ہوجائے۔

اللّٰدربالعزت ارشادفرما تاہے۔

وَلاَ تَلْمِزُواْ النَّفْسَكُمْ ولاَتَنَا بَرُواْ بِاللَّقَابِ (مورة الحِرات ١١)

رجمہ اورآپاس میں طعنہ نہ کرواور ایک دوسرے کے برے نام نہ رکھو۔

(كنزالايمان)

افسوس! آج کل لوگ اپنے بچوں کے نام فلمی ہیرو ہیروئن کرکٹ کھلاڑی یا پھرکسی فرنگی کے نام سے متاثر ہو کر رکھتے ہیں۔ جیسے ٹیکٹو پیکو 'ریکٹو چیکو میکو کلو للو' مجمورو' کا جول راحول' بی مینا' ثینا' رینا' بینا' لینا اور نہ جانے کیا کیا کواس نام۔

قیامت کے دن ناموں سے بکارے جاؤگے

حضرت ابوداؤد وفائنو سے روایت ہے کہ حضور منطق آیا ارشاد فرماتے ہیں۔ انکعہ تدعون یوم القیمة باسمانکھ واسماء ابانکھ فاحسنوا اسماء ر- (امام احمد ابوداؤد ش باب ۸۵۰ عدے ۱۵۱۳)

ترجمہ بیٹکتم روز قیامت اپنے ناموں اور اپنے باپ کے ناموں سے پکارے جاؤگے تواسینے ناما چھے رکھا کرؤ'۔

اس حدیث سے ظاہر ہے کہ اگر معاذ اللہ کسی کا نام ٹینکوہوگا تو اسے بروز قیامت ٹینکو کے نام سے پکارا جائے گا۔ سوچٹے اس وقت جب کہ وہاں صالحین' ہزرگان دین'

PERCYLA TO THE SERVICE OF THE COST OF

عام بندے غرض کہ بھی جمع ہول گے کس قدر شرمندگی ہوگی! آج وقت ہے۔جنہوں نے اپنے بچوں کے نام ایسے بیہودہ رکھے ہیں وہ آج سے بی تبدیل کردیں اور اچھا سا كوئى اسلامى نام ركھ ليس_

حفرت نافع زائنیو نے حضرت ابن عمر زان سے روایت کی۔

ان النبي صُنِيَاتِهُمْ كان يغير الاسم القبيم

(ترندى ج ٢٠ باب ٣٣٥ مديث ٢٨١ أبوداؤدج ١٠٠٠ باب ٢٨١ مديث ١٥١ ص ٥٥١)

ترجمہ اکثر مسلمان ایسے نام رکھتے ہیں جو بظاہر سننے اور پکارنے میں اچھے معلوم

ہوتے ہیں لیکن یا تو ناجا ئز وحرام ہیں یا پھرا پیے کہ جن کے کوئی معنی نہیں ہوتے۔

امام المنت اعلى حضرت م الطبيع في أي فتوى من اي بهت س نامول

کے بارے میں لکھا ہے جنہیں رکھنا جا ہے۔ہم یہاں مخقر پچھذ کر کررہے ہیں۔

اعلیٰ حضرت رخاشۂ فرماتے ہیں۔

''محمد نی احمد نی نی احموئیام رکھناحرام ہے کہ پیر حضور منتے ہی آئیا ہی زیبا

(احکام شریعت ج۱٬ ص۷۲)

'' یونی نی جان نام رکھنا نامناسب ہے۔ پلیمن طرنام رکھنامنع ہے۔ یہ ایسے

نام ہیں جن کے معنی معلوم نہیں ان ناموں کے آگے ' محد' اکانے ہے بھی فائدہ نہ ہوگا کہ اب بھی لیلین وطہ نامعلوم معنی میں رہے'۔ (احکام شریعت جا مص۱۷)

''غفور الدین نام بھی سخت بُرا اور عیب دار ہے' غفور کے معنی''منانے والا'

"برباد کرنے والا" کے ہوتے ہیں غفوراللہ کا نام ہاوراللہ اپنی رحمت سے بندوں

کے گناہ مٹاتا ہے۔(اب اگر کی شخص کا بینام ہوتو) غفورالدین کے معنی ہوئے'' وین

كامنانے والا' بيايے ہى ہوا جيسے شيطان نام ركھنا''۔ (احكام ثريعت ج اس ٢٧)

TELETIA TO THE SEAR (KEIL USIC) TO "اسى طرح كلب على كلب حسن كلب حسين غلام على غلام حسن غلام حسين وغیرہ ناموں سے پہلے''محمہ'' لگانا جائز نہیں (مثلاً محمد کلب علیٰ محمد کلب حسن یا محمد غلام علیٰ محمہ غلام حسین وغیرہ بینام جائز نہیں ہوں گے) اگر صرف کلب علیٰ کلب حسنُ كلب حسين غلام على غلام حسن غلام حسين وغيره بى رين ديو كوكى حرج نهيل "-(احكام شريعت ج ام ٧٤) ''اسي طرح نظام الدين' محي الدين' مثمل الدين' بدرالدين' نورالدين' فخر الدين مثم الاسلام محى الاسلام بدرالاسلام وغيره نامول كوعلاء كرام نے سخت ناپسند ر کھااور کروہ وممنوع فرمایا کہ بیر بررگان دین کے نام نہیں بلکسان کے القاب ہیں جس ے ملمانوں نے ان کی تعریف میں انہیں القاب سے یا دکیا''۔ (احكام شريعت ج امس ٧٤) ''علیٰ حسین'غوث جیلانی ادراس طرح کے تمام نام جوبزرگان دین کے نام ہیں ان سے پہلے لفظ ' نفلام' ، ہوتو بیکک جائز ہے' ۔ (مشلاً غلام علی غلام حسین غلام غوث غلام جيلاني وغيره) (احکام شریعت ج۱٬ص ۷۷) ادرايي مام جو به معني جي - جيسے بدهو ُ كلوُ للوُ راجوُ جعراتي 'شبراتي ' خيراتي ' نیجور حمو منی مینکی "وینکی" بے بی شوبی وغیرہ اور اس طرح کے وہ نام جوایے معنی کے اعتبار سے فخریہ ہیں اور جن میں فخر طاہر ہوتا ہونہ رکھے جائیں ۔مثلاً شاہ جہاں' نواب'

0-0-0

(لمخص اسلامی زندگی ص ۱۷)

راجا' بادشاہ وغیرہ ای طرح لڑ کیوں میں قبر النساءُ بدر النساءُ مثس النساءُ روثن آ را' جہاں آ راء نور جہاں وغیرہ نام ندر کھے' بلکہ لڑ کیوں کے نام۔ کنیز فاطمہ' آ منہُ عاکشہ'

خدىجېزىن مرىم كلوم وغيره ركھيں _



يچ کی پرورش کابیان

بچ کی پرورش کا حق مال کو بئ چاہے وہ نکاح بیں ہویا نکاح سے باہر ہوگئ ہو۔ ہال اگر مرتد (وین اسلام سے پھر کر کافرہ) ہوگئی ہوتو پرورش نہیں کر سکتی ۔ یا زنا کرنے والی ہویا چور ہوئیا ماتم کر نیوالی یا چین چیخ کررونے والی ہوتو اس کی بھی پرورش میں بچرنیس دیا جائے گا۔ بعض فقہاء کرام تو یہاں تک فرماتے ہیں کہ

'''اگر عورت نماز کی پابندنیس تو اس کی بھی پرورش میں پچردیانہیں جائے گا''۔ گرضج میہ ہے کہ بچداس کی پرورش میں اس وقت تک رہے گا جب تک تا بھھ ہے اور جب پھھ تیجھنے گلے تو الگ کرلیا جائے' اس لئے کہ بچہ ماں کود کھے کروہ تی عادتیں اختیار کرے گا جو ماں کی نے۔ یوں ہی اس ماں کی پرورش میں بھی نہیں دیا جائے گا جو پچ کوچھوڑ کرادھرادھر چلی جاتی ہوئیا ہے اس کا جانا کی گزاہ کیلئے نہ ہو۔

(بهارشر بعت جائح ٤ ص ١٩ سلامي زند كي ص ٢٣)

يچ كودودھ بلانا

الله نتارك وتعالیٰ ارشاد فرما تاہے۔

وَالْوَالِدَاتُ يُرْضِعُنَ أَوْلَادَهُنَّ حَوْلَيْنِ كَامِلَيْنِ لِمُن اَرَادَانَ يَتِمَّ الرَّضَاعَة THE PAINT OF THE SEA (I SELLE)

ترجمہ اور مائیں دودھ پلائیں اپنے بچول کو پورے دو برس اس کیلئے جو دودھ کی مدت بوری کرنی جا ہے۔ (کنزالا بمان)

مسئله الركى ہو يالركا دونوں كودود هدوسال تك پلايا جائے ان باپ چاہيں تو دو سال سے يملي بھى دود ه چھڑا سكتے ہيں مگردوسال كے بعد پلانا منع ہے۔

(بهارشر بعت جائح كاص١٩)

کی جو تر س اپ نیچ کو اپنا دود ھنہیں پلائیں بلکہ گائے 'جینس کا یا گھر کن مہینوں سے بڑے ہوئے واپنا دود ھنہیں پلائیں بلکہ گائے 'جینس کا یا گھر کن مہینوں سے بڑے ہوئے وارکا دود ھلاتی ہیں۔ ان کا خیال ہے کہ بیچ کو دود ھیلانے سے عورت کی خوبصورتی ختم ہوجاتی ہے۔ جبکہ بیخیال بالکل غلط ہے۔ حقیقت تو یہ ہے کہ بیچ کو دود ھیلانے کے دوران مال کے جم کی جربی اپنی ضروری مقدار سے زیادہ نہیں ہو پاتی ہو جا ہے اور یہ بات مائنسی تجربات کی روثی میں جا بی خوب کہ دود ھیلانے سے عورت میں ندتو سائنسی تجربات کی روثی میں جا ور نہ ہی اس کی خوبصورتی پر کوئی فرق پڑتا ہے جو مائنسی اپنی کو دود ھنیس پلاتیں ان کی بیضد دانی وقت سے پہلے ہی پڑتے ہوجاتی ہو جاتی ہو جاتی جو جاتی ہو جاتی ہیں ہوتی ہیں۔

بچے کودودھ پلانے پرمغفرت

حضرت عاکشہ رفاتھا ہے روایت ہے کہ حضور سید عالم مشطقی آنے ارشاد فرمایا:
''جوعورت اپنے بچ کورود دھ پلاتی ہے اور جب بچہ ماں کے بہتان ہے دود ھ
کی چکی لیتا ہے تو ہر چکی کے بدلے اس عورت کو ایک غلام آزاد کرنے کا ثواب دیا
جاتا ہے جب عورت بچ کا دودھ چھڑ اتی ہے تو آسان سے ندا آتی ہے کہ
اے نیک خاتون! تیری کچھلی زندگی کے سارے گناہ معاف کردیئے گئے اب

BECFAT TO THE SEE (1612 USE) TO

تو نے سرے سے نیک زندگی شروع کر''۔ (غنیة الطالبین باب۵م ۱۱۳)

جديدميذ يكل تحقيق

ڈاکٹرول کی تحقیق سے نیہ بات پایٹ ہوت تک پینے چک ہے کہ مال کا دودھ نچے کسلے سب سے زیادہ مفید ہوتا ہے۔ مال کا دودھ نچے کو تیج مقدار میں پروٹین میا تمن اور دفتیات مہیا کرتا ہے۔ مال کا دودھ پینے سے نچے کے پیٹ کے امراض پیدا ہونے کے امکانات کم ہو جاتے ہیں۔ مشاہدہ ہے کہ جو نچے اپنی مال کا دودھ پیتے ہیں وہ زیادہ صحت منداور تندرست رہتے ہیں۔ اس کے برعس جو نچے اپنی مال کا دودھ پیتے ہیں وہ بیل وہ دیادہ صحت منداور تندرست رہتے ہیں۔ اس کے برعس جو نچے اپنی مال کا دودھ پیتے ہیں وہ بیل وہ دیادہ صحت منداور تندرست رہتے ہیں۔ اس کے برعس جو بچے اپنی مال کے دودھ سے محروم رہتے ہیں وہ کنرور ہوتے ہیں اور مختلف امرض میں ہمیشہ گرفتار رہتے ہیں اور مختلف امرض میں ہمیشہ گرفتار رہتے ہیں شعیم نمت سے محروم رہا کے برقطم نمیل تو اور کیا ہے؟

بچے کودودھ نہ پلانے پر سخت عذاب ہوگا

حفزت خاتم الحفاظ امام اجل جلال الدين سيوطى عِطْطِيد الْحِيْ مشهورز ماند كمّاب "شرح الصدور" مين خفزت الوامامه وْفَالْنُوْ سندروايت كرتے مين كه حضورا كرم مِشْطِكَيْلًا نه ارشاد فرمايا:

''شب معران میں نے پچھ عورتیں ایسی دیکھیں جن کے پیتان لکے ہوئے اور سر جھکے ہوئے ان کے پیتان لکے ہوئے اور سر جھکے ہوئے دسترے جرئیل اللہ طفاق آبا ہدہ عورتیں ہیں جواسخ بچوں کو دود صحنیں مالین مالین مالین اللہ استرے ہوئی اللہ طفاق آبا ہدہ عورتیں ہیں جواسخ بچوں کو دود صحنیں مالی کا تی میں اور کہ مالی میں خالق کو کسی وجہ سے دود ھنیس آ رہا ہویا کم آتا ہویا الی بیاری میں اگر کسی خالق کو کسی وجہ سے دود ھنیس آ رہا ہویا کم آتا ہویا الی بیاری میں

" TELLUIC TO

بہتلا ہوجس سے بچ کودودھ پلانے میں نقصان کا اندیشہ ہوتو الی حالت میں بچ کے باپ کی ذمدداری ہے کہ دورھ پلانے والی کا انتظام کرے لیکن خیال رہے دودھ پلانے والی بھی مسلم فی صحح العقیدہ نیک سیرت خاتون ہوکہ دودھ کا اثر بچ پر مرتب ہوتا ہے۔

دودهكااثر

تفیررو آلبیان میں ہے کہ حضرت امام شخ ابن مجمد مرتضیات اپنے گھر میں آئے تو دیکھا کہ ان کے بیٹے امام ابوالمعالی کوکوئی دوسری عورت دودھ پلا رہی ہے۔ آپ نے اس سے بیچ کوچین لیا اور بیچ کے منہ میں انگلی ڈال کرتمام دودھ الٹی کرادیا اور فرمایا ایچھے دودھ سے شرافت بیدا ہوتی ہے اور جال کی میں آسانی۔ جب امام ابوالمعالی مرات ہو ان ہوئے تو بہت بڑے عالم بنے لیکن بھی بھی آپ مناظرہ میں تنگ دل ہو جات تھے اور فرماتے تھے کہ شایداس دودھ کا اثر میرے بیٹ میں رہ گیا ہے جس کا بید منظرہ میں تنگ دل ہو جس کا بید میں دہ گیا ہے۔ جس کا بید میں اللہ میں دہ گیا ہے۔ سے البیان کی میں اللہ میں دہ کی ایس نا البیان کی میں اللہ میں اللہ میں اللہ میں اللہ میں اللہ میں دہ کی ایس نا البیان کی میں اللہ میں اللہ میں کہ البیان کی میں نا آئی کی ناقل کی ناقل کی کا بید نا میں اللہ میں کہ ایس نا اللہ میں کی ایس نا نا میں ناقل کی ناقل کی کا بید نا میں کی ایس نا نا میں کی ایس نا نا میں ناقل کی کا بید نا نام

اگردودھ پالنے والی کی خاتون کا انظام نہ ہو سکے اور جیسا کہ اس زیانے میں مشکل بھی ہے تو بچے کیلیے گائے کا دود ھانتبادل ہے لیکن اے اُبالنا ضروری ہے۔



بچول کی تعلیم وتربیت

كتاب "حصن حمين" ميں ہے كه

''جب بچہ بولنا شروع کرے توسب سے پہلے اسے کلمہ شریف' کا اله الا الله محمد دسول الله'' سکھائے۔

عمد رسول الله عاد -

بچوں کے سامنے ایسی حرکتیں نہ کریں جس سے بچوں کے اخلاق خراب ہوں
کیونکہ بچوں میں نقل کرنے کی عادت ہوتی ہے وہ جو پچھاپنے ماں باپ کو کرتے ہوئے
د یکھتے ہیں وہ خود بھی وہی کرنے لگتے ہیں۔ اس لئے ان کے سامنے اچھی با تیں کہا
نماز پڑھئے قرآن پاک کی تلاوت کرے۔ تا کہ بیسب دیکھ کروہ بھی الیابی کریں۔
پہلے زمانے میں ماکیں اپنے بچون کو اللہ اللہ کہ کرسلاتی تھیں اب گھر کے
سے بیائی کی بدر اور میں ماکیں ایک میں ان میں اب گھر کے

ریڈیؤٹی وی اور باہے وغیرہ بجا کرسلائی ہیں کچھ بیوتوف اپنے بچوں کوگالی سکھاتے ہیں اور اس پر پھولے نہیں ساتے۔ بچوں کواچھی باتیں سکھائی جائیں اور گالی بکنے پر بحائے بیننے یا خوش ہونے کے انہیں ختی ہے ڈائیس۔ بچوں کوچھوٹی کہانیاں وقصے

کا چھااثر پڑے اوران کے دل میں اسلام ویز رگان دین کی محبت پیدا ہو۔ کا انتہا شریخ سے اوران کے دل میں اسلام ویز رگان دین کی محبت پیدا ہو۔

ماں باپ کا فرض ہے کہ اپنی اولاد کی تعلیم وتربیت کے بارے میں اپنی ذمہ

سر شادی کا دفام کی کا دوز اولاد سے آداب مجی سکھا کیں اگر اس سے ذرا مجی کوتائی کرے گا تو قیامت کے دوز اولاد سے بی پوچونہ ہوگی ماں باب مجی پکڑے جا کیں گے۔

الله تبارك وتعالى ارشاد فرماتا ہے۔

يَايُّهَا الَّذِينَ امْنُوا قُوْا الْفُسَكُمْ وَالْمِلِيكُمْ نَاراً وَتُودُهَا النَّاسُ وَالْحِجَارَة

ترجمہ اے ایمان والوا اپنی جانوں اور اپنے گھر والوں کواس آگ ہے بچاؤجس کا اپیدھن آ دمی اور پھر ہیں۔ (کنزالا بمان)

شرح

اس آیت کی تغییر میں حضرت ابن عباس ذباتی سے روایت ہے کہ ''تم خود گمنا ہوں سے بچو۔خدا کی فرما نبر داری کرواورا پنی اولا دکو بھلائی کا تھم

دؤئر انی سے منع کرواور شرعی آ داب سکھاؤاور فد بی تعلیم سے آ راستہ کرو''۔

جب بچیہوش مند ہوجائے تو کسی شیخ العقیدہ باعمل متقی پر ہیز گارعالم دین یا حافظ کے پاس بیٹھا کرقر آن پاک اوراُردو کی دیٹی کما بیں ضرور پڑھا کیں۔

۔ یقینا آپ اپنے بچوں کو ایک اچھا ڈاکٹر انجیئر بنا ہے لیکن اگر اللہ تعالی نے آپ کو ایک سے زیاد ولڑ کے عطا کئے ہیں تو کم از کم ایک لڑ کے کوشر ور عالم دین یا حافظ قرآن بنائے۔

مديث پاک ميں ہے۔

" بروزمخشرایک حافظانی تین پشتوں کوادرایک عالم دین اپنی سات پشتوں کو بخشوائے گا''۔ سن شادی کے انکام کے انکام کے انکام کی جو کہ عالم دین بھوک مری کا شکار ہے ملا مولوی کو روٹی نہیں ملتی ۔ ضروری نہیں کہ کوئی دنیادی علم حاصل کرے تو اے روٹی بھی مل جائے ۔ سینتو وں گر بچوے ہے انھوں بیں ڈ گریاں لئے ٹوکری کی تلاش میں مارے مرے بھرتے ہیں ۔ یقینا ہم کی کودی ملتا ہے جواللہ تعالیٰ نے اس کی قسمت میں کھودیا ہے ۔ بیمی کوئی ضروری نہیں کہ عالم دین بینے کے بعد مجد میں امامت ہی کی جائے ۔ آپ کا بیمی کوئی ضروری نہیں کہ عالم دین بین کے ماتھ ساتھ ایک بہترین برنس مین (تاجر) بھی ہوسکتا ہے ۔ بیمی عنظر وں عالم دین ہیں جودین کی ضرمت انجام دین جی ساتھ میں انجام دین ہیں جودین کی ضرمت انجام دین جی ساتھ ہوئے کے ساتھ میں ایک گئیس یا تا خود تا چر کے ایک ہوئے کے ساتھ میں ایک کے ایک ساتھ میں ایک کے ایک میں نوا دین میں بھی ہیں جو اپنے دنیا وی کاروبار کے ساتھ میں ایک خدمت بھی انجام دے رہے ہیں۔

و د حصن صین میں ہے کہ

''جب بچیمات سال کی عمر کا ہوجائے تواسے نماز پڑھوائے اور نماز نہ پڑھنے پر مناسب سزا بھی دے اور نو برس کی عمر ہیں اس کا بستر الگ کردئے''۔

(صن حين م ١٧٧)

بچوں کو بر بے لوگوں میں بیٹھنے بد معاش لاکوں میں کھیلنے سے ہا ذر کے کئین اتی تختی بھی نہ کرے کہ وہ باغی ہو جائیں اور اس قدر لاڈ پیار بھی نہ کرے کہ وہ ضدی من مٹ دھرم اور گتاخ بن جائیں۔ عبت کے وقت عبت اور تختی کے وقت بختی سے چیش آئے۔

JOHN THE JOHN (RIZUR)

الحجى تعليم اولا دكيلي تحفه

حضوراكرم مصيحية ارشادفرمات بي

مانحل والدر والدامن تحل اقضل من ادب حسن-

(ترندى جائباب ۱۲۹۹ صديث ۲۰۱۸)

ترجمہ کوئی باپ اپنی اولا دکواس ہے بہتر تحذ نہیں دے سکتا کہ وہ اس کواچھی تعلمہ بر

بچوں سے مجت کرنا سنت رسول اللہ عضّے آقیۃ ہے اگر ایک سے زیادہ بچے ہوں تو سب بچوں کے ساتھ برابری ادرانصاف کاسلوک کرے چاہے وہ لڑکا ہویالڑکی۔

اولا دمیں برابری کرو

الله كرسول منظرة في ارشاد فرمايا

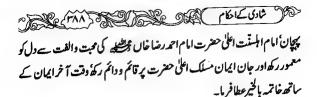
''اللہ تعالیٰ پیند کرتا ہے کہتم اپنی اولا د کے درمیان عدل (برابری وانساف) کرویہاں تک کمان کا بوسہ لینے ہی بھی برابری رکھو''۔ (قانون شریعت ج ۴ مس ۲۳۲) نیاں جہر سرمدہ میں میں ہیں۔

اورفرمات بين آقا عظيم

" و تخدد یے بی اپنی اولاد کے درمیان انساف کروجس طرح تم خود بیچا ہے۔ ہوکہ وہ سب تہارے ساتھ احسان ومہر بانی بیس انساف کریں ''۔ (طرانی شریف) اولاد کے حقوق بیس سے سب سے اہم حق بیر ہے کہ انہیں طال کمائی سے

کھلائیں۔حرام کی کمائی سے خود بھیں اورا پٹی اولا دکو بھی بچائیں۔ اے اللہ ہمیں اپنے حبیب اور ہارے پیارے آتا ومولی مضطَقِیّا ہے صدقے

اے اللہ علی اسے حبیب اور جارے پیارے اقادموں مصطفای کے صدیے طفیل میں صراط متنقم نرچلنے کی توفق عطا فرما۔ جب تک دنیا میں رہے حضرت سیدنا امام اعظم ابوصنیفہ ڈاٹنٹو کے صحیح معنوں میں مقلدین کررہے فی زمانہ مذہب اہلسنّت کی



آمين بجأة حبيبه الكريم عليه وعلى آله الصلوة والتسليم. وما عليناً الاالبلاغ البيين

طالب دُعا **مجمرعبدالا حد قادر ی** محرگز ان مخصیل دشلع لودهران 0300-4288176

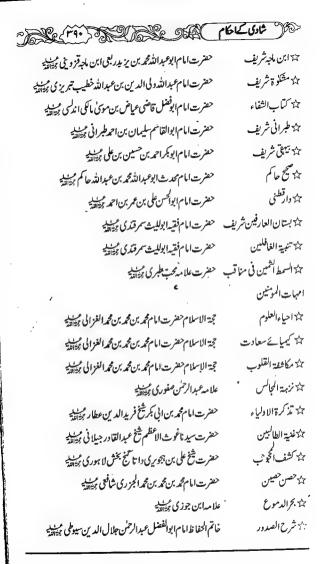


ماِخن و مراجع

ترجمه كنزالا يمان ازاعلي حضرت امام احمد رضاخان عيسية حضرت امام جلال الدين سيوطى مجة النة مفسرقرآ ن حضرت علامه المعيل حقى تركى ميسية صدرالا فاضل علامه سيدنعيم الدين مرادآ بادي ميسيه حضرت علامه غلام رسول سعيدي منسوب صحالى رسول رئيس المفسر ين عبدالله ابن عباس بزالنيز حضرت امام اعظم ابوصيفه نعمان بن ثابت كوفي ميسيه حضرت امام ابوعبدالله ما لك بن انس بن ما لك ميسيم حضرت امام احمد بن عنبل مسليد حضرت امام المحدثين ابوعبدالله محمد بن المعيل بخارى مينية حضرت امام ابوالحسين عساكرالدين مسلم بن حجاج قشيري بيسية حضرت امام ابوداؤ دسليمان بن اشعت سجستاني بمن إ حضرت امام ابوعيسي محمد بن عيسي ترندي مسينة خفرت امام ابوعبدالرحمن احمر بن شعيب نسائي مينية

به قرآن کریم به تغییر درمنثور به تغییر دوح الهیان به تغییر تخوان العرفان به تغییر تغیان القرآن به الاسراء المعراج به مندامام اعظم به مندامام اعظم به بخاری شریف به ایدوا و د شریف به ایدوا و د شریف به تزیف شریف

☆ نسائی شریف



LEICUR JO

🖈 الانصاح في احاديث 💎 حضرت علامه ابن حجر كمي ميشيد

7.16.71

الله عات حضرت محقق شخ عبدالحق بن سيف الدين محدث و بلوى مُعِينية الله الرج الله ق حضرت محقق شخ عبدالحق بن سيف الدين محدث و بلوى مُعِينية الله بن محدث و بلوى مُعِينية

الند

☆ درمختار ☆ فآویٰ عالمگیری

حضرت امام على الدين مجمد بن على حصكفى ميزانية

با هتمام حضرت سلطان اورنگ زيب عالمير ميزانية

حضرت شاه ولى الغدصا حب محدث د بلوى ميزانية

امام المستّب اعلى حضرت امام احمد رضا خال فاصل بريلوى ميزانية

امام المستّب اعلی حضرت امام احمد رضا خال فاصل بريلوى ميزانية

امام المستّب اعلی حضرت امام احمد رضا خال فاصل بريلوى ميزانية

امام المستّب اعلی حضرت امام احمد رضا خال فاصل بريلوى ميزانية

امام المستّب اعلی حضرت امام احمد رضا خال فاصل بريلوى ميزانية

امام المستّب اعلی حضرت امام احمد رضا خال فاصل بريلوى ميزانية

شتم اده اعلی حضرت عمل مرحم براحمطفی رضا خال میزانید

صدر الشريع حضرت عمل مرحم براحمطفی رضا خال میزانید

عمیم الامت حضرت عمل مدمتی احمد یا رضال نعی میزانید

عشم العلم المحضرت عمل مدمتی احمد یا رضال نعی میزانید

استاذ العلماء حضرت علامه مفتى جلال الدين احمدامجدي مجيشية

بالقول الجميل

به قادئ رضويه

به قادئ افريقة

به احكام شريعت

به الملفوظ

به وظائف رضويه

به قادئ مصطفويه

به بهارشريعت

به قادئ مصطفويه

به قانون شريعت

به قانون شريعت

به قانون شريعت

المستمع شبستان رضا

Marfat.com

حضرت شاه محمر عبدالعليم صديقي ميرهي ويتالله

حضرت الحاج صوفى اقبال احدنوري ممينية

The rar The The State of the State of

🖈 قرع الاساع بالختلاف اقوال المشائخ واحوالهم في السماع

حضرت محقق شیخ عبدالحق بن سیف الدین محدث دہلوی میشاید

🖈 هادى الناس فى رسوم الاعراس

امام المسنّت اعلى حضرت امام احمد رضاخان فاصّل بريلوي بمينية المنا عطاالقدير في حكم التصوير

امام المسنّت اعلى حضرت امام احمد رضاخان فاحشل بريلوى ميشيد المن شفاء الوالد في صور الحبيب ومزاره وفعاله

۱۳ مطاعا والدن مورا جیب د مراره ده مد. امام المسنّت اعلیٰ حضرت امام احمد رضا خال فاضل بریلوی مِمّشید

امام البسنت! می سفرت امام البمدر صاحال فا س بریدون و خالعه المنظم المنور فی نبی النساء عن زیارة القور

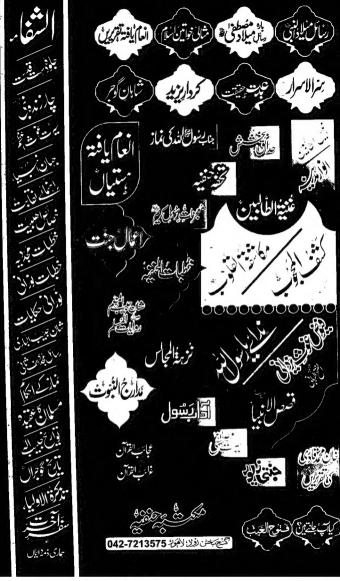
امام المسنّست اعلی حضرت امام احمد رضاحان فاضل بریلوی مُشِیرَّ ادادة الادب لفاضل النسب

امام المسنّت اعلى معنرت امام احدرضا خال فاصّل بريلوي مُحِينَةٍ للهُ الله العاريج الكرائم عن كلاب النار

امام البسنّت اعلى حضرت امام احمد رضاخان فاصل بريلوي عشلية

☆.....☆.....☆





Marfat.com